मध्यप्रदेश के जनजातीय

फाग गीत

मध्यप्रदेश के जनजातीय
फाग गीत

सम्पादक
कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल-462003
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755-2551878, 2760668
ई-मेल-mplokkala@rediffmail.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2010 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण – बैगा जनजातीय युवतियाँ, छायाचित्र-अकादमी संकलन से।

मुद्रण – शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल

मूल्य – 200/- रूपये दो सौ केवल

■ पुस्तक से सम्बन्धित विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की हैं, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Madhya Pradesh ke Janjateeya

FAAG GEET

EDITOR : DR. KAPIL TIWARI

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी ने पारम्परिक फाग साहित्य के लिखित और वाचिक रूपों के संकलन/अनुवाद और प्रकाशन की एक वृहद शृँखला का आरंभ वर्ष 1996 में किया था। बुन्देली के प्रख्यात लोककवि 'ईसुरी' की फागों का एक चयन इस वर्ष प्रकाशित हुआ, इसे बुन्देली वाचिक साहित्य के अध्येता श्री लोकेन्द्र सिंह नागर ने संकलित किया था। इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए बुन्देली के प्रसिद्ध लोकवार्त्ताविद् साहित्य महोपाध्याय श्री श्याम सुन्दर 'बादल' के शोध प्रबंध पर आधारित ग्रंथ 'बुन्देली का फाग साहित्य' सन् 2000 में पुनर्मुदित किया गया। इस ग्रंथ में बुन्देली के फाग रचनाकारों की त्रयी अर्थात् 'ईसुरी' 'गंगाधर' और 'ख्यालीराम' की फागों के उदाहरण और उनके रचना वैशिष्ट का गंभीर विश्लेषण किया गया। यह ग्रंथ अपने प्रथम प्रकाशन के साथ ही बुन्देली लोकवार्त्ता अध्ययन के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ और प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इसके पश्चात् श्री लोकेन्द्र सिंह नगर द्वारा कई वर्षों के अध्यवसाय से ईसुरी की फागों का एक वृहद संकलन सन् 2004 में प्रकाशित किया गया, जिसमें ईसुरी की लगभग पाँच सौ फागों का संग्रह था। इस संग्रह में मूल फागों के साथ उनके हिन्दी अनुवाद भी श्री नागर ने किये थे।

बुन्देली भाषा के अलावा मालवी, निमाड़ी और बघेली वाचिक परम्परा में फाग रचना का एक बड़ा संग्रह अकादमी ने 2005 में प्रकाशित किया। मध्यप्रदेश के सभी जनपदों की वाचिक फाग रचना का यह पहला समवेत ग्रंथ था- ये फागें लोक परम्परा में सदियों से प्रचलित थीं, जो वसंत ऋतु और होली के त्योहार के अवसर पर अभी भी लोक समाजों में पारम्परिक रूप से गायी जा रहीं हैं। फाग साहित्य पर केन्द्रित यह लगभग 1500 पृष्ठों की सामग्री है- इसमें मौखिक रूपों के साथ कुछ लिखित काव्य परम्परा का अंश भी समाहित है। व्यक्ति रचनाकारों की फागें बुन्देली में साहित्य परम्परा का भाग हैं। फाग त्रयी के रचनाकारों की ये फागें बड़े पैमाने पर 'फड़ साहित्य' की बुन्देली लोक परम्परा के माध्यम से सामने आयीं, जो पिछली सदी में बुन्देलखण्ड की एक जीवन्त लोक परम्परा थी।

फाग रचना का यह पूरा संदर्भ लोक परम्परा में ऋतु गीतों और पर्व-त्योहारों की सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ा है, जो वसंत पंचमी से रंगपंचमी तक विस्तारित है। इस लोक काव्य रचना के साथ फाग गायन की एक संगीत परम्परा भी जुड़ी है- कुछ अंचलों में फाग गायन के साथ नृत्य भी किया जाता है। बुन्देली कवि 'ईसुरी' की फागों का पूरे बुन्देलखण्ड में जो लोकव्यापी रूप निर्मित हुआ, उसमें 'राई नृत्य' और उसके कलाकारों का भी योगदान है। एक स्वतंत्र लोक गायन शैली के रूप में भी बुन्देली में फाग गायन बहुत प्रसिद्ध और प्रचलित है। मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन के समय से ब्रज क्षेत्र की लोक परम्परा में, होली का पर्व विशेष रूप से चर्चित हुआ। ब्रज भाषा में हजारों लोकपद 'रसिया' के नाम से रचे गये, जो इस अवसर पर गाये जाते थे। बरसाने की लट्ठमार होली विश्व प्रसिद्ध है। रसिया गायन का 'ब्रज लोक संगीत' भी सारे देश में प्रसिद्ध हुआ। रास मंच पर भी राधा-कृष्ण और गोप-गोपिकाओं की

होली लीला का प्रस्तुतीकरण आरंभ हुआ- अब यह रास मंच पर कृष्णलीला का प्रमुख प्रसंग माना जाता है। ब्रज क्षेत्र में कुछ स्थानों पर होली के अवसर पर 'चरखुला' नृत्य करने की परम्परा आज भी अबाधित रूप से चल रही है। इसमें जो पारम्परिक गीत गाये जाते हैं, वे राधा-कृष्ण होली लीला के ही गीत हैं।

इसी प्रकार देश के अन्य क्षेत्रों में भी यह लोक परम्परा स्थापित हुई। हिन्दी भाषी क्षेत्र के जनपदों में विभिन्न भाषाओं में होली गीतों का प्रचलन है। अवधी, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी, गढ़वाली, कुमाऊँनी, छत्तीसगढ़ी, बघेली और मालवी तथा निमाड़ी भाषाओं में प्रभूत फाग गीत, वाचिक परम्परा का महत्त्वपूर्ण भाग हैं। भोजपुरी में वसन्त गीतों की समृद्ध लोक वाचिक परम्परा है, इनमें कुछ गीतों का प्रकाशन अकादमी द्वारा किया गया है। ऐसा प्रयास यदि पूरे उत्तर भारत की जनपदीय वाचिक परम्परा में किया जाये, तो कई हजार फाग गीतों का संग्रह किया जा सकता है- यह वाचिक काव्य परम्परा लोक गायन शैलियों और नृत्य की लोक शैलियों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक विशाल संदर्भ हो सकता है।

फाग साहित्य पर हमारा यह संकलन और प्रकाशन का प्रयास अधूरा रहता, यदि हम इसमें जनजातीय फाग साहित्य की परम्परा को छोड़ देते। मध्यप्रदेश में जनजातीय बहुलता है और कुछ जनजातियाँ, तो देश की सबसे बड़ी जनजाति हैं। इनमें से अधिकांश में फाग गीतों की परम्परा हैं। भील जनजाति का भगोरिया पर्व मूलत: 'होली पर्व' है। इसमें भगोरिया हाट का आयोजन होता है और भगोरिया नृत्य किया जाता है। इसी प्रकार डिण्डौरी के 'बैगा चक' में बैगा जनजाति में 'फाग नृत्य' किया जाता है। यह अकेला जनजातीय नृत्य है, जिसमें नर्तकों के साथ एक विदूषक चरित्र भी होता है, जो काष्ठ का बना एक भारी मुखौटा भी लगाये रहता है। भील जनजाति में होली के अवसर पर इसी प्रकार 'रायबुलिया' का स्वांग बनाये एक विदूषक चरित्र होता है। अर्थात् लोक समाजों के साथ जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परम्परा में भी फाग गीत, संगीत और नृत्य परम्परा है। लेकिन जनजातीय फाग रचना किस अर्थ में लोक समाजों से अलग और विलक्षण है?

वास्तव में लोक समाजों में फाग 'बारहमासा' लोक रचना का भाग है और यह पौराणिक संदर्भ लिए एक पर्व से जुड़ी परम्परा है, जबकि जनजातीय समुदायों की फाग रचना का संदर्भ मूलत: 'प्रेम और शृँगार' पर केन्द्रित है, जिसमें सारे जीवन के विविध पक्ष-प्रकृति, वन, वृक्ष, फसलों, पशु, हाट, आसपास के प्रमुख नगर, वस्तुएँ आदि सभी समाहित होते हैं। वह शृँगार और प्रेम की भूमि पर जीवन की समग्रता का आकाश है, जिसमें जनजातीय गीति रचना की फाग गूँजती है।

वह वर्जनाहीन और उद्दाम वेग में रची गयी है- अधिकांश फाग गीतों में एक विचित्र सी तात्कालिकता है। ऐसा लगता है, जैसे एक विशेष स्थिति, दृश्य और घटना में यह गीत तुरन्त बनाया गया है- वह किसी चली आती परम्परा का 'स्मरण गान' न होकर अभी और इसी क्षण जन्मी 'परम्परा' जैसा हो।

-कपिल तिवारी

अनुक्रम

फाग गीत

गोंड और कोरकू / डॉ. धर्मेन्द्र पारे / 9
कोरकू और गोंड / महेश गुंजेले / 60
गोंड, भोई, सौंर एवं सहरिया / डॉ. ओमप्रकाश चौबे / 146
गोंड, भोई और सौंर / डॉ. सुधीर तिवारी / 184
बैगा / डॉ. प्रतापसिंह चन्देल / 240
कोल / संतोष कुमार तिवारी / 251
गोण्ड / रूपसिंह कुशराम / 256

आत्तआद्रूळ्क ल्ट्टद्र÷

गोंड और कोरकू

डॉ. धर्मेन्द्र पारे

सेवा दरोबार लागाल महादेवजी
सेवा दरोबार लागाल महादेवजी
सेवा दरोबार लागाल महादेवजी
सेवा दरोबार लागाल महादेवजी
ऊंचो पहाड़ ते डेरा महादेवजी
सेवा दरबार लागाल

स्रोत–झगडू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी,

भगवान शिव के दरबार में मेरा प्रणाम। ऊँचे पहाड़ों में भगवान शिव का बसेरा है। उस दरबार को मैं बार–बार प्रणाम करता हूँ।

साटा वाड़ी ते रोन तेहना दादा
साटा वाड़ी ते रोन तेहना दादा
साटा वाड़ी ते रोन तेहना दादा
साटा वाड़ी ते रोन तेहना दादा
बिछया वाले मनवाल ते
बिछया वाले मनवाल ते
संग बोयेना दादा साटा वाड़ी ते रोन तेहना
संग बोयना दादा साटा वाड़ी ते रोन तेहना
कड़ी वाले मनवाल ते कड़ी वाले मनवाल ते
संग बोयेना दादा साटा वाड़ी ते रोन तेहना
संग बोयेना दादा साआ वाड़ी ते रोन तेहना

स्रोत–झगडू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

हे दादाजी! गन्ने के खेत में मैं घर बनाता। यदि बिछिया वाली होती तो साथ ले जाता और गन्ने के खेत में अपना घर बनाता। कड़ी वाली होती तो दादाजी मैं उसको अपने साथ ले जाता और गन्ने के खेत में अपना घर बनाता। आशय यह है कि मैं अपना घर क्यों बनाऊँ? जबकि मेरे जीवन में सूनापन है। संदेश यह कि अब मैं युवा हो चुका हूँ, मुझे जीवनसंगिनी की आवश्यकता है। इस विषय में आपको सोचना चाहिए।

हिद दूरी तरीता मरका मड़ाते रो मरका मड़ाते
हिद दूरी तरीता मरका मड़ाते रो मरका मड़ाते
ताना काल बैयसी विन्जा रो जोगी
ताना काल बैयसी विन्जा रो जोगी
ताना सोगा डीलो, ताना सोगा डीलो
हिद दूरी तरीता सड़ेगा मड़ाते रो सड़ेगा मड़ाते
ताना काल बैयसी विन्जा रो जोगी
ताना सोगा डीलो

स्रोत–नागोराव कलम, ग्राम–दीदमदा

ओ जोगी अर्थात् प्रेमी! देखो, यह लड़की आम के पेड़ पर चढ़ी हुई है। इसके पाँव पकड़कर नीचे खींच लो। उसकी साड़ी का पल्ला भी ढीला है। देखो, वह लड़की अचार के वृक्ष पर चढ़ी हुई है, उसके पैर पकड़कर खींच लो, उसकी साड़ी का पल्ला भी ढीला है।

नांदाल ते नांदी काई दादा रो, ना झेला नांदा लो
नांदाल ते नांदी काई दादा रो, ना झेला नांदा लो
दना रे ना देरेना दादा रो ना झेला नांदा लो
दना रे ना देरेना दादा रो ना झेला नांदा लो
टोंगडो ये ते सोड़िया दादा रो ना झेला नांदा लो
टोंगडो ये ते सोड़िया दादा रो ना झेला नांदा लो
नांदाल ते नांदी काई दादा रो ना झेला नांदा लो
नांदाल ते नांदी काई दादा रो ना झेला नांदा लो

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

ओ दादा! मेरी धोती भीग रही है, तो भीगने दो। दादा! मेरी धोती का पल्ला भीग रहा है, तो भीगने दो। ओ दादा! घुटने–घुटने पानी में आप चले जाओ, मेरी धोती का पल्ला भीग रहा है। आशय यह कि मैं तो छैल छबीला हूँ, यदि नदी पार करूँगा तो धोती भीग जायेगी, जिससे मैं युवतियों को प्रभावित नहीं कर सकूँगा।

मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले
मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले
दिरादान बाको तिरितता ये टोपी वाले
दिरादान बाको तिरितता ये टोपी वाले
नियाराज बाको तिरिता ये टोपी वाले
नियाराज बाको तिरिता ये टोपी वाले
मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले
मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

टोपी वाली महिला मकड़ाई के किले पर चढ़ी हुई है। वह बिना किसी भय के इस कठोर शासन में घूम रही है। तुम्हारे राज्य के कठोर शासन में देखो वह टोपी वाली महिला घूम रही है। देखो–देखो मकड़ाई के महल पर यह टोपी वाली महिला चढ़ी हुई है। आशय यह है कि राजा तुम्हारे राज्य का कठोर अनुशासन अन्य लोगों के लिए तो खूब है, किन्तु टोपी पहनने वाली यह नाजनीन इत्मीनान से घूम रही है। आखिर उसके प्रति इस उदारता का क्या मतलब है? टोपी वाली महिला अंग्रेजों का प्रतीक है।

मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले
मकड़ाई किल्ला तरीता ये टोपी वाले
निया राज बाको तिड़िता
निया राजा बाको तिड़िता
ये टोपीवाले निया राज बाको तिड़िता
ये टोपी वाले निया राज बाको तिड़िता
टोडरशाह वाले भरतशाह वाले
टोडरशाह वाले भरतशाह वाले
निया राज बाको तिड़िता
निया राज बाको तिड़िता

स्रोत–नागोराव कलम, ग्राम–दीदमदर

ओ मकड़ाई के राजा! तुम्हारा राज्य बहुत बड़ा है। तुम्हारा राज्य दूर–दूर तक फैला है। तुम्हारे राज्य का अनुशासन भी कठोर है। किन्तु क्या बात है कि इतने बड़े राज्य के राजा में एक फिरंगी महिला घूम रही है। राजा टोडरशाह और राजा भरत शाह! तुम्हारे कठोर शासन के बाद भी यह महिला महल पर चढ़ गई। आशय यह कि यह तो महल की तौहीन है।

बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो
आडालो सांगो बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो

बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो
आडालो सांगो बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो
निवा नजर नवा झेला ते
ये सांगो बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो
निवा नजर नवा झेला ते
ये सांगो बाड़ी पिज्जा कोयल आडालो

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

घर के पीछे कोयल क्यों रो रही है? तुम्हारी नजर मेरी धोती के पल्ले पर क्यों है? बताओ घर के पीछे कोयल क्यों रो रही है? संभवत: यहाँ कोयल विरहिणी का प्रतीक है।

जिम्म बाई झोड़पा काचो रेंगा
हटय पेकोड़े सेमला वालेड़
जिम्म बाई झोड़पा काचो रेंगा
हटय पेकोड़ सेमला वालेड़
झुमुर–झुमुर ताकी लातोड़ गुंडा तुड़िता
हटय पकोड़ सेमला वालेड़
झुमुर–झुमुर ताकी लातोड़ गुंडा तुड़िता
हटय पेकोड़ सेमला वालेड़

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी,

बहन कच्चे बेर पर एक झोड़पा मारो। तुम्हारे बेर ये अंगोछे वाले लड़के नहीं उठायेंगे। देखो, वे तो झुंड के झुंड चल रहे हैं। वहाँ धूल उड़ रही है। ये गमछे वाले लड़के बेर नहीं उठायेंगे।

नागोरी तोल भुमकाल बोलो रो
भला नागोरी गरजे मायालो
नागोरी तोल भुमकाल बोरो रो
भला नागोरी गरजे मायालो
नगरी तोल मालिक बोलो रो
भला नागोरी गरजे माया लो भला
नगरी तोल मालिक बोलो रो
भला नागोरी गरजे माया लो भला

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

आखिर इस नगर का भुमका (पुजारी) कौन है? अरे! यह गाँव माया और भूत–प्रेत आदि से गरजने लगा है? आखिर इस गाँव का स्वामी कौन है? आशय यह है कि भुमका जो गाँव भर

का पुजारी होता है, जिसका दायित्व ही है कि वह गाँव को बुरी आत्माओं, भूत-प्रेत आदि से बचाये। यदि वह ही चुप बैठ जायेगा, तो गाँव का क्या होगा? भयग्रस्त व्यक्ति अनिष्ट की आशंका से पीड़ित होकर पुकार रहा है।

ढेल्का जित्ता ईशारा किता
हन्ना बाना के रेल ताकता
ढेल्का जित्ता ईशारा किता
हन्ना बाना के रेल ताकता
ढेल्का जित्ता ईशारा किता
हन्ना बाना के रेल ताकता

स्रोत-नागोराव कलम,ग्राम-दीदमदा

पुरुष ने स्त्री को पत्थर के ढेले से मारकर इशारा किया और कहा कि आने-जाने में ही रेलगाड़ी गई है। आशय यह है कि तुम इस प्रकार आते-जाते ही इशारों में ही मिलती रहोगी या कभी चैन से आकर भी मिलोगी?

मामा नावा अंगोचा ओसे तुन रो
आसे तुन हरदा बजार
मामा नावा अंगोचा ओसे तुन रो
आसे तुन हरदा बजार
मामा नावा अंगोचा ओसे तुन रो
मामा निया टुरी चोर
मामा नावा अंगोचा ओसे तुन रो
मामा निया टुरी चोर
मामा नावा अंगोचा ओसे तुनरो
मामा नावा अंगोचा ओसे तुनरो

स्रोत-झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम-बोरपानी

अरे मामा! तुम्हारी लड़की बड़ी चोर है, वह मेरा गमछा ले भागी है। अरे मामा! हरदा का बाजार आ गया है। आशय यह है कि गमछा मेरी शान और मेरे छैल-छबीले व्यक्तित्व की निशानी है और तुम्हारी लड़की उसी को ले उड़ी है।

गोंदल फुंगार निवा रानी रो राजा
ये देशो राजा गोंदल फुंगार निवा रानी
गोंदल फुगार निवा रानी रो राजा
ये देशो राजा गोंदल फुंगार निवा रानी

देशोंग देशोंग वल्लीदी रो राजा
गोंदल फुंगार निवा रानी
रो राजा गोंदल फुंगार निवा रानी
देशोंग देशोंग वल्लीदी रो राजा
गोंदल फुंगार निवा रानी
रो राजा गोंदल फुंगार निवा रानी

स्रोत–झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

ओ राजाजी! तुम्हारी रानी का रूप सौन्दर्य गेंदे के पुष्प के समान है, जिसकी देश–विदेश में चर्चा है। राजा हमने तो देश–विदेश तक घूम लिया, किन्तु गेंदे के समान तुम्हारी सुन्दर रानी सा कहीं कोई देखने को नहीं मिला। राजा तुम्हारी रानी गेंदे के समान खूबसूरत है।

छेला ता रोन मुसुर कव्वी लाता
छेला ता रोन मुसुर कव्वी लाता
बिछया करता बाह भलके माता
छेला ता रोन मुसुर–मुसुर कव्वी लाता
छेला ता रोन मुसुर कव्वी लाता
छेला ता रोन मुसुर कव्वी लाता
बिछया करता बाह भलके माता
छेला ता रोन मुसुर–मुसुर कव्वी लाता

स्रोत व्यक्ति–झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

आखिरी घर की महिला को देखो, वह मंद–मंद मुस्कुरा रही है। वह बिछिया पहने हुए है। देखो, वह कैसे मटककर इठला रही है। आखिरी घर की महिला मंद–मंद मुस्कुरा रही है। आशय यह कि उसकी मंद–मंद मुस्कान और अंग–प्रत्यंगों की भंगिमा से प्रतीत हो रहा है कि उसके मन में यौवन सुलभ राग हिलोरे मार रहा है। उसकी मंद–मंद मुस्कान में उसके मनोभाव छुपे हैं।

ईन्ता यशोदाल केन्जा रो कान्हा
ईन्ता यशोदाल केन्जा रो कान्हा
ईम्मा बेगा खोये मातो नोरो
ईम्मा बेगा खोये मातो नोरो
नाबा समझ हल्ल वायो
नाबा समझ हल्ल वायो
डोडा ते उड़न्दान नैड उड़दान
डोडा ते उड़न्दान नैड उड़दान

हिम्मा बेगा खोया मातो से कान्हा
हिम्मा बेगा खोया मातो से कान्हा
नावा समझ हल्लवायो रो
नावा समझ हल्लवायो रो

स्रोत–झगडू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

यशोदा अपने कान्हा से कह रही है कि सुनो कान्हा! तुम कहाँ गये हुए हो, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। मैंने आज तो तुम्हें नदी पर भी खोज लिया, तुम आखिर कहाँ छुपे हुए हो? पता नहीं तुम कहाँ खो गए हो? मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

सुमरूं हे गणपति सभा में
सुमरूं हे गणपति
सुमरूं हे गणपति सभा में
सुमरूं हे गणपति
आसुन के साल में फागुन मनायो पुजारी
होली में लुम्बू मनायो
आसुन के साल में फागुन मनायो पुजारी
होली लुम्बू मनायो
जुवाँ खेले होली खेले विरजा
आसुन के साल में फागुन मनायो पुजारी
जुवाँ खेले होली खेले विरजा
आसुन के साल में फागुन मनायो पुजारी

स्रोत–झगडू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

गणेश को सभी मिलकर मना रहे हैं। इस साल भी पुजारी ने फागुन मनाया है और होली नींबू भी मनाये हैं। जुबा और बिरजा दोनों होली खेल रहे हैं। पुजारी ने इस साल भी होली मनाई है।

आवता फागुन फुंगार पोयता
चुडू–चुडू रइया ना दुधुंग लोयतांग
आवता फागुन फुंगार पोयता
चुडू–चुडू रइया ना दुधुंग लोयतांग
आवता फागुन फुंगार पोयता
चुडू–चुडू रइया ना दुधुंग लोयतांग

स्रोत–नागोराव कलम, ग्राम–दीदमदा

फागुन माह में आसपास चारों तरफ फूल खिल गये हैं। वे फूल ऐसे खिले हैं मानो यौवन की ओर अग्रसर छोटी-छोटी लड़कियों के छोटे-छोटे स्तन फूल रहे हों।

हे खण्डेराय खेले होली
बान कजेली को लम्बे चलो कडेराम
खेले होली खण्डेराय खेले
हे खण्डेराम खेले होली
बान कजेली को लम्बे चलो कडेराम
खेले होली खण्डेराम खेले
हे खण्डेराम खेले होली
बान कजेली को लम्बे चलो कडेराम
खेले होली खण्डेराम खेले

स्रोत-झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम-बोरपानी

हे खांडेराय! होली खेलो। हे खांडेराय! होली खेलने के लिए कजली वन के लम्बे जंगल में दूर-दूर तक चलो। हे खांडेराय! होली खेलो।

टीप-खांडेराय मेघनाथ को माना जाता है।
घोगोरी फुंगार पोयता हो झल्लो
घोगोरी फुंगार पोयता
घोगोरी फुंगार पोयता
डेल्का ता टुंसा लागताहो
घोगोरी फुंगार पोयता
डुरा ना छाती पोयता
डुरा ना छाती पोयता

स्रोत-झगड़ू सिंह गजाम,ग्राम-बोरपानी

झल्लो नाम की लड़की से कह रही है कि पलाश के फूल खिलने लगे हैं। मुझे मिट्टी के ढेले का धक्का लगा है। ओ लड़के! मेरे कुच फूलने लगे हैं। आशय यह कि केवल परिवेश में ही यौवन नहीं आया है, मेरे मन के भीतर भी यौवन खिल उठा है। ढेला मारने का आशय यह है कि तुमने मुझे प्रणय हेतु कोई संकेत दिया है क्या?

धुना रमा के बैठे रे बैरंगी टूरा
धुना रमा के बैठे रे बैरंगी टूरा
धुना रमा के बैठे रे बैरंगी टूरा

धुना रमा के बैठे रे बैरंगी टूरा
धोती जले जले जले चड्डी जले बैरंगी टूरा

स्रोत–नागोराव कलम,ग्राम–दीदमदा

आग के अखाड़े के पास धुनी रमाकर रंगहीन चेहरा लिए एक लड़का बैठा है। उसकी धोती भी जल गई है, उसकी चड्डी भी जल रही है। आशय यह है कि होली त्योहार और फाग के महीने में भी जो व्यक्ति ऐसा बेरौनक होगा, उसका तो यही हाल होना है।

मरका मडाना राई सुवाल रागो
पिया पियो अडीलाता
मरका मडाना राई सुवाल रागो
पिया–पियो अडीलाता
नए गोर–गोर ओता की गुलाल
गरसी लाता पियो पियो हिन्दा लाता
नए गोर–गोर ओता की गुलाल
गरसी लाता पियो पियो हिन्दा लाता

स्रोत–झगडू सिंह गजाम, ग्राम–बोरपानी

आम के पेड़ पर बड़ा तोता बैठा हुआ है। वह पियो–पियो की रट लगाये हुए है। वह तोता गुलाल से तरबतर हो गया है। उसके बाद भी वह गुलाल खेल रहा है और बार–बार पियो–पियो की आवाज कर रहा है।

जाटा झमले माता हो गोरी डा
जाटा तुन ऐर फुटाल माडोतुन माडका
जाटा झमले माता
जाटा झमले माता हो गोरी डा
जाटा तुन ऐर फुटाल माडोतुन माडका
जाटा झमले माता

स्रोत–झगडू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

देखो गोरी, बल्लर का पौधा कैसे फैलता जा रहा है। इस बल्लर के पौधे को जैसे ही पानी मिलेगा, यह और फैल जायेगा। पानी के लिए किए गए छेद में झाँककर देखो, बल्लर का पौधा कैसे फैल रहा है।

ये सेमल को डुडा हो गोरी डो
ये सेमल को डुडा हो गोरी डो
ये सेमल को डुडा हो गोरी डो

ये सेमल को डुडा हो गोरी डो
निमाऊ धमकी कितुल खिज्जे बाड़ी माती

स्रोत–झगडू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

गोरी के हाथ में सेमल का डंडा है। उसने तुमको धमकाया तो तुम डर कर खीझने लगे हो। आशय यह कि फाग के महीने में तो यह हँसी–मजाक चलता है।

नयो फगड़ी मामा बांध झकाझोल
मेरा फगड़ी मामा झालरिया
नयो फगड़ी मामा बांध झकाझोल
मेरा फगड़ी मामा झालरिया
इधर भी बोरपानी उधर भी दीद मड़ा
दी मड़ा की लोवंछी हिल गयो मामा
नयो फगड़ी मामा बांध झकाझोल
इधर भी बोरपानी उधर भी दीदमदा
दीदमड़ा की लोवंछी हिल गयो मामा
नयो फगड़ी मामा बांध झकाझोल

स्रोत–झगडू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

नयी–नयी पगड़ी बाँधो। ऐसी पगड़ी बाँधो जो झकोले खाती हो। देखो, मेरी पगड़ी में झालर लगी है। इधर बोरपानी गाँव है, उधर दीदमदा गाँव है। उधर दीदमदा की लड़की मुझसे हिल गई है। मुझे नई पगड़ी बाँधो मामा।

ऐ भैया मिनीरो दुसरो गली नाम काटते
नींड हल्लवायो
हिम्मा तो नेडा रास्ता हन्ना तो बजाडा रास्ता
ऐ भैया मिनीरो दुसरो गली नाम काटते
नींड हल्लवायो
हिम्मा तो नेडा रास्ता हन्ना तो बजाडा रास्ता

स्रोत–झगडू सिंह गजाम,ग्राम–बोरपानी

ऐ भैया! दूसरे की गली में तो मत सोओ। भैया, क्या करूँ नींद नहीं आ रही है। तुम खेत का रास्ता पकड़कर चले जाओ। मैं तो बाजार का रास्ता पकड़कर चला जाऊँगा।

काहे रे भेया अनमाना देखे, तेरो सूरत बड़ो मेलो लागे
बेचो तुम्हारी सगी बहनिया, देओ हमारा फागवाला

काहे रे सहाब अनमाना देखो, तेरो सूरत बड़ो मेलो लागे
कुर्सी में बैठने कोभलो विराजे फगवा देने
का रोवेला बेचो तुम्हारी सगी बहनिया देओ हमारो फागवाला
काहे रे सरपंच अनमना देखो, तेरो सूरत बड़ो मेलो लागे
कुर्सी में बैठने को भलो विराजे फगवा देने को रोवेला बेचो
तुम्हारी सगी दुल्हनिया देओ हमारो फागवाला

स्रोत–श्रीमती उर्मिला कुमरे,ग्राम–खिरकिया

क्यों रे भैया! बड़े उदास दिख रहे हो, क्या बात है? तुम्हारी तो सूरत भी बड़ी मैली लग रही है? आखिर क्या बात है? क्या हमारे फगवा देने के भय से तुम्हारी यह दशा हुई है? कुछ भी हो चाहे तुम अपनी सगी बहन को बेचकर हमारा फगवा दो। क्यों रे साहब! बड़े अनमने लग रहे हो, क्या बात है? तुम्हारी सूरत इतनी उतरी हुई क्यों लग रही है? जब कुर्सी पर बिराजे होते हो, तब तो भले अच्छे लगते हो, किन्तु हमारा फगुवा देते समय क्यों कंजूसी करते हो? तुम चाहे अपनी सगी बहन बेचो पर हमारा फगुवा दो। क्यों रे सरपंच! आज तो बड़े उदास लग रहे हो। सूरत भी उतर गई है। कुर्सी पर तो खूब बैठते हो और फगुवा देने के नाम पर रोते हो। चाहे तुम अपनी दुल्हन को बेच दो, पर हमारा फगुवा दो।

काये रे भैया मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा
काये रे काका मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा
काये रे काकी मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा
काये रे मामा मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा
काये रे मामी मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा
काये रे जीजा मिटू–मिटू देखे देओ हमारा फगवा
बेचो तुम्हारी गाड़ी रे घोड़ा देओ हमारा फगवा

स्रोत–श्रीमती उर्मिला कुमरे, ग्राम–खिरकिया

क्यों रे भैया! आँख निकाल–निकाल कर क्या देख रहे हो? तुमको हमारा फगुवा तो देना ही पड़ेगा, चाहे तुम्हें अपने गाड़ी घोड़े ही क्यों न बेचना पड़े। क्यों काका, क्यों काकी और क्यों मामा, क्यों मामी, क्यों रे जीजा! आँख फाड़–फाड़कर क्या देख रहे हो? चाहे तुम्हें अपने गाड़ी–घोड़े ही क्यों न बेचना पड़े। पर हमारा फगुवा तो देना ही होगा।

आवला बाको पुगार पोयता
ढुडी नीवा बिछया ते बारदा दांग
ढुडी नीवा कड़िया ते बारदा दांग
आवला बाको पुगार पोयता
ढुडी नीवा कदरा ते बारदा दांग
ढुडी नीवा तडीया ते बारदा दांग

स्रोत–शंकरलाल सिरसाम,ग्राम–गुठानिया

आँवले में बहुत अधिक फूल आ गये हैं। लड़की तुम्हारी बिछिया में किसका दाग लग गया है। आँवले में बहुत अधिक फूल आ गये हैं। लड़की तुम्हारी कड़ी में किसका दाग लगा है? तुम्हारी करधनी और हार में किसका दाग लगा है? आँवले में बहुत अधिक फूल आ गये हैं। आशय यह कि तुमने किसके साथ प्रणय लीला कर ली है?

गरसी तोल नंदलाला जमुना ते ता किनार ते गरसी
इंदी तरप तो गायकीर गायकीर
इंदी तरप तो गायकीर गायकीर
इंदी तरप नन्दलाला जमुना ते जमुना ता किनार ते गरसी
उंदी जो ठोकर जीतूल कन्हीया लाल
उंदी जो ठोकर जीतूल कन्हीया लाल
गेंद अरसी तू जमना ता धारा जमुना ता जमुना किनार
गेंद ता कारन डैतूल कन्हीया ल
गेंद ता कररन डैतूल कन्हीया ल
उरूतूल पताल ता ताला जमुनाता जमुनाता किनार ते
ईत्तू नागनी केंजारी बाला
बाड़ी वाती गोपाला जमुना ता जमुना किनार ते गरसी

स्रोत–रामविलास पर्ते, ग्राम–गुठानिया

नंदलाल जमुना के किनारे खेल रहा है। एक तरफ नंदलाल खेल रहा है, तो दूसरी तरफ गाय चराने वाले ठाठिया लोग खेल रहे हैं। कन्हैया ने एक ठोकर मारी तो गेंद जमुना की धार में जाकर गिरी है। उस गेंद को निकालने के लिए कन्हैया जमुना में कूद गया है। उसने गेंद को पाताल लोक में जाकर देख लिया है। पाताल में नागिन ने कहा कि तुम जमुना के किनारे गेंद खेलने क्यों आये?

जब देखे जबे टोपी वाले ए टोपी वाले
टोपी वाले से लगी दोश लागी चुनियाँ

जब देखे जबे टोपी वाले ए टोपी वाले
टोपी वाले से लगी दोश लागी चुनियाँ

स्रोत–सागर उइके, ग्राम–भवरदी

जब देखते हैं, तब टोपी वाला ही नजर आता है। इस टोपी वाले से महिला की दोस्ती हो गयी और प्रणय सम्पन्न हो गया।

इगा मनी रायमा परदेशी मा भैयल रागा नूल
रागानूल तो रागी कई बाई हो कैदा छल्ला सेनेवा
इगा मनी रायमा परदेशी मा भैयल रागा नूल
रागानूल तो रागी कई बाई हो कैदा छल्ला सेनेवा
इगा मनी रायमा परदेशी मा भैयल रागा नूल
रागानूल तो रागी कई बाई हो कैदा छल्ला सेनेवा

स्रोत–रामनाथ इबने, ग्राम–गुठानिया

तुम यहाँ पर मत रुको परदेशी, मेरा भाई तुम्हें गाली देगा। गाली दे तो देने दो। मैं तो तुम्हें अपने हाथ का छल्ला देने वाला हूँ। आशय यह कि मैं तो तुमसे प्रणय निवेदन करने आया हूँ। इस कारण सब सहन कर सकता हूँ।

बा बनकी लाता रो मावा पारियार बावन की लाता
पैसा ना धेली बाजार चले माता रंग रंगे छल्ला ना मोल किया
कररो ना दरसो रो मावा परियार बावन की लाता
लाल–लाल बिछिया तो मोल किया लाता
उड़े गाड़ो उड़े ढिलो इदा लाता
पैसा ना धेली बाजार चले माता
रंगे–रंगे कड़ियाता भाव किया लाता
उड़े गाड़ो उड़े ढिलो इदा लाता
कररो ना दरसो रो मावा पारियार बावन की लाता

स्रोत–रामनाथ इबने, ग्राम–भवरदी

हमारी समधिन क्या बोल रही है और क्या कर रही है? उसके पास पैसे–धेले तो कुछ हैं नहीं, पर देखो रंगारंग छल्लों का मोलभाव कर रही है। वह हाथों में तरह–तरह की अँगूठियों को पहन–पहन कर देख रही है और रख रही है। देखो, हमारी समधिन क्या कर रही है। वह लाल रंग की बिछिया का भाव कर रही है। हमारी समधन बहुत मधुर और शिथिल स्वर में बोल रही है (शायद मदमस्त) उसके पास रुपये–पैसे तो कुछ हैं नहीं, पर सब चीजों का मोलभाव कर रही है।

गलिग-गलिग वलिया टुड़ा गल्ली डे लेड़ो
गलियों से न मिले लेडो टुड़ा
काली बादलिया रिमझिम-रिमझिम बाजे
गलिग-गलिग वलिया टुड़ा गल्ली डे लेड़ो
गलियों सेन मिले लेडो टुड़ा
काली बादलिया रिमझिम रिमझि बाजे

स्रोत-सागर उइके, ग्राम-भवरदी

लड़के से महिला कह रही है कि तुम गली-गली घूम रहे हो। गलियों में कीचड़ ही कीचड़ है। काली-काली बदलियाँ रिमझिम-रिमझिम बरस रहीं हैं।

सित्ता मड़ा मरका मड़ा जिगपाल ए धर्मी
सित्ता मड़ा मरका मड़ा जिगपाल ए धर्मी
भैया निया जुवानी बह अले वाये शारुम अले वायो
भैया निया जुवानी बह अले वाये शारुम अले वायो

स्रोत-सागर उइके, ग्राम-भवरदी

इमली और आम के वृक्ष में फल-फूल आ गये हैं। पर भैया, तुम कैसे हो तुम्हारी तो जवानी ही नहीं आ रही है। तुम्हें इस बात पर कोई शर्म भी नहीं आ रही है। भैया, तुम्हारी जवानी क्यों नहीं आ रही है?

ढोलकी टीमकी दूर फेंक दे चल भैया कपड़ा धोवन को
किड़किड़ी में झिरिया न खोद लेवो को कपड़ा धोवन को
ढोलकी टीमकी दूर फेंक दे चल भैया कपड़ा धोवन को
किड़किड़ी में झिरिया न खोद लेवो को कपड़ा धोवन को

स्रोत-सागर उइके, ग्राम-भवरदी

स्त्री-पुरुष से कह रही है कि ढोलक तबला दूर फेंक दो और चलो मेरे साथ कपड़े धोने को। चलो रेत में झीरा खोदकर पानी निकालेंगे और उसमें कपड़े धोयेंगे।

नवा कै टुन बइतूल कन्हैया ल रो कन्हैया रो
नवा चुड़ी बोतूल कन्हैया रो
मुश्किल ते मोका नवा कै दे वातू
बहुत दिया नाल धोका सींदू
लाल रंग वाटतान पोलका ते धोका आसत साया ते

स्रोत- रामविलास पर्ते, ग्राम-गुठानिया

कन्हैया ने मेरे हाथ को पकड़ा। कन्हैया ने मेरी चूड़ी को पकड़ा। बहुत मुश्किल से यह मौका आया। उसने बहुत धोखे से पकड़ा। वह बहुत दिनों से धोखा देता था। उसने लाल रंग डाला। उसने चोली के भीतर रंग डाला तो भूल से वह घाघरे में चला गया।

सीता होली गरसीता महल ते सीता होली गरसीता
बोना कै दे ढोलकी हैई यून बोना कैदे मंजीरा लाल
राम ता कै दे ढोलकी हैई यून सीता न कै दे मंजीरा लाल
सीता होली गरसीता महल ते सीता होली गरसीता

स्रोत–रामविलास पर्ते, ग्राम–गुठानिया

महल के भीतर सीता होली खेल रही हैं। किसके हाथ में ढोलक है? किसके हाथ में मंजीरा है? किसके हाथों में झांझ है? राम के हाथ में ढोलक है और सीता के हाथों में झांझ–मंजीरा है। सीता महल में होली खेल रही हैं।

बल्ला लियेन रेनी जाम्बू रे रासी सांई डो बावोन बल्ला
लियेन रेनी जाम्बू रे रासी सांई
रे रासी सांई डो बावोन हाजे आलोम मांडी बाजे बल्ला
लियेन रेनी जाम्बू रे रासी सांई

स्रोत–शिवराम, ग्राम–केवलारी

जीजा अपनी साली से कह रहा है कि उस टेकरी के ऊपर बहुत बड़ा जामुन का पेड़ है। आओ, हम तुम उस छाँव में बात करें, क्योंकि वहाँ पर बहुत गहरी छाँव है।

सिर सरके चामलिया अरे गगरिया में चंचल डोर
अरे सरके चामलिया सिर पे चोमलिया
हिलमिल चाले पुनिया रे बालेमा
सिर सरके चामलिया अरे गगरिया में चंचल डोर
अरे सरके चामलिया सिर पे चोमलिया
हिलमिल चाले पुनिया रे बालेमा
हाथ गगरिया सिर पे चोमलिया ये चंचल डोर
कुआं किनार गागार उतारी दो ये चंचल डोर
मुंडिया मज मज ऊंगली ये सोवाडाल बालेमा
हाथ गगरिया सिर पे चोमलिया ये चंचल डोर
कुआं किनार गागर उतारी दो ये चंचल डोर
मुंडिया मज मज ऊंगली ये सोवाडाल बालेमा

स्रोत–चरणदास, ग्राम–भागपुरा

लड़का-लड़की से बोल रहा है कि सिर पर चोमल और चोमल पर गगरी। ऐ चंचल लड़की! तुम पानी भरने के लिये डोर लेकर हृदय में प्रणय भरकर चलो। ऐ लड़की-ऐ चंचला! कुँए के किनारे अपनी गागर उतारो और अँगूठी को माँज लो, वह अँगुली में सुन्दर लगेगी।

खोलो ना दरे पटेल बोलो ना दो
खोलो ना दरे पटेल बोलो ना दो
हमको दियो खाना दाना तुमको दियो धन माला
राज करो रे पटेल तेरो मन की राज रे
हमको दियो खाना दाना तुमको दियो धन माला
राज करो रे पटेल तेरो मन की राज रे
खोलो ना देयो पटेल बोलो ना दयो रे
तुमको दियो बेटा टेली हमको दियो खाना दाना
राज करो रे पटेल तेरो मन की राज रे
तुमको दियो बेटा बेटी हमको दियो खाना दाना
राज करो रे पटेल तेरा मन की राज रे
खोलो ना दे पटेल बोलो ना दे रे
खोलो ना दे रे पटेल बोलो ना दे रे
तुमको दियो चांदी सोना हमको दिया खाना दाना
राज करो रे पटेल तेरो मन की राज रे
तुमको दियो चांदी सोना हमको दिया खाना दाना
राज करो रे पटेल तेरो मन की राज रे

स्रोत-हीरालाल, ग्राम-मुरलीखेड़ा

हे पटेल! (हे धनपति! हे सामर्थ्यवान! हे शक्तिशाली!) दरवाजा खोलो (आज आम जनों के लिए) ईश्वर ने हमें मात्र खाने को दाना दिया है, जबकि तुम्हें धन संपदा और वैभव। तुम राज करो। अपने मन मुताबिक खूब शोषण करो। हे पटेल! तुमको ईश्वर ने बेटा-बेटी परिवार सब कुछ दिया है और हमें तो बस खाने को दाने (टुकड़े) दिए हैं। हे पटेल! आज तो दरवाजा खोलो और अपने अहंकार को त्याग आम जन के साथ होली खेलो। ठीक है तुम्हारे पास धन संपदा सब कुछ है और हम दरिद्र हैं, पर उससे क्या (देखो, हमारे भीतर कितना उत्साह है) आओ पटेल! आओ होली खेलो।

रेनी जाम्बू रेनी जाम्बू टोजे गेजा मोरागी मोरागी डो लोचे गोया में
आमा नी चाबू माला मोरागी इयां नी चातू सोना मोर भागवान
आरूके मोरागी डो लोचे गोया में
रेनी जाम्बू रेनी टोचो गेजा मोरांगी मोरांगी डो लोचे गोवा के

आमा नी चाचू चोजा माजा मोरांगी इयां नी चाचू सोना मोर भागेवाना
आरूके जा मोरांगी डो लोचे गोया में
रेनी जाम्बू रेनी जाम्बू ओचो गेजा मोरांगी मोरांगी डो लोचे भागेवाना
आरूके जा मोरांगी उो लोचे गोया में
रेनी जाम्बू रेनी जाम्बू टोचो गेजा मोरांगी मोरांगी डो लोचे गोया में
आमा नी पाखा चोजा माजा मोरांगी इयां नी पाखा सोना मोर भागेवाना
आरूकेजा मोरांगी मोरांगी डो लोचे गोया में
रेनी जाम्बू रेनी जाम्बू टोचो गेजा मोरांगी मोरांगी मोरांगी डो लोचे गोया में
आमा नी पींचो चोजा माजा मोरांगी इयां नी पीचो सोना मोर भागेवाना

स्रोत–श्यामलाल, ग्राम–केवलारी

रेनी जामुन (एक छोटे प्रकार की जामुन जो पानी के आसपास बहुत होती है) खाते–खाते एक मोर अपनी धीमी चाल से ओये (रास्ता) में निकल गया। मोर को देखकर लोग मोहित हो उठे और पूछने लगे कि मोर तुझे इतना सुंदर किसने बनाया, तो कुछ लोग बोल उठे कि मोर को भगवान ने बनाया है। अब मोर रास्ते में आकर जामुन खाने लगा। लोग बोल उठे कि मोर की चोंच कितनी सुंदर है, इसे किसने बनाया? कुछ लोग बोल उठे, इसे भी भगवान ने ही बनाया होगा? रास्ते में मोर को जामुन खाते देख कुछ लोग बोले– मोर के पंख कितने सुंदर हैं, इन्हें भी भगवान ने बनाया है। मोर चाहे रास्ते में ही क्यों हो, वह केवल फल और जामुन खाता है, इसीलिए खूबसूरत है।

टोनेमा होररिया कू हन्जकेमा बाई रानी
हूड़ी नी होररिया कू हेजकेना रे
खाड धारोम होररिया हेजेकेन डो
बाई रानी सानी धारोम
रो सोना मान जाऊँ रे
ए चारू भरी पानी निकाला डो
बाई रानी अपना होररिया हेजेकेना रे

स्रोत–हीरालाल व लक्ष्मण पर्ते, ग्राम–मुरलीखेड़ा

देखो, घर में हुरियारे आए हैं। वे घर के आँगन में खड़े हैं। एक लोटा भर पानी निकालो और छोटे–बड़े सभी उनका स्वागत करो। आज हमारे घर हुरियारे आए हैं।

एलारियेन एलारिजा डाडा पाटला सेनारियेन
डाडा पाटला बेटा केन चुजमा सावन जो
एलारियेन डालाट पाटला सेलारियेन

ए डाडा पेटला सेलारियेन
ए डाडा पेटला बेटा केन आंगा

स्रोत–हीरालाल व लक्ष्मण पर्ते, ग्राम–मुरलीखेड़ा

होली के पश्चात् गाँव के मुखिया के घर गाना–बजाना होता है। गायक कह रहे हैं कि पटेल का लड़का अब बड़ा हो गया है, उसने नया धोती–कमीज पहना है। होली के दूसरे दिन पुराने कपड़े पहनना, क्योंकि दूसरे दिन रंग–गुलाल होने वाला है।

क्काली काठा भुरकुल मारगा काठा भुरकुलू
हिको मारे बांस मारा हिको आमा मोयरा रे
पेटला दारोम गोडई गोजकेन गीउो मावड थावन बा ढिडोमा
सूरी मूटी टेन ओलडे पेटल सूरी मूटी टेन ओलडे

स्रोत–शांतिलाल, ग्राम–छुरीखाल

खरगोश के बाल भूरे होते हैं। मोर के बाल चमकते हैं। जैसे बाँस लचकता है, वैसे मोर लचकता है। पटेल के आँगन में चूहा मरा हुआ पड़ा है। उसे गिद्ध ने मारा है। ऊपर उड़ती चील ताक रही है कि वह कब उसे लपक ले। (पटेलन ने कहा) पटेल! तुम मुट्ठी में छुरी पकड़ कर बाहर निकलो।

टीप– कोरकू गीतों में वातावरण का जैसा चित्रांकन सामने आता है, वह अद्‌भुत सृष्टि करता है। छोटी शक्ल के गीत बड़े विवरण की प्रस्तुति देते हैं।

होरारी डो गोरारी हीरा नार गो
होरारी डो गोरारी हीरा नार गो
साना मेरा गिटिंज केन कुडुकु आनकेरे
साना मेरा गिटिंज केन कुडुकु आनकेरे
पोरया मेरा गिटिंज केन लंडा मांडी आनकेरे
पोरया मेरा गिटिंज केन लंडा मांडी आनकेरे
अंधड़ा मेरा गिटिंज केन टाया टोया आनकेरे
अंधड़ा मेरा गिटिंज केन टाया टोया आनकेरे
लंगड़ा मेरा गिटिंज केन गिकोड़ो गोकड़ा आनकेरे
लंगड़ा मेरा गिटिंज केन गिकोड़ो गोकड़ा आनकेरे

'होरारी' नामक आदमी की हीरे जैसी स्त्री है। उस स्त्री का नाम 'गोरारी' है। एक दिन वह डोकरे के साथ सो गई। डोकरे ने कुछ नहीं किया, तो उसने पूरा दिन (मन ही मन) कुड़कुड़ाते हुए निकाल दिया। एक दिन वह एक 'पोर्‌या' (लड़के) के साथ सोई, तो हँसी

मज़ाक में दिन निकला। एक दिन वह अँधे के पास सोई तो टटोलने-टटोलने में ही दिन निकल गया। एक दिन लंगड़े के पास सोई, तो पाँव लंगड़ाने लचकाने में ही दिन निकल गया।

टीप- आम तौर पर यह गीत पुरुष लोग होली पर सालियों को हँसी-मज़ाक में सुनाते हैं। साथ ही बेमेल जोड़ी पर गहरा कटाक्ष भी है।

बल्ला काबाड़ोय जा आबा
बल्ला काबाड़ोय जा आबा
बल्ला काबाड़ोय जा आबा
बल्ला काबाड़ोय जा आबा
आमानी बुरा डाई जा
आमानी बुरा डाई जा
आबा केन्डे डोआ ईखेनीन्ज
आबा केन्डे डोआ ईखेनीन्ज

स्रोत-सीताराम पटेल, ग्राम-टेमलाबाड़ी

जंगल में काम करते-करते बेटी आई और बाप से शिकायत कर रही है कि तुमने टेकरी पर काम कबाड़ा करते-करते मुझे काले आदमी को दे दिया।

डंगरा नी बिडे माड़ी डंगरा नी बिडे जा
डंगरा नी बिडे माड़ी डंगरा नी बिडे जा
डंगरा नी ऐला जैसा किया बेला बानेजा
डंगरा नी ऐला जैसा किया बेला बानेजा
सोला नी बरसो का डानी डुले
माड़ी बारानी बरसो का निन्दोरा रे
डंगरा नी ऊमन लान्जे
डांगरा नी ऊमने जा डंगरा नी ऐला किया

स्रोत-सीताराम पटेल, ग्राम-टेमलाबाड़ी

ओ माली! तुम डंगर बोओ। ऐसा डंगर बोओ जिसकी बेल ऐसी अनुपम हो जैसी दूसरी नहीं। उसमें सोलह साल तक पानी दो और बारह साल तक सोओ। डंगर अब ऊँघने लगे। डंगर की बेल की तरह दूसरी बेल नहीं है।

टीप- सोलह साल की उम्र युवती के लिए है। और बारह वर्ष का समय सुख उपभोग हेतु। गीत फागुन का है। बात प्रतीकों में कही गई है।

बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा
बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा

बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा
अम चोचरस टे रागे जा कोम्बा
अम चोचरस टे रागे जा कोम्बा
बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा
बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा
बल्ला ढाने केन्डे पोन्डे कड़ा केनजा कोम्बा
अम चोचरस टे रागे जा कोम्बा
अम चोचरस टे रागे जा कोम्बा
अम चोचरस टे रागे जा कोम्बा

स्रोत–परसराम, ग्राम–लखनपुर

घाटी वाले मोहल्ले में काली मुर्गी बड़ी हो गई है। ओ मुर्गे! अब तुम अपनी चोंच से बाँग दो। आशय यह कि तुम्हारे प्रणय के लिए प्रकृति ने प्रांगण उपलब्ध करा दिया है। यह बात मुर्गे के बहाने कोई नवयुवा दूसरे से कह रहा है।

टीप:- यह गीत किसी तरुणी को लक्ष्य कर कहा गया है।

खुबड़ी तला सुकड़ी गेटे कबरा मिनू जोपे जा
खुबड़ी तला सुकड़ी गेटे कबरा मिनू जोपे जा
काना नी लाम्बेपुरा आटी सेनेवा
काना नी लाम्बेपुरा आटी सेनेवा
मिनु जाने कावड़ा जाने आमका जोपे से जा
मिनु जाने कावड़ा जाने आमका जोपे से जा
बदरी लियान ऊँचा के इयां बन मालूम जा
बदरी लियान ऊँचा के इयां बन मालूम जा
खुबड़ी तला सुकड़ी गेटे कबरा मिनू जोपे जा
खुबड़ी तला सुकड़ी गेटे कबरा मिनू जोपे जा
काना नी लाम्बेपुरा आटी सेनेवा
काना नी लाम्बेपुरा आटी सेनेवा
मिनु जाने कावड़ा जाने आमका जोपे से जा
मिनु जाने कावड़ा जाने आमका जोपे से जा
बदरी लियान ऊँचा के इयां बन मालूम जा
बदरी लियान ऊँचा के इयां बन मालूम जा

स्रोत–रामलाल, ग्राम–कुकड़ापानी

'काना' नामक व्यक्ति लाम्बेपुरा के बाजार से सुअर का माँस लाता है। वह माँस को एक छोटी मटकी में रखता है। एक चितकबरी बिल्ली उसे खा जाती है। वह व्यक्ति दूसरे से कहता है कि तुमने मेरा माँस खा लिया।

धरती नी परती न गरजा टिन्जकेन हूड़ी मावली गिटीजकेन
बोमा जो टाड़ई पोरकू हूड़ी बोवलो
धरती नी परती न गरजा टिन्जकेन हूड़ी मावली गिटीजकेन
बोमा जो टाड़ई पोरकू हूड़ी बोवलो
मारगा खाटा जिगमिगी डो कवाली खाटा बूबकूलू हिलामा हिलू
हिलू डो हिलू मोयरा रे
मारगा खाटा जिगमिगी डो कवाली खाटा बूबकूलू हिलामा हिलू
हिलू डो हिलू मोयरा रे
किलोरा जा किलोरा जेमा अगने जाजो रे किलारा डूडा बेलू
किलोरा जा किलोरा भूमका अंगने जाजो रे किलोरा डूडा बेलू
किलोरा जा किलोरा पटेल अंगने जाजो रे किलोरा डूडा बेलू
धरती नी परती न गरजा टिन्जकेन हूड़ी मावली गिटीजकेन
बोमा जो टाड़ई पोरकू हूड़ी बोवलो

स्रोत–हीरालाल व लक्ष्मण पर्ते, ग्राम–मुरलीखेड़ा

सारे संसार में उल्लास फैला हुआ है, यह उल्लास होली के कारण है। चलो रे लड़के–लड़कियों! होली माँ को जलाने चलो। आज चमकीले मोरपंख लगाकर मुलायम खरगोश की तरह हिलमिल कर नाचो। आज भूमका (कोरकू जनजाति के अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति) और पटेल के आँगन में नाचेंगे और गायेंगे।

जगा बांधो रे बईमान लड़का
जगा बांधो रे
लड़का जगा बांधो रे
धरती रे असमान बांध लड़का
जगा बांधो रे रे
सिवेड़ो रे मूवेड़ा की बांध लड़का
जगा बांधो रे
चाँद रे सूरज को बांध लड़का
जगा बांधो रे

स्रोत–चरणदास, ग्राम–भागपुरा

सिवेडो–मूवेडो (अपने क्षेत्र की सीमा पर रहने वाले देवताओं के नाम) जिस जगह पर

बैठकर हम फगनई गायेंगे, उस जगह विराजमान हों। सिवाड़ और मुहाड़ देव को पहले तुम जादू और मंत्र से बाँध लो, फिर फगनई गाओ। तुम धरती और आसमान को भी मंत्र से बाँध लो और उसमें अपनी सीमा बाँध लो, ताकि अपने फगनई गायन में कोई विघ्न न डाल सके। फगनई गाने से पहले तुम चाँद-सूरज को बाँध लो।

इनी बोको गल्ल गेटी केलवा जा
जा इनगेली अनोव सांगोवा
सेडो उरगा डाऊ डी टाड़े
लंडा बांडो मांडीवा
इनवा का गल्ल गेटा केलवा जा
इनी बोको गल्ल गेटी केलवा जा
जा इनगेली अनोव सांगेवा
सेडो उरगा डाऊ डी टाड़े
लंडा बांडो मांडीवा
इनवा का गल्ल गेटा केलवा जा

स्रोत-शिवराम, ग्राम-माथनी

बड़ा भाई छोटे भाई से कह रहा है कि अपना यह छोटा भाई गली में गिल्ली डंडा खेलता है। किसी दिन यह लड़ाई घर लायेगा, क्योंकि यह छोटा भाई सिरे वाले घर की लड़की से बहुत हँसता बोलता है, अर्थात् इन दोनों के बीच कोई खिचड़ी पक रही है।

बेटी हरामी डो कूकू नाता डो बेटी हरामी
आमा कुन्जई डो कूकू सेल सुबान गिंटिजकेन
सेला बेला पना घेओ टूकूलाटो कांटोबेन
बेटी हमारी डो कूकू नाता डो बेटी हरामी
आमा कुंज डो पोंपों डबली सुबान गिंटिजकेन

स्रोत-शिवराम, ग्राम-माथनी

एक लड़का बुआ से कह रहा है कि बुआ तुम्हारी लड़की बहुत हरामजादी है, क्योंकि यह लड़की उक्खल के पास सो गई। और तो और उक्खल और मूसल को लात मारकर खड़ी हो गई। 'मूसल' को पकड़ लिया। बुआ तुम्हारी लड़की मुर्गी रखने की डलिया में जाकर सो गई।

हो रामा करी गया सुणो देस
तुम गया कई सोणो लेना

हो रामा करी गया सुणो देस
तुम गया कई सोणो लेना
हो रामा करी गया सूणो देस
अरे सोनो मिल्यो न पीउ घर आया.....
बंशी वाला करी गयो सुणो देस
बंशी वालो मुसाफिर आज आजो म्हारा देस....
आजो म्हारा देस, आजो म्हारा देस
बंशी वाला मुसाफिर आज आजो म्हारा देस.....

हे ईश्वर! प्रिय मेरा संसार सूना कर गए। पता नहीं वे कैसा सोना (धन-धान्य अर्जन) लेने गए हैं। और मुझे न तो सोना (धन-धान्य) मिला है, न प्रिय की प्राप्ति हो सकी है। हे बंशी बजाने वाले यात्री! आज मेरे देश में आना। आज तुम अवश्य आना।

समय-समय का फेर है.....
और समय बड़ा बलवान
भील ने लूटी गोपिका
होरी कैसे खेलूँ.....
आज सखी होरी कैसे खेलूँ
जो सांवरिया के संग आज मैं होरी कैसे खेलूँ....
सांवरिया के संग आज मैं होरी कैसे खेलूँ....
होरी कैसे खेलूँ आज मैं होरी कैसे खेलूँ.....
कोरे-कोरे कलश मंगाए
जिसमें घोला रंग आज सखी जिसमें घोला रंग
और भर पिचकारी सन्मुख दे मारी,
चोली कर दी लाल.....
भर पिचकारी सन्मुख मारी,चोली कर दई लाल.....
कोरे-कोरे कलश मंगाए, जिसमें घोला रंग....
होरी कैसे खेलूँ आज मैं सखी होरी कैसे खेलूँ....
सांवरिया के संग आज मैं होरी कैसे खेलूँ
तबला बाजे-सारंगा बाजे, ढोल बजे मृदंग बाजे....
सांवरिया की बंसी बाजे, राधा नाचे संग....
होरी कैसे खेलूँ आज सखी होरी कैसे खेलूँ.....
सांवरिया के संग आज मैं होरी कैसे खेलूँ.....

समय-समय का अंतर है। समय बहुत शक्तिशाली होता है। भील (कृष्ण) ने गोपिका

को लूट लिया था। ऐसे में सखी आज मैं होली कैसे खेलूँ? वह भी कृष्ण के साथ कैसे खेलूँ? (कृष्ण मन जो हर लेते हैं)

कोरे-कोरे कलश मंगवाए गए हैं, जिसमें रंग घोला गया है। और पिचकारी भरकर सामने से मारी, जिससे चोली लाल हो गई (संकेत नायिका के पुष्ट स्तनों की ओर है)। तबला, सारंगी, ढोल और मृदंग जैसे वाद्य यंत्र बज रहे हैं। साथ में कृष्ण की बाँसुरी बज रही है। साथ में राधा नाच रही है। फिर भी मन में संदेह है, मैं अपने प्रिय के साथ होली कैसे खेलूँ?

कि धन्य-धन्य गुरुदेव, कोई महिमा अमित लखाए
धर्म से तू करना यतन, जग में प्रगटे आए
श्री सद्गुरु कबीर प्रभु सन्तन से पारध धाम हो
जय ताप मोचन शान्तिप्रद, क्रोध आदि गदमद काम हो
तम के हरण दिनकर गहो, मन के दमन मृगराज हो
राज के समन बेराज गहो अधपुन्ज नाशक गाज हो
होरी-होरी बरजोरी साँवरा मैं तुमसे हारी....
अरे होरी-बरजोरी साँवरा मैं तुमसे हारी
तुम्हारे संग ना खेलूँ होरी.....
होरी-होरी बरजोरी साँवरा मैं तुमसे हारी
तुम्हारी संग ना खेलूँ होरी.....
ओ राधा रुक्मा सिया जानकी,
सगरो ग्वालन आई
रंग के मटके भर लाई....
राधा, रुकम, सिया, जानकी सगरी ग्वालन आई
लायी थाली गुलाल की किशन के मुखड़े पर डाला
रंग की पिचकारी मारी रंग उड़ते फुभारां.....
होरी-होरी बरजोरी साँवरा, मैं तुमसे हारी....
अरे हाथ जोड़ूँ मैं पैंया पड़ूं, मत मारो श्याम पिचकारी
आज मोरी भीन्ज जाए सारी.....
अरे हाथ जोड़ विनती करुँ मत मारो श्याम पिचकारी
होरी-होरी बरजोरी साँवरा मैं तुमसे हारी.....

धन्य है गुरु जिनकी महिमा अमिट है। धर्मानुसार तू (बंदे) प्रयत्न करना और जगत में अपने अस्तित्व को सार्थक करना। सद्गुरु कबीर जैसे ईश्वरतुल्य संत पारस के समान हैं, जिनके स्पर्श से अंधकार का हरण होता है। सूर्य का उदय होता है। मन रूपी मृग का दमन होता है। रहस्य खुल जाता है। अंधकार का नाश होता है।

हे प्रिय! इस जोर जबरदस्ती की होली में मैं तुमसे हार गई हूँ। मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेल सकती। राधा, रुकमणि, सीता, जानकी सारी ग्वालिन आई हैं, जो थालियों में भरकर गुलाल लायी हैं। उस गुलाल को उन्होंने कृष्ण के मुख पर उड़ेल दिया है। वे रंग की पिचकारी से फुहार उड़ा रही हैं।

(इधर श्याम के पलटवार करते ही) हे श्याम! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। पाँव पड़ती हूँ। मुझे पिकचारी मत मारो, मैं तुमसे विनती करती हूँ। मैं तुमसे हार मानती हूँ।

तू बच न सकेगी सुनले राधा गोरी....
कर देंगे आज तुझे हम लाल राधिका गोरी...
ओरी सखियों के साथ में बनकर आई भोली
सखियों के संग में आई बनकर भोली....
मैंने भी सजाई ग्वाल बाल की टोली
सखियों के संग में आई बनकर भोली
मैंने भी सजाई ग्वाल बाल की टोली....
तू बच न सकेगी सुन ले राधा गोरी....
कर देंगे आज तुझे हम लाल राधिका गोरी.....
तू बच सकेगी सुन ले राधा गोरी....
अरे उस दिन की तुझे क्या मालूम नहीं है-गुइंया
सब ग्वाल बाल मिलकर के चुराई चुनरिया.....
उस दिन की तुझे क्या मालूम नहीं है-गुइंया...
कर देंगे आज तुझे हम लाल राधिका गोरी....
तू बच न सकेगी सुन ले राधा गोरी....
कर देंगे आज तुझे हम लाल राधिका गोरी....
ओर जब शुरू हुआ है खेल रंग का भारी....
भर-भर के मारे ग्वाल बाल पिचकारी....
जब शुरू हुआ हैखेल रंग का भारी.....
भर-भर के मारे ग्वाल बाल पिचकारी....

हे राधा गोरी! आज तुम बच न सकोगी। आज हम तुम्हें रंग डालकर लाल कर देंगे। तुम अपनी सखियों के साथ बड़ी भोली बनकर आई हो। देखो, इधर हमने भी ग्वाल-बाल की एक टोली बना ली है। (मुकाबला होगा) अब तुम किसी सूरत में बच नहीं सकोगी। क्या उस दिन की तुम बात भूल गई हो, मेरी प्रिय! जब संगी साथियों के साथ मिलकर मैंने तुम्हारी चुनरिया चुरा ली थी। आज हम तुम्हें अवश्य ही रंग से लाल कर देंगे। और रंग गुलाल का खेल प्रारंभ हो गया है। ग्वाल-बाल भर-भर कर पिचकारी मार रहे हैं। अब तू कैसे बच सकेगी राधिका गोरी।

तू बड़ी भागिनी अरे कौनी तपस्या कीन्ह
अरे तीन लोक के नाथ को बस में लीन्हों कीन्ह
कि तुम बाँधों रे मुकुट श्रीकृष्ण खेल ले ओ छोरी....
ओरे ले लो रे हाथ में, रंग भरो रे पिचकारी....
तुम बाँधो रे मुकुट श्री खेल लेओ होरी.....
ले लो रे हाथ में रंग भरो रे पिचकारी....
तुम बाँधो रे मुकुट श्रीकृष्ण खेल ले ओ होरी....
ले लो रे हाथ में रंग भरो रे पिचकारी....
ये भर-भर मटका रे आज रंग घोलाया....
राधे ने गुलाल मनमोहन पे उड़ाया....
ये भर पिचकारी आज कृष्ण ने मारी...
सखियों के झुण्ड में भीन्जे राधा प्यारी...
तुम बाँधों रे मुकुट श्रीकृष्ण खेल ले ओ होरी...
ले लो रे हाथ में रंग भरो रे पिचकारी....
ये रंग पंचमी महा रे फाग की होरी....
तुम हो जाओ तैयार राधिका गोरी....
राधे के संग में सखियाँ गोरी-गोरी....
जिनऽ भरी रे रंग की मटकी प्यारी-प्यारी....
राधे के संग में सखियाँ गोरी-गोरी....
जिनऽ भरी रे रंग की मटकी प्यारी-प्यारी...
तुम बाँधों रे मुकुट श्रीकृष्ण खेल लेओ होरी....
ले लो हाथ में रंग, भरो रे पिचकारी....

तू बड़ी भाग्यवान है। तू कौन सी तपस्या की है? जिससे तीन लोकों के स्वामी तुम्हारे वश में हो गए? हे कृष्ण! तुम मुकुट धारण करो। और हाथ में रंग भरी पिचकारी लेकर होली खेलो। भर-भर मटके (घड़े) रंग घोला गया है। राधिका ने गुलाल मनमोहन श्रीकृष्ण पर उड़ाया है। और कृष्ण ने पिचकारी मारी है, जिससे राधा प्यारी सखियों के समूह में भींग रही है। हे कृष्ण! तुम मुकुट धारण कर होली खेलो। आज रंगपंचमी का त्योहार है और फाग का महीना है। राधा गोरी तुम आज तैयार हो जाओ। वे सखियाँ जिनके पास रंग से भरी मटकियाँ हैं, जो प्यारी-प्यारी हैं। हे कृष्ण! तुम मुकुट धारणकर हाथ में रंग भरी पिचकारी ले लो।

कि मुरलिया दीनी बाके हाथ में कि छीनू बाको रंग
ओरऽ सभी कन्हैया बन जाए तो राधा नाचे रे किनके संग
ये गुलाल का रंग बना किशन खेले सबसे होरी
मल लिया रे बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की रे पिचकारी.....

ये गुलाब का रंग बना.... आ
ये गुलाल का रंग बना किशन खेले होरी....
मल लिया रे बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की रे पिचकारी....
ये सब-सिंगार पेरकर कौन खड़ी रे गोरी....
ओर मच रही गरदम गरदी रे हो रही आपस में होरी....
ओ जिन्हों में खेले गिरधारी....
ओ भर-भर मारे पिचकारी....
इधर-उधर से ले ली पिचकारी
मल लिया बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की पिचकारी...
गुलाब का रंग बना दिया किशन खेले सबसे होरी....
मल लिया बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की रे पिचकारी....
ये मत जाओ कोई पनिया भरन को सुनले गोरी....
ओ ठाड़ो री मोहन मारग में भर-भर मारे पिचकारी....
ये गुलाब का रंग बना किशन सबसे खेले होरी
मल लिया बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की रे पिचकारी....
ये चोवा चंदन गोरी रख जा खोलूं रे फागुन में....
अरे जो मन में होरी रे खेलन को चालो रे
ये गुलाब का रंग बना किशन सबसे खेले होरी
मल लिया बेजाऽ गुलाल हाथ कंचन की रे पिचकारी.....

उसके हाथ में मुरली पकड़ाकर उसका रंग छीन लेंगे। यदि सभी कृष्ण बन जायेंगे तो राधा किसके साथ नृत्य करेगी? गुलाब का रंग बना है, जिससे कृष्ण सबके साथ होली खेल रहे हैं। सबको बेजा रंग मल दिया है, उसके हाथ में सोने की पिचकारी है। सारे श्रृँगार पहनकर पता नहीं कौन गौरी खड़ी है, सब ओर भीड़-भाड़ है। लोग आपस में उलझ रहे हैं और होली खेल रहे हैं। सारे श्रृँगार पहनकर इस गर्दिश में कोई गोरी खड़ी है और गिरधारी होली खेल रहे हैं।

कोई भी पानी भरने मत जाओ, रास्ते में मोहन कृष्ण खड़े हैं जो भर-भर कर पिचकारी मार रहे हैं। ये चंदन तिलक गोरी मेरे पास छोड़ जा फाग के महीने में इसे खोलने (मिटाने) का मन बार-बार होता है। यदि तुम्हारे मन में होली खेलने की चाह है, चलो कुंज में वहाँ खेलेंगे।

दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया
तू है बिरज की नार हमारी दे दे बांसुरिया....
दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया
दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया
अरे ना सोने की रे ना चाँदी की रे बांस की बांसुरिया

या रे राधिका बांस की बांसुरिया
सात-पांच ने किया मंसूबा चुराए बांसुरिया....
ना सोने कीरे ना चाँदी की रे बांस की बांसुरिया....
या रे मान ले बांस की बांसुरिया
तू है बिरज की नार हमारी दे दे बांसुरिया.....
दे दे बांसुरिया ओ राधिका बांसुरिया.....
रैन तारे बीते गगनो..... मान ले तुलसे गगन वो
तुम दिवला हम रैन बाती जलती मंदिर में.....
दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया
अकल का घर न्यारा न्यारा रे, अक्ल का घर न्यारा न्यारा रे
अरे त्रिया जात में मानस डोले चातुर को मारा.....
दे दे बांसुरिया ओ राधिका दे दे बांसुरिया
तू है बिरज की नार हमारी दे दे बांसुरिया

हे राधा! तू ब्रज की नारी है, हमारी बाँसुरी हमें दे दे। यह न सोने की है न चाँदी की, यह तो निरे बाँस की है। पाँच सात लोगों ने मंत्रणा कर बाँसुरी चुरा ली है। हे राधा! तुम ब्रज की नारी हो हमारी बाँस की बाँसुरी दे दो। देखो, रात्रि बीत रही है गगन के तारे बीत रहे हैं। अब हमारा कहना मान लो, तुम दीपक हो हम रात्रि की बाती हैं, जो मंदिर में जलती है। हे राधा! हे ब्रज की नारी! हमारी बाँसुरी हमें लौटा दो। अक्ल का घर विलक्षण होता है। स्त्री जाति में मानस (बुद्धि) बहक जाती है। चतुर से चतुर मारा जाता है। हे राधा! हमारी बाँसुरी दे दो।

ओ मच रही गोकुल मऽ धूम मुरलिया बाजऽ.....
होली खेलऽ नन्द को लाल कृष्ण महाराजा.....
ओ मच रही गोकुल मऽ धूम मुरलिया बाजऽ.....
हो एक हिरनाकुश की बहन होलिका होरी.....
ओ प्रहलाद का संग-संग जल बल हो गई ढेर.....
ओ थारी अकल बंसी बजी नन्द के कान्हा.....
ओ बंसी की धुन में मामा कंस घबराना.....
ओ थारी ऐसी रे होरी मची रे गढ़ गोकुल में.....
ओ जंगल का जानवर नाचऽ रे कई-कई रंग में.....
ओ घर घूमऽ की छप्पर हलऽ पृथ्वी नवखंड मऽ.....
ओ पाताल नाग झूमी रह्यो बंसी की धुन मऽ.....
होली खेलऽ रे नन्द को लाल कृष्ण महाराजा.....
मच रही गोकुल मऽ धूम मुरलिया बाजऽ.....

गोकुल में धूम मची है। नंद के लाल कृष्ण राजा होली खेल रहे हैं। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका प्रहलाद के साथ होली में जलकर ढेर हो गई है। कृष्ण के बुद्धि कौशल की बाँसुरी बज रही है। इस धुन पर कंस मामा घबरा रहा है। नंद के लाल कृष्ण होली खेल रहे हैं और गोकुल में धूम मची है। चारों ओर होली ही होली है, जंगल के पशु-पक्षी भी नाच रहे हैं। गोकुल गढ़ में होली की धूम मच रही है। पशु-पक्षी भी विविध रंगों में नाच रहे हैं। गोकुल में होली की धूम घर-घर में मची है। इतनी ज्यादा कि घर घूमने लगे, छप्पर हिलने लगे और पृथ्वी के नवखंड डगमगाने लगे। पाताल में शेषनाग कृष्ण की बाँसुरी पर झूम उठा है। चारों ओर होली की धूम मची है।

ओ तू सुन ले हमारी बात राधिका गोरी.....
ओ कर देंगे तुझे भी आज लाल आज की गोरी.....
ओ सब इधर-उधर से सखियों को है घेरी.....
सखियों के झुण्ड में ओ भीगे राधा प्यारी.....
होरी का झगड़ा मचा कि गहना बिखरा.....
ये राधा सखियाँ भूल गई सब नखरा.....
तू सुनले हमारी बात राधिका गोरी.....
कर देंगे तुझे भी लाल आज की गोरी.....

राधा गोरी आज हमारी बात सुन लो,आज हम तुझे होली में रंगकर ही रहेंगे। हमने यह ठान लिया हस्। राधा को सब सखियों ने इधर-उधर से घेर रखा है। उस समूह में वह भीग रही है। होली की झूमाझटकी में सबके गहने बिखर गए हैं। सब अपने नखरे भूल गई हैं। याद है तो केवल होली का मजा लेना।

होरी श्याम हरदम कैसे, होरी श्याम होरी
ओ हरदम कैसे होरी श्याम होरी.....
एक बेर होरी ओर दस बेर होरी कब तक रहूं अबोली
बोलूं रे तोसे, अरे बईयां झकझोरन
बोलूं रे सुरमई आंखन डोलन.....
सनमुख दरसन दौड़ी रे.....
होरी श्याम हरदम कैसे, होरी श्याम होरी.....

हे श्याम! हर वक्त कैसे होली खेलो? एक बार ठीक है। दो बार ठीक है। दस बार ठीक है, पर यह हरदम की होली कैसे संभव है? फिर तुमसे बोले बिना भी नहीं रहा जाता। मैं तुमसे कैसे बांह झकझोर कर बोलती हूँ। बोलती हूँ तो सुरमा लगी तुम्हारी नटखट आँखें कैसे डोलती हैं। तुम्हें सम्मुख पाकर तुम्हारे दर्शन के लिए मैं दौड़ी आती हूँ। पर तुम तो कि बस हरदम होली ही होली।

प्रीत करो ऐसी करो कि जैसी लोटा डोर
गलो फंसाए अपनो और दे दे नीर झकोर
प्रीत करो ऐसी करो कि जैसे करे कपास
जीए न जी वो संग रहे मरे नऽ छोड़े साथ
मन धीरऽ बोलना लीजो कि बाईजी ने बरजो
म्हारा मनड़ा मनऽ धीरऽ बोलना लीजो.....
धीरऽ बोलना लीजो राज म्हारा मनऽ धीरऽ बोलना लीजो.....
कि बाईजी नऽ बरजो
ओ म्हारा मनड़ा मनऽ धीरऽ बोलना लेवजी राज मनऽ धीरऽ बोलना लीजो कि
बाई जी नऽ बरजो
म्हारा मनड़ा धीरऽ बोलना लेवजी राज
ओरऽ कम्मर कटारो बाकड़ो जी कई सोरठ री तलवार
कि तेजा बांधो गुजरात का गले मऽ मोहन माला
गुजरात का गले मऽ मोहन माला.....
कम्मर कटारो बाकड़ो जी कई सोरठ री तलवार
कि तेजा बांधों गुजरात का गले में मोहन माला
गुजरात का गले मऽ मोहन माला.....
ओरऽ सजन चला कई चाकरी रे घर में सुंदर नारऽ
कि झलकत अंगिया म्हारा चुन्दरी नथपैनी परजादा
धीरऽ बोलना लीजो राज मनऽ धीरऽ बोलना लीजो
म्हारा मनड़ा मनऽ धीरऽ बोलना लीजो

प्रेम करो तो ऐसा करो जैसा लोटे और डोरी में होता है। लोटा अपने गले को फँसाकर नीर उड़ेल देता है। प्रेम करो तो ऐसा करो जैसे कपास करता है। जो जीते जी तो साथ रहता है मरते वक्त भी साथ नहीं छोड़ता (कफन)।

हे मन! धीरो बोलो बाई जी ने बोलना वर्जित कर रखा है। कमर में टेढ़ी कटार और सौराष्ट्र की तलवार बँधी है। गुजरात का तेजा गले बँधा है और गले में मोहन की माला है। ऐसे में प्रिय किसी चाकरी पर जा रहा है और घर में सुंदर नारी अकेली छूट रही है। उसकी अंगिया झलक रही है। चुनरी और नथ भी दिख रही है। हे मन! धीरे बोलो, मेरे मन धीरे बोलो।

यो नैन लगाकर मारऽ रंग पिचकारी.....
यो कान्हो बड़ो रे बईमान खेली रयो होरी.....
ओरऽ पीछऽ सऽ पकड़यो चीर मऽ तो शरमाणी.....
म्हारी नरम कलाई मत कर खेंचातानी.....

पीछऽ सऽ पकड़यो चीर मऽ तो शरमाणी....
यो कान्हो बड़ो रे बईमान खेली रयो होरी.....
यो नैन लगाकर मारऽ रंग पिचकारी.....

ये कान्हा बहुत बेईमान है, जो होली खेल रहा है। यह नैनों से मारकर फिर पिचकारी की मार मारता है। यह बहुत बेईमान है। जैसे ही कान्हा ने पीछे से मेरा चीर पकड़ा, मैं लजा गई। कान्हा मेरी नर्म-नर्म कलाई है, इससे खींचातानी मत करो। यह कान्हा बड़ा बेईमान है।

ये वृन्दावन की कुन्ज गलिन है प्यारी.....
सखियों के झुण्ड में भींजे राधा प्यारी.....
ये रंग पिचकारी आज कृष्ण ने मारी.....
राधे की रे भीन्जे चोली रे चुनर सारी.....
ये वृन्दावन की कुन्ज गलिन है प्यारी.....
सखियों के झुण्ड में भींजे राधा प्यारी.....

यह वृन्दावन की कुंज गलियाँ हैं, जो प्रिय है। सखियों के समूह में राधा भींग रही हैं। रंग भरकर पिचकारी कृष्ण मार रहे हैं। राधा की चोली और चुनरी सारी भींग गई है। ये वृन्दावन की कुंज गलियाँ हैं, जिसमें राधा सखियों के समूह में भींग रही हैं।

देस-देस में भेज पत्रिका सब राजन को बुलवाया.....
मिथिलापुर में राजा जनक ने सीता स्वयंवर रचवाया
भई सीता स्वयंवर रचवाया
शिवशंकर ओर महादेव ओर लंका से रावण आया
कहे बाणासुर अपने पिता से क्यों न जानकी पहुँचाई
शिवशंकर ओर महादेव ओर लंका से रावण आया
अवधुपरी से बालक आए उतरे बगीचा में
गोरी-गोरी बैंया.....उनसे धनुष न टूटेगा

देश-देश में पत्र भेजकर सब राजाओं को बुलवाया गया है। मिथिला में राजा जनक ने सीता का स्वयंवर रचा है, जिसमें शिवशंकर महादेव और लंकापति रावण आये हैं। बाणासुर अपने पिता से कह रहा है कि जानकी अब तक क्यों नहीं पहुँचाई? अवधपुरी से दो बालक आये हैं, जो बगीचे में उतरे हैं उनकी गोरी-गोरी बाहें हैं, उनसे धनुष कैसे टूटेगा?

पिया मत जाओ रे परदेस सामने होरी.....
हऊँ नानी सी नादान दिल की भोलई
ये फागुन का महिना लगा फाग मच रही रे.....
सजना के संग में लाल-लाल हो रही रे.....

हऊँ नानी सी नादान दिल की भोलई
पिया मत जाओ रे परदेस सामने होलई

हे प्रिय! परदेस मत जाओ, होली का त्योहार सामने है, मैं कम वय की नादान हूँ, मेरा हृदय भोला भाला है। फागुन का महीना लग चुका है। फाग की धूम मची है। सजने संग सब लाल हो रहे हैं। हे प्रिय! परदेस मत जाओ, मेरी वय कम है, उस पर मेरा हृदय भी भोला है।

अपणी रे अपणी खेलऽ रंग होरी रे तमाशा देवन का.....
अरे प्रथम चतुरा रे बोली महिना मस्त लगा है फागुन का
भई मस्त लगा रे फागुन का
अपणी रे अपनी नऽ जात खेलऽ रंग होरी रे.... तमाशा देवन का....
अरे प्रथम चतुरारे बोली महना मस्त लगा है फागुन का
ओरे बोले महादेव और बुलाई गौरा पार्वती
ओरऽ वे भी होरी लगे रे खेलन महाबलि कैलाशपति....
अरे शिवजी मन के भोले, महादेव बुलाई पार्वती
अरे भई बुलाई पार्वती
ओरऽ वे भी होरी लगे रे खेलने महाबलि कैलाशपति.....
अरे प्रथम चतुरा बोली महिना मस्त लगा है फागुन का
भई मस्त लगा रे फागुन का

अपने-अपने प्रियतम के साथ सब होली खेल रहे हैं। इसका तमाशा देवों तक में है। पहले चतुरा बोली कि यह मस्त महीना फागुन का है। इसमें सब अपने प्रियतम के साथ खेल रहे हैं। गौरा पार्वती तक महाबलि कैलाश पर्वत पर होली खेल रहे हैं। शिवजी भोले-भाले हैं, उनको भी पार्वती ने बुला लिया है और कैलाश पर होली खेली जा रही है। यह मस्त महीना फागुन का है, इसमें सब अपने प्रियतम के साथ होली खेल रहे हैं।

आज भुवन मऽ रचयो रास होली खेलऽ रे गिरधारी....
अरे खेलो रे गिरधारी हो होली खेलो रे गिरधारी.....
अरे वृन्दावन की कुंज गलिन में होरी रे गड़वाई.....
अरे होरी रे गड़वाई आज होरी जो-
हो आज होली रे गड़वाई
अरे होली खेलने आजो रे गिरधारी
आज भुवन मऽरचयो रास होली खेलऽ गिरधारी
होरी खेलो रे गिरधारी हो होली खेलो रे गिरधारी

आज संसार भर में रास रचा है, जिसमें गिरधारी कृष्ण होली खेल रहे हैं। वृन्दावन की

कुंज गलियों में होली गड़वाई गई है। कृष्ण तुम उसमें होली खेलने जरूर आना। आज सारे संसार में रास मचा है। हे कृष्ण! होली खेलो।

फागुन का महिना लग रहा होरी खेलऽ सब नर नारी
अरे भई होरी खेलऽ नर नारी
सजन गया रे परदेस हमारा हम पर अई बैरन होरी.....
हुई वो लहर की पहर की रे रूस गया बालम हम सऽ
भई रूस गया बालम हम सऽ
सुबह शाम मैं सुमरण करती न मिलता साजन हम सऽ....
एक पत्रिका भेजो सखी री प्रथम महिना कार्तिक का
भई प्रथम महिना कार्तिक का
फिर कर खबरा न लेत म्हारो बिलम गयो कहीं सखियन मऽ.....
फिर कर खबरा न लेत म्हारो बिलम गया कहीं गढ़ गोकुल मऽ
नित जाड़े का ठंड जोरका पड़ता.....
नित स्याला का ठंड जोर से पड़ता....
काटे अंग हिया सखी री थररर-थररर कांपऽ नर-नारी
भई कांपऽ थररर-थररर नर-नारी
फागुन का महिना लग रहा होरी खेलऽ सब नर-नारी
पिया गया परदेस हम पर अई बैरन होरी.....

फाग का महीना लगा है, सब नर-नारी होली खेल रहे हैं। हमारे प्रिय परदेस गए हैं, जिस समय पर बैरी होली आई है। लहर प्रहर बन गई है। हमारे प्रियतम हमसे रूठ गए हैं। सुबह-शाम मैं उन्हें याद करती हूँ। पर वे नहीं मिलते। एक पत्र मैंने उन्हें कार्तिक माह में ही भेज दिया था, पर उन्होंने मुड़कर खबर नहीं ली। हो सकता है मेरा प्रियतम किन्हीं अन्य स्त्रियों में बिलम गया हो। अन्यथा खबर जरूर लेते। हो सकता है वे गढ़ गोकुल में हों? यहाँ ठंड जोर का पड़ता है शीत की ऋतु है, फाग का महीना है, प्रिय परदेश में है, ऐसे में यह बैरी होली आई है।

चुन्दड़ मोरी रंगो कृष्ण खेलूँ थारा संग
ओ रंग खेलूँ थारा संग
आयी ऋतु बसंत रैन समैया दो घड़ी का रंग है.....
चुन्दड़ मोरी रंगो कृष्ण जी खेलूँ थारा संग
ओ रंग खेलूँ थारा संग
आयी रे ऋतु बसंत रैनसमैया दो घड़ी का रंग है...
सुन भैया मोरे
रंग में सुन भैया मोरे

सोलह सौ एक आठ चुनरी घर में सैंया रे.....
सुनो कृष्ण जी कहे सुन भैया मोरे
सोलह सौ एक आठ गोपियाँ कृष्ण को संग रंग में कृष्ण संग
इस कारण मैं चुन्दड़ रंगाऊँ भर रही पिचकारी....
इस कारण मैं चुन्दड़ रंगाऊँ भर रही पिचकारी.....
जरा दाग चुन्दड़ पर लागा है.....
बसंत महीना निकला जाता है रे.....
आयी ऋतु बसंत रैन समैया दो घड़ी का रंग है.....
चुन्दड़ मोरी रंगो कृष्ण जी खेलूँ तोरी संग

हे कृष्ण! मेरी चुनरी रंग दो, मैं तुम्हारी साथ होली खेलूँगी। बसंत ऋतु आ चुकी है। रात्रि का दो घड़ी का समय है। हे कृष्ण! मेरी चुनरी रंग दो। सोलह सौ आठ चुनरी घर में है। इस कारण मैं चुनरी रंगाऊँगी। जरा सा दाग चुनरी पर लगा है। यह बसंत का महीना है। मेरी चुनरी रंगों कृष्ण जी।

अरे बाजऽ रे बांसुरिया श्याम थारी बाजऽ बांसुरिया
अरे तेरे संग होरी खेलां श्याम तेरी बाजऽ बांसुरिया.....
ओ बाजऽ बांसुरिया रे श्याम तेरी बाजऽ बांसुरिया
ओ श्याम तोरी बाजऽ बांसुरिया
ओ एक पायं म्हारो बिन पायल को अरे एक में पायलिया
अरे एक नयन म्हारो बिन कजला को एक में काजलिया....
बाजऽ बांसुरिया ओ श्याम तोरी बाजऽ बांसुरिया

देखो श्याम की बाँसुरी बज रही है। हम श्याम के संग होली खेलेंगे। मेरे एक पाँव में पायल है और एक पाँव बिना पायल का है। एक आँख बिना काजल लगी है अर्थात् नायिका ने इतनी होली खेली है कि उसकी एक पायल कहीं खो गई है और झूमाझटकी में एक आँख का काजल मिट गया है। या फिर होली की उमंग में वह एक पायल बांधना भूल गई और एक आँख में सुरमा भी नहीं आंज सकी।

मांग सिंदूर भरवाए दिया.....
अरे नया-नया सिंगार किया,ओ नया-नया सिंगार किया....
ओर फिर कोरी चुनरिया ओढ़ाय दिया....
दुल्हन मन अपना सोच किया....
ओ नाराज होएंगे मेरे पिया.....
क्योंकि सब दिन तो पियर में बिताए दिया....
होली में दुल्हन जा बैठी रे मायके से नाता तोड़ दिया

ससुराल की करी तैयारी दुल्हन ने बाना पहन लिया....
जबसे पिया का निज परवाना,फड़के मेरा घबराए जीया
ससुराल की करी तैयारी, दुल्हन ने बाना पहन लिया.....

मांग में सिन्दूर भरकर नव श्रृँगार किया है। नायिका ने कोरी चुनरी ओढ़ी है, वह दुल्हन बनी है और सोच रही है कि प्रिय आज नाराज हो जाएंगे। क्योंकि सारा दिन तो मायके में ही बीत गया। दुल्हन डोली में जाकर बैठ गई और मायके से आज नाता तोड़ लिया। ससुराल जाने की सारी तैयारी कर ली और दुल्हन का बाना पहन लिया। प्रिय का परवाना जबसे आया है, नायिका का जी घबरा रहा है।

अरे छम-छम करती जल भरन चली रे पनिहारी....
करके सोलह सिंगार
करके सोलह सिंगार सिर पर सारी रे
छम-छम करती जल भरन चली रे पनिहारी.....
क्या बांकी अदा दिखलाई लड़क लड़कन की.....
नवरत्न जड़े गुलहार झड़क जोवन की.....
क्या बांकी अदा दिखलाई लड़क लड़कन की.....
नवरत्न जुड़े गुलहार झड़क जोवन की....
सिर सरक चुनरिया बदन बसन्ती साड़ी.....
छम-छम करती जल भरन चली रे पनिहारी.....
करके सोलह सिंगार सिर पर सारी रे.....

सोलह श्रृँगार करके छम-छम चंपक बजाती पनिहारी जल लेने को जा रही है। उसने सोलह श्रृँगार करके सिर पर साड़ी डाल रखी है। उसकी अदा बांकी है, जिसमें लड़कपन दिख रहा है। नवरत्नों से बना गले का उसका हार है। उसका यौवन भड़क रहा है। उसके सिर से चुनरी सरक जाती है और बदन पर बासंती साड़ी भी। वह छम-छम करते जल भरने जा रही है। उसने सोलह श्रृँगार किया है।

बड़े बड़ाई न करे करे बड़े न बोले बोल
ओर हीरा मुख से ना कहे लाख टका मेरा मोल
बानी ऐसी बोलिये मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होय।
अरे ओर आसरो छोड़ आसरो.....
अरे लि लो कृष्ण कन्हाई को
हे बनवारी आज मायरो भर जाना रे नानी बाई को....
ओ त्रेता युग में रामचन्द्र बन, गौतम की नारी तारी

भई गौतम की नारी तारी....
भीलनी के फल जूठे खाए, शंका त्याग दई सारी....
ओर आसरो छोड़ आसरो, लि लो कृष्ण कन्हाई को....
ओ करमा के घर खिचड़ो खायो, अरे करिया धम गन गाना रे
छल कर तूने पूतना मारी, कुब्जा भई अज्ञाना रे....
अरे प्रीत लगाकर गोपियाँ तर गई....
मेरा जी को काज सरयो
चीर बढ़ायो द्रुपद सुता को दु:शासन को मार दियो....
ओर आसरो छोड़ आसरो लि लो कृष्ण कन्हाई को
हे बनवारी आज मायरो भर जाना रे नानी बाई को....

जो वास्तव में बड़ा होता है, वह बड़बोलापन नहीं करता। जैसे हीरा कभी अपने मुख से नहीं कहता कि वह लाख रूपये मूल्य का है। ऐसी वाणी बोलना चाहिए, जिससे मन का आपा खो दे। ऐसी स्वयं को शीतल होती ही है, दूसरे को भी शीतलता प्रदान करती है।

सारे आश्रय छोड़कर कृष्ण का आश्रय ले लो। हे बनवारी! आज तुम नानी बाई का मायरा भरो। तुमने त्रेतायुग में राम बनकर गौतम की पत्नी का उद्धार किया था। भीलनी स्त्री के जूठे फल खाए थे। तुम्हारे मन का कोई संदेह नहीं था। तुमने करमा के घर खिचड़ी खाई। पूतना को मारा। कुब्जा इन सबसे अज्ञानी है। तुमसे प्रीत लगाकर गोपियाँ तर गई हैं। तुमने द्रुपद पुत्री का चीर बढ़ाकर लाज बचाई। दु:शासन को मारा। सब आश्रय छोड़कर बनवारी का आश्रय ले लो, जिनकी इतनी महिमा है।

कि श्याम का काला बदन, काली घटा से काला
एक दिन तो गजब ही कर गया मुरलीवाला
ओ गुजरिया कहती यशोदा से....
संभाल अपना गोकुल कान्हा जुलम किया हो हमसे....
किधर से आया मोहन तेरा
खींचा मेरा चीर हाथ से, पकड़ा हाथ मेरा....
किधर से आया मोहन तेरा....
संभाल अपना गोकुल कान्हा जुलम किया हो हमसे....

श्याम का शरीर काली घटाओं से भी ज्यादा काला है। एक दिन तो वह मुरलीवाला गजब ही कर गया। मेरी तुमसे प्रार्थना है- माता यशोदा तुम संभालो अपना गोकुल यहाँ कान्हा जुलम करता है। पता ही नहीं चलता और अचानक कान्हा कहीं से आकर कभी चीर पकड़ लेता है, तो कभी मेरा हाथ। तुम अपना गोकुल संभालो (मैं तो चली) यहाँ कान्हा जुलम करता है।

ओर रंग रहा न कृष्ण रहा है जब से गया है फाग
अरे नयनन की वो रस रहे और तन में लगी रे आग
आज भोर में उठी सखी री घर पर बोल्यो काग
अरे मिलवा देओ भगवान कृष्ण से क्यों लगाए आस
कि ग्वालन से कृष्ण जी कहे मधुर बोली में....
अरे तुम कहाँ छुपाए जाती हो चोली में....
मैं दध बेचन को चली ये गठरिया पाई....
अरे याही में हीरा मोती देख देखाई....
या गुणी हमारी गेंद जो तुमने ओ उठाई....
हम जानत अपनी चोली में छुपाई....
मत करो हँसी की बात श्याम टोली में
तुम कहाँ छुपाए जाते हो चोली में....

जब से फाग गया है न रंग रहा है न कृष्ण रहा सिर्फ आँखों में उस आनंद का रस औरतन में आग लगी है। आज सुबह जब मैं उठी सखी तो देखा घर पर कागा बोल रहा था। अब कृष्ण से मिलवा ही दो, क्यों आस लगवाते हो? कृष्ण मीठी बोली में ग्वालन से कह रहे हैं, तुम चोली में छुपाए कहाँ जा रही हो? वह कहती है- मैं तो दूध बेचने को जा रही हूँ ये गठरिया लेकर। शायद तुम्हें इसी में हीरे मोती दिख रहे हैं। कृष्ण कहते हैं- तुम बड़ी गुणी हो तुमने हमारी जो गेंद उठाई थी, वह हम जानते हैं, तुमने चोली में छुपा ली है। गोपी कहती है- श्याम समूह में तो ऐसी हँसी की बात मत करो। श्याम पूछ रहे हैं- तुम चोली में क्या छुपाकर ले जा रही हो।

नींद से जागने वालों को मजा मिलता है....
ढूंढने वालों को बेशक का खुदा मिलता है.....
इश्क करते हैं तो शाहरत का मजा मिलता है
अगर इश्क सच्चा है तो बन्दे को खुदा मिलता है
ओरऽ मुझको तो आये लाज
हो मुझको तो आवे रे लाज नगरिया सारी जाग गई रे.....
ओ सजन मुझे छोड़ो भोर भई रे.....
कि चढ़ी आयो रे गगन को तारो....
या बदलिया पीली पड़ गई रे.....
घर-घर बोल्या रे लोग नींद से जगाया सब कोई रे....
चढ़ी आयो रे गगन को तारो.....
या बदलिया पीली पड़ गई रे....
सियार मारे हूक कोयल बोलऽ
ओ हो कोयल ओलतन मऽ बोलऽ रे....

फूलों सी खिल गई रे.....
सजना भर छोड़ मेरा तो हाथ....
देख में होय गई बरबाद....
जुर्म की करो न पहली रात.....
अरे रखो सबकी मर्याद
अकल को तुमने कहाँ खो दई रे
मुझको तो आवे लाज, नगरिया सारी जाग गई.....

नींद से जागने वालों को मजा आता है, जो ढूंढता है नि:संदेह उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। जो प्रेम करते हैं उन्हें प्रसिद्धि का सुख भी मिलता है। अगर प्रेम सच्चा है तो निश्चित ही ईश्वर की प्राप्ति भी होती है।

मुझे शर्म आ रही है। सारी नगरी अब जाग गई है। हे प्रियतम! अब मुझे छोड़ो सुबह हो गई है। सुबह का तारा आसमान में उदित हो चुका है। बादल पीले-पीले हो रहे हैं। घर-घर से लोगों के बोलने की आवाज आने लगी है। सब नींद से जाग रहे हैं। सियार हूक मार रहा है, कोयल भी बोल रही है। घर की 'ओलतन' में कोयल बोल रही है। बुलबुल चहक रही है। कलियाँ फूलों की तरह खिल चुकी है। प्रियतम अब तो मेरा हाथ छोड़ दो, मुझे अब मत रोको। देखो, मैं बर्बाद हो गई हूँ। बीती रात अपराध की रात थी। पर अब कुछ तो मर्यादा का पालन करो। तुमने अपनी बुद्धि भी खो दी क्या? मुझे बहुत शर्म आ रही है। सारी नगरी जाग चुकी है।

कि कबीरा खड़ा बाजार में सबकी मानत खैर
अरे ना किसी से दोस्ती तो ना किसी से बैर
निज आसन पर बैठ कबीरा, मुख से बोलऽ वाणी
पल छल का है मोह, जीव तुम मत करो अभिमानी.....
ये पांच तत्त्व शरीरा रे ब्रह्म गुरुज्ञानी
ओ तार-तार में भरी रे रागिनी, मीठी लगी रे वाणी....
भईया पांच तत्त्व का बना शरीरा मुख बोले वाणी
रे कबीरा मुख बोले वाणी
अरे तार-तार में भरी रागिनी मीठी लगी रे वाणी.....

बाजार में खड़ा कबीर सबकी खैर चाहता है। उसकी न किसी से दोस्ती है न किसी से दुश्मनी। अपने निज आसन पर बैठकर कबीर कह रहा है कि यह समय छल कपट से भरा है, जीव तुम मोह और अभिमान मत करो। यह शरीर पंचतत्त्वों से मिलकर बना है, जिसका एक दिन तर्पण करना होगा। ब्रह्म को जानने वाले गुरु और ज्ञानी यह बताते हैं। इस शरीर के तार-तार में रागिनी भरी है। मीठी वाणी से इसे जानो।

यो हुई गया रे लाल आसमान....
अब तो तुम जागो रे म्हारा सजना
वो तो देंण लगयो बांग काग वो
वो तो देंण लगयो बांग काग बोल्यो म्हारा अंगना रे
हुई गयो रे लाल आसमान
अबऽ तो तुम जागो रे म्हारा सजना
अबऽ तो तुम जागो रे म्हारा सजना

आसमान लाल हो चुका है। हे प्रियतम! तुम जागो। मुर्गा बांग दे रहा है, कागा बोल रहा है। आसमान लाल हो गया है। अब तो जागो।

अरे बात तुम्हारी मैं नहीं मानूँ
अरे रस्ता हमारा छोड़ कन्हैया, रोको न हमको सांवरिया
अरे भई रोको न हमको सांवरिया
झूमा झटकी करो न हमसे फोड़ो ना मेरी घाघरिया....
अरे रास्ता हमारा छोड़ कन्हैया

तुम्हारी बात नहीं मान सकते। हमारा रास्ता छोड़ दो कन्हैया। हमारा रास्ता मत रोको, सांवरे कृष्ण। हमसे झूमाझटकी मत करो। हमारी गगरी मत फोड़ो। हम तुम्हारी बात नहीं मान सकते, हमारा रास्ता छोड़ दो कृष्ण।

होरी खेलऽ पांचई पांडव ओर नारायण.....
सखी वृन्दावन की कुन्ज गलिन में....
राधे के हाथ गुलाल थाल भर रंगा.....
होली खेले राधा प्यारी.....
राधे न दियो रे छिड़काव मोहन कब मिलिया.....
मैं बाँधू हिंडोलना दोनों रे हिल मिल झूलिया.....
राधे के हाथ गुलाल थाल भर रंगा
ओ खेलऽ राधा प्यारी

वृन्दावन की खूबसूरत गलियों में पाँचों पांडव और कृष्ण होली खेल रहे हैं। राधा के हाथों में रंग गुलाल से भरा थाल है, जिससे वह होली खेल रही हैं। राधा ने यह सोचकर कि पता नहीं मोहन अब कब मिलेंगे और अवसर का लाभ लेते हुए मोहन पर रंग छिड़क दिया। कहा– मैं झूला बाँधती हूँ, दोनों मिलकर झूलेंगे।

क्या मचल गई रे महाराज राधिका गोरी....
खेलेंगे आज मनमोहन से होरी....
कन्या को रचयो ब्याव कि मंडप छायो....

ओ वो दुल्हा बनके राय आंगन मऽ आयो....
एक लियो रे हाथ में थाल कि ऊपर झारी.....
राधे ने गुलाल मनमोहन पर डाला.....
क्या मचल गई रे महाराज राधिका गोरी.....
खेलेंगे आज मनमोहन से होरी.....
एक मार रंग पिचकारी उड़ी रे फुआरा.....
वो मारऽ रंग की मार भीन्ज गई सारी....
वो करुणाकर प्रीत की केसर घोली....
राधे ने गुलाल मनमोहन पर डाला....
तुम बड़े हो बिरज के लोग मुलायजा किसका....
तुम देव रे हमारा धन गोरस का फगवा.....
ये तो मचल गई राधा गोरी....
खेलेंगे आज मनमोहन से होरी....

राधा आज मोहन से होरी खेलने को बेहद आतुर है। एक कन्या का विवाह रचाया है। मंडप छा दिया गया है। बड़े से आँगन में वह दूल्हा बन के आया है। एक हाथ में थाल है,दूसरे में जल की झारी। और राधा ने मोहन के ऊपर गुलाल डाल दिया। राधा आज मोहन से होली खेलने को बहुत आतुर है। किसी ने पिचकारी से रंग की फुहार छोड़ दी है। किसी दूसरे ने रंग ऐसा फेंका कि सारी गोपिकाएँ भींग गईं। मन में करुणा भरकर प्रेम की केशर घोली गई है। फिर राधा ने मनमोहन पर गुलाल डाला। कहा– तुम ब्रज के लोग बड़े हो, किसी का मुलाहिजा नहीं करते। तुम हमारे देव हो, यह गौ धन का फगवा है।

लाल कृष्ण महाराजे
मची गढ़ गोकुल में धूमऽ मुरलिया बाजे....
होरी खेले नंद को लाल कृष्ण महाराजे....
तूने बिरोध बंसी बजाई रे नन्द के कान्हा
अरे कान्हा रे नन्द के कान्हा
ग्वालन बुलाकर बात लगयो रे धमाकाना....
तूने विरोध बंसी बजाई रे नन्द के कान्हा
फिर बाजा बजे रे कई रंग में लगे सुहाना....
बंसी की धुन में मथुरा में कंस घबराना....
तुम ऐसे हो महाराज आप रघुनन्दी.....
गरीबों के सुधारों काज आप महाराजे.....
ओर गोरे कृष्ण के पुरी पीताम्बर साजे....
मची गढ़ गोकुल मऽ धूम मुरलिया बाजे....

गढ़ गोकुल में होली की धूम मची है। नंद के लाल कृष्ण होली खेल रहे हैं। बाँसुरी बज रही है। ऐसे में कान्हा तुमने विरोध की बाँसुरी कैसे बजा दी? सब ग्वाल-बाल को बुलाकर धमकाना शुरू कर दिया। फिर बाजा बजने लगा, जो सुहाना लग रहा था। बंसी की धुन सुनकर मथुरा में कंस घबराने लगा। हे भगवान! तुम्हारी लीला ऐसी ही है। आप हम गरीबों के कार्य सुधारो। गोरे कृष्ण के पुर में पीताम्बर सजे हुए हैं।

नन्दा को नन्दलाल खेली रयो होरी गिरधारी.....
ओ सुनो ब्रज गोकुल की नारी.....
फागुन का महिना हो मस्त, सखी फागुन का महिना.....
कुंवर कन्हैया लाल मारी रयो दम पर दम नयना.....
नहीं रे किसी की जान जाए, फरियाद किसे कहना.....
गोकुल का रहना हो सजोगढ़
ग्वालन कहे कन्हैया लाल.....
हम पर मत डालो गुलाल.....
छोड़ दो पहली तुम्हारी चाल.....
नन्दा को नन्दलाल खेली रयो होरी गिरधारी.....
ओरऽ बदमाश कन्हैया लाल बड़ो रे बदमाश कन्हैया लाल
लियो रे रंग केसरी झपट गोपियन पर दीयो डाल.....
भांग जहर जंजाल बनाई.....
सब सखियन को पकड़कर पिला रयो नन्दलाल.....
नशे में मस्त भये सारे.....
नाचे गावै सब नर-नारी.....
रंग से उड़ रहे अजब फुआरे.....
ग्वालन हो गई दीवानी.....
नन्दा को नन्दलाल खेली रयो होरी गिरधारी.....
अरे धन्य ब्रज गोकुल के वासी.....
धन्य कन्हैया लाल धन्य गोपाल रहवासी.....
तकदीर गोपियन के साथी.....
अबोल दिल पर बोल कन्हैया डाले प्रेम पाती.....
जो नर ब्रज गोकुल में बसिया.....
उनको चढ़ा ज्ञान का नसिया.....
होरी कहे बंगड़सिंग रसिया.....
नन्दराम कहतो लाचारी.....
नन्दा को नन्दलाल खेली रयो होरी गिरधारी.....
सुनो बिरज गोकुल की नारी.....

ब्रज और गोकुल की नारियों सुनो आज नंद के लाल गिरधारी कृष्ण होली खेल रहे हैं। यह फागुन का मस्त महीना है। सुनो सखी! कुंवर कन्हैया घड़ी-घड़ी आँख मार रहा है। गोकुल में रहना है। चाहे जान चली जाये। कोई कहता है गोकुल में ऐसा नहीं होता कि किसी की जान ही चली जाये, ग्वाल-बाल कहते हैं हमारे कृष्ण जो हैं।

हे कृष्ण! हम पर मत डालो गुलाल। हमें छोड़ दो। तुम अपनी पहली बारी छोड़ दो। पर कृष्ण बहुत शरारती और चालाक है। उन्होंने केसरिया रंग झपट कर गोपियों पर डाल दिया। फिर कृष्ण ने भांग रूपी जहर का जंजाल बनाया और सखियों को पकड़कर पिला दिया। सब नशे में मस्त हो गए। सब नाचने लगे, गाने लगे। रंगों की अजीब फुआर उड़ने लगी। ग्वालन प्रेम दीवानी हो गई। ब्रज गोकुल के वासी धन्य हैं कि उनके साथ कृष्ण होली खेल रहे हैं। जो चुप हैं, उनके हृदय पर भी कृष्ण ने प्रेम की पाती डाल दी है। आज जो भी मनुष्य ब्रज का वासी है वह ज्ञान के नशे में जकड़ा है, यहाँ तक कि बंगल सिंह भी रसिया गाने लगा है। यह कृष्ण की होली का प्रताप है।

मैं हाथ जोड़कर समझाऊँ रे सुमणां करना.....
कृष्ण सांवरा मिले तो फगवा लेना.....
ये राधा रुक्मा सबई ग्वालन आई.....
गिरधर ने आज सब दूर धम मचाई.....
जब उठा रे नन्द के लाल भंग पिलवाई.....
सब सखियन की अंखियन लालम छाई.....
मैं हाथ जोड़कर समझाऊँ रे सुमणां करना.....
कृष्ण सांवरा मिले तो फगवा लेना.....
क्या छटे बिरज का लोग है गोविन्दा.....
मैं हाथ जोड़कर समझाऊँ रे सुमणां करना.....

मैं हाथ जोड़कर यह समझा रही हूँ। यह बात याद रखना कि कृष्ण सांवरिया कहीं मिले तो फगवा जरूर लेना। ये राधा रुक्मिण सभी ग्वालिन आई हैं। गिरधारी ने आज सब दूर धूम मचा दी है। आज कृष्ण ने सब सखियों को भांग पिला दी है, जिसके नशे में उनकी आँखें लाल हो गई हैं। ये ब्रज के लोग छटे हुए हैं। मैं हाथ जोड़कर समझा रही हूँ। यह याद रखना कृष्ण सांवरिया कहीं मिले तो फगवा जरूर लेना।

होरी पूजन चल दियो राधा राधेश्याम।
राधे के हाथ गुलाल है रंग लिए घनश्याम।।
धीमी चाल तुम चलो सजन म्हारी गोदी में ललना....
होरी पूजन चली राधिका आगे चले सजना....
चार खम्भ का महल बनाया वहाँ बाँधा झुलना

आते रे जाते झुला रे देती सोजा रे ललना
बड़ी कजर वक्त की नार ने लीपना सा घोला
घड़ी एक ललना ने ओरी सास मऽ-लीपी आऊँ घर अंगना
सेब सुआली गुजा पापड़ी, नरम बना चुरमा
घड़ी एक ललना ले ओरी सास मऽ जिमी आऊँ घी चुरमा

राधा और कृष्ण होली की पूजा करने जा रहे हैं। राधा के हाथ में गुलाल है और कृष्ण के हाथ में रंग है। राधा-कृष्ण से कह रही है कि हे सजन! तुम धीमे चलो, मेरी गोद में बालक है। राधिका होली पूजने जा रही हैं, उसके आगे उनके साजन चल रहे हैं। आते-जाते राधा बालक का पलना हिलाती हैं। लोरी में कहती भी हैं कि सो जा बेटा। बड़ी देर में राधा रानी ने लीपने के लिए गोबर घोला और सास से कहा कि तुम घड़ी दो घड़ी बालक को ले लो, मुझे आँगन लीपने जाना है। होली पर्व पर घर में सेंव, गुजिया, पपड़ी और चूरमा बना है। सासू माँ घड़ी दो घड़ी बालक को ले लो, मैं भी इन मिष्ठानों का आस्वादन कर लूँ।

होरी खेलन चल दिए श्री कृष्ण भगवान
राधा के संग ग्वालनी मोहन के संग-ग्वाल
होली खेलऽ नन्द को लाल कृष्ण महाराजा
मची गढ़ गोकुल मऽधूम मुरलिया बाजऽ
ये भर-भर मटकी रंग केसरिया घोला
राधे ने गुलाल मनमोहन पर डाला
मोहन मारे पिचकारी उड़े फुआरा
राधे का पकड़ा हाथ मोहन ने रंग डारा
छुप-छुप कर मारे श्याम घनश्याम आज ठिठौरी
पीछे से पकड़ा चीर बहुत शरमाणी
म्हारी नरम कलाई मत कर खेंचातानी।

भगवान कृष्ण होली खेलने जा रहे हैं। राधा के साथ सारी गोपिकाएँ हैं, वहीं सारे गोपवृंद मोहन के साथ हैं। नंद के लाल महाराज कृष्ण होली खेल रहे हैं। गोकुल गढ़ में धूम मची है। मुरली बज रही है। मटकियों में भर-भर केसरिया रंग घोला गया है। राधा ने मनमोहन पर गुलाल डाला और मोहन ने पिचकारी की फुआर उड़ा दी। फिर मोहन ने राधा का हाथ पकड़ लिया और रंग डाल दिया। श्याम छुप-छुप कर पिचकारी मार रहे हैं। उन्होंने राधा का चीर पीछे से पकड़ लिया, इस पर राधा बहुत लजा गई। कहा- मेरी कलाई बहुत नर्म है, खींचातानी मत करो।

चन्दा घेरे चाँदनी लंका घेरे हनुमान।
कृष्ण घेरे राधिका दइया माँगे दान।।
सखी दूध बेचन को चली उमरीया बारी....

मधुबन में मिले घनश्याम मटकिया फोरी....
बातों में हुई तकरार मोहन से खटकी....
तू हट जा हठीला राधा कह कर खटकी....
तू क्यों करती अभिमान चले ना तेरी....
मैं छोडूँ नहीं सुन आज राधिका गोरी....
पीछे-पीछे चल दिए श्याम दध चोरी
यहाँ लगे हमारो दान राधिका गोरी

चंदा ने चाँदनी को घेरा। हनुमान ने लंका घेर लिया। और कृष्ण ने राधिका को घेर लिया। देने वालों दान दो। सखी दूध बेचने को चली जा रही है। मधुबन में घनश्याम मिल गए और उसकी मटकी फोड़ दी। बातों-बातों में तकरार बढ़ गई और मोहन से बात खटक गई। राधा ने गुस्से में कहा- कृष्ण तू घमंड मत कर तेरी एक नहीं चलेगी। इस पर कृष्ण ने कहा कि आज मैं तुझे नहीं छोडूँगा। श्याम पीछे-पीछे चल दिए दूध चोरी करने के लिए। और कहने लगे कि यहाँ हमारा दान अवश्य लगता है, राधिका इससे कोई बच नहीं सकता।

ये बसन्त हो राज
ये बसन्तपंचमी मस्त फाग का महीना।
मन मोहन सांवरा होरी खेलने आया....
ये राधा हो राज....
राधा हो रुकमणि महल से आई
देखो-देखो मोहन ने किस रंग फाग मचाई....
अलबेला हो राज....
अलबेला मोहन ने सुनकर खबरा पाई
ओनऽ तरह-तरह का रंग बना करी चतुराई....
ये बसन्त पंचमी मस्त फाग का महीना.....

ये बसंत ऋतु और फाग का मस्त महीना है। मनमोहन सांवरे होली खेलने आये हैं। राधा और रुक्मिण महल से होली खेलने आई हैं। देखिए मोहन ने किस-किस तरह फाग की धूम मचाई है। मोहन अलबेला है। उसने चतुराई से तरह-तरह के रंग बना लिए हैं।

अवध मऽ होरी खेलऽ री चारो भाई....
राम और लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न ये चारों भाई....
कायन को तो रंग बनायो कायन की पिचकारी....
अरण बरण को रंग बनायो कंचन की पिचकारी....
छुटवन कीच भयो अंगना मऽ खेल रहे रघुराई....
चार चरण को खेल रचायो है शोभा भरणी न जाई....

माता कौसल्या धन्य भाग है तुलसीदास यशगाई....
अवध मऽ होरी खेलऽ री चारों भाई....

अवध में होली खेली जा रही है। राम-लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्न चारों भाई होली खेल रहे हैं। किसका रंग बनाया है और किसकी पिचकारी? तरह-तरह के रंग हैं और सोने की पिचकारी है। बचपन है और आँगन में कीचड़ है, जिसमें रघुराई खेल रहे हैं। चारों वर्ण का खेल रचा है, इसकी शोभा वर्णित नहीं की जा सकती है। माता कौशल्या के धन्य भाग हैं, तुलसीदास उनका यशगान कर रहे हैं।

वृन्दावन सो वन नहीं, नन्दगाँव सो गाँव
राधा वर सो वर नहीं, कृष्ण नाम सो नाम
पार्वती शिवनार अयोध्या में रामचन्द्र खेले होरी.....
आज सब देवन की भीड़ भई भारी.....
हरता कर्ता ब्रह्मा विशनु पार्वती शिव सज उठे
यह लाख करोड़ जीव जन्तु सजने लगे
ये चोपड़ा चन्दन मल-मल केशर घोली,
ब्रह्मा विशनु आंगन में खेल रहे होरी
अरे पारवती शिवनार अयोध्या में
रामचन्द्र खेलऽ होली.....
आज सब देवन की भीड़ भई भारी.....

वृन्दावन सा वन नहीं है और नंद गाँव की तरह कोई गाँव नहीं है। राधा के वर सा कोई वर नहीं है और कृष्ण के नाम सा कोई पुण्य नहीं है। शिव-पार्वती तथा अयोध्या में रामचन्द्र होली खेल रहे हैं। आज सारे देवताओं की भारी भीड़ है। सृष्टि और संहार करने वाले ब्रह्मा-विष्णु-महेश सब आये हैं। लाखों जीव-जन्तु एकत्रित हुए हैं। चन्दन और केशर मल-मल कर घोली गई है।

श्याम अब होरी सो होरी, श्याम हरदम कैसी होरी.....
एक बार होरी सहस बार होरी कब तक रहूँ अबोली.....
बोलूँ तो बहियाँ झकझोरत सनमुख करत ठिठोली उठे रंग की झोली.....
श्याम अब होरी सो होरी, श्याम हरदम कैसी होरी.....
ओर सखी सब टोली की टोली हमको मिले अकेली.....
बाँह पकड़ मेरी आँख मिचोली मल दीनी रोली.....
कहो ये कैसी ठिठोली श्याम.....

श्याम अब होली में क्या होली? हरदम कैसी होली? एक बार होली हजार बार होली

(आपकी) कब तक इस बात पर अबोली रहेगी? बोलती हूँ तो बाँह झकझोरते हो। सामने ठिठोली करते हो। रंग की झोली उड़ाते हो। श्याम होली में अब कैसे होली। (मैं तो सर्वस्व समर्पण कर चुकी) और सुनो सखि जब होली की टोली हमको अकेले पाती है तो बाँह पकड़कर आँख में रोली मल देते हैं। ये कैसी ठिठोली है श्याम?

अंधाधुंध मचाई गरदी गढ़ गोकुल मऽ
मनमोहन खेली रयो होरी ख्याल कुछ रंग मऽ
घर-घर से ग्वालन निकली फगवा सारे
जेनऽ पेरीयो पिताम्बर पेलो रेशमी सारे
कई एक नऽ गहना लिया बदन पर डारे
काजल कुकु जिनऽ सुरमा पाटी पाड़े
भला चीर उमदा-उमदा भाते.....
रंग लिया कटोरा हाथे.....
राधा रुक्मणि लिया साथे.....
घर-घर से ग्वालना निकली चली ब्रज नारी
पड़ी झूला ब्रज मऽ फिरी रही अली गली
सखियों से पूछने लगी राधिका गोरी
मनमोहन का घर किधर कहो सहेली
भटकती फिरे सभी ग्वालना
गयो कहाँ नन्द को कान्हा
किया क्या हम पर जादू टोना
किया क्या हम पर जादू टोना रहो हिल मिल
सखियों को सुनाकर कहे राधिका गोरी
मनमोहन का घर यही सकल ब्रज नारी
बदमस्त पकड़ लाओ जाओ जी हरी
मति रखो आज मुलाजा खेलां सब होरी
भला ये महिना फाग का आया
मोहन से फगवा लेना
मोहन पर डालो रंग दूना
मोहन पर डालो रंग दूना डरो मत दिल मऽ.....

गोकुल गढ़ में होली की गर्दिश छाई हुई है। मनमोहन होरी खेल रहे हैं। घर-घर से पीताम्बर पहनकर गोपिकाएँ निकल पड़ी हैं। कई तो जेवरों से लदी-फंदी हैं। काजल-कुंकुं और पाटी बनाकर बढ़िया वस्त्र धारण कर निकली हैं जो बहुत अच्छी लग रही हैं। हाथों में रंग का कटोरा है। राधा-रुक्मिण साथ हैं। दोनों हिल-मिलकर रह रही हैं। घर-घर से निकलकर ब्रज

नारी जा रही है, पर गलियों में वे भूला पड़ गई हैं। राधा सखियों से कृष्ण के घर का पता पूछ रही हैं। सब गोपिकाएँ भटक रही हैं, समझ में नहीं आता कि नंद का कृष्ण कहाँ छुपा है? हम पर न जाने कैसा जादू कर दिया है। राधा ने सभी गोपिकाओं से कहा कि यही कृष्ण का घर है, सब जाओ और उन्हें पकड़ लाओ। आज बिल्कुल भी उनका मुलाहिजा नहीं करना। उन्हें रंग कर ही छोड़ेंगे। यह फाग का महीना है, मोहन से फगवा लेकर ही रहेंगे। मोहन पर दुगुना रंग डालना है।

अबो थारा घुंघरू बाजी रह्या झनन।
घुंघरू बाजी रह्या झनन.....
होली खेलऽ कृष्ण का संग राधा थारा घुंघरू बाजी रह्या झनन.....
कृष्ण कहे सुन राधा प्यारी आज हम खेलांगा होरी
आज हम खेलांगा होरी संग मऽ ग्वाल बाल टोली
राह में रोके कन्हैया.....
वो फोड़े सिर की मटकिया.....
या आज अकेली आई रे,ओनऽ संग सहेली ना लाई रे.....
तुम देखो कृष्ण का ढंग,राधा थारा घुंघरू बाजीरया झनन
ग्वालन कहे सुन माखन चोर पकड़ ले जा रहा वन की ओर.....
कहूँगी साड़ी फाड़ दी मोर, यशोदा तेरे नंद किशोर.....
कृष्ण ने बात या समझाई.....
बात मत घर कहना जाई.....
वा दौड़ महल मऽ आई रे.....
यशोदा के बात सब कही रे.....
मत कर ग्वालन को संग राधा थारा घुंघरू बाजरीया झनन.....

राधा के पाँव में बँधे घुँघरू झनन झन झनकार कर रहे हैं। राधा कृष्ण के साथ होली खेल रही है। रास्ते में कृष्ण राधा को रोक लेते हैं और सिर पर रखी मटकी फोड़ देते हैं। कृष्ण सोचते हैं- यह अच्छा अवसर है, आज यह अकेली है, इसके साथ कोई सखी भी नहीं है। कृष्ण के रंग ढंग इस समय देखने लायक हैं। राधा कह रही है- सुनो! माखनचोर पकड़कर वन की ओर ले जा रहा है। आज मैं माता यशोदा से जाकर कहूँगी कि कृष्ण ने मेरी साड़ी फाड़ दी। कृष्ण समझाने-बहलाने लगे कि राधा मेरे घर जाकर यह मत कहना। किन्तु वह दौड़कर महल में गई और माता यशोदा को सब बात बता दी। माता यशोदा कहने लगी कृष्ण गोपिका के साथ ऐसा मत करो, यह ठीक नहीं है।

बसंत पंचमी आई रे यारो, या होरी मुझको बैरन.....
मेरा पिया परदेस गया, मैं होरी खेलूँगी किसके संग.....
सारी सखियाँ होरी खेल रही, अपने-अपने प्यू के संग.....

मैं दुखियारन खड़ी आंगन में, तन में लग रही अगन अगन.....
बसंत पंचमी आई रे यारो, या होरी मुझको बैरन.....
मेरा पिया परदेस गया, मैं होरी खेलूँगी किसके संग.....
बारह बरस का करार करके, अब तक नहीं आयो मेरा बलम.....
हल्दी के मोहे दाग लगाकर, छोड़ी गयो मुझे कपटी बलम.....
बसंत पंचमी आई रे यारो.....

होली बीत गई, बसंत पंचमी आ गई, पर मैं ही बैरी हूँ। मेरे प्रिय परदेश गए हैं, मैं किसके साथ होली खेलूँ? सभी सखियाँ अपने-अपने प्रिय के साथ होली खेल रही हैं। केवल मैं विरहिणी अपने आँगन में खड़ी निहार रही हूँ। मेरे तन में अगन लगी है। मेरे प्रिय बारह वर्ष का करार करके गए थे, पर अब तक नहीं लौटे। उन्होंने तो केवल हल्दी के दाग लगाकर मुझे कपटपूर्वक छोड़ गए। (नायक विवाह के तुरंत बाद परदेश चला गया है। वह भी एक दो वर्ष नहीं, पूरे 12 वर्ष के लिए। वियोगिनी की मनोदशा समझी जा सकती है।)

चुनर मोरी रंगो कृष्ण जी, फिर खेलां होरी.....
अब ऋतु आई बसंत पंचमी, दिल में मगरूरी.....
चुनड़ के तो कारागिरी, भात-भात न्यारी.....
सफेद काला पीला पचरंग, लाल-लाल लागी.....
चुनर मेरी रंगों कृष्णजी फिर खेलो होरी.....
भर-भर मटका केसर घोला, अबीर घुलवाया.....
भरी रंग पिचकारी कृष्ण ने राधे पर डाला.....
चुनर मेरी रंगो कृष्ण जी फिर खेलां होरी.....

हे कृष्ण! मेरी चुनर रंगों फिर होली खेलेंगे। बसंत पंचमी की मदहोश करने वाली ऋतु आ गई है। चुनर में भाँति-भाँति की न्यारी कारीगरी करो। सफेद, काला, पीला, लाल पाँचों रंग लगाओ। पहले मेरी चुनर रंगों कृष्ण जी फिर होली खेलेंगे। मटके भर-भर केशर और अबीर घोले गए हैं। फिर कृष्ण ने भरकर पिचकारी राधा पर डाली।

सीख दुनिया की तू मत लीजे
म्हारा दूध की रखजे लाज
कलपना जननी की तू सुनी लीजे.....
आठ नौ मैना रहयो रे गरभ मऽ लाल
तुखऽ ढो यो रे संग लई नऽ
मनऽ बड़ा रे उठाया तिरास
कि बेटा हिलकी दई दई नऽ
आज तो कोई नी रे म्हारा कलु का दरम्याना

म्हारा करम न धोको दियो रे छोड़ी मत जाना
गरज दूसरा की तू मत करजे म्हारा दूध की रखजे लाज
सवा रे मैना तक रही रे कीच मऽ
छीत तू अब करऽ रे म्हारी
मल मूतर मनऽ धोया रे म्हारा बेटा
हऊँ सदा रे रही आली
बेटा मनऽ नहीं रे करी मनमानी
छोड़ी दियो पीनो ठंडो पानी
करम हार करतार कलपना अबला की सुनी लीजे
म्हारा दूध की.....
चार दिन की या रे चाँदनी
तू गलियन में भाग्यो
बेटा तू रोज गराणो लाय
बात सुनु किन किन की जाय
म्हारा नवल कन्हैयालाल
कहन जननी को तू सुन लीजे
म्हारा दूध की रखजे लाज
आई रे जवानी तू हुयो रे दिवानो
बात सब भूली गयो बचपन की
म्हारा कंठ पुतरिया लाल
होली तू खेली रयो किन रंग की
बुरी तू संग मर करजे लाल
तुखऽ लाई देऊँ दुनिया का खयाल
सीख दुनिया की तू मत लीजे

हे पुत्र! तू दुनिया के व्यसन मत सीखना। तू मेरे दूध की लाज रखना। अपनी माँ की यह करुण कथा तू सुन ले। आठ नौ माह मैंने तुझे अपने गर्भ में रखा है, मैंने बहुत कष्ट उठाये हैं, इतने ज्यादा कि मैं हिलक-हिलक कर रो पड़ती थी। आज मेरे पास कोई नहीं है। मेरे भाग्य ने ही मुझे धोखा दिया है। हे पुत्र! मुझे अकेला मत छोड़ जाना। पुत्र तू यह सीख याद रखना कि तू दूसरे से कोई अपेक्षा मत करना। तू मेरी लाज रखना। सवा महीने मैं कीचड़ में रही हूँ और तू मेरी ही छीत करता है। मैंने तेरा मल मूल धोया है, मैं तेरी सेवा में हमेशा भीगी रही हूँ। मैंने कभी अपनी मनमानी नहीं की, कभी अपनी इच्छाओं को प्राथमिकता नहीं दी। तू बीमार न हो, इसलिए मैंने ठंडा पानी तक नहीं पिया। तू अबला की करुण कातर प्रार्थना सुन ले। युवावस्था चार दिन की चाँदनी होती है। तेरे कारण रोज लोग शिकायत करने आते हैं, मैं किस-किस की

बातें सुनुं? तू जवानी में होश खो बैठा है,तू बचपन का लालन–पालन, संस्कार और कष्ट भी भूल गया है। तू किन रंगों की यह होली खेल रहा है। मेरे लाल! तू बुरी संगत मत कर, कुछ तो संसार और समाज का ख्याल रख।

पहन लो चुड़ियाँ री सब सखियाँ
नँदगाँव सऽ आयो मनिहारा
घर–घर मऽ धूम मचाई रे
पहन लो चुड़ियाँ सब सखियाँ
हरी पहनो पीली पहनो, पहनो–पहनो पचरंग चुड़ियाँ
पहन....
चुड़ी लाये बिछिया लाये, लाये पचरंग बिंदिया
पहन लो....
माला लाये गहने लाये, लाये चोली चुनरिया
पहन लो....
राधा ओ ललिता आवो, आवो सब सखियाँ
पहन लो....

नंदगाँव से एक मनिहारा आया है। आप सब सखियाँ उससे चूड़ियाँ पहन लो। घर–घर में उसने धूम मचा दी है। हरी–पीली–लाल पचरंग चूड़ियाँ हैं। पहन लो। उसके पास चूड़ियाँ हैं, बिछिया है, पाँचों रंग की बिंदिया है, लगा लो जो जी चाहे। उसके पास माला है, गहने हैं, चोली हैं, चोली और चुनर है, जो चाहे पहन लो। हे राधा! सब सखियों के साथ उस मनिहारे की दुकान पर जाओ।

आत्तआद्रूळ्क लॄद्र÷

कोरकू और गोण्ड

महेश गुंजेले

फागुन माह में आदिवासी समुदाय फाग गायन और फगवा माँगते हैं। होली बड़े आनंद और उत्साह के साथ खेलते हैं। घर की साफ-सफाई और पकवान बनाये जाते हैं। फागुन में चाँद देखने के बाद चाँद को नमस्कार करते हैं और विनती करते हैं कि यह हमारा पूरा वर्ष खुशहाली और समृद्धि के साथ गुजरे।

फाग में युवक-युवतियों की टोली होती है। गायन के माध्यम से एक दूसरे पर कटाक्ष करते हैं। फाग देवर-भाभी, ननद-भाभी, जीजा-साली, लड़का-लड़की आदि के बीच गायन के साथ वार्तालाप और नोंक-झोंक तथा रंग-गुलाल होता है। होलिका दहन के बाद सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार यहाँ पर भारी होली जिसे ठण्डी होली भी कहा जाता है कि पूजा की जाती है और होली की राख से तिलक लगाया जाता है। यह बुराई पर अच्छाई का प्रतीक माना जाता है। इसी दिन से जगह-जगह पर मेघनाथ (खड़राई) के मेले लगते हैं। युवाओं द्वारा टिमकी नृत्य और युवतियों द्वारा सार नृत्य किया जाता है। फगुआ हाट बाजारों, गली-मोहल्लों में मांगा जाता है और फाग के माध्यम से गाली दी जाती है। एक दूसरे से नोंक-झोंक, रंग-गुलाल खेला जाता है। आदिवासी समुदाय यह फागुन उत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाता है, जो एक माह उत्साह के साथ है।

फगनई

माह महिना रे फागुन महिना
गढ़ा देशो निकल जाऊँ माह महिना
अरे तेरी बेटी है रे सुन्दर अजब लाल
देशो निकल जाऊँ माह महिना ..... लड़का ....
अरे तेरो बेटा है रे नादान सासो मोखे
मायके पहुंचा दे मायको में ..... लड़की
अरे मेरो रोवे-रोवे-अंखियाओं लाल

सामवो मोखे मायके पहुंचा दे मायको में ..... लड़की
अरे तेरो बेटा है रे नादान सासो मोखे
मायके पहुंचा दे मायको में ..... लड़की

लड़के-लड़कियाँ आपस में मिल-जुलकर नाच रहे हैं और एक दूसरे को फागुन आने का संदेश दे रहे हैं कि माघ महीना समाप्त हो गया है, अब फागुन का महीना आ गया है। माघ महीना बहुत दूर निकल गया है। लड़के-लड़कियों को चिढ़ाते हुए कहते हैं कि तेरी बेटी बहुत सुन्दर है और उसका रंग लाल है। लड़कियाँ कहती हैं- सासू माँ! तेरा लड़का बहुत नादान है। मैं उससे परेशान हूँ, मुझे तुम मेरे मायके पहुँचा दो। मैंने उसके साथ रहकर रो-रोकर दिन गुजारे हैं। देखो, मेरी आँखें लाल हो गई हैं। बस, मुझे मायके पहुँचा दो।

अरे धुरा से बागुड़ रुदाय रमोला हो
बाड़ी में हरोना चरिरायो
रमोला हो किने जंगल को जिरोला रे
भइया किने जंगल हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला काटे कुल्हाड़ी जिरोला रे
भइया छोले बसुला हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला गाड़ी भराय लेऊ जिरोला रे
भइया छकड़ा भराय हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला डूडा बैला पर जिरोला रे
अरे भइया मुड़ा बयल हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला सिवान अड़ाय लेऊं जिरोला
अरे भइया गोठान अड़ाय लो हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला गलिया अड़ाय लेऊं जिरोला
अरे भइया मुठुआ अड़ाय लो हरो बांस .. रमोला हो .....
ये सुन रमोला रावण अड़ाय लेऊं जिरोला
अरे भइया मेघनाथ अड़ाय लो हरो बांस .. रमोला हो .....

ओ रमोला! अपने खेत के मेढ़ से बागड़ लगा दो, अपनी बाड़ी में हिरण चर रहा है। किस जंगल से मेघनाथ का खम्भा (जिरोला) लाना है और किस जंगल से बाँस लाना है? उसे कुल्हाड़ी से काटना है और बाँस को बसूला से छीलना है। गाड़ी में खम्भा लाना है और छकड़ा में बाँस लाना है। गाड़ी में एक सींग वाला बैल जोतना है और छकड़े में बिना सींग वाला बैल जोतना है। सुन रमोला! गाँव के बाहर (सिवन) और गोठान पर खम्भा और बाँस को अड़ा लेने पर मुठुआ को मना लेना। अरे सुन रमोला! ठीक से लाना, कहीं अड़ा मत देना, अड़ने पर मुठुआ देव को मना लेना।

बादले हो घुमरे माता बिजोली हो चमके माता
नेड निवा हो हल्ले भरोसा बादले हो घुमरे माता
साले डूडा अड़मा डूडा रमे माता हो साले डूडा
टूडा निवा अड़मा टोड़ी बहुन रंगे माता
हो साले डूडा ..... लड़की
सार वायता ऐंदी पसिता
सार वाले टूड़िना सवा खुदा माड़ो
अरे भाई जितूल बेगा मोयिदो जितोंदा
सारे बयता इंदी पसिदा ..... लड़का
टूडा निवा अड़मा टोड़ी बहुना रंगे माता
बादले घुमरे माता
मि बाईन अड़सिकुन बहुन लजे माता बादले
घुमरे माता ..... लड़की

लड़की कहती है कि बादल घुमड़ रहे हैं, बिजली चमक रही है। तेरा भरोसा नहीं है। सालई और धावड़े की लकड़ी के जैसा धूनी रमा कर बैठा है, तेरा भरोसा नहीं है। ऐ लड़का! तेरा मुँह क्यों रंगा है? क्या तेरी बहन ने पान दिया है, जिससे रंगा हुआ है। मोर के पंख पकड़कर नाच रही लड़की को चिढ़ाते हुए लड़के कहते हैं कि तेरा तो पेट आया हुआ है। अरे! भाई ने नहीं किया, उसके पति ने किया है।

अरे राम लैजा गढ़ायो बालम
राम लैजा गढ़ायो
तुतारी जो पहरे ओ बोल्या नादन कोई
बोदा ने टोड़ो नार
अरे हौवसी नादन को लाल रे बालम
राम लैजा गढ़ायो
अरे सुतना जो पहरे ओ बोल्या नादन कोई
चावल पकावे खीर
अरे जैवे नानद को लाल रे बालम
राम लैजा गढ़ायो

अरे! राम ने समझाया है कि पहले रावण के यहाँ पर बोदा काटा जाता था। अब राम ने मना कर दिया और कहा कि चावल-दूध की खीर पकाकर खाओ।

राम लक्ष्मण हैं दोनों भाई,
सीता को लै गयो रावण लाल

अर्थात् राम-लक्ष्मण दोनों भाई हैं। रावण सीता का हरण कर ले गया है।

मोया चाडू मोरे राम नदी को मोया चाडू
पूर्णा नदी को मोया चाडू लाला
आगम चली रे कोई रन बंदो लाला
पूर्णा नदी को मोया चाडू, फंस गई रे तेलन छिनाल
पूर्णा नदी को मोया चाडू
आगम चली रे कोई रन बंदो लाला
अर्णा नदी को मोया चाडू, फंस गई रे गौलन छिनाल
अर्णा नदी को मोया चाडू
आगम चली रे कोई रन बंदो लाला
ताप्ती नदी को मोया चाडू, फंस गई रे कुनबन छिनाल
ताप्ती नदी को मोया चाडू
आगम चली रे कोई रन बंदो लाला
माचना नदी को मोया चाडू, फंस गई रे भोयरन छिनाल
माचना नदी को मोया चाडू

नदी के किनारे मोया घास का चड़ा है। पूर्णा नदी के किनारे मोया घास का चड़ा है। पूर्णा नदी ऐसी तेज गति से बह रही है, उसे कोई रोक कर बताओ? अर्णा नदी के किनारे मोया घास का चड़ा है। धार में तेलन जाति की महिला फँस गई है। इसी प्रकार ताप्ती नदी, माचना नदी के किनारे मोया घास का चड़ा है। ये सभी तेज गति से बह रही हैं, उनकी धार को कोई रोक कर बताओ। धार में गौलनी, कुन्बी, पंवार जाति की महिलाएँ फँस गई हैं।

धरती से निकली ये काली नाग
धरती संभाले भगवान, होली रे ना खेले
अरे राम लक्ष्मण हैं दोनों भाई दोनों चले बनवास
होली रे ना खेले
अरे चन्दा सूरज हैं दोनों भाई दोनों चले बनवास
होली रे ना खेले
अरे गंगा जमुना हैं दोनों बहना चले रे भरपूर
होली रे ना खेले
अर्णा रे पूर्णा हैं दोनों बहना चले रे भरपूर
होली रे ना खेले

धरती से निकला काला नाग भगवान है, वही धरती को सँभाले हुए है। हम होली नहीं खेलेंगे। अरे भाई! राम-लक्ष्मण ये दोनों भाई हैं, ये दोनों भाई वनवास को जा रहे हैं। हम होली नहीं खेलेंगे। इसी प्रकार चन्दा-सूरज दोनों भाई हैं। गंगा-जमुना, अर्णा-पूर्णा नदियाँ बहन हैं। ये भरपूर बह रही हैं, हम होली नहीं खेलेंगे।

घोड़ा चमके राजा रे मन लागे
उतरो रे घोड़ा परधान पुरा में
परधान की पोरी को धर मसके
उतरो रे घोड़ा कुनबन पुरा में
कुनबन की पोरी को धर मसके
उतरो रे घोड़ा गौलन पुरा में
गौलन की पोरी को धर मसके
उतरो रे घोड़ा भोयरन पुरा में
भोयरन की पोरी को धर मसके

राजा ने घोड़े को चमकाया। घोड़ा-चमक कर राजा के मन लग गया। घोड़ा उतर कर प्रधानपुरा पहुँचा और प्रधान की लड़की को पकड़ लिया। इसी प्रकार घोड़ा कुनबन, ग्वाल और पंवार बस्ती में उतरा, उनकी लड़की को पकड़ लिया। राजा का घोड़ा राजा के मन के अनुसार ले जा रहा है।

लंका से उतर रे चरी रे जवान
अंगना में आड़ी तेड़ी रे, फागुन उड़ रहो रे बालेमा
मामा को बेटी दरी बड़ी रे छिनाल
अगोना में आड़ी तेड़ी रे, फागुन उड़ रहो रे बालेमा
मामा को बेटी दरी बड़ी रे दंग्गल बाज
अगोना में आड़ी तेड़ी रे, फागुन उड़ रहो रे बालेमा

लंका से जीतकर जवान आ रहे हैं और आँगन में सभी लोग मिलकर फाग खेल रहे हैं। तुम क्यों गुम-सुम बैठे हो? पति देव! तुम भी फाग खेलो। मामा की बेटी बहुत खराब है। मामा की बेटी तो धोखेबाज है, तुम तो फाग खेलो, सभी लोग खेल रहे हैं।

तारो बेटा है ओ नादान
सासो ओ मोखे मायके पहुंचा दे
मोरे रोवे-रोवे अंकिया ओ लाल
सासो ओ मोखे मायके पहुंचा दे
अरे मारो रोवत दिन रे जाय
सासो ओ मोखे मायके पहुंचा दे
अरे मारो कुड़त-कुड़त दिन जाय
सासो ओ मोखे मायके पहुंचा दे

सासू माँ! तेरा बेटा बहुत नासमझ है। मुझे तो तुम मेरे मायके पहुँचा दो। मेरी आँखें रोते-रोते लाल हो गई हैं और मेरा हर दिन रोते-रोते और कुढ़ते-कुढ़ते जा रहा है। तुम तो मुझे अपने मायके पहुँचा दो। तुम्हारा बेटा बहुत नासमझ है।

सबसे राम भज लेना ओ मैना
सबसे राम भज लेना
अरे कौड़ी जोड़-जोड़ माया रे जमाई
अरे मटिया खोद-खोद महल रे बनाई
अरे महल तेरा ना मेरा, सबसे राम भज लेना
अरे माटी रे खोदना माटी रे बिछाना
पत्थर का लेना सिराना हो मैना
सबसे राम भज लेना

अरे मन! सबसे राम-नाम भज ले। तूने एक-एक पैसे को जोड़कर इतना सारा पैसा इकट्ठा किया है और रात-दिन मिट्टी खोदकर इस महल को खड़ा किया है। यह रुपया-पैसा इस संसार में न तेरा है न मेरा। तू तो राम का नाम ले और उसे भज ले। मरने के बाद यह मिट्टी में मिल जाना है। मिट्टी का ही बिछौना (बिस्तर) और पत्थर का सिराहना मिलना है। तू तो राम नाम भज ले।

कलंगी कहां गवायो ऐ गोपी राजा
कलंगी कहां गवायो
ये गोपी राजा ने झंडा रोपाये
अरे भैंसदेही झंडा रोपाये रे गोपी राजा
कलंगी कहां गवायो
ये गोपी राजा ने झंडा रोपाये
अरे आठनेर झंडा रोपाये रे गोपी राजा
कलंगी कहां गवायो
ये गोपी राजा ने झंडा रोपाये
अरे गुदगांव झंडा रोपाये रे गोपी राजा
कलंगी कहां गवायो

गोपी राजा ने पता नहीं कहाँ अपनी टोपी की कलंगी गुमा दी है। राजा ने तो अपने झंडे भैंसदेही, आठनेर, गुदगांव और पता नहीं कहाँ-कहाँ गाड़े हैं, लेकिन गोपी राजा ने अपनी टोपी की कलंगी पता नहीं कहाँ गुमा दी है।

अरे राम भजन मुख बोले रे कमल बन
राम भजन मुख बोले
राम भजन ओने बिछिया ओ गढ़ायो
अरे उंगली नाजुक बनी रे
कमल बन राम भजन मुख बोले

राम भजन ओने पायल ओ गढ़ायो
अरे पैरों नाजुक बनी रे
कमल बन राम भजन मुख बोले
राम भजन ओने चूड़ा ओ गढ़ायो
अरे हाथ नाजुक बनी रे
कमल बन राम भजन मुख बोले

कमल वन में सभी लोग राम का नाम लिये थकते नहीं हैं। सभी लोगों के मुख पर राम का ही नाम रहता है। राम-नाम के लिए उसने बिछिया-पायल, चूड़ा तथा शरीर के अन्य जेवरात सभी छोड़ दिए हैं, उसके शरीर के सभी अंग नाजुक बन गए हैं। कमल वन में सभी के मुख पर राम का ही नाम है।

हाथों लकड़ियां कांधो कमलिया
रन बन गौवा चरायो लाल
अजी रन बन गौवा चरायो लाल
अरे जमुना को निर-निर गौवा चरायो
किशन जी मुरली बजायो लाल
अरे किशन जू कदम के झाड़ पर बैठे
किशन जी जमुना के निर-निर गौवा चरायो
अरे सौलह गौलन पनिया को निकरीं
किशन की मुरली चुरायो लाल

किशन जी के हाथ में गाय चराने के लिए लकड़ी और कन्धे पर कमलिया है। किशन जी एक वन से दूसरे वन जा-जाकर गाय चरा रहे हैं। देखो, जमुना नदी के किनारे-किनारे किशन जी मुरली बजा रहे हैं और गाय चरा रहे हैं। देखो, किशन जी अब कदम के वृक्ष पर बैठे हैं। गाय जमुना नदी के किनारे चर रही हैं। इधर सोलह ग्वालन पानी लेने निकली हुई हैं, उन्होंने चुपके से किशन जी की मुरली चुरा ली है। किशन जी के हाथ में गाय चराने के लिए लकड़ी और कन्धे पर कमलिया है।

ऊंचो सो महुआ झालरिया रे
उस पर डाले रे पड़ाव, हम परदेसी लोग
छोटे-मोटे डुंगा में चना बोये लाला,
मुट्ठी भर होला खिलाय लोटा भर पानी रे पिलाय
हम परदेसी लोग
छोटे-मोटे डुंगा में गेंहू बोये लाला
मुट्ठी भर होला खिलाय लोटा भर पानी रे पिलाय

हम परदेसी लोग
छोटे–छोटे डुंगा में तुअल बोये लाला
मुट्ठी भर होला खिलाय लोटा भर पानी रे पिलाय
हम परदेसी लोग

बहुत बड़ा और ऊँचा महुआ का पेड़ है, उसकी डाल हिलोरे खा रही है। उसकी छाँव में हम परदेशियों ने डेरा डाला हुआ है। खेत के छोटे ढालू टुकड़े में चना, गेहूँ और तुअर बोया हुआ है। ऐ खेत वाली लड़की! हमें तू मुट्ठी भर होला खिला दे और लोटा भरकर पानी पिला दे। हम परदेशी लोग यहाँ ठहरे हुए हैं। हमें महुआ के पेड़ की डाल की छाँव अच्छी लग रही है।

तेरा गांव बन्दी का धुरा रे नाकेदार
तेरा गांव बन्दी का धुरा
बन्दी के धुरा में सागौन कटायो
सागौन कटायो धुरा बांधो रे नाकेदार
बन्दी के धुरा में महुआ कटायो
महुआ कटायो धुरा बांधो रे नाकेदार
बन्दी के धुरा में जामुन कटायो
जामुन कटायो धुरा बांधो रे नाकेदार
बन्दी के धुरा में सेमल कटायो
सेमल कटायो धुरा बांधो रे नाकेदार

हे नाकेदार! तेरे गाँव की सीमा (धुरा) यहाँ तक है, तू इसे बाँध ले। बाँधने के लिए सागौन, महुआ, जामुन, सेमल के झाड़ (वृक्ष) काट लिये हैं, इनसे अपनी सीमा (धुरा) को बाँध ले।

तुमर ने काहो रिसानो रे मोरे कुंवर किशन जी
गौवा चरावन तु जाजौ दातारौ
पिछे लगि आऊं
तोरे लाने कुशल में लौटूं रे मारो कुंवर किशन जी
भैंसी चरावन तु जाजौ दातारौ
पिछे लगि आऊं
तोरे लाने डोबन में लौटूं रे मारो कुंवर किशन जी
बकरी चरावन तु जाजौ दातारौ
पिछे लगि आऊं
तोरे लाने कट्टी में लौटूं रे मारो कुंवर किशन जी

पता नहीं मैं तुम पर कैसे रीझ गई हूँ, मेरे कुँवर किशन जी! तुम गाय, भैंस, बकरी चराने जा रहे हो। मैं तुम्हारे पीछे लग जाऊँगी। तुम्हारे कारण मैं कुशल लौटूँगी। तुम्हारे कारण मैं डोबन और घुड़े पर भी लोट जाऊँगी। मेरे कुँवर किशन जी! पता नहीं मैं तुम पर कैसे रीझ गई हूँ।

मति मारो नन्दलाल कलेजा से लगि रायो
रोबे-रोबे अंकिया लाल कलेजा को लगि रायो
रोबत कुड़त मोरे दिन जाय कलेजा को लगि रायो

अर्थात् ऐसा मत मारो नन्द लाल, जिससे मेरा कलेजा बैठ जाय। रोते-रोते मेरी आँखें लाल हो गई हैं और मेरे दिन रोते-बिलखते बीत रहे हैं। नन्दलाल तुम ऐसा मत मारो।

कहां से आयो ओ बैरागी बाबा
गलियों में धुना रमायो लाल
अगम देश से आयो, पिछम देश चलि जायो लाल
गलियों में धुना रमायो लाल
रखो हमारे सुटेटा बूटा, भर प्याला मोये देओ लाल
गलियों में धुना रमायो लाल
रखो हमारे कंकर पथरा दारू भरपूर पिलाओ लाल

बैरागी बाबा! तुम कहाँ से आए हो और यहाँ गली में क्यों धूनी रमा कर बैठे हो? बैरागी बाबा! तुम पूर्व देश से आए हो और पश्चिम देश को जा रहे हो। तुम हमारे सूट-बूट रख लो और हमें एक प्याला दे दो। यह कंकर पत्थर भी रख लो, लेकिन हमें दारू भरपूर पिलाओ। बैरागी बाबा! तुम कहाँ से आए हो और क्यों गली में धूनी रमा कर बैठे हो?

दौड़े गांवन के लोग पनघट होली मची है रे
कौने सौकन पनिया को जाये, दो-दो गगरिया लैके जाय
पनघट होली मची है रे
छोड़ रे मोरे हाथ रे देबरा चुड़िया मेरी फूट जाय
पनघट होली मची है रे
छोड़ रे मोरे हाथों को देबरा हाथ में मेरे गुलाल जाय
पनघट होली मची है रे
एक जमुना की दोऊ डार रे लोटन को चली जाय
पनघट होली मची है रे

गाँव के लोग दौड़ो, पनघट पर होली हो रही है। कौन सी महिला दो-दो गागर को लेकर पानी लेने जा रही है। वहाँ पनघट पर होली हो रही है। देवर जी! मेरे हाथों को छोड़ो, मेरी चूड़ियाँ

फूट जाएँगी। छोड़ो मेरे हाथों में गुलाल लग जाएगा। पनघट पर होली हो रही है। जामुन की डार झूल रही है, उस पर झूलने चलते हैं। पनघट पर होली मची है।

भूरो बंदरिया तू बंदरा रे
दौड़े-दौड़े बनरा ये गोड़िन पुरा में
गोड़िन को मसका-मसकी करे रे
दौड़े-दौड़े बनरा ये औझा पुरा में
औझन को मसका-मसकी करे रे
दौड़े-दौड़े बनरा ये कोरकू पुरा में
कोरकन को मसका-मसकी करे रे
दौड़े-दौड़े बनरा ये परधान पुरा में
परधानी को मसका-मसकी करे रे

भूरे रंग का बंदर दौड़-दौड़ कर गोंड की बस्ती, ओझा बस्ती, कोरकू बस्ती, प्रधान बस्ती में जा रहा है और उनकी महिलाओं को परेशान कर रहा है।

सुन मामा नैनन में निदोरा नहीं आवे
मामा की बेटी दारी मन घबरावे, ले गयो गुंडा जवान
नैनन में निदोरा नहीं आवे
दूरा से आये दूरा ठांड़ो, दूरा से करो पहचान
नैनन में निदोरा नहीं आवे
मामा की बेटी दारी चोर मेरो अंगोछा ले गयो
नैनन में निदोरा नहीं आवे
मामा की बेटी दारी छिनाल, ले गयो हवसी जवान
नैनन में निदोरा नहीं आवे

सुनो मामा! मुझे आँखों में नींद नहीं आ रही है। मामा! तुम्हारी बेटी का मन बहुत घबराता है, उसे कोई जवान उठाकर ले जाएगा। वह दूर से खड़े होकर पहचान करती है। मामा की बेटी बड़ी चोर है। उसने मेरा गमछा चुरा लिया है। मामा! तेरी बेटी बड़ी खराब है, उसे कोई आदमी उठाकर ले जाएगा। मामा! मुझे आँखों में नींद नहीं आ रही है।

आओ सुन मैंदा अजब बनी तेरी अंगना
तेरो अंगना में लिखे जोड़ा मोर, मैंदा अजब बनी
हव सुनो मैंदा तेरे संग वाले को मंगनी भयो
मैंदा अजब बनी
हव तू मैंदा तू कैसी जलम की बांझ भई

मैंदा अजब बनी
हव तू मैंदा आऊ जाऊ तोखे बोली हु
आनत लगे दिन चार, सुन मैंदा अजब बनी तेरी अंगना

सुन मैंदा! तेरा आँगन अजब सा बना हुआ है। तेरे आँगन में जो तूने दो मोर बनाए हैं, वे अच्छे दिख रहे हैं। सुन मैंदा! तेरे संग वाली लड़की की मंगनी हो गई है, तू तो बाँझ है। आते-जाते लोग तुझको टोकते हैं। तेरा आँगन अजब सा बना हुआ है।

बूंद-बूंद दारू उतार वो मोदन कलालन बाई ओ
दारू बिना ढोलक बजाई ओ मोदन कलालन बाई ओ
काहे की मटकी ओ काहे की बबरी काहे में दारू उतारो ओ
मोदन कलालन बाई ओ
घर-घर अलख जगाई ओ मोदन कलालन बाई ओ
घर-घर दारू पिलाय ओ मोदन कलालन बाई ओ

ओ कलारन बाई! तुम बूंद-बूंद दारू उतारो। दारू के बिना हम ढोलक नहीं बजा पाएँगे। ओ कलारन बाई! हमें दारू पिला। तुम किस मटके में और किस बबरी में दारू उतारती हो। हमें बताओ। घर-घर जिसका जिक्र और दारू से शोर-शराबा होने लगता है।

अरे महादेव पारवती को ले गयो रे
ये मारो ले गयो भोलेनाथ पारवती को ले गयो रे
ले गयो कैलाश पहाड़ पारवती को ले गयो रे
ले गयो भोला नाथ पारवती को ले गयो रे
ले गयो नंदी सवार पारवती को ले गयो रे
ले गयो शंकर नाथ पारवती को ले गयो रे

अरे! महादेव पार्वती को ले गये हैं। यह हमारा भोलानाथ पार्वती को ले गया है। कैलाश पर्वत पर भोलानाथ नंदी बैल पर सवार होकर पार्वती को ले गया है।

सीता सुमर ले सुरया
मनो राम-राम सुमर ले बागो में
राम को चौदह बरस बनवास दिया है
तोड़े बनसा पतरा खाय, राम सुमर ले बागों में
राम रे लक्ष्मण हैं दोनों भाई
राम चले बनवास, राम सुमर ले बागों में
चरत भरत को राज दिए हैं
राम को दिए बनवास, राम सुमर ले बागों में

हे मन! सीय-राम का सुमिरन कर ले, सभी जगह राम हैं। राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया है और राम ने वन में पत्ते तोड़ कर खाए हैं, तुम राम का नाम ले लो। राम और लक्ष्मण दोनों भाई हैं, वे दोनों वनवास जा रहे हैं। भरत को राज दिया गया है और राम को वनवास दिया है। हे मन! राम को सुमर ले। उनका ध्यान लगा ले।

बिरज को गवलानी, गवलानी रे भोला लोग
घेरे जमुना को किनार बिरज को गवलानी
खट्टी लगी रे दहिया-महिया
मीठी लगी रे तेरी बात, बिरज को गवलानी
रस्ता में मिले हमखो कन्हा सिपैया
पूछे राधा की बात, बिरज को गवलानी
छोटी मोटी गड़ला में दहिया जमायो
गोकुल को बेचन जाय, बिरज को गवलानी
काली भूरी गैंया को दूध लगायो
ग्वालन बेचन जाय, बिरज को गवलानी

ब्रज की ग्वालिनें यमुना को घेरे बैठी हैं। ग्वाल कहते हैं कि हमें तेरी बातें बहुत मीठी लगती हैं, लेकिन तुम्हारा दही बहुत खट्टा लगता है। ग्वालिनें बताती हैं कि हमें ब्रज के रास्ते में कन्हैया मिले और जिस प्रकार सिपाही पूछता है, वैसे ही कन्हैया पूछ रहा था कि राधा कहाँ मिलेगी। छोटी-मोटी मटकी में दही जमाया है और उस दही को गोकुल की गलियों में बेचने जा रहे हैं। काली और भूरी रंग की गाय का दूध लगाया है और उसे बेचने ग्वालिनें जा रही हैं।

चढ़ गयो रे भोला जोगी चढ़ो में
हाथ कमंडल कांक में झोली
बनखण्ड में है भोला जोगी चढ़ो में
हाथ में सोटा बगल में झोली
चढ़ो पैहै डुड़या नाद, महादेव चढ़ो में
सुअन सांफ के माला बनायो
कड़ियल सांफ के कंगन बनायो, महादेव चढ़ो में

भगवान शंकर कैलाश पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। उनके हाथ में कमंडल और काँख में झोली लटकी हुई है। घने जंगल में भोलेनाथ जा रहे हैं। उनके हाथ में सोंटा है और झोली है, वे एक सींग के टूटे नांदिया पर बैठकर पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। साँप की माला उनके गले में है। काले नाग का कंगन उन्होंने पहना हुआ है। भगवान भोलानाथ पहाड़ पर चढ़ रहे हैं।

बोयो चना को खेत प्यारो लागे रे पिया बालेमा
मुट्ठी भर होरेला दे देना पिया बालेमा

अड़बट बोंयो रे मसूर, प्यारो लागे रे पिया बालेमा
ऊंचो सो मड़वा डगमल गोरी रखायो खेत
उसी में मुट्ठी भर होरेला दे दो, प्यारो लागे रे पिया बालेमा
घर को धनी होरेला नहीं खायो,
फिर कैसे देऊं दूसरो द्वार खाने को,
प्यारो लागे रे पिया बालेमा

अरे पिया! तुमने जो चने का खेत बोया है, वह बहुत अच्छा लग रहा है। मुट्ठी भर के चने दे देना। चने अच्छे लग रहे हैं, लेकिन तुमने गुस्से में मसूर बो दिया है। ऊँचा मंडप डोल रहा है, वह डग-मग हो रहा है। गोरी खेत की देखभाल कर रही है, उसी खेत से मुट्ठी भर होला दे दो, तुम्हारा खेत अच्छा लग रहा है। आदमी कहता है कि घर के धनी ने अभी होला नहीं खाया है, मैं कैसे तुझे होला दे दूँ?

काली गोवाली को मटिया बुलाय अलबेलन नार
घसमस सिर धोये बाल अलबेलन नार
बाड़ी पिछवाड़े से आ जाना ओ अलबेलन नार
हिले मिले कर दोऊ बात
दूरा से आयो दूरा ठाड़ो ओ अलबेलन नार
दूरा से करो पहचान

काली मिट्टी बुलाकर बालों को घिस-घिस कर अलबेली (सुन्दर) स्त्री ने धोया है। सुन्दर स्त्री कहती है कि तुम घर के पिछवाड़े से बाड़ी में आना, वहाँ पर हम दोनों हिल-मिलकर बात करेंगे। तुम दूर खड़े रहना, मैं तुम्हें पहचान लूँगी तुम जरूर आना, भूल मत जाना।

नीचे रे ऊंचे चौरासी मारो बालम झोंला खाय
हरियल बोले श्री गंगा
पैड़ा तो लायनो मड़ी अड़मा टूड़ी बैतूल बजारे घमासान
हरियल बोले श्री गंगा
बिछिया तो लायनो मड़ी अड़मा टूड़ी बैतूल बजारे घमासान
हरियल बोले श्री गंगा
कड़ली तो लायनो मड़ी अड़मा टूड़ी टिकारी बजारे घमासान
हरियल बोले श्री गंगा

लड़की कहती है कि ऊँची-नीची चौरासी टेकरी है। मेरा पति (प्रेमी) उस पर चढ़ रहा है और हिलते-डुलते ऊपर जा रहा है। लड़का कहता है- हे लड़की! चौरासी टेकरी ऊँची-नीची है, मैं तुम्हारे लिए पैड़ा ला दूँगा। बैतूल बाजार बहुत (अच्छा) भरा हुआ है। तुम सभी मिलकर श्री गंगा बोलो। तुम चिंता मत करो। मैं बाजार से तुम्हारे लिए बहुत सारे सामान लाऊँगा।

गोरे-गोरे पैरों में गुदना गुदा ले
मखमल के बिस्तर में हमको सुला ले
देशो बिरोली होय रे बालेमा
गोरे-गोरे हाथों में बिछुआ गुदा ले
चिपका कर गोरी तू हमको सुला ले
देशो बिरोली होय रे बालेमा

लड़की कहती है कि गोरे-गोरे अंगों पर गुदना गुदा दो और अच्छे बिस्तर लगाकर हमें आराम करने दो। यह देश अब पराया हो रहा है। लड़का कहता है कि तुम पराए देश को चली जाओगी, इससे पहले हाथों में बिछुआ (बिच्छू) गुदा लो और चिपकाकर हमको आराम दो।

धीरे चलो व्यापारी लाल हम तो हारी गया लाल
चलत-चलत हमरी पैड़ा निसक गई
पैरों में रखी बदलाम-धीरे चलो
चलत-चलत हमरी बिछिया निसक गई
छतिया हिलोरा मारे राम-धीरे चलो
चलत-चलत हमरी कड़ली निसक गई
पैरों में रखी बदलाम-धीरे चलो

ऐ व्यापारी के लाल! धीरे-धीरे चलो, हम तो चल-चल कर थक गए हैं। चलते-चलते हमारे पैरों की पैड़ा निकल गयी है, जिससे हम बदनाम हो गए हैं। इसी प्रकार हमारी बिछिया निकल गई है। मेरी छाती साँस भरने से हिलोरा मार रही है। चलते-चलते मेरी कड़ली निकल गई है, जिससे मैं बदनाम हो गई हूँ। बाजार को जाने वाले धीरे चलो, हम तो चल-चल कर थक गए हैं।

मोहन को दिल समझायो
राधा मोहन को दिल समझायो
हमरे राधा जी को लहंगा बिराजे
लहंगा झलकत आई रे, राधा मोहन को दिल समझायो
हमरे राधा जी को बिछिया बिराजे
बिछिया झलकत आई रे, राधा मोहन को दिल समझायो
हमरे राधा जी को पैड़ा बिराजे
पैड़ा झलकत आई रे, राधा मोहन को दिल समझायो
हमरे राधा जी को कड़ली बिराजे
कड़ली झलकत आई रे, राधा मोहन को दिल समझायो

हे राधा! मोहन के दिल को समझाओ। हमारी राधा का लहंगा अच्छा लग रहा है। राधा लहंगा लहराते हुए आई है। राधा जी की बिछिया, पैड़ा, कड़ली ये सभी अच्छे लग रहे हैं। यह सभी पहनकर राधा-मोहन के दिल को ललचा रही है। राधा-मोहन के दिल को समझाओ।

मलेबा ने ढूंढ़ ले मरोनी पोंरी
तेरे मेरे नई रे संयोग फिर गयो
रमा गढ़ा देश, मलेबा ने ढूंढ़ ले मरोनी पोरी
तुझे हांटल खिलावा री अच्छे गद्दे पर सुलावा री
मोटर में बैठ के चली गयो रमा गढ़ा देश
मलेंबा ने ढूंढ़ ले मरोनी पोरी
तुझे लहंगा ना ले देती मरोनी पोरी
लहंगा है शोभादार, कमरा मसक पहनावा
लै रमा गढ़ा देश

लड़के ने अपने लिए लड़की ढूँढ़ ली है। तू तो दूर-दूर के देशों में मुझे ढूँढ़ने के लिए गया था, फिरभी संयोग से लड़की तुझे नहीं मिली है। लड़की को तूने होटल में खिलाया, अच्छे बिस्तर पर सुलाया, मोटर-गाड़ी में बैठकर घुमाया और अपने देश को लाया। तूने उसे अच्छा शोभादार लहँगा दिलवाया है। उसने उसे अपनी कमर पर कसकर पहना है।

उड़न खटोला रे भैया मेरे उड़न खटोला
भाभी भी बैठे, भैया भी बैठे
उड़ गया फर-फर रे, भैया मेरे उड़न खटोला
उड़न खटोला में दोऊ जने बैठे,
उड़ गया फर-फर रे, भैया मेरे उड़न खटोला
जीजा भी बैठे जीजी भी बैठीं
उड़ गया फर-फर रे, भैया मेरे उड़न खटोला
उड़न खटोला में दोऊ जने बैठे
उड़ गया फर-फर रे, भैया मेरे उड़न खटोला

भैया मेरे! यह उड़ने वाला उड़न खटोला है। इस खटोले में भैया और भाभी दोनों बैठे हुए हैं। यह खटोला बहुत तेजी से उड़ गया है। इस खटोला में जीजा और जीजी दोनों बैठे हुए हैं और उड़न खटोला तेजी से उड़ गया है।

गुल्लर को चिकनो पान ये छोटो गुलरिया
कौन सौकन गुल्लर टोड़न गयी थी
लहंगा फंस गयो डाल, ये छोटो गुलरिया

कौन सौकन गुल्लर टोड़न गयी थी
साड़ी फंस गई डाल, ये छोटो गुलरिया
कौन सौकन गुल्लर टोड़न गयी थी
पोलका फंस गयो डाल, ये छोटो गुलरिया
कौन सौकन गुल्लर टोड़न गयी थी
चुनर फंस गयो डाल, ये छोटो गुलरिया

गूलर के वृक्ष का पत्ता बहुत चिकना होता है। अभी गूलर बहुत छोटे-छोटे हैं, जो महिला गूलर तोड़ने गई थी, उसका लहँगा डाल में फँस गया है। गूलर की डाल में उसकी साड़ी पोलका, चुनरी फँस गई है। गूलर के वृक्ष का बहुत चिकना पत्ता है और अभी गूलर बहुत छोटे-छोटे हैं।

गुल्लर को चिकनो पान उमर बनी तेरी सोने की लाल
बारह बरस की तेरी उमरिया
और सोलह बरस की जवानी
उमर बनी तेरी सोने की लाल
कौन हवसी तेरो राज ये

गूलर के झाड़ का पत्ता बहुत चिकना है। हे लड़की! तेरी उम्र, तेरा शरीर बिलकुल सोने सा दिख रहा है। तेरी उम्र बारह वर्ष की है, लेकिन तेरी जवानी सोलह बरस के जैसी दिख रही है।

हारे कजलवा सब उंगली को सोरा ले गयो रे
ले गयो रे हवसी जवान
हाव रे सोरा सब उंगली को ले गयो रे

कोई व्यक्ति मेरी अँगुली का जेवर निकाल कर ले गया है। मेरे कलेजे पर मार पड़ी है, क्योंकि उसने सब कुछ ले लिया है।

ये मुरली किने बजाई रे, ये मुरली को बाजा
मुरली गहरो बजायो रे, ये मुरली को बाजा
मुरली को बाजा सुनो खेड़ा देवता
सभी नगरी अवधानी रे, मुरली को बाजा
मुरली को बाजो सुनो नाग देवता
सभी नगरी अवधानी रे, मुरली को बाजा
मुरली को बाजो सुनो मुठुआ देवता
सभी नगरी अवधानी रे, मुरली को बाजा

यह मुरली किसने बजाई। मुरली बहुत अच्छी बजाओ रे, मुरली बजाने वाले। मुरली की धुन सुनो, खेड़ा देवता। सभी नगर वाले मुरली की धुन सुनो। मुरली की धुन सुनो- नाग देवता, मुठुआ देवता और सभी नगर के लोग, मुरली की धुन सुनो।

अरे फूले झाड़ो-झाड़ो, झाड़ो रे राजा
लाले दुपट्टा में फूले झाड़ो
कितने मन केशर किने डालो लाल
किने मन उड़े रे गुलाल - लाले
एक मन केशर किने डालो लाल
दोई मन उड़े रे गुलाल - लाले

अरे! राजा के लाल दुपट्टे में फूल का पेड़ है। कितने मन केशर घोला गया है और कितने मन गुलाल उड़ रहा है। एक मन केशर और दो मन गुलाल उड़ रहा है।

माह महिना रे फागुन महिना
देशो निकल गयो माह महिना
धर-धर टोंपनी महुआ बिनन को
महुआ के झाड़े धर पकड़ो
बिजली चमके महुआ गिरत नहीं
महुआ के झाड़े धर मसके

माघ और फागुन का महीना है, मैं अपने देश को चलूँ, सभी लोग इन महीनों में टोकनी लेकर महुआ बीनने निकल गए हैं। महुआ के बहाने लड़के-लड़की एक दूसरे से छेड़छाड़ कर रहे हैं। बिजली चमकती है, तो महुआ गिरता नहीं है। महुआ के आड़ में लड़के-लड़की एक दूसरे से छेड़खानी कर रहे हैं।

जंगल में गरजे डुडा सो महुआ
शहरों में गरजे कलालल लाल
कहां से आयो बाबा बैरागी
कहां से लायो धतूरा लाल
पहाड़ से आयो बाबा बैरागी
जंगल से लायो धतूरा लाल

जिस प्रकार जंगल में महुआ के पेड़ पर महुआ बहुत अधिक आने पर वह घमंड करता है। उसी प्रकार दारू पीने के बाद शहर का व्यक्ति इतराता है। कहाँ से आए हो बाबा बैरागी और कहाँ से ये धतूरा लाए हो? पहाड़ से आये हैं ये बैरागी बाबा और जंगल से धतूरा लाए हैं।

बबूल के कांटा खैरी के ठूंठ
आस-पास रोंदे बगिचा, कौयल मांगे पानी हो
अरे जब देखें जब देखें बबूल को कांटे हो

खैरी पेड़ के ठूंठ देखें और बबूल के काँटों से बगीचा को बाँध दिया है। इधर कोयल कूक रही है। देख-देख कर बबूल के काँटे को वह पानी माँग रही है।

निवा बाड़ी रे झकाझोर रो गजिया
निवा बाड़ी झकाझोर
निवा बाड़ी ता केला मड़ा रे
केला झका रे झोर, निवा बाड़ी झकाझोर,
निवा बाड़ी ता लीम्बू मड़ा रे
लीम्बू झका रे झोर, निवा बाड़ी झकाझोर,
निवा बाड़ी ता मरका मड़ा रे
मरका झका रे झोर, निवा बाड़ी झकाझोर
निवा बाड़ी ता इडूक मड़ा रे
इडूक झका रे झोर, निवा बाड़ी झकाझोर

तुम्हारी बाड़ी में लगे हुए पेड़-पौधे बहुत फलों से लदे हुए हैं। अरे लड़के! तुम्हारी बाड़ी में केला, नींबू, आम, महुआ ये सभी वृक्ष बहुत फलों से लदे हुए हैं।

ढुलकिन बाजे बीजा की ओ, ढपड़ा बाजे ससुर को देश
गोरी ओ चल मुंगलानी परदेसों में
पैड़ा ता लायनो गोरी आठनेर बजार घमासान
हो रे हो चल मुंगलानी परदेसों में
कड़ली ता लायनो गोरी बैतूल बजार घमासान
हो रे हो चल मुंगलानी परदेसों में
बिछिया ता लायनो गोरी भैंसदेही बजार घमासान
हो रे हो चल मुंगलानी परदेसों में
तोड़ा ता लायनो गोरी शाहपुर बजार घमासान
हो रे हो चल मुंगलानी परदेसों में

बीजा के पेड़ की लकड़ी से बनाई गई ढोलक और ढपला बाजा ससुर के यहाँ से लाया गया है। दोनों एक साथ एक ताल में बज रहे हैं। ओ गोरी! तू होशंगाबाद, हरदा (मुंगलानी) देश को चल, मैं तेरे लिए पैड़ा, कड़ली, बिछिया, तोड़ा ये सभी ला दूँगा। यह सभी मैं तेरे लिए आठनेर, बैतूल, भैंसदेही, शाहपुर बजार से ला दूँगा। ये सभी बाजार बहुत अधिक सामान से भरे हुए हैं लेकिन तू मेरे साथ होशंगाबाद-हरदा देश को चल।

दूर है अमरैया ओ समधन, दूर है अमरैया
येनी अमरैया में सुनरा को डेरा
बिछिया पैनाय, घर भेजो ओ समधन
दूर है अमरैया
येनी अमरैया में चुड़ला को डेरा
चूड़ी पैनाय, घर भेजो ओ समधन
येनी अमरैया में चादा का डेरा
साड़ी पैनाय, घर भेजो ओ समधन

समधन को चिढ़ाते हुए समधी कहता है कि तुम्हारा घर दूर है। यहीं पर तुम अपना शृँगार कर लो। यहीं पर साड़ी बेचने वाला, चूड़ी बेचने वाला, सोने बेचने वाला रहता है। तुम यहीं से अपने शृँगार की चीजें ले लो, दूर अपने घर को मत जाओ।

ऐ खड़ेराई खेलें होरी, ऐ खड़ेराई खेलें होरी
खड़ेराई खेलें जा उरमाल, होली दा हम खेलें
खेलें खड़ेराई होली
खड़ेराई खेलें जा भाभी होली दा हम खेलें
खेलें खड़ेराई होली
खड़ेराई खेलें जा भैया होली दा हम खेलें
खेलें खड़ेराई होली
खड़ेराई खेलें जा ननदी होली दा हम खेलें
खेलें खड़ेराई होली

हे खड़राय राजा! हम लोग सब मिलकर होली खेल रहे हैं। इधर भाभी, भैया और हमारी ननद रानी सब मिलकर होली खेल रहे हैं। हे खड़राय राजा! हम लोग सब मिलकर होली खेल रहे हैं।

पेटी वालो कुंआ मा, धोती न धोबे
धोती झेलर-मेलर रे गेड़ईया तेरे जवानी रे
पेटी वालो कुंआ मा,
कुर्ता झेलर मेलर रे गेड़ईया तेरे जवानी रे
पेटी वालो कुंआ मा,
गमोंछा झेलर मेंलर रे गेड़ईया तेरे जवानी रे
पेटी वालो कुंआ मा,

तुम पेटी वाले कुँआ में धोती नहीं धोना। धोती कैसी बाँधी है, जो खुली-खुली और

अच्छी नहीं दिख रही है। तेरी जवानी किस काम की, तुझे धोती भी बाँधना नहीं आता है। इसी प्रकार तेरा कुर्ता-गमछा तू उसे संभाल भी नहीं सकता, तेरी जवानी किस काम की है?

कजला को डिबिया खोलो जिठानी
बारह महीना फागुन के, हम खेले फागुन-फागुन रे
कजला को डिबिया खोलो देवरानी
बारह महीना फागुन के, हम खेले फागुन-फागुन रे,
कजला को डिबिया खोलो नन्दरानी
बारह महीना फागुन के, हम खेले फागुन-फागुन रे

जेठानी जी! काजल की डिब्बी खोलो। बारह माह में एक बार फागुन आया है और हम लोग होली नहीं खेलें, ऐसा नहीं हो सकता। काजल की डिब्बी में रंग है। ओ देवरानी और नन्द रानी! सभी आ जाओ, हम सब मिलकर होली खेलेंगे।

गेहूं की उड़मी खड़ा-खड़ी बोले चांदोनी
रातें उजालों में
भैया और भाभी होली रे खेलें चांदोनी
रातें उजालों में
देवर और भाभी होली रे खेलें चांदोनी
रातें उजालों में
ननदी और भाभी होली रे खेलें चांदोनी
रातें उजालों में

चाँदनी रात में गेहूँ की बाली खड़ी बहुत अच्छी लग रही है। इधर भैया-भाभी, देवर-भाभी, ननदी-भाभी सभी लोग मिलकर होली खेल रहे हैं। चाँदनी रात में यह सब बहुत अच्छा लग रहा है।

गाड़ी वालों भैया बगल करो ठाड़ी
ये गाड़ी वालों से मंजुरा ले-ले
टुड़ी रे टुड़ा गाड़ी में बैठे चले मुंगलानी को
ये गाड़ी वालों से मंजुरा ले-ले
भैया रे भाभी गाड़ी में बैठे चले मुंगलानी को
ये गाड़ी वालों से मंजुरा ले-ले
ये जोड़ीदार गाड़ी में बैठे चले मुंगलानी को
ये गाड़ी वालों से मंजुरा ले-ले

हे गाड़ी वाले भैया! तुम जरा अपनी गाड़ी को दूर खड़ा करो। अगर खड़ा ही करना है, तो

गाड़ी के मालिक से तुम मंजूरी ले लो। गाड़ी में लड़का-लड़की बैठे हैं। भैया-भाभी बैठे हैं, और अलग-अलग जोड़ी वाले बैठे हैं, ये सभी मुंगलानी (होशंगाबाद) जा रहे हैं। तुम गाड़ी अपनी दूर खड़ी कर लो, नहीं तो ये गाड़ी वाले से मंजूरी ले लो।

भुमका को बाड़ी में गांजा, गांजा को ललेना
भुमका को बाड़ी में गांजा
झुन-झुनू-झून मती लाता, लाता हो
लाले दार भुमका को बाड़ी में गांजा

भगत (भुमका) की बाड़ी में गांजा लगा हुआ है। गाँजा जाकर ले लेना। छोटे-छोटे फल मत लाना। तुम लाल अच्छा फल लाना। भुमका की बाड़ी में गाँजा लगा हुआ है।

आज रंग ते ना खेलियो
मुंगलाई में धूमन मचायो,
बहनी रंगाई सुधा लाड़िया
मुंगलाई में धूमन मचायो
भाभी रंगाई सुधा लाड़िया
मुंगलाई में धूमन मचायो
ननदी रंगाई सुधा लाड़िया
मुंगलाई में धूमन मचायो

आज रंग से हम नहीं खेलते। मुंगलानी में हम रंग की धूम मचाएँगे। हम लोग बहन को, भाभी को, ननदी और सभी सखी-सहेलियों को रंग लगाएँगे। लेकिन आज हम रंग नहीं खेलते, हम लोग मुंगलानी में धूम मचाएँगे।

हाथों के कंगना खन-खन बोले
कानों में मोती झलक रहो लाल
बारे दिवर जी मैं कैसे आऊं
तोड़ा तो खन-खन बोले लाल
तोड़ा को खन-खन बोलन दे री तू
रुमुक-झुमुक चले आओ लाल
बारे दिवर जी मैं कैसे आऊं
कड़ली तो फंस गयी पैरों में लाल
कड़ली को पैरों फंसन दे तू तो
रुमुक-झुमुक चले आओ लाल

तुम्हारे हाथों के कंगन जो खन-खन बज रहे हैं, वह अच्छे लग रहे हैं। कानों के कुण्डल

मोती के जैसे लग रहे हैं। देवरजी मैं तुम्हारे पास कैसे आऊँ, तोड़ा खन-खन बज रहा है। देवर कहता है कि तोड़े को खन-खन बजने दो, तुम धीरे-धीरे चली आओ। देवर जी! मेरी कड़ली, मेरे पैरों में फँस गई है। मैं तुम्हारे पास कैसे आऊँ। देवर कहता है कि कड़ली को पैरों में फँसने दो, तुम धीरे-धीरे मेरे पास चली आओ। तुम्हारे हाथों के कंगन जो खन-खन बज रहे हैं, वह अच्छे लग रहे है और कानों के कुण्डल मोती के जैसे लग रहे हैं।

इडूक मड़ा, मरका मड़ा झुलपा ले धड़मी रो
टूड़ा निवा जवानी बहाले वायो
बहाले वायो टूड़ा बहाले वायो रो
टूड़ा निवा जवानी बहाले वायो

लड़कियाँ लड़कों को चिढ़ाते हुए कहती हैं कि महुआ और आम इस वर्ष अच्छे फूलों से लदे हैं और अच्छी गहरी छाँव दे रहे हैं। लेकिन तुम्हारी जवानी अभी तक नहीं आई है और देखो ये दोनों महुआ और आम फूलों से कितने लदे हुए हैं।

महुआ बीनन के बहाने चली आवा हो रे
चली आवा हो, रे चली आवा हो रे
रात पहर हम बैठ बिठावे महुआ पेड़ के नीचे
टप-टप, टप-टप महुआ टपके धरती रस में भींजे
घर के मोरे दद्दा भैया लठिया लैके दौड़े
कैसे आऊँ हैवसी मोरे घर से निकल के
महुआ बीनन के बहाने चली आवा हो
चली आवा हो चली आवा हो

अरे सुनो! तुम महुआ बीनने के बहाने सुबह जल्दी आ जाना। हम लोग महुआ के नीचे बैठेंगे और बात करेंगे। उधर पेड़ से महुआ टप-टप गिरेंगे और नीचे की जमीन पूरी महुवे से ढँक जायेगी। सुनो, घर में मेरे दादाजी और भैया सभी मना करेंगे और मेरे आने पर लाठी से मार भी सकते हैं। मेरे प्रेमी (बालम)! घर से बाहर निकलकर इतनी रात में मैं कैसे आऊँगी? अरे सुनो! तुम महुआ बीनने के बहाने सूर्योदय के पहले आ जाना।

चल मुंगलानी-चल मुंगलानी, चलो ओ मुंगलानी
चल मुंगलानी हो चल मुंगलानी हो
तोरे रे लाने ले देहुं कंगना, चल मुंगलानी हो
चल मुंगलानी हो
तोरे रे लाने ले देहुं तोड़ा, चल मुंगलानी हो
चल मुंगलानी हो

तोरे रे लाने ले देहुं कड़ली, चल मुंगलानी हो
चल मुंगलानी हो

प्रेमी अपनी प्रेमिका से कह रहा है कि तुम मेरे साथ मुंगलानी (होशंगाबाद) को चलो। मैं तुम्हारे लिए हाथों के कंगन, पैरों के लिए तोड़ा और कड़ी ले दूँगा। तुम मेरे साथ मुंगलानी देश की ओर चलो।

रंग भरी भाई गगरिया रंग भरी
महुआ आयो तीन गुना रे, पान पत्ता झड़ जाय
गुल्ली को तेल जले महुआ को रंग जाय
खदर-बदर तो भट्टी चुड़े रे लगो सिरज को डूंड़
हरो बांस को टोड़ा लगो है टपको रस को बूंद
गोरी खड़ी गुरैज पर रे मांजे मुंगा मोत
रेत में तो चूड़ा मांजे लगी सुरज की जोत

ओ भाई! गगरिया रंग से भरी है। इस बार महुआ तीन गुने अधिक आए हुए हैं। उसके पूरे पत्ते इस फागुन के मौसम में झड़ जाते हैं। जिस प्रकार गुल्ली का तेल जलता है, उसी प्रकार महुआ का रंग भी बदल जाता है। शराब के लिए भट्टी अच्छी लगाई है और उसमें सिरज पेड़ की लकड़ी महुआ पकाने के लिए लगाई है। जब महुआ पकता है तो उससे निकलने वाली शराब के लिए बाँस की नली (टोड़ा) लगाया है, जिससे बूँद-बूँद शराब इकट्ठी हो रही है। एक लड़की ऊँचे स्थान पर खड़ी होकर गले का मूंगा साफ कर रही है। रेत से वह अपने हाथ का चूड़ा माँज रही है और सूरज अपनी तेज रोशनी दे रहा है।

अजब बनी भाई गोरी धन अजब बनी
सास ससुर ओके आदड़ो, सैंया गयो परदेस
चार बैल ओके चोरी गया, लेती मरद को भेष
गोरी-गोरी ओकी पिड़री रे, सिर के लम्बे बाल
कोन रसिया ने रस लियो, बा लेती मरद को भेष
रिमझिम-रिमझिम मेंबला बरसो, खड़ी चहल के द्वार
लाख टका की चुनरी भींज गई, नौ करवड़ को हार
पान सरी सी पतली हथी रे, हल्दी सरी सी पीली
मिर्ची सरी सी चिर पड़ी रे, लगे कलेजा बान

यह औरत कैसी है। उसके सास-ससुर अंधे हैं और पति बाहर गया हुआ है। उसके घर के चार बैल कोई चुरा ले गया है। अगर यह आदमी होती, तो ऐसा नहीं होता। उसकी पैरों की पिड़री बहुत गोरी है। बाल भी बहुत लम्बे हैं। पता नहीं किस छैल-छबीले ने उसे ठग लिया है।

वह अगर आदमी होती, तो ऐसा नहीं होता। रिम-झिम पानी गिर रहा है और वह दरवाजे पर खड़ी है। उसकी कीमती चूनर जो पीली है, भीग गई है। उसका हार भी भीग गया है। वह पान के जैसी पतली, हल्दी के जैसे पीली है। जब उसे पता चला मेरे साथ ऐसा हो गया, तो वह चीख पड़ी।

नादान बेसर वाली, नादान बेसर वाली
कान तुरकल्या बिज बाली है नाक में नथुनी न्यारी
मोती के जेमे लाडु लगे हैं झलक रही है न्यारी
लम्बे भुजा पर बाजुबन्द सोहे बिच खड़ी खंगबारी
बीच मस्तक पर टिकली सोहे सोबे हाल हजारी
काली चिड़िया चू-चू बोले उठ वो पीसन वाली
दिया देख तोरी मटकी में सूरत मक्का देख घबरानी
चन्दा निकले सूरज निकले उठ वो कूटन वाली
चुगलखोर ने चुगली कर दी बांध गेंद ललकारी

नाक में बेसर पहने यह लड़की कैसी नादान है। उसके कान-नाक में बाली और नथ जिसमें छोटे-छोटे लट्टू लटक रहे हैं, कितने अच्छे लग रहे हैं। उसकी भुजा जो लम्बी है, उस पर बाजूबन्द बहुत अच्छे हैं। बीच में खनवारी (गहना) माथे ऊपर टिकी कितनी अच्छी लग रही है। सुबह से काली चिड़िया सभी को जगा रही है और तुम पीसने के लिए नहीं उठ रही। दिन भर वह अपनी सूरत देखती रहती है और मक्का पीसने पर घबरा रही है। चाँद डूब गया। सूरज निकल गया है। ओ कूटने वाली! उठो, उधर किसी चुगलखोर ने चुगली कर दी है। उसका पति उसे ललकार-ललकार कर मार रहा है।

झुर रही भाई बिरोगन, झुर रही
टोंरी आई बरटा आई धान आई पोट
कूटन वाली चाम चमेली, खईर मुसल की जात बिरोगन
काली कुटकी को नांज मत खाजे काली उड़द की दाल
काले बलम संग सोजे मत तोरो कालो बदन हो जाय
आज कहीं सो काल कहीं गोदी लै बैठाय
सोई बात तो सांची कहती चूम लेती दोई गाल

तेरी उम्र ढल रही है। तुम काली कुटनी का भात और काली उड़द की दाल मत खाना। तुम अपने काले रंग वाले प्रेमी के साथ मत सोना, नहीं तो तुम्हारा पूरा शरीर काला पड़ जाएगा। मैं आज और कल की कहती हूँ। मुझे गोदी में बैठा लो, अगर सोई होती तो सच कहती और उसके गाल चूम लेती। तेरी उम्र ढल रही है और बदन में झुर्रियाँ पड़ने लगी हैं।

बाली भई, भाई नजर मतवाली भई
दाएं हाथ से रस्सी आटी, गुंनी खजुरा खाट
ऐसो बाको बलम बिन गौनो को ले जाय
भैसी मा को बिज्जो बोदा बिना नाथ ले जाय
ऐसो बाको बलम बिन गौनो को ले जाय
ऊंचो पेड़ की पिपरी रे चाबे मदुरा पान
बारह की छोकरी रे ओकी डाली पसलिया टोर

अरे भाई! नजर मतवाली हो गई है। उसका पति ऐसा है कि अभी गौना भी नहीं हुआ और उसको ले गया है। जिस प्रकार भैंस का बोदा होता है, भैंस उसे गर्मी पर दिखी तो वह नाथ तोड़कर भैंस के पास चला जाता है, उसका पति भी इसी प्रकार का है। वह लड़की बारह वर्ष की है और उसने उसकी पसली तोड़ दी है।

नार मिली भई कड़कसा नार मिली
पानी लायो कांजी लायो अंधन दियो चढ़ाय
पांच चटुआ खसम को मारे आपहिं सोई रिसाय
एक सेर की सात बनाई सवा सेर की एक
यो दाई मारो ना सातई खा गई मैं कुलवंती एक
कागा बोले मंगरी बैठे पाहुना आया तीन
ये पाहुना की डढ़ी जला दो कड़ा ना लाया बीन

अरे भाई! उसे बहुत तेज (कड़क) पत्नी मिली है। वह पानी लाया और खाने के लिए तैयारी की है, लेकिन देखते ही देखते उसने अपने पति को पाँच चटुवे (लकड़ी का चम्मच) दे मारे और गुस्सा होकर खुद सो गई। उसने जब रोटी बनाई तो एक सेर आटे की सात रोटी और सवा सेर की एक रोटी बनाई और कहती है कि मेरे पति ने तो सात रोटी खा ली है और मैं इसके कुल को चलाने वाली एक ही रोटी खा रही हूँ। उसके घर पर बैठा कौआ बोल रहा है। उसके घर मेहमान तीन आए, उसने उन मेहमानों की दाढ़ी जला दी।

सुगड़ एक नार मिली
माटी कहे कुम्हार रे तू क्या रोंधे मोय
एक दिन बन्दे आन पड़ेगा मैं रोंधोगी तोय
तू घघरी कुम्हार की रे नित गंगा नहाय
जंगिया से छतिया चढ़े रे सिस बैठ घर जाय
तू घघरी कुम्हार की वो नित तरसावे मोय
एक दिन ऐसा आयेगा मैं पटकूंगी तोय

हरि-हरि अंगिया कपास की रे लोई पानी के बूंद
गोरी की अंगिया यहां हथी ना वांह टंगी सासनी खूंट

पत्नी को जैसा ढालना है उसे ढाल दो। मिट्टी कुम्हार से कहती है कि आज तू मुझे पैरों से रौंद रहा है। एक दिन मेरा भी आएगा, जब मैं तुझे रौंदूँगी। तू मटका कुम्हार का है और तुझे उसी ने बनाया है। मैं रोज गंगा नहाने जाती हूँ। उस मटके को कमर में धर कर ले जाती हूँ। मटका भरकर मैं अपनी जाँघ पर फिर छाती पर लाती हूँ और वह सिर पर बैठकर घर आता है। मुझे रोज ऐसा ही करना पड़ता है। एक दिन मैं ऐसा करूँगी कि तुझे पटक दूँगी, तू फूट जायेगा। हरे रंग की अंगिया (ब्लाउस) कपास से बनाई है। गोरी की अंगिया कहाँ गई? वह तो घर में खूँट पर टंगी है।

मोरो बारो बलम नादान, सासु मोहे पठो दे मायके
पीसन गई वहां आड़ो लेके, वहां पड़ोसन मारे बोल
गोबर गई वहां आड़ो लेके, वहां गोबराईन मारे बोल
पानी गई वहां आड़ो लेके, वहां पनहारी मारे बोल

सासूजी मेरा पति तो नादान है, तुम मुझे अपने मायके पहुँचा दो, तो ही अच्छा है। मैं चक्की पीसने गई थी, वहाँ पर सभी पड़ोसन मिल गईं। मुझे ताना देने लगीं, मैं गोबर फेंकने गई, पानी लेने गई, वहाँ पर भी मुझे सभी लोग ताना मारने लगे। मेरा पति नादान-नासमझ है, तुम तो मुझे मेरे मायके पहुँचा दो।

सांवलो रे भाई कन्हैया सांवला
कोरी-कोरी मटकी बुलाई, उसमें घोला रंग
भर पिचकारी मुख पर मारी, चोली हो गई तंग
घघरा पहनो घामर घोर, चोली हो गई तंग
तेरो खसम तो बड़ो निकट्टू चलो हमारो संग
ढोलक बाजे ढुलकी बाजे और बाजे मुरचंग
कान्हा जी की मुरली बाजे, राधा जी को संग

अरे भाई! कन्हैया का रंग साँवला है। कोरे-कोरे मटके बुलाकर उसमें रंग घोला है और पिचकारी भरकर गोरी के ऊपर जब रंग डाला तो गोरी की चोली बदन में कस गई। उसने घाघरा बहुत अधिक घेर का और तंग चोली पहनी है उसका पति कैसा निखट्टू (बेशर्म) है, वह तो हमारे साथ ही चलने लगा। ढोलक-ढुलकी, मुरचंग बज रहे हैं। इधर कान्हा जी की मुरली राधा जी के संग बाजी है। अरे भाई! कन्हैया का रंग साँवला है।

हरी मन धिर धरो भाई, हरि मन धिर धरो
ऐसा बुड्ढा ब्हाहन आयो ठाठ देखो उनका
सिर में पक्के बाल मुंह में दांत नहीं उनका

मर गये नऊआ मर गये बम्हना किन्ने बिचारी लगुन
मर गये वो पंच बराती जिनने बैरी को बिल्ले बांधी
माय बाप मतलब के रे दामों के सब लोभी
छटी माय ने अनधर मारे, सोई बात सांची
तेरे बाप की कुंआ-बावड़ी बीच लगी अमराई
छिताफल के पेड़ लगे हैं चन्दन की बाड़ी

हे मन! धीरज रख, शादी करने के लिए ऐसा दूल्हा आया हुआ है, जिसकी उम्र अधिक है, लेकिन उसके ठाठ अधिक हैं। उसके सिर के पूरे बाल सफेद हैं और मुँह में तो दाँत ही नहीं हैं। शादी के लिए नऊआ-ब्राम्हण जिसने लगुन निकाली थी और वे सब पंच बाराती, जो इस शादी में आये हैं, वह सभी मर जायें। माँ-बाप सब मतलब के हैं, वे सब पैसे के लालची हैं। यह बात सच है कि छटी माँ ने अनधर को मारा था। तेरे पिता जी की कुँआ, बावड़ी है और खेत में अमराई, सीताफल के पेड़ और चन्दन की बाड़ी है।

कन्हैया ने गागर फोड़ी,
मेरो ललना तो पलना झुले रे मुख से दूध बहो री
ऐसी नार गोकुल में नहीं है नाहक लगावे चोरी
हमरो न्याय ना छानयो जसोदा मुख से और लड़ो री
बिन्द्रावन से आये कान्हा लाये पिताम्बर चोरी
उरन पुरन को चली ब्रज नारी जायी जसोदा पास
अपने श्याम को बरजौ जसोदा हमसे करो बरजोरी

गोपियाँ कह रही हैं कि कन्हैया ने हमारी गागर फोड़ दी है। जसोदा कहती हैं कि मेरा लड़का पालने में सो रहा है और हमारे यहाँ दूध की नदियाँ बहती हैं। ऐसी कौन सी गोपी है, जो मेरे कन्हैया पर चोरी लगा रही है। हमारा न्याय तो करती नहीं जसोदा और हमसे ही लड़ रही हैं। वृन्दावन से आकर कन्हैया यहाँ चोरी करता है। इधर-उधर के गाँव से सभी ब्रजनारी और गोपियाँ यशोदा के पास आकर कह रही हैं कि अपने श्याम को संभालो, वह हमसे बरजोरी करता है। गोपियाँ कह रही हैं कि कन्हैया ने मटकी फोड़ी है।

जवाब दे जाना कबिसर, जवाब दे जाना
पहली प्यास में पानी कितना पी गया प्यासा ने
आठ कुंआ नौ लाख बावली, सूख गया पल में
कंकड़ निकले पत्थर निकले इस कुंआ का पानी
चन्दा सूरज सी आसन निकली ताग गगुन की
उड़त चूहा सी धार निकली जंगल की झाड़ी
उठा पारधी की नजर पड़ी मोर बन-बन की

ओ गाने वाले भैया! हमारे सवाल का जवाब देना कि जब प्यासे को पहली बार प्यास लगती है, तो वह कितना पानी पी जाता है? इधर आठ कुँए नौ लाख बावड़ी हैं, जो पल भर में सूख गये हैं। उस कुँए-बावड़ी से कंकड़-पत्थर पानी के साथ निकले हैं और चन्दा-सूरज के आसन निकले हैं। उड़ती हुई चूहा सी धार और जंगल के जैसी झाड़ी निकली। उस झाड़ी में पारधी की नजर पड़ी, उसमें मोर दिखाई दिया। ओ गाने वाले भैया! हमारे सवाल का जवाब दे देना।

होरी-होरी भाभी फागुन खेलो होली
भर पिचकारी मारो भाभी
तिरछी नजर से देखो ना भाभी
होरी-होरी भाभी
रंग खेल लो भाभी, हँसी खुशी से
खेल लो भाभी, होरी-होरी भाभी
होरी खेल लो भाभी
होरी के गीत गा लो भाभी,
होरी होरी भाभी
हँसी-खुशी रंग खेल लो भाभी
फागुन के गीत गा लो, होरी-होरी भाभी

ओ भाभी! फागुन है होली खेलो और भरकर पिचकारी मारो। भाभी! तुम तिरछी नजर से मत देखो। हँसी-खुशी होली खेल लो और होली के गीत गा लो।

फुला जड़े रंगदार राजा
लालो री फड़की में फुला जड़ो
राजा के आंगन में हरो बगीचा
बगीचा में नाचे रे मोर
राजा को दरबार सजो रे
संगीत मचाये शोर
राजा के नगर में भरो बजार है
नाचन वाले नाचे घनघोर

लाल फड़की में रंग-बिरंगे फूल बने हुए हैं। राजा के आँगन में हरा-भरा बगीचा है, उस बगीचे में मोर नाच रहा है। राजा का दरबार लगा हुआ है और उसमें संगीत का शोर हो रहा है। राजा के नगर में बाजार भी अच्छा भरा हुआ है, उसमें नाच-गाना जमकर चल रहा है।

उड़न खटोला जा बजरंगी को, उड़न खटोला ....
उड़न खटोला में राम जी बैठे

उड़न खटोला में लक्ष्मण जी बैठे
करने को समुद्र पार–उड़न खटोला ....
उड़न खटोला में जामवंत जी बैठे
उड़न खटोला में अंगद जी बैठे
सातों समुद्र पार – उड़न खटोला ....
उड़न खटोला में नल जी बैठे
उड़न खटोला में नील जी बैठे
करे समुद्र पार–उड़न खटोला ....

यह बजरंग बली का उड़न खटोला है। इसमें राम–लक्ष्मण दोनों बैठे हुए हैं और समुद्र पार करने जा रहे हैं। इस उड़न खटोले में जामवंत और अंगद भी बैठे हैं, इधर नल और नील भी बैठे हैं, ये सभी समुद्र पार करने जा रहे हैं।

होली–होली जीजा फागुन खिलाये होरी
भर पिचकारी मारो जीजा
तिरछी नजर से देखो ना जीजा
होली–होली जीजा
रंग खेल लो जीजा हँसी–खुशी से
खेल लो जीजा, होली–होली जीजा
होली खेल लो जीजा, होरी के गीत
गा लो जीजा, होली–होली जीजा
हँसी–खुशी रंग खेल लो जीजा
फागुन के गीत गा लो, होली–होली जीजा

साली अपने जीजा से कह रही है कि होली खेल लो और मुझे तिरछी नजर से मत देखो, रंग खेल लो। होली के गीत हँसी–खुशी से गा लो और होली खेल लो।

भाभी तेरी बहना बड़ी रे दगाबाज
भाभी तेरी बहना
भाभी तेरी बहना ने गमछा चुरायो
मारके तिरछी रे नजर, भाभी तेरी बहना
भाभी तेरी बहना ने अंगूठी चुरायो
मारके तिरछी रे नजर, भाभी तेरी बहना
भाभी तेरी बहना तो बड़ी है चोर
मन पें धरे रे नजर, भाभी तेरी बहना

देवर अपनी भाभी से कहता है कि तुम्हारी बहन बहुत धोखेबाज है। उसने मेरा गमछा तिरछी नजर मारकर चुरा लिया है। मेरी नजर बचाकर तुम्हारी बहन ने अँगूठी चुरा ली है और अब उसने मेरा दिल ही चुरा लिया है। भाभी! तुम्हारी बहन बहुत धोखेबाज है।

कान्हा ने मटकी फोड़ी, कंकड़ मार रे
कंकड़ मार रे, कंकड़ मार रे
इते-उते गलियन में घूमत है वो तो
घूमत है वो तो, घूमत है वो तो
हाथों की चुड़ियाँ फोड़ीं, कंकड़ मार रे
गोपियों पे नजरें रखता है वो तो
रखता है वो तो, रखता है वो तो
हाथों के कंगन फोड़े, कंकड़ मार रे
गोपियां चली गईं जसोदा के पास वो तो
जसोदा के पास वो तो, जसोदा के पास वो तो
बताने वो कान्हा की बात, कंकड़ की बात रे

कान्हा ने कंकड़ मारकर हमारी मटकी फोड़ दी है, वह तो इधर-उधर गलियों में घूमता रहता है, उसने कंकड़ मारकर हमारे हाथों की चूड़ियाँ-कंगन फोड़ दिये हैं। सभी यशोदा के पास जाकर शिकायत करेंगे कि कान्हा ने कंकड़ मारकर हमारी मटकी-चूड़ियाँ और कंगन फोड़ दिये हैं।

कान्हा धर पिचकारी मारे, धर पिचकारी
कौन मन केशर घोला रे भैया
कौन मन उड़ायो रे गुलाल, धर पिचकारी
नौ मन केसर घोला रे भैया
दस मन उड़ायो रे गुलाल, धर पिचकारी
कौन पे मारी भर पिचकारी
कौन रे लगायो गुलाल, धर पिचकारी
राधा पे मारी भर पिचकारी
राधा रे लगायो गुलाल, धर पिचकारी

कान्हा पिचकारी से होली खेल रहा है। कितने मन केशर घोल दिया है और कितने मन गुलाल घोला है? नौ मन केशर और दस मन गुलाल घोला है। कान्हा पिचकारी में रंग भरकर मार रहा है। किस पर भर पिचकारी मारी है और गुलाल किसे लगाया है? राधा पर भर पिचकारी मारी है और राधा को गुलाल लगाया है।

कौन रंग ओ की रे साड़ी
कौन रंग ओकी रे किनार
गुलाबी रंग ओकी रे साड़ी
रंग बिरंगी रे किनार
कौन ने बुलाई रे साड़ी
कौन ने पहनी है साड़ी
भैया ने बुलाई रे साड़ी
भाभी ने पहनी है साड़ी

उसकी साड़ी किस रंग की है और किस रंग की उसकी किनार है? गुलाबी रंग की उसकी साड़ी है और रंग-बिरंगी उसकी किनार है। किसने साड़ी बुलाई है और किसने पहनी है? भैया ने साड़ी बुलाई है और भाभी ने पहनी है।

कौन ले जा रे कैसा ले जाय
गोरी बिन गौना कौन ले जाय
पहला लिबऊआ ससुर जी आयो
ससुर के संग बला मेरो जाय
दूजो लिबऊआ जेठ जी आयो
जेठा के संग बला मेरो जाय
तीसरा लिबऊआ देवर जी आयो
दिवरा के संग बला मेरो जाय
चौथा लिबऊआ बलम जी आयो
बालम के संग हँसे-हँसे जाय

गोरी के बिना गौना कैसे हो सकता है और उसे कौन ले जा सकता है? पहले ससुर उसे लेने आता है, तब लड़की कहती है कि मैं नहीं जाऊँगी। फिर जेठ और देवर उसे लेने आते हैं, पर फिर भी लड़की कहती है कि मैं नहीं जाऊँगी। फिर उसका पति आता है, लड़की हँसते हुए पति के साथ चली जाती है।

अजब तमाशा होय ओ, रानी बाई तेरी नगरी में
आज मारुं काल मारूं, कल की दोपहर मारूं
बोदल दचक मारुं, बासी कुसी पेट मारुं
अजब तमाशा होय ओ, रानी बाई तेरी नगरी में
सोच-सोच-सोच मारूं, गिन-गिन-गिन मारूं
पटक-पटक मारूं, बासी कुसी पेट मारूं
अजब तमाशा होय ओ, रानी बाई तेरी नगरी में

यह कैसा तमाशा हो रहा है। योद्धा कहता है कि मैं आज मारूँगा–कल मारूँगा, कल की दोपहर भी मारूँगा, बोदे के जैसा पटक कर मारूँगा। बासी–कुसी खिलाकर मारूँगा, सोच–सोचकर मारूँगा, गिन–गिनकर मारूँगा, पटक–पटक कर मारूँगा। अजब तमाशा हो रहा है, रानी बाई तेरी नगरी में।

माल–माल गुजा बनाये मेरी साली
मन में लगी कोपा साड़ी
ओय तोल नईदा काल
टूड़ी निवा जिवा ता बटवा लाल
माल–माल गुजा बनाये मेरी साली
मन में लगी कोपा साड़ी

जीजा अपनी साली से कहता है कि क्या मालपुआ बनाया है, मेरे मन में तो है कि पूड़ी बनाई है।

आज होली खेलें मेरे बालम आज होली खेलें
रईया निवा जिवा ता सिर पोलो आता
होली पर्‌रो पोली रे बालम आज होली खेलें
आज होली खेलें मेरे बालम आज होली खेलें

मेरे बालम! आज हम होली खेलेंगे।

तुमड़ी को बिजा, बिजा बड़ा बेला चलायो लाल
ऐंसी–ऐंसी टुड़ी बड़ी नकेलू
भैया संग खुले सोंये लाल
ऐंसी–ऐंसी टुड़ी बड़ी छटेली
भैया संग खुले सोये लाल

तुमड़ी का बीजा बोया, बेला चढ़ गई है। यह लड़की बड़ी खराब है। भैया के साथ खुले ही सो गई।

जरा दूधे बरेठा के नालों में नदी
जरा दूधे बरेठा के
छोटे–छोटे डूंगा में चना रे बोयो
अरे होला खिला दे रे राम
छोटे–छोटे डूंगा में गेहूं रे बोयो
अरे होला खिला दे रे राम

छोटे–छोटे डूंगा में तुअर रे बोयो
अरे होला खिला दे रे राम

बरेठा का नाला दूधे नदी के जैसा बह रहा है। छोटे से खेत में चना, गेहूँ और तुअर बोया है, इनका होला खिला दे। बरेठा का नाला दूधे नदी के जैसा बह रहा है।

अरे बादल भई सारी रात, मुरली बादल भई रे
मुरली बादल भई
इते–उते का देखे, देख तेरो जीजा को
मुरली बादल भई
इते–उते का देखे, देख तेरी जीजी को
मुरली बादल भई
इते–उते का देख, देख तेरी साली को
मुरली बादल भई
बादल भई सारी रात, मुरली बादल भई

जिस प्रकार बरसात के दिनों में बादल सारी रात गरजते हैं, उसी प्रकार मुरली सारी रात बज रही है। इधर–उधर क्या देख रही हो। देखो तुम्हारे जीजा और जीजी को, मुरली सारी रात बज रही है। देखो तुम्हारी साली को, मुरली बादल जैसी बज रही है।

ऐंसी–ऐंसी बिछिया ना पहनो सजना,
मेरो बदन कुमलाय
सजना मैं काली पड़ गई, तुमरी बोलिन के मार
ऐंसी–ऐंसी चुड़ियां ना पहनो सजना
मेरो बदन कुमलाय
सजना मैं काली पड़ गई, तुमरी बोलिन के मार
ऐंसी–ऐंसी पायल ना पहनो सजना
मेरो बदन कुमलाय
सजना मैं काली पड़ गई, तुमरी बोलिन के मार

मेरे साजना, मैं ऐसी बिछिया नहीं पहनती, इससे मेरा बदन कुम्हला जाता है। तुम मुझे जो बार–बार टोकते हो और बोलते हो उसके कारण मैं काली पड़ गई हूँ। मैं ऐसी चूड़ियाँ और पायल नहीं पहनूँगी, मेरा पूरा शरीर काला पड़ गया है।

माघ महिना रे फागुन महिना
तेरो सईयां गुजर गयो, माघ महिना
सईयां के लाने तू गोरी, ऐंसी ही रह गई
तेरो सईयां गुजर गयो, माघ महिना

यह महीना माघ का है और फागुन का महीना आने वाला है। इसमें तेरा पति मर गया है। तू अपने पति के कारण ऐसी ही रह गई, वह तो गुजर गया है।

अरे संग निकल गई थी दूर,
मेरी सजना मैं तो अकेली रह गई थी
अरे सपड़ा ते हो गई देर मेरी सजना
मैं तो अकेली रह गई थी
अरे जेबत ते हो गई देर मेरी सजना
मैं तो अकेली रह गई थी
अरे नाहावत ते हो गई देर मेरी सजना
मैं तो अकेली रह गई थी

अरे मेरे सजना! मेरे साथ के सभी लोग आगे निकल गये और मैं अकेली रह गई। मुझे खाना खाने और नहाने में देर हो गई थी, जिसके कारण मैं अकेली रह गई थी।

अरे छोटो शिकारी होतो वो गोरी दारी
नांदो में नौ रंग लातो
नौ रंग लातो वो, नौ रंग लातो
अरे छोटो शिकारी होतो वो गोरी दारी
नांदो में नौ रंग लातो

अरे! मैं अगर शिकारी होता, तो जंगल में धूम मचा देता। गोरी! अगर मैं छोटा शिकारी भी होता, तो मैं जंगल में धूम मचा देता।

अरे सर लटका दई, कुन्दा जरा सी मैं, सर लटका
अरे ढोलकी वाले हो गई लड़ाई री, सर लटका
अरे टिमकी वाले हो गई लड़ाई री, सर लटका
अरे झांझ वाले हो गई लड़ाई री, सर लटका
अरे ढोल वाले हो गई लड़ाई री, सर लटका

अरे कुन्दा! जरा सा मैं सर लटकाकर बैठ गई। हो गई लड़ाई। मेरी लड़ाई ढोलकी, टिमकी, झांझ, ढोल वाले से हो गई और मैं सिर लटकाकर बैठ गई।

अरे पसीना में तर हो गई राम,
राजा उठन नहीं देवें
हो गोंई हो, हो गोंई हो
काली कमली की डाली बिछोना,

डाली बिछोना, रे डाली बिछोना
राम राजा उठन नहीं देवें।
हो गोंई हो, हो गोंई हो
गोदड़ी खतड़ी को डालो बिछोना
डालो बिछोना, रे डालो बिछोना
राम राजा उठन नहीं देवें।

अरे! मैं तो पसीने में तर हो गई, लेकिन मेरे राजा मुझे उठने नहीं दे रहे। सुन सहेली! मेरे राजा मुझे उठने नहीं दे रहे, मैंने काली कमली का अच्छा बिछोना बिछाया था और गोदड़ी खदड़ी भी नई बिछाई थी। राजा मुझे उठने नहीं दे रहे, मैं तो पसीने में तर हो गई।

जत्ता को आस पास दासा गमरसा तड़ा नवा
लाल रंगी सोंटा
ऐ टुड़ी सोडीता मिचे ना रोपा
मिर्ची कोड़ी मिर, मिरता ढपलो ते रोपा
तड़ा नवालाल रंगी सोंटा
ऐ टुड़ी सोडीता भट्टा ना रोपा
भट्टा कोड़ी मिर, मिरता ढपलो ते रोपा
तड़ा नवालाल रंगी सोटा

लड़की-लड़के से कहती है कि घट्टी के आसपास मुझे मार। यह लड़की मिर्ची के रोपा में घुस गई है और उसे मिर्ची लग गई है। वह वहाँ से भाग खड़ी हुई है, फिर यह लड़की भट्टे के रोपा में घुस गई है और वहाँ उसे भट्टे के काँटे गड़ रहे हैं, वह वहाँ से भाग खड़ी हुई।

आड़ो टेड़ो ढेर बनायो, ढेर के ऊपर बैठो लाल
काहे रे भैया अनमने देखे, तेरो सूरत बड़ो मैलो लाल
कुर्सी में बैठन को भल्लो बिराजे
फगुआ देवन को रोये लाल
आसो को फगना छोटों नहीं भैया
फगुआ हमको देओ लाल
बेचो तुम्हारी सगी बहनिया
देवो हमारो फगुआ लाल
बेचो तुम्हारी अरदा हवेली
देवो हमारो फगुआ लाल

यह कैसा आड़ा-टेढ़ा ढेर बनाया है और ढेर के ऊपर भैया बैठा है। क्यों भैया! ऐसा अनमना देख रहा है, तेरी सूरत बड़ी मैली लग रही है। कुर्सी पर तो बैठने को अच्छा लगता है,

लेकिन फगुआ देने को कैसा होता है। इस साल का फगुवा हम लोग नहीं छोड़ते। भैया! तुम हमको फगुआ दो, तुम अपनी सगी बहन को बेचो कि यह हवेली बेचो, लेकिन हमारा फगुआ दो।

गेहूं को उम्मी मा खड़ा खड़ी बोले रे
चांदोनी रातों उजालों में
टूड़ा निवा हरवा, टोड्डी बहुवी
रंगे माता रो, चांदोनी रातों उजालों में
टूड़ा निवा माला, टोड्डी बहुवी
रंगे माता रो, चांदोनी रातों उजालों में

गेहूँ के खेत में बालियों के बीच में से बोल रही है, इधर चाँदनी रात का उजाला है। इस लड़के का हार, माला, मुँह, ठुड्डी सब रंग दो, चाँदनी रात के उजाले में।

खेल लिये माय बाप राजे भले बाई
खेल लियो सुरजा बागों में
ससुरा की राज मैंने खेले गवायो
खेल लियो सुरजा बागों में
खेल लियो बहु-सास राजे बले बाई
खेल लियो सुरजा बागों में

माता-पिता के राज में हम लोगों ने बहुत खेला और राजी-खुशी से रहे हैं। हमने सुरजा बाग में बहुत खेला है। हम लोगों ने ससुर के राज में सब खेल गँवा दिया है।

ये माला सोने की रे, ये माला रूपे की रे
बह गयो गंगा पार, ये माला सोने की रे
जंगल चिड़ईया री दोना सिवायो लाल
दोना बड़े-बड़े लेव री जीजी मनी अड़मा
मन जड़ मनी अड़मा वो,
आधी रातों से मनी अड़मा वो,
दोना बड़े-बड़े ले वो जीजी मनी अड़मा वो

यह माला सोने की है। यह माला मेरे रुपये की है। वह गंगा नदी में बह गई। जंगल में चिड़िया दोना सिलती है। यह दोने बड़े-बड़े हैं। हे जीजी! यह माला सोने की है।

उजाड़ो खेंड़ा झमले माता
टूड़ा निवा अड़मा टोड़ी, बहुत रंगे माता
उजाड़ो खेड़ा, झमले माता

टूड़ा निवा दाड़ी, बहुत रंगे माता
उजाड़ो खेड़ा झमले माता

इस लड़के को पकड़ो और खूब रंगाओ। इस लड़के की दाढ़ी को खूब रंगाओ।

गोरी हो तेरो मुकदमा यहां नहीं टूटे
ले चलूं मुंगलानी
काली के लग गये पांच रुपैया
गोरी के पूरे पचास,
गोरी हो तेरो मुकदमा यहां नहीं टूटे
ले चलूं मुंगलानी
गोरी हो तेरो मुकदमा यहां नहीं टूटे
ले चलूं बालाघाट

ओ गोरी! तेरा जो मुकदमा यहाँ चल रहा है, वह यहाँ नहीं टूटेगा। मैं तुझे मुंगलानी ले चलता हूँ। काली लड़की के मुकदमे में पाँच रुपये लगे हैं और जो गोरी लड़की है, उसके पूरे पचास लगे हैं। ओ गोरी! तेरा जो मुकदमा यहाँ नहीं टूटेगा, मैं तुझे बालाघाट ले चलता हूँ।

गेंद बनी सजना गुलेल बनी रे
तेरी मेरी खेलन की गेंद बनी
ताते से हण्डा गरम धरे पानी
तू सपड़त सईयां मैं बगल खड़ी रे
रेशम की धोती घड़ी लिये ठांड़ी
तू पहनो सजना मैं बगल खड़ी रे
ताती जलेबी तुरत बनवाये
तुम जेवो सजना मैं बगल खड़ी रे

ओ सजना! ये गेंद और गुलेल तेरे और मेरे खेलने के लिए बनी है। हण्डे में गरम पानी रखा हुआ है तुम नहा लो, मैं तुम्हारे बगल में खड़ी हूँ। रेशम की धोती घड़ी करके मैं खड़ी हूँ, तुम पहनो, मैं बगल में खड़ी हूँ। ये गरम जलेबी अभी बनवाई है। तुम खा लो, मैं बगलद में खड़ी हूँ। ओ सजना! ये गेंद और गुलेल तेरे और मेरे खेलने के लिये बनी है।

होरी आ गई हमारे घर पाऊना
होरी तेरो अगम दिशा तेरो मायको
पश्चिम दिशा ससुराल
होरी तेरो खावन पिवन तेरो मायको
मजा उड़ाय ले रे ससुराल

फागुन के माह में होली मेहमान बनकर आ गई है। होली तेरा–पूर्व दिशा में मायका और पश्चिम दिशा में ससुराल है। होली तेरा खाना–पीना मायके में और रंग उड़ाना, मजा करना सभी ससुराल में है।

बाँके सर के ऊंचे बाल, ककनवा लै दईयो बालेमा
कहां ककनवा उपजे ओ गोरी
कहां मोल बिकाय, ककनवा लै दईयो बालेमा
हरदा जो उपजो ओ गोरी
बैतूल में मोल बिकाय, ककनवा लै दईयो बालेमा
कौन ने लै दये ककनवा ओ गोरी
कौन चुका दये दाम, ककनवा लै दईयो बालेमा
सैंया ने लै दये ककनवा ओ गोरी
यारो चुका दये दाम, ककनवा लै दईयो बालेमा

उसके सिर में लम्बे और खड़े बाल हैं, तुम कंघी ले देना– मेरे बालम। कहाँ पर कंघी बनाई है और कहाँ बिक रही है? हरदा में कंघी बनी है। बैतूल में बिक रही है। किसने खरीद कर कंघी दी है और उसका पैसा किसने चुकाया है? पति ने खरीद कर दी है और पैसा उसके प्रेमियों ने चुकाया है। उसके सिर में लम्बे और खड़े बाल हैं, तुम कंघी ले देना।

गड़रिया के घर नहीं जाऊं रे
जिनके घर में बालई–बाल
ऊंगली में बाल बाके मुरवा में बाल
अरे वो जिन्दगी ना नहाय
पिड़री पे बाल, जंगीया पे बाल
अरे वो तो बुरो बसाय
अंगना में बाल उसारी में बाल
अरे बाके घर में बालई–बाल

मैं तो गड़रिया के घर नहीं जाऊँगी, उसके यहाँ बाल ही बाल है। उसकी अँगुली और मुँह पर बाल हैं। वह तो ऐसा लगता है, जैसे जिन्दगी भर से नहाया ही नहीं है। उसकी पिंडली, जाँघों पर भी बाल ही बाल हैं। अरे! वो तो बुरा बसाता है। उसके आँगन और उसारी में भी बाल बिखरे हुए हैं। मैं उसके घर नहीं जाऊँगी।

मुंगलानी को देवला कैसे जले
सेठ पूछे सिठानी से बात
ओ तेरो घर को कार बार कैसे चले

पटलन पूछे पटेल से बात
ओ तेरो कार बार कैसे चले
मुंगलानी को देवला कैसे जले

घर के सामने जो मुंगलानी होती है, उसका दीया कैसे जलेगा? इधर सेठ-सेठानी से पूछता है कि तेरे घर का कारोबार कैसा चलता है? घर की पटलन-पटेल से पूछती है कि पटेल जी! तुम्हारा कारोबार (व्यापार) कैसे चल रहा है?

होली खेलें महादेव बम बोला होली खेलें
बम बोला रे गजब गोला, होली खेलें
कौने के हाथों चंदन को कंगना
कौन के हाथों भभुत गोला
गौरा के हाथों चंदन को कंगना
भोला के हाथों भभूत गोला

महादेव होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में चंदन का कंगन है और किसके हाथ में भभूत का गोला है? गौरा के हाथ में चंदन का कंगन है और महादेव के हाथ में भभूत का गोला है।

बाज रही भाई, मुरलिया बाज रही
काहेन की तेरी बनी मुरलिया, काहेन बन्ध कसे
कौन बजावन हार, मुरलिया बाज रही
हरे बांस की बनी मुरलिया, रेशम बन्ध कसावे
कृष्ण बजावन हार, मुरलिया बाज रही

अरे भाई! मुरली बज रही है। किस चीज से मुरली बनाई है, किसके बन्ध कसे हैं और मुरली को कौन बजा रहा है? हरे बाँस की मुरली बनी है, रेशम के बन्ध लगे हैं और श्रीकृष्ण जी मुरली बजा रहे हैं।

हां रे खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में
देखें तमाशा लोग, खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में
कौने पहाड़ तेरे उपजन भयो हो
काहे धरे अवतार, खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में
रोहनी पहाड़ तेरे उपजन भयो हो,
उमरन धरे अवतार, खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में
काहेन की तोरी बैठक तोहे लागे हो,
काहेन पैंया पखार, खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में

चंदन की तोरी बैठक लागे हो
दूधन पैंया पखार, खडेराई बड़े मजा तेरी मुलकों में

हे खंडराई! तेरे मुल्क में बहुत मजा है, लोग यहाँ तमाशा देख रहे हैं। किस पहाड़ से पैदा हुए हो और कहाँ अवतार धरा है? रोहनी पहाड़ पर पैदा हुए हो और उमरन पर अवतार धरा है। किस पर तुम्हारी बैठक है और पैर किससे धोते हो? तुम्हारी बैठक चंदन की है और दूध से पैर धोते हो। तेरे मुल्क में खंडराई बहुत मजा है।

बिजली मारे महुआ गिरत नईयां
काहो रे धन्धा हमारे लिये
महुआ के नीचे लगा टोकनी
बिजली मारे महुआ गिरत नईयां
हवा चले महुआ गिर जायेंगे
महुआ के नीचे लगा टोकनी
बिजली मारे महुआ गिरत नईयां
काहो रे धन्धा हमारे लिये
हवा चले सब फैल जावें
बिजली मारे महुआ गिरत नईयां

बिजली चमक रही है, पर महुआ गिर नहीं रहे हैं। किस चीज का हमारा धन्धा है? महुआ के नीचे टोकनी लगाओ, हवा चलने पर महुआ तो गिरेंगे ही, इसलिये महुआ के नीचे टोकनी लगा लो। किस चीज का हमारा धन्धा है, हवा चलेगी तो सब महुआ फैल जायेंगे।

रंग बदलो रे भईया रंग बदलो
जमाना को भईया रंग बदलो
गाड़ी रे तेरी रंग बिरंगी, बैल बड़े पचरंगी
खेदन वाला छैल छबीला, रंग बदला भईया रंग बदला
घट्टी बनी तेरी रंग-बिरंगी, खुटा बनो पचरंगी
पीसन वाली छैल छबीली, रंग बदला भईया रंग बदला
ओखली बनी रे रंग-बिरंगी, मुसल बनो पचरंगी
कुटन वाली छैल छबीली, रंग बदला भईया रंग बदला

रंग बदल गया है अब जमाने का। तुम्हारी गाड़ी रंग-बिरंगी और बैल तो पचरंगी है। चलाने वाला छैल छबीला है। गेहूँ पीसने की घट्टी और ओखली रंग-बिरंगी बनी हुई हैं। घट्टी घुमाने वाली और कूटने वाली छैल छबीली है। देखो, जमाने का रंग बदल गया है।

रंग देखने को आयो, रंग देखने को आयो
आयो रे भैया आयो रंग देखने को आयो
रंग ते रंग ज्वारी को रंग
चले उपे संसारा, रंग देखने को आयो
रंग ते रंग सेमल को रंग
जिसमें रंगे संसारा, रंग देखने को आयो
रंग ते रंग कपास को रंग
जिसमें ढके संसारा, रंग देखने को आयो

मैं तो रंग देखने को आया हूँ। रंग तो ज्वारी का है, जिससे पूरे संसार को भूख मिटाने के लिये अन्न मिलता है। रंग तो सेमल के पेड़ का है, जिससे फागुन में सभी लोग रंग-गुलाल खेलते हैं। रंग तो कपास का है, जिससे बने कपड़े से संसार का तन ढँकता है। भैया, मैं तो रंग देखने को आया हूँ।

जंगल में होली हो रई, भईया जंगल में होली
गांव-गांव में टूड़ा जुड़े हैं, जंगल में खेलें होली
गांव-गांव की टूड़ी जुड़ी है, जंगल में खेलें होली
महुआ के नीचे महुआ बिछो है, जंगल में खेलें होली
टप-टप, टप-टप महुआ टपके, जंगल में खेलें होली

जंगल में होली हो रही है। गाँव-गाँव के लड़के और लड़कियाँ इस जंगल में जुड़े हैं। इधर महुआ वृक्ष के नीचे पूरा महुआ बिछा हुआ है और टप-टप टपक भी रहा है।

ऐ टोपी वाले भईया, टोपी मत पहनो
टोपी पहनें गलियों के गुण्डा, टोपी मत पहनो
टोपी पहनें शहरों के लोग, टोपी मत पहनो
टोपी पहनें गांव के पटला, टोपी मत पहनो
ऐ टोपी वाले भईया, टोपी मत पहनो

हे टोपी वाले भईया! तुम टोपी मत पहना करो। टोपी गलियों के गुण्डे, शहरों के बाबू लोग और गाँव के पटेल पहनते हैं। तुम टोपी नहीं पहना करो।

फगनई रची भाई, फगनई रच गई
काहे काट के ढुलकी बनाई, काहे काट के टिमकी
फगनई रची भाई, फगनई रच गई
धड़ काट के ढोलकी बनाई, सिर काट के टिमकी
फगनई रची भाई, फगनई रच गई

सभी मिलकर फाग गा रहे हैं। फागुन की धूम मच गई है। किसको काटकर ढोलक और टिमकी बनाई है? धड़ काटकर ढोलक और सिर काटकर टिमकी बनाई गई है।

लड़के को काल ने घेरा, घेरा रे यारो
लड़के को काल ने घेरा
पत्थर के नीचे रामा बिच्छू का डेरा
जेही काल ने घेरा
नदिया किनारे रामा जल की मछलिया
आन ढिमरिया घेरा
बन के किनारे रामा जंगल हिरनिया
आन पारधी घेरा
लड़के को काल ने घेरा

सुनो यारों! लड़के को काल ने घेर लिया है। पत्थर के नीचे बिच्छू का डेरा है। लड़के को बिच्छू ने काट लिया है। नदी के किनारे पानी में मछलियाँ हैं, उनको पकड़ने के लिए ढीमर लगे हुए हैं। वन के किनारे जंगल में हिरण चर रहे हैं, उनको पकड़ने के लिए पारधी ने घेर लिया है।

लीना मरद को भेष, गोरी हो
कौन कहे बिजनार, लीना मरद को भेष
झीनी धोती की पाग बांध ले
झीनी धोती पहन ले
लीना मरद को भेष, गोरी हो
करम कुमला हाथ में ले-ले
हाथ में ले-ले करम कुमला
लीना मरद को भेष, गोरी हो

अगर गोरी मैं लड़की का भेष छोड़कर मर्द की वेशभूषा पहन लूँ, तो मुझे कोई भी ब्रज की नारी नहीं कहेगा। मैं झीनी धोती की पगड़ी और धोती पहन लूँ, कमर का कुमला हाथ में ले लूँ, तो मुझे कोई भी नारी नहीं कहेगा।

सागर में एक मन उड़े गुलाल, गंगा सागर में
सागर में दो मन उड़े गुलाल, गंगा सागर में
सागर में तीन मन उड़े गुलाल, गंगा सागर में
सागर में चार मन उड़े गुलाल गंगा सागर में
सागर में पांच मन उड़े गुलाल, गंगा सागर में
सागर में छै मन उड़े गुलाल, गंगा सागर में

सागर में और गंगा सागर में गुलाल उड़ रहा है। एक मन, दो मन, तीन मन, चार मन, पाँच मन और छह मन गुलाल उड़ रहा है।

दुपहरिया में पानी सपरें
गोरी तेरो गोरो बदन कुमलाय
चुनर तेरी भींज गई है
जरा और भींजन तो दे, गोरी तेरो बदन कुमलाय
साड़ी तेरी भींज गई है
जरा और भींजन तो दे, गोरी तेरो बदन कुमलाय
लैहंगा तेरो भींज गयो है
जरा और भींजन तो दे, गोरी तेरो बदन कुमलाय

दोपहर में तुम पानी से नहा रही हो तुम्हारा बदन कुम्हला जायेगा। तुम्हारी चुनरी, साड़ी और लहंगा भींग गया है, उसे और भींगने दो।

अरे खेलें बिरज में जय होली
अरे जय होली रे जय होली, खेलें बिरज में जय होली
राम लखन की जोड़ी है भाई
खेलें बिरज में जय होली
चन्दा सूरज की जोड़ी है भाई
खेलें बिरज में जय होली
कृष्ण-बलराम की जोड़ी है भाई
खेलें बिरज में जय होली

अरे! ब्रज में सभी लोग होली खेल रहे हैं। होली की जय कर रहे हैं। राम-लखन, चन्दा-सूरज और कृष्ण-बलराम की जोड़ी कितनी सुन्दर लग रही है। ब्रज में सभी लोग होली खेल रहे हैं।

झा ले री महुआ, झा ले री
महुआ को पेड़ बता दे री भाभी
झा ले री महुआ, झा ले री
महुआ को पेड़ बता दे री बहनी
झा ले री महुआ, झा ले री
महुआ को पेड़ बता दे री संगनी
झा ले री महुआ, झा ले री

महुआ के नीचे से महुआ फूल झाड़ ले। भाभी! महुआ का पेड़ बता दे और महुआ झाड़ ले। बहनी महुआ का पेड़ बता दे। ओ मेरी संगनी! महुआ का पेड़ बता दे। मैं महुआ झाड़ लूँगी।

सरार्र सुतली ये मुर्गा बोले
मुर्गा की बोली प्यारी लगी रे
सरार्र सुतली ये तोता बोले
तोता की बोली प्यारी लगी रे
सरार्र सुतली ये कागा बोले
कागा की बोली प्यारी लगी रे
सरार्र सुतली ये भैया बोले
भैया की बोली प्यारी लगी रे

सुतली बनाते हुए कह रहा है कि मुर्गा बोल रहा है। इस मुर्गा की आवाज अच्छी लग रही है। यह तोता-कौवा बोल रहा है, इन सभी की आवाज कितनी प्यारी लग रही है। यह भैया बोल रहा है, इस भैया की बोली बहुत प्यारी लग रही है।

सार लहरे माता गलियों ते
सार लहरे
भैया रो निवा टिमकी ढोल नाडूम गली ते
सार लहरे माता .....
टिमकी ढोल नेकी लाता नाडूम गली ते
सार लहरे माता .....

महिलाएँ हाथ में सार (मोरपंख) लेकर फगुआ माँग रही हैं। हमारा सार गलियों में लहराता है। अरे भईया! टिमकी-ढोल बजाओ। हम नाच रहे हैं और सार लहरा रहे हैं। तुम गलियों में टिमकी-ढोल लेकर आओ और बजाओ, हमारा सार लहरा रहा है।

भैया रो निवा उरमाल उड़न लागी
रूमाल ते पर्रो फुंदा लागता रो सुवा
जागली ते नींद हल्ले वायो
भैरा रो निवा उरमाल उड़न लागी

भैया! तुम्हारा रूमाल उड़ रहा है। रूमाल में फूल लगा है और रंग-बिरंगा फुंदा भी है। तुम खेत में जागली करने जाते हो, जिसके कारण तुम्हारी नींद उड़ गई है। भैया! तुम्हारा रूमाल उड़ रहा है।

झोपड़ी वाले रे मोरा जीजा झोपड़ी वाले
बेसर भी लै दे मोंखा अंगिया भी लै दे

दिल मन से काम करूं जीजा, झोपड़ी वाले
हसली भी लै दे तोड़ा भी लै दे
दिल मन से काम करूं जीजा, झोपड़ी वाले
कड़ी भी लै दे पैड़ा भी लै दे
दिल मन से काम करूं जीजा, झोपड़ी वाले

ओ झोपड़ी वाले जीजा! तू मेरे लिए बेसर, अंगिया, हँसली, तोड़ा, कड़ी, पैड़ा ये सभी खरीद दो। मैं दिल और मन से काम करूँगी।

रस चुहे बिरोली तेरो नैनों से
तेरो नैनों से, तेरो नैनों से
ऊंगली रे ऊंगली है नरम दार
बिछिया झिझे हिलोरा से
हाथ रे हाथ है नरम दार
चुड़िया झिझे हिलोरा से
पैर ते पैर है नरम दार
पैड़ा झिझे हिलोरा से

ओ बिरोली! तेरी आँखों से आँसू की जगह रस टपक रहा है। तेरी अँगुली बहुत नरम है, उसमें बिछिया बहुत आसानी से चली गई, अच्छी दिख रही है। वह नदी में हिलोरे जैसे खा रही हो। तेरे हाथ और पैर भी बहुत नरम हैं। हाथ में चूड़ियाँ और पैर में पैड़ा अच्छे दिख रहे हैं।

मोहनी माला रे हर दुल, मोहनी माला
मोहनी माला रे कोना में धरियो
चूहा कतर ले जाय, हर दुल मोहनी माला
मोहनी माला रे ओसारी में धरियो
पोरिया झपट ले जाय, हर दुल मोहनी माला
मोहनी माला रे आंगन में धरियो
कुत्ता झपट ले जाय, हर दुल मोहनी माला

ओ हरदुल! ये मोहनी माला देख और घर के कोने में रख दे, नहीं तो चूहा कतर लेगा। मोहनी माला ओसारी में (घर के सामने का कमरा) रख दे, नहीं तो लड़का झपट लेगा। मोहिनी माला आँगन में रख ले, नहीं तो कुत्ता झपट लेगा। ओ हरदुल! ये मोहनी माला देख।

पूर्णा में भरी रे बजार
पुरा में गोरी ओ तमाशा होराय लाल
हरे पुरा में बिछिया पैरानो ओ रायो लाल

तेरो ऊंगली ओ करे बदलाय, पुरा में
हरे पुरा में पैड़ा पैरायो ओ रायो लाल
तेरो पैर ओ करे बदलाय, पुरा में
हरे पुरा में चुड़िया पैरायो ओ रायो लाल
तेरो हाथ ओ करे बदलाय, पुरा में

पूर्णा के पास बाजार लगा हुआ है, इधर गोरी गाँव में तमाशा हो रहा है। हरेपुरा में बिछिया, पैड़ा, चूड़ियाँ पहनाने वाला आया हुआ है। तेरी अँगुली में बिछिया, पैरों में पैड़ा और हाथों में चूड़ियों से बदलाव आ गया है, अर्थात् वे अच्छे लग रहे हैं।

सुख सोयो रो सुअन जी, सुख सोयो रे
गैरो सोयो राम
आज मेरो रसिया रे बिछावन में आयो
पापी सो बुढ़ेला ने खासी कियो राम
सुख सोयो रे
आज मेरो रसिया गलियों में आयो
पापी से कुतेला ने खासी कियो राम
सुख सोयो रे
आज मेरो रसिया डेहली में आयो
पापी से टटिया हली गयो राम

मेरे सुअन जी! मै अपनी रसिया (प्रेमी) के साथ सो रही थी। मेरा प्रेमी बड़े दिनों के बाद मेरे बिस्तर पर आया था। इस पापी बूढ़े ने खाँस दिया। वह मुझसे गली में मिलने आया था, लेकिन पापी कुत्ता भौंकने लगा। वह मुझसे मिलने घर के पास तक आया था, लेकिन यह जो बागड़ (टटिया) लगी है, वह हिल गई और आवाज करने लगी।

आज को दिन लौठा फोदा ना मार बे
फोदा मारे तेरो बहनी संग
देशा को लौठा बड़ो छटेला
बड़े छटेला वे शाले, बड़ो उदेला
आज को दिन लौठा फोदा ना मार बे

लड़की कहती है कि आज के दिन तू मेरे बारे में गंदी बातें जोर से मत बोल। अगर तू ऐसा करेगा, तो मैं भी ऐसा ही करुँगी। अगर तू ऐसा करेगा, तो तेरी बहन के साथ गाँव का बड़ा ही बदमाश लड़का सोयेगा। आज के दिन तू गंदी गाली (फोदा) ना दे।

गली-गली वलिया टुड़ा
गल्ली डे लेड रो

गलियों में ना मिले लेड टुड़ा
काली बदलिया रुन झुनो बाजे
ढाना में ना मिले लेड टुड़ा
काली बदलिया रुन झुनो बाजे
गांव में ना मिले लेड टुड़ा
काली बदलिया रुन झुनो बाजे

यह लड़का-लड़की की तलाश में गली-गली घूम रहा है। वह गलियों में नहीं मिलेगी इधर काली रंग में रंगी बदलिया गरज रही है। लड़की तुझे ढाना (मोहल्ला) में नहीं मिलेगी।

आज तेरी जवानी ढीली पड़ी रे
ढीली पड़ी रे, ढीली पड़ी रे,
आज तेरी जवानी ढीली पड़ी
लम्बे-लम्बे पान को बीड़ा बनायो
बीड़ा बनायो रे बीड़ा बनायो
ऐ बीड़ा खा ले ओ मसतेला टुड़ा
आज तेरी जवानी ढीली पड़ी रे

लड़की-लड़के से कह रही है कि आज तेरी जवानी कहाँ गई। वह तो ढीली पड़ गई है। मैंने तेरे लिए लम्बे पान का बीड़ा बनाया है, तू इसे खा ले। तू बहुत मस्ती करता है ना, तेरी जवानी कहाँ गई, क्या ढीली पड़ गई?

सुमरणी

मैं तो मुंजा लटक रयो रे राजा ठाकुर
मैं तो मुंजा लटक रयो रे ऽऽऽ
किन्हे जंगल को ये जैरी लाला, किन्हें जंगल को हरो बांस
किन्हे जंगल को बसोदा ठाकुर, मैं तो मुंजा लटक रयो रे.....
काहे में काटुं ये जैरी लाला, काटे कुल्हाड़ी रे बांस
काटे कुल्हाड़ी बसोदा ठाकुर, मैं तो मुंजा लटक रयो रे.....
काहे में घोलू हैं जैरी लाला, छोले बसुला रे बांस
छोले बसुला बसोदा ठाकुर, मैं तो मुंजा लटक रयो रे.....
काहे मनायो हैं जैरी लाला, काहे मनायो रे बांस
काहे मनायो बसोदा ठाकुर, मैं तो मुंजा लटक रयो रे.....

फागुन माह के शुरुआत में यह फाग गाई जाती है। इस फाग को सुमरणी के रूप में गाते हैं। मेघनाथ के खम्बे पर लाल कपड़ा बँधा हुआ लटक रहा है। किस जंगल से जैरी और हरा

बाँस लाया गया है? किस जंगल में आप रहते हैं राजा ठाकुर? किस हथियार से काटूँ ये जैरी? कुल्हाड़ी से बाँस काटें, आप कुल्हाड़ी में बसो राजा ठाकुर। किस हथियार से जैरी को छीलूँ, बसुला से बाँस छीलूँ, आप बसुला में बसो राजा ठाकुर। जैरी और बाँस किसलिए मनाया है राजा ठाकुर। मेघनाथ के खम्बे पर मुंजा (कपड़ा) लटक रहा है। राजा ठाकुर, मुंजा लटक रहा है।

अयले पार ये टुड़ी अमट हले गरसोन
पहले पार झण्डा उड़सती लाल ऽऽ
निवा कादांग बिछिया ओली ते दसेना
ओली ते दसेना , झोली ते दसेना
रूमुक झुमुक बसेना लालऽऽ, अयले पार.....
निवा कादांग पयड़ी छम-छम निकीता
छम-छम निकीतांग, छम-छम निकीतांग
नेकीता टिमकी ढोलक लालऽऽ, अयले पार.....
निकऊदा करन फूल मोती झलके मायता
मोती झलके मायता, मोती झलके मायता
झलके रे गंगा जमुना लालऽऽ, अयले पार.....
निवा तल्ला डा बेन्दी चमके मायता
चमके मायता, चमके मायता
चके रे सूरज चंदा लाल ..... अयले पार.....

लड़का-लड़की से कह रहा है कि उस पार होली का झण्डा गड़ा हुआ है, तुम झण्डा इस पार गड़ाओ, तब हम होली खेलेंगे। तुम्हारी बिछिया, पयड़ी, कर्ण फूल, बेन्दी अच्छे चमक रहे हैं। ये ढोलक और टिमकी गंगा-जमुना और सूरज-चाँद जैसे लग रहे हैं। झण्डा इस तरफ गड़ाओ, हम होली इस तरफ खेलेंगे।

जोड़ा पिचकारी जित हो ढोली राम
टुड़ी ने रंगी कींम हो ढोली राम
इद टुड़ी तरीता रो सड़ेका मड़ाते रो सड़ेका मड़ाते
ताना काल वंयशी रेह रो ढोली राम-जोड़ा पिचकारी.....
इद टुड़ी तरीता रो मरका मड़ाते रो मरका मड़ाते
ताना झेला वंयशी रेह रो ढोली राम- जोड़ा पिचकारी.....
इद टुड़ी तरीता रो लेंडी मड़ाते रो लेंडी मड़ाते
ताना केय वंयशी रेह रो ढोली राम- जोड़ा पिचकारी.....
इद टुड़ी तरीता रो सित्ता मड़ाते रो सित्ता मड़ाते
ताना नन्नी वंयशी रेह रो ढोली राम- जोड़ा पिचकारी.....

इद टुड़ी तरीता रो तोया मड़ाते रो तोया मड़ाते
ताना छींट वंयशी रेह रो ढोली राम- जोड़ा पिचकारी.....

ये लड़की रंग के डर से भाग रही है, इसे पकड़ो और रंग में रंगो। यह लड़की अचार, आम, जामुन, इमली, गुल्लर के झाड़ पर भाग-भाग कर चढ़ रही है, इसके पैर, हाथ, कमर, चुनरी पकड़ कर उतारो और इसे रंग में रंगो।

बोल तो ढोल, अरी सोडितोल, उड़का ओना बानी
बोल तो ढोल, जिया लातोल, उड़का ओना बानी
अवता फागुन सरता ढोल मूछा ओना तोल
इतल वाताल ओल जिया तोल ढोल
बोल तो ढोल जिया.....
इका ढाका नागा दाका नार छोड़े कीका
अदे कड़े बनो ते उड़का ओना बानी
बोल तो ढोल जिया .....
शीला बानी ढोड़ा बानी ए पीपर पानी
लाठी ते कोपा साड़ी उड़का ओना बानी
बोल तो ढोल जिया.....
बजार कीका हाट कीका भाजी एची दाका
इतूल बैतूल बजाड़े अन्ना पुटाका
बोल तो ढोल जिया .....
भैयाल बारी भाभी बारी बसन्त बरी तोल
मावा फागुन पाराग सब तून बेहता तोल
बोल तो ढोल जिया

यह लड़का बहुत घमंडी है और ढोल लेकर हमारे बीच घुस गया है। देखते हैं कि यह ढोल किस प्रकार बजाता है। लड़की चिढ़ाते हुए कहती है- इसके ढोल का चमड़ा मूँछ के जैसा है। फागुन माह में इसे ढोल बजाना नहीं आता। यह जाने को कह रहा है, लेकिन जा नहीं रहा है। यह कह रहा था कि मैं बाजार में मिलूँगा और सब्जी लेकर आऊँगा, लेकिन आया नहीं। भैया गा रहे हैं, साथ में भाभी गा रही हैं और फागुन का महीना बड़े उत्साह के साथ मना रहे हैं।

मोहन माला नमुतुल कन्हैयालाल, मोहन माला नमुतुल
बाना निवा मोहन माला रो मोहन माला
बदेना पची लड़ी कन्हैयालाल, मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....
मुतीयनता निवा मोहन माला री मोहन माला

रेशम ता पची लड़ी कन्हैयालाल, मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....
बचुग तोला ना निवा मोहन माला रो मोहन माला
बचुग तोला ना पच लड़ी कन्हैयालाल मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....
नौ तोला ना निवा मोहन माला रो मोहन माला
दस तोला ना पची लड़ी कन्हैयालाल मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....
बाड़ी नमतू निवा मोहन माला रो मोहन माला
बाड़ी नमतू पची लड़ी कन्हैयालाल मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....
लचके माना के मोहन माला रो मोहन माला
लचके माना के पचलड़ी कन्हैयालाल मोहन माला नमुतुल
मोहन माला नमुतुल.....

लड़कियाँ कह रही हैं– हमारी मोहनमाला कन्हैया ने तोड़ दी। मोहनमाला किसकी बनी है और उसकी डोर किसकी है? मोती की माला है, रेशम की डोर है। कितने तोले की है मोती माला और कितने तोले की पचलड़ी। नौ तोला की मोती माला है और दस तोले की पचलड़ी है। कैसे टूटी मोती की माला, कैसे टूटी पचलड़ी? लचकने में मोती माला और पचलड़ी टूटी और मोहनमाला कन्हैया ने तोड़ दी।

फगवा नाक सिम रो जीजा, फगवा नाक सिम
जतरा तल हादा इन्तकम रो जीजा फगवा नाक सिम
जतरा ते पयडींग वातांग पयडींग वातांग पयडींग वातांग
कोद अन्ना पयडींग कराको रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....
जतरा ते करदोना वातांग करदोना वातांग करदोना वातांग
नन्नी ते करदोना कराको रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....
जतरा ते चिडींग वातांग चिडींग वातांग चिडींग वातांग
कयदे चिड़ी अन्ना कराका रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....
जतरा ते पोतींग वातांग पोतींग वातांग पोतींग वातांग
बडेडे पोती कराका रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....

जतरा ते झुमका वातांग झुमका वातांग झुमका वातांग
कउदे झुमका कराका रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....
जतरा ते बिन्दिया वातांग बिन्दिया वातांग बिन्दिया वातांग
तल्ला डे बिन्दिया कराका रो जीजा फगवा नाक सिम
फगवा नाक सिम .....

हे जीजा! मुझे फगवा दो, मैं मेले में शक्कर की माला खरीदूँगी। जीजा मैं पाँव के लिए पैड़ी, कमर के लिए करदोना, हाथों के लिए चूड़ी, कानों के लिए झुमका और माथे के लिये बिन्दिया खरीदूँगी। जीजा! मुझे फगवा दो, मैं मेले में शृँगार की चीजें एवं शक्कर की माला खरीदूँगी।

अड़मा ढुडा ता कीश रो सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता
फागुन महिना ता होली पती लाता
सालई ढुडा ता कीश रो सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता- अड़मा .....
फागुन पाटांग अम्मर बारी लातम
मरका ढुडा ता कीश रो सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता - अड़मा .....
फागुन ते होली पुजी किया लातो
सित्ता ढुडा ता कीश रो सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता - अड़मा .....
फागुन ता फगवा तलकी लातम
इडुक ढुका ता कीश रो सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता - अड़मा .....
रंग गरसी लाताम फागुन अम्मट
वाता बसन्त ता रंग सेना
धुड़ा मावा होली पत्थी लाता - अड़मा .....

लकड़ी होली में जल रही है, देखो हमारी होली। फागुन माह में होली जलती है। सालई, आम, इमली, महुआ की लकड़ी होली में जल रही है। हमें फागुन का फगवा दो। होली के रंग में सभी मस्त हैं। बसन्त माह में होली खेल रहे हैं।

नेड गरसी होली हो टुड़ा संगो नेड गरसी होली
नेड गरसी होली हो टुड़ी संगो नेड गरसी होली

होली ते होली इद टुड़ी ना होली
होली ते रंगे मतु झेला रो टुड़ी नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली येल टुड़ा ना होली
होली रंगे मतु कमल रो टुड़ा नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली इल भैया ना होली
होली ते रंगे मतु धोती रो भैया नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली इद भाभी ना होली
होली ते रंगे मतु दिकड़ी हो भाभी नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली इद जीजा ना होली
होली ते रंगे मतु बंडी रो जीजा नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली इद बाई ना होली
होली ते रंगे मतु छीर हो बाई नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....
होली ते होली माना सब ता होली
होली ते रंगे मतुल बसन्त रो नेड गरसी होली
नेड गरसी होली.....

लड़का-लड़की एक दूसरे से कह रहे हैं कि हम आज होली खेलेंगे। लड़की! तेरी चुनरी लटक रही है और रंग में भीग गई है। ऐ लड़के! तेरा रूमाल रंग में रंगा है, भैया की धोती रंग में भीग गई है। भाभी की साड़ी रंग में भीग गई है। यह होली जीजा की होली है, उनकी बंडी भीग गई है। यह बाई की होली है और उनकी चुनरी भीग गई है। यह होली सबकी होली है, हम सभी मिलजुल कर होली खेलेंगे।

दा टुड़ी दाकर अपन फागुन ता जतरा
फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
छकड़ा ते रन्टे दाकर फागुन ता जतरा
फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
खूब लगे मारा हैदू फागुन ता जतरा
दा टुड़ी दाकर अपन ...
बारह महिना ते निन्दी फागुन ता जतरा

फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
खूब बलीकर अपुन फागुन ता जतरा
दा टुड़ी दाकर अपन...
टिकारी ते निन्ता है फागुन ता जतरा
फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
रन्टे-रन्टे छुड़कर फागुन ता जतरा
दा टुड़ी दाकर अपन...
मैगनाथ ता नीरा फागुन ता जतरा
फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
हारा ना है जतरा फागुन ता जतरा
दा टुड़ी दाकर अपन...
महा फागुन ते फागुन ता जतरा
फागुन ता जतरा फागुन ता जतरा
बसन्त वतूल फागुन ता जतरा
दा टुड़ी दाकर अपन ...

चल लड़की हम फागुन के मेले में चलेंगे। छकड़ा में बैठकर हम चलेंगे, फागुन के मेले में। मेला बहुत भरा हुआ है। बारह महीने में एक बार आता है, हम दोनों फागुन और टिकारी के मेले में खूब घूमेंगे। मेघनाथ का मेला लगा हुआ है, वहाँ से शक्कर की माला खरीदेंगे। बसन्त माह में हिल-मिल कर हम होली खेलेंगे।

जरा वायो नीवा लटेक नाकुन जरा वायो
इम्मा धोती कुरता करतोनी
जरा वायो पगड़ी ता लटेक नाकुन जरा वायो
पेन्ट शर्ट करतोनी, इम्मा पेन्ट शर्ट करतोनी
जरा वायो रोड़ी ता लटेक नाकुन जरा वायो
सरपुक मोंजाग करतोनी, सरपुक मोंजाग करतोनी
जरा वायो ताकाना लटेक नाकुन जरा वायो
मुददांग घडींग करतोनी, मुददांग घडींग करतोनी
जरा वायो हुड़ाना लटेक नाकुन जरा वायो

लड़की, लड़के से बोल रही है कि तेरे जैसे लटके-झटके हमें नहीं आते। लड़के तुम्हारे जैसे धोती-कुरता, पगड़ी पहनना हमें नहीं आता। अरे लड़के! पेन्ट, शर्ट, जूता, मोजा, अँगूठी, घड़ी तुम्हारे जैसे पहनना हमें नहीं आता। तुम्हारे जैसे लटके-झटके हमें नहीं आते।

जीम ढोलकी रो जीम ढोलकी रो
टूड़ा टूड़ी येंदा नुड जीम ढोलकी रो
बदेना ढोलकी बने माता ढोलकी बने माता रो ढोल बने माता
बदेना झांझ मंजीरांग रो, टूड़ा टूड़ी येंदा नुड ...
बिजा ता ढोलकी बने माता, ढोलकी बने माता रो ढोल बने माता
कांसा ता झांझ मंजीरांग रो, टूड़ा टूड़ी येंदा नुड...
बोल जिया नुल ढोलकी रो, ढोल क्यारो ढोलकी रो
बोल जिया नुल मंजीरांग रो, टूडा टूड़ी येंदा नुड ...
टुड़ाउ नेकसुतानुल ढोलकी रो, जिया नुड ढोलकी रो जिया नुड ढोल
हुडील जिया नुड़ा मंजीरांग ये, टूड़ा टूड़ी येंदा नुड ...
बोल नारातुल पाटांग रो, पाटांग रो वासनुल पाटांग रो
बोल केंजा नुड पाटांग रो, टूड़ा टूड़ी येंदा नुड ...
बसन्त वानानुल पाटांग रो, पाटांग रो वारातुल पाटांग रो
सब केंजा नुड पाटांग रो, टूड़ा टूड़ी येंदा नुड जीम ...

लड़के-लड़कियाँ ढोलक वाले से कह रहे हैं कि ढोलक वाले ढोल बजा, हम नाचेंगे। किस चीज की ढोलक बनी है, और किसका मंजीरा बना है। बीजा की ढोलक बनी है, कांसे का मंजीरा बना है। कौन बजा रहा है ढोलक को और कौन मंजीरा को? लड़का बजा रहा है ढोलक और लड़की बजा रही है मंजीरा को। कौन गायेगा फागुन गीत, और कौन सुनेगा? बसन्त फागुन गीत गायेगा और सब फागुन गीत सुनेंगे। ढोलक वाले ढोल बजा, हम नाचेंगे।

नीचे ऊंचे चौरासी टूड़ी बालम झुला खाय
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल.....
बिछियात लायनो मनी आड़मा टूड़ी, पाढर बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल.....
पैयड़ीत लायनो मनी आड़मा टूड़ी, बैतूल बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल.....
कमर पट्टात लायनो मनी आड़मा टूड़ी, शाहपुर बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल .....
तडयान लायनो मनी आड़मा टूड़ी, चिचोली बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल .....
खाडोयांत लायनो मनी आड़मा टूड़ी, आठनेर बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुंगलानी देश मोरे लाल.....
बेन्दीत लायनो मनी आड़मा टूड़ी, घोड़ाडोंगरी बाजार घमासान
टूड़ी हो चल मुगलानी देश मोरे लाल

लड़की तुम्हारा शरीर चौरासी टेकड़ी के जैसा बना हुआ है। मेरे साथ मुंगलानी देश में चलो, मैं तुम्हारे लिए बिछिया, पैड़ी, कमर पट्टा, तड़यान, खाड़ोयात, बेन्दी आदि सभी पाढर बाजार, बैतूल बाजार, शाहपुर बाजार, चिचोली बाजार, आठनेर बाजार, घोड़ाडोंगरी बाजार से खरीद कर ले दूँगा। तू मेरे साथ मुंगलानी देश को चल।

मनी गरेसमा बेईमान, घुड़ली मनी गरेसमा
घुड़ली मनी गरेसमा
दाई जो आड़ाल जलम-जलम त लायनो
सैलाड़ अड़ाल सावन फाग
मनी गरेसमा बेईमान, घुड़ली मनी गरेसमा
भाई जो आड़ाल मुंद दियान लाइनो
दाई अड़ाल रो जलम-जलम लायनो
मनी गरेसमा बेईमान, घुड़ली मनी गरेसमा

हम होली नहीं खेलेंगे, तुम बेईमान और धोखेबाज हो। अपने पुत्र के मरने पर माता उसका शोक हमेशा मनाती है और बहन सिर्फ सावन और फागुन त्योहार पर। इसी प्रकार औरत अपने पति का शोक सिर्फ तीन दिन मनाती है और माता सारा जीवन। हम होली नहीं खेलेंगे, तुम बेईमान और धोखेबाज हो।

नीचे ऊपर चौरासी गोरी बालम झोखा खाय
हो रे हो हरियल बोले कोयलिया
बिछिया ते लायनो, मैनी आड़ोमा टूड़ी
आठनेर बजार घमासान, हो रे हो हरियल ...
पैड़ा ते लायनो मैनी आड़ोमा टूड़ी
बैतूल बजार घमासान, हो रे हो हरियल...
कड़ली ते लायनो मैनी आड़ोमा टूड़ी
हिड़ली बजार घमासान, हो रे हो हरियल ...
दिकड़ी ते लायनो मैनी आड़ोमा टूड़ी
झल्लार बजार घमासान, हो रे हो हरियल ...
ऐंगीया ते लायनो मैनी आड़ोमा टूड़ी
भैंसदेही बजार घमासान, हो रे हो हरियल बोले कोयलिया

लड़की तुम्हारा शरीर चौरासी टेकड़ी के समान बना हुआ है, जिसमें मेरा मन ललचा रहा है। लड़की मैं तुम्हारे लिए बिछिया, पैड़ा, कड़ली, दिकड़ी, ऐंगिया ये सभी ले दूँगा। तुम मेरे साथ आठनेर, बैतूल, हिड़ली, झल्लार, भैंसदेही बाजार चलो, ये बाजार बहुत भरे हुए हैं।

बेगा हन्दा लातोल राम चन्दर बाबू, बेगा हन्दा लातोल
वनवासे हन्दा लातोल, वनवासे हन्दा लातोल
राम चन्दर बाबू वनवासे, हन्दा लातोल
बेगा मन्दा लातोल, बेगा मन्दा लातोल
राम चन्दर बाबू बेगा मन्दा लातोल...
डंगुडे मन्दा लातोल डंगुडे मन्दा लातोल
राम चन्दर बाबू डंगुडे मन्दा लातोल...
बडांग तिंदा लातोल, बडांग तिंदा लातोल
राम चन्दर बाबू बडांग तिंदा लातोल...
माटिंग तिंदा लातोल, माटिंग तिंदा लातोल
राम चन्दर बाबू माटिंग तिंदा लातोल
बडांग किया लातोल, बडांग किया लातोल
राम चन्दर बाबू बडांग किया लातोल
राकेश जिया लातोल, राकेश जिया लातोल
राम चन्दर बाबू राकेश जिया लातोल

कहाँ जा रहे हैं रामचन्द्र भगवान, कहाँ जा रहे हैं? रामचन्द्र भगवान जंगल जा रहे हैं। रामचंद्र भगवान कहाँ रहेंगे? वे जंगल में रहेंगे। रामचन्द्र भगवान क्या खायेंगे? रामचन्द्र जी कन्दमूल फल खायेंगे। राम चन्दर बाबू क्या कर रहे हैं? राम चन्दर भगवान राक्षस को मार रहे हैं।

टूड़ा निवा छब्बा बाड़ी आड़ीता पटेल जी
टूड़ा निवा छब्बा बाड़ी आड़ीता
छब्बा बाड़ी आड़ीता मुंजा लायनो आड़ीता
मुंजा करसि हुड़ा पटेल जी...
छब्बा बाड़ी आड़ीता सर्पु लायनो आड़ीता
सर्पु करसि हुड़ा पटेल जी...
छब्बा बाड़ी आड़ीता धोती लायनो आड़ीता
धोती करसि हुड़ा पटेल जी...
छब्बा बाड़ी आड़ीता टोपी लायनो आड़ीता
टोपी करसि हुड़ा पटेल जी...
छब्बा बाड़ी आड़ीता कल हुड़ाले आड़ीता
कल उनजि कुन हुड़ा पटेल जी ...

तुम्हारा लड़का क्यों रो रहा है पटेल जी? लड़का भी रोता है मोजा के लिए, मोजा पहन

कर देखो पटेल जी। लड़का जूते के लिए रो रहा है। जूते पहन कर देखो पटेल जी। लड़का धोती के लिए रो रहा है। धोती पहन कर देखो पटेल जी। लड़का टोपी के लिए रो रहा है। टोपी पहन कर देखो पटेल जी। लड़का दारू के लिए रो रहा है। दारू पीकर देखो पटेल जी।

निवा बगीचा झकाझोर रो राजा
निवा बगीचा झकाझोर
निवा बगीचा ते केले ता मड़ा
केले लगे झकाझोर रो राजा, निवा बगीचा झकाझोर ...
निवा बगीचा ते नारीयल ता मड़ा
नारीयल लगे झकाझोर रो राजा, निवा बगीचा झकाझोर ...
निवा बगीचा ते लीम्बू ता मड़ा
लीम्बू लगे झकाझोर रो राजा, निवा बगीचा झकाझोर ...
निवा बगीचा ते संतरा ता मड़ा
संतरा लगे झकाझोर रो राजा, निवा बगीचा झकाझोर ...

राजा! तुम्हारा बगीचा बहुत हरा-भरा है और फलों से लदा हुआ है। तुम्हारे बगीचे में केले, नारियल, नींबू और संतरा के झाड़ हैं और वे सभी हरे-भरे और फलों से लदे हुए हैं।

ना खेलो रे बेईमान, होली ना खेलो
किन्हे जंगल को है जेरी लाला, किन्हे जंगल हरो बांस
काय में काटूं ये जैरी लाला, काहे में काटूं हरो बांस
काटें कुल्हाड़ी से ये जैरी लाला, छिलो बसुला ता बांस
जोड़ा बैल पर जोते ये जैरी लाला, डूंडा बैल पर लाऊं बांस
शिवाना में अड़ायो ओ जैरी लाला, खरक मनायो ओ जैरी लाला ....
शिवाना से निकले गुठान में अड़ गयो, वहाँ पर मुर्गा मनायो है जैरी लाला
ना खेलो रे ...

तुम बेईमान हो, हम होली नहीं खेलेंगे। किस जंगल से जैरी (मेघनाथ का खम्बा) लाना है और किस जंगल से हरा बाँस? किससे जैरी काटेंगे और किससे हरा बाँस काटेंगे? कुल्हाड़ी से जैरी काटेंगे और बसुला से बाँस। बैल जोड़ी पर जोतकर जैरी लायेंगे और डूंडा बैल (एक सींग का बैल) पर बाँस रखकर लायेंगे। शिवाना (गाँव के बाहर) में अड़ाया जैरी को, तो खारक देकर मनाया, उसके बाद गुठान (जहाँ गाय, बैल, बकरी एकत्र होते हैं) पर अड़ाया, वहाँ पर देव के लिए मुर्गा मनाया है।

मनी गरसमा रो बेईमान धुरड़ी, मनी गरसमा रो बेईमान
बेना डगुड ये जैरी लाला, बेना डगुड डा लिलो बददुड

मनी गरसमा रो ...
बिन्द्रा डगुड ये जैरी लाला, कजली डगुड डा लिलो बददुड
बापी नरकाका रो लाला नरकारो बापी बददुड
नरका मस्ते रो जिरो लाला, छिलेकिय टट्टी ते बददुड
रड़ कोदाने जुये किंम रो जिरो लाला, डूंडा कोंदा पररो बददुड
शिवाना ते अड़े माता रो जिरो लाला, खारिक माने किम रो लाला
गुठान ते अड़े माता रो जिरो लाला मुर्गा माने किम रो लाला
मनी गरसमा रो ...

तुम बेईमान हो, हम होली नहीं खेलेंगे। किस जंगल से जैरी लाना है और किस जंगल से बाँस लाना है? वृन्दावन से जैरी और कजली वन से बाँस लाना है। किससे जैरी काटना है और किससे बाँस काटना है? कुल्हाड़ी से जैरी को और बसुला से बाँस को काटना है। बैल जोड़ी से जैरी लाना है और डूंडा बैल पर बाँस लाना है। शिवाना में जैरी अड़ गई तो खारिक मनाना है और गुठान पर जैरी अड़ गई तो मुर्गा मनाना है।

बाबा रो भोलानाथ बड़ादेव, पारवती तुन ओतूल रो
ये सोना टूड़ा सब पेनसी धरती पड़ा
धरती पड़ा रो तना काले कर्राट
मतुरा नारे सुआलो–पारवती तुन ओतूल रो ...
ये सोना टूड़ा सब पेनसी देवी पड़ा
देवी पड़ा रो तना काले कर्राट
मतुरा नारे सुआलो–पारवती तुन ओतूल रो ...
ये सोना टूड़ा सब पेनसी महावीर पड़ा
महावीर पड़ा रो तना काले कर्राट
मतुरा नारे सुआलो–पारवती तुन ओतूल रो ...

भोलेनाथ बाबा बहुत महान हैं, पार्वती को ब्याह कर ले गये हैं। यह लड़का सब देवताओं में धरती पर बड़ा है, हम उसके पैर पड़ते हैं। मथुरा नगरी बहुत अच्छी है। यह लड़का सब देवी–देवताओं से बड़ा है और महावीर से भी बड़ा है। हम उसके पैर पड़ते हैं, मथुरा नगरी बहुत अच्छी है। भोलेनाथ बाबा पार्वती को ब्याह कर ले गये हैं।

जोड़ा ढुलकी मारो सिपई राम, जोड़ा ढुलकी मारो
इद टूड़ी तरितारों सित्ता मड़ाते रो, सित्ता मड़ाते रो
सित्ता मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो मरका मड़ाते रो, मरका मड़ाते रो
मरका मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...

इद टूड़ी तरितारो लेंडी मड़ाते रो, लेंडी मड़ाते रो
लेंडी मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो लिम्बू मड़ाते रो, लिम्बू मड़ाते रो
लिम्बू मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो इडूक मड़ाते रो, इडूक मड़ाते रो
इडूक मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो सडैका मड़ाते रो, सडैका मड़ाते रो
सडैका मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो रेंगा मड़ाते रो, रेंगा मड़ाते रो
रेंगा मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो तोया मड़ाते रो, तोया मड़ाते रो
तोया मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...
इद टूड़ी तरितारो कोहका मड़ाते रो, कोहका मड़ाते रो
कोहका मड़ा घेर सिया लाता, सिपई राम ...

एक साथ ढोलक को बजाओ। ढोलक बजाने वाले एक साथ ढोलक बजाओ। ये लड़की इमली, आम, जामुन, नींबू, महुआ, अचार, बेर, गुल्लर और भिलवा के झाड़ पर चढ़ गई है। इन झाड़ों के चक्कर लगाओ। ढोलक बजाने वाले, ढोलक एक साथ बजाओ।

सिम मावा फगुआ रो गनिया
सिम मावा रो फगुआ
फगुआ सिया लेकुन लाजल वायो
सिम मावा रो फगुआ ...
इद सालता फगुआ हल छोड़े कोओन
हन्ना तलुकसि मंदा का सिम मावा फगुआ ...
मम्मा निवा सेंलान बे साले
सिम मावा फगुआ ...
बारह मेंहना ते उन्दी फेरी वायता मावा
सिम मावा फगुआ ...

ओ रे गनिया! हमें होली का फगुआ (चन्दा) दो। तुमको फगुआ देने में लाज आती है, इस साल का हम लोग फगुआ नहीं छोड़ेंगे। इसके लिए चाहे तुम अपनी बहन को बेचो, लेकिन हमारा फगुआ हमें दो। हम लोग बारह महिना में एक बार माँग रहे हैं, तुम हमारा फगुआ दो।

जामेक रामेक आयो बे गनिया
जामेक रामेक आयो बे

देओ हमारो फगुआ रे गनिया
देओ हमारो फगुआ, देओ हमारो फगुआ

उपरोक्त फाग गाती हुई महिलाएँ खण्डरई मेलों में एवं अन्य जगहों जैसे हाट-बाजारों, घर के आसपास झुण्ड में एक साथ निकलती हैं और फगुआ माँगती हैं। साथ ही हाथ में मोरपंख लिये 'सार नृत्य' करती हुई आगे बढ़ती हैं।

मरका ता मरका पन्नो उन्ट पुंगार मालन ता रईया
निवा दाई सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...
निवाल मोईयो सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...
निवा काकी सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...
निवाल काका सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...
निवा भाभी सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...
निवाल दादाल सितुल परदेश राशि पुंगार मालन ता रईया
बाहुन की कारो पेन पुंगार मालन ता रईया
निवा आडेंग-आडेंग जिवा बुड़ियाय राशि पुंगार ...

आम और आम का रस पियो। ऐ मालिन की लड़की (छोकरिया)! तेरे माँ-बाप, काकी-काका, भाभी-भईया ने तुझे परदेश में ब्याह दिया है और भगवान के भरोसे छोड़ दिया है, तेरा मन रोते-रोते पछता रहा है।

कोहकना कुण्डल मोती झलके माता
झलके रो मुंगा मोती लाल
चुडुक देवर जी अना बहुत वायका
कादा तोड़ा नेकिता रो
कादा तोड़ा ओटा तै निहा, रुमुक झुमुक वासे ना लाल

चुडुक देवर जी अना बहुत वायका
कैदा चुडि नेकिता रो
कैदा चुडिंग ओटा तै इरसिम, रुमुक झुमुक वासे ना लाल
चुडुक देवर जी अना बहुत वायका
कैदा पेहड़ा नेकिता रो
कैदा पेहड़ा ओटा तै इरसिम, रुमुक झुमुक वासे ना लाल
चुडुक देवर जी अना बहुत वायका
ननीडा दा पट्टा नेकिता रो
ननीदा पट्टा ओटा तै इरसिम, रुमुक झुमुक वासे ना लाल

कानों के कुंडल और गले में मोती झलक रहे हैं। छोटे देवर जी! मैं कैसे आऊँ? मेरे तोड़ा, चूड़ी, पेहड़ा, पट्टा आदि बज (आवाज) रहे हैं। देवर कहता है- इन सभी को ओली में रख लो और धीरे-धीरे चली आओ।

निवा मने लागोता ओ कजला, निवा मने लागोता
रंग ते पररो रंग चढ़े माता, ता पररो बिजली चमके रो
चुडिंग वाटि लागता ओ कजला निवा मने लागोता
बिछिया ते पररो तोड़ा तरिया, ता पररो बिजली चमके रो
पायल वाटि लागता ओ कजला निवा मने लागोता
पैडा ते पररो पट्टा तरिता, ता पररो बिजली चमके रो
कुंडल वाटि लागता ओ कजला निवा मने लागोता
कुंडल ते पररो बिंदिया तरिता, ता पररो बिजली चमके रो
नथनि वाटि लागता ओ कजला निवा मने लागोता

जिस प्रकार रंग के ऊपर रंग अच्छा चढ़ता है, उसी प्रकार मन को काजल अच्छा लगता है। बिजली चमक रही है। जिस प्रकार पेड़ की डाल पर फल लगते हैं, उसी प्रकार से चुड़ला, बिछिया, तोड़ा, पायल, कुंडल, नथनी, बेंदी आदि गहने शरीर पर अच्छे लगते हैं। आँखों में काजल अच्छा लगता है और मन को भाता है।

बदली आता इडूक अररोंग अले रो
जवानी वाता रईया बदे मायो रो
बईया टुकली रईया इडूक परिले
इडूक ता अंढाम बईया मसके-बदली आता ...
बईया टुकली रईया मरका परिले
मरका ता आड़ते बईया मसके-बदली आता ...
बईया टुकली रईया लेंडी परिले

लेंडी ता अंढाम बईया मसके–बदली आता
बईया टुकली रईया सित्ता परिले
सित्ता ता आड़ते बईया मसके–बदली आता
बईया टुकली रईया कोहका परिले
कोहका ता आड़ते बईया पटके–बदली आता

बदली हो रही है, पर महुआ पेड़ से नहीं गिर रहे हैं। लड़की जवान हो गई है। टोकनी लेकर लड़की महुआ, आम, जामुन, इमली, भिलवा आदि बीनने के लिए निकली है। इसी बहाने लड़की को पकड़ लो और छेड़–छाड़ करो।

ठाट में हंदा लातुल बोले बन्दूक सिपाई राम
जोडांग नवसता मोही लातुल रो
अरे सिपाई राम मोजांग भी, ऐंची सिका भोपाली ता
निवा सरपुक भी है शोभादार–जोडांग ...
अरे सिपाई राम धोती भी, ऐंची सिका बैतूल ता
निवा कुर्त्ता भी है शोभादार–जोडांग ...
अरे सिपाई राम टोपा भी, ऐंची सिका भैंसदेही ता
निवा चसमा भी है शोभादार–जोडांग ...
अरे सिपाई राम छल्ला भी, ऐंची सिका आठनेर ता
निवा घड़ी भी है शोभादार–जोडांग ...

बन्दूक वाले सिपाई जी जोड़े के साथ रचक चलो। सिपाई राम भोपाल मेले से मोजे और शोभादार जूते भी ले देंगे। इसी प्रकार धोती, टोपा, छल्ला भी बैतूल, भैंसदेही और आठनेर बाजार से लेंगे। सिपाई राम का कुर्ता, चश्मा और घड़ी शोभादार है।

तोया ता चिकनो आकी लडेक बाई
उमर बने माता सोनो ता
निवा बिछिया ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...
निवा पेंडा ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...
निवा कांगना ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...
निवा दिकड़ी ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...
निवा बिंदिया ता हले माता डाल

उमर बने माता सोनो ता ...
निवा अंगिया ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...
निवा पोथी ता हले माता डाल
उमर बने माता सोनो ता ...

गूलर का चिकना पत्ता है। इतराने वाली बाई! तेरी जवानी सोने के जैसी है। तेरी बिछिया, पेंडा, कंगना, साड़ी, बिंदिया, अंगिया, पोथी ये सभी डाल में फँस गई हैं और तुम बिल्कुल सोने जैसी सुन्दर हो।

कलंगी बेगा जमी किती रो ये टोपी राजाल
कलंगी बेगा जमी किती...
इद कलंगी अना आठनेर जमा किती
मुलताई झण्डा लकि तान रो, ये टोपी राजाल
कलंगी बेगा जमी किती ...
इद कलंगी अना बैतूल जमा किती
खेड़ी झण्डा लकि तान रो, ये टोपी राजाल
कलंगी बेगा जमी किती ...
इद कलंगी अना भैंसदेही जमा किती
सातनेर झण्डा लकि तान रो, ये टोपी राजाल
कलंगी बेगा जमी किती ...
इद कलंगी अना हिड़की जमा किती
जामगांव झण्डा लकि तान रो, ये टोपी राजाल
कलंगी बेगा जमी किती ...

ओ टोपी वाले! ये टोपी पर कलंगी कहाँ से जमाई है? इस टोपी पर मैंने आठनेर, बैतूल, भैंसदेही और हिड़ली से कलंगी जमाई है और मुलताई, खेड़ी, आठ तथा जामगाँव में झण्डा गड़ाया है।

सरदें ताकाल बोले, रन बन वो टूड़ा
नावा पोडाड हन्नो नवायो, केंजा नावा मामा रो
यार बोले इद टोंगी बोन जित्तूल
रिमझिम-रिमझिम पिर रिता पूर्ना तुल उसा वाता
केंजा नावा मामा रो यार ...
ढिमरन इता केंजा नवा दादा ढोंढा बरसिम नाक
केंजा नावा मामा रो यार ...

ढिमरा पूछे कैया तोल वा सिकी टूड़ी वरूसि सिका
डोडा पार केंजा नावा मामा रो यार ...
कैदा छल्ला मुंदा गुंडगा ता सिका हार रो ढिमरा
वरूसिकि डोडा तुन केंजा नावा मामा रो यार...
अद्द पार ता आली ता डाली बैसिकुन ढोढा किका
पार केंजा नावा मामा रो यार ...
दिनते मिन ता खंडा तिक्का रात वे उड़ी किका भंवर
जाल केंजा नावा मामा रो यार ...

ओ लड़के! कोई रन-बन रास्ता चलो। मेरे मामा जी सुनो, मेरे ससुर आते नहीं हैं। रिमझिम पानी बरस रहा है और पूर्णा नदी बह रही है। हे ढीमर भैया! मुझे उस पार जाना है, मुझे उस पार उतार दो। ढीमरा पूछ रहा है- लड़की मैं तुझे उस पार उतार दूँगा, तू मुझे क्या देगी? मैं तुझे हाथों का छल्ला और गले का हार दूँगी, बस मुझे उस पार उतार दे। उस पार की पीपली माता के पास के पेड़ की डाल पकड़कर उस पार उतर गई। इस दिन मैं तुझे मछली का खण्डा खिलाऊँगी, भँवर जाल में पकड़कर। सुनो, मेरे मामा जी।

निवा नवा नेदा धुरा रो माली टूड़ा
निवा नवा नेंदा धुरा
चुडुर डुंगी ते सनेक अध्धे माता
सनेक ना हुर्रा तिहा रो टूड़ा
निवा नवा नेंदा धुरा
चुडुर डुंगी ते गोहक अध्धे माता
गोहक ना हुर्रा तिहा रो टूड़ा
नवा नवा नेंदा धुरा
चुडुर डुंगी ते मसुर अध्धे माता
मसुर ना हुर्रा तिहा रो टूड़ा
निवा नवा नेंदा धुरा
चुडुर डुंगी ते बढ़ना अध्धे माता
बढ़ना ना हुर्रा तिहा रो टूड़ा
निवा नवा नेंदा धुरा
चुडुर डुंगी ते तिवड़ा अध्धे माता
तिवड़ा ना हुर्रा तिहा रो टूड़ा
निवा नवा नेंदा धुरा

माली के लड़के! तेरा-मेरा खेती का धुरा लगा हुआ है। छोटी-मोटी डुंगी में चना, गेहूँ

मसूर, बढ़ना और तिवड़ा बोया गया है, इनका होला खिला दे। माली के लड़के! तेरा-मेरा खेती का धुरा लगा हुआ है।

देवा दरो बान लागल महादेवा देवा दरो बान
धरती देवा ना सेवा महादेवा
देवा दरो बान लागल
हनुमान देवा ना सेवा महादेवा
देवा दरो बान लागल
देवी देवा ना सेवा महादेवा
देवा दरो बान लागल
मुटवा देवा ना सेवा महादेवा
देवा दरो बान लागल
महादेवा देवा ना सेवा महादेवा
देवा दरो बान लागल

महादेव का दरबार लगा हुआ है। धरती पर महादेव की पूजा हो रही है। हनुमान देव भी महादेव की पूजा कर रहे हैं। देवी, मुठवा देव की सेवा करो, महादेव का दरबार लगा हुआ है।

मन को डारो जेरी होली दा
मन को डारो जेरी
काहे में काटूं कच्ची कुल्हाड़ी
काहे में छिलू बसूला-मन को डारो ...
काहे में भरूं गाड़ी भरायलू काहे में
मन को डारो ...
काहे में अड़सू चराढ़ असुदा
काहे में जोतूं डूडा बैल दा-मन को डारो ...
काहे अड़ायो सिबन, काहे मनायो निम्बू मनायो दा
मन को डारो, जेरी होली दा-मन को डारो....
काहे अड़ायो पन घट अड़ायो, मुर्गा मनायो दा
मन को डारो ...

मन की जैरी (मेघनाथ का खम्बा) लाना है। मन की जैरी कुल्हाड़ी से काटना है और बसुला से छीलना है। गाड़ी भर कर लाना है और चराट से बाँध कर लाना है, अगर सिवाने में जैरी अड़ गई तो नीम्बू देकर और पनघट पर अड़ गई तो मुर्गा देकर मनाना है।

सित्ता मड़ा, मरका मड़ा, झुलपा ले धड़मी रो
टूड़ा निवा जवानी बहाले वायो

बहाले वायो टूड़ा बहाले वायो रो
टूड़ा निवा जवानी बहाले वायो ...

लड़कियाँ-लड़कों को चिढ़ाते हुये कहती हैं कि आम और इमली फूलों से लदकर गहरी छाया देते हैं, फिर भी तुम्हारी जवानी अभी तक नहीं आई है।

हम खेले-खेले खड़ेराय होली दा
हम खेले-खेले खड़ेराय होली
खड़ेराय होली हनुमान जोड़ी दा
हम खेले-खेले खड़ेराय होली

मेघनाथ के पास हम खेल रहे हैं। मेघनाथ के पास और हनुमान जोड़ी के पास हम होली खेल रहे हैं।

गरसाट-गरसाट खड़राय राजा होली
बांगना निवा रंग बने नायता
बांगना पिचकारी
गरसाट-गरसाट खड़राय राजा होली
मुरदा निवा रंग बने वायता
लिलो बददुड पिचकारी
गरसाट-गरसाट खड़राय राजा होली

मेघनाथ राजा! होली खेलो। तुम्हारे लिए किसके रंग बने हैं और किस चीज की पिचकारी बनी है? पलाश के फूलों से रंग बनाया गया है और हरे बाँस की पिचकारी बनी है। मेघनाथ राजा!

गरसितोल फागुन माह ते राजाल
होडि तोल आकाश ते अचम्बा पेन समाज
नेकिता ढोल ढपड़ा ता ताल
पुंगार धमुक सिया लाता आधो रात
नेडहि फगुआ मानी किकाट
नेदकट बारकट हल्ला मचिकिकट
अदमिड़ झनिक आपस्ते रांगी तोड़
कैचिकुन कवितोड़ राम भाईज संग

फागुन माह में राजाधिराज होली खेल रहे हैं। आकाश से ये सारा दृश्य बड़े अचम्भे के साथ देवी-देवता देख रहे हैं। सभी लोग ढोल-ढपला की ताल पर नाच रहे हैं। आधी रात से

फूलों की सुगंध महक रही है। सभी कह रहे हैं- हम लोग आज होली मना रहे हैं। आज हम एक-दूसरे को छेड़ेंगे और नाच गाकर हल्ला मचायेंगे। आदमी-औरत एक दूसरे को गाली दे रहे हैं। यह सुनकर राम अपने भाईयों के साथ हँस रहे हैं।

बैगाय ऐसो ना दुनिया ते आयाल
पड़ा पेन लेका दानी
चन्दन पड़ेक बेल ता आकी
अज्जा धतुरा ता पुंगार, तरोकुम जल येर
पड़ा पेन लेका दानी ...
इक्के पोगिता गंगाल, अक्के पोगिता जमुनाल
प्रयाग राज ते है तिरवेनी
पड़ा पेन लेका दानी ...
भागी रात राजाल ततुल गंगाल
तरेय माया लागता संसार
कुंजान ते गुते माता, पड़ा पेन लेका दानी ...

महादेव शिव के जैसा दुनिया में कोई दानी नहीं हुआ है। मैं उन्हें चन्दन, चावल, बेल की पत्ती और धतूरे के फूल और पानी चढ़ाता हूँ। इधर गंगा बह रही हैं, उधर जमुना और प्रयाग राज में त्रिवेणी बह रही हैं। भागीरथ राजा गंगा को लाये हैं, जिससे पूरा संसार खुशहाल हो गया है। गंगा महादेव शिव की जटा में उलझ गई हैं।

फागुन वाता रंगे वाता लेका
वली ताले मनी हानमाट गरसिले दट
फागुन ता समेय वाता, हिले-मिले गरमट भाईल
नेकिता ढोल ढपड़ा नेकिता मिठो ढपड़ा रो ...
निचिकेल पिचकारी जिलोल, ओला आसित नवा दिकड़ी
रात इलुन इत बहुन होली
केंजाट-केंजाट री कुबेर कन्हेया, रंगिलो समय वाता री...
उड़े माता गुलाल, सबता आता बेहाल
वारट-वारट जिसिकुन, होली वाता री...

फागुन आया है, रंगों का मौसम लाया है। घूमने-खेलने ना जाओ। फागुन का महीना है, हम मिल-जुलकर होली खेलेंगे। रंगीले और रसीले ढप और ढपला बज रहे हैं। उसने पिचकारी भरकर मारी और मेरी पूरी साड़ी भींग गई। गोपियाँ कह रही हैं कि ये कैसी होली है- कुँवर कन्हाई? यह रंगीली ऋतु आई है, मेरा तो हाल-बेहाल हो गया है। सभी लोग ताली बजा-बजाकर होली मना रहे हैं और कह रहे हैं- होली आई री।

ब्रजते सांवरे ना होली रो
लाल गुलाल ते लाल आता बदली
जातूल निहर्ची-निहर्ची झोली रो
बच्चोंग मन रंग धोरी कितुल
बच्चोंग मन धोरी कितुल केसर रो
उनसा मन तो रंग धोरी कितुल
पद मन धोरी कितुल केसर रो
बस्सो नाटेनोल कुंअर कन्हैया
बस्सो नाटेना टूड़ीक रो
नन्दग्राम तोल कुंअर कन्हैया
ब्रज नाटेना टूड़ीक रो
बड़ांग कैदे कुंअर कन्हैया
बड़ांग कैदे टूड़ीक ना रो
ढाल कैदे है कुंअर कन्हैया ना
लौठा जियाता टूड़ीक रो
बांग किया तालोड़ उवाल बाल सब्बे
बांग किया लाता टूड़ीक रो
ढाल ते रो क्या तोड़ ग्वाल बाल सब्बे
लौठांग जियातांग टूड़ीक रो

ब्रज में कुँवर कन्हैया की होली हो रही है, इधर पूरा आकाश गुलाल के रंग से लाल हो गया है। झोली में भर-भरकर गुलाल खेलने कितने मन रंग और केशर घोला गया है। नौ मन रंग और दस मन केशर घोला है। किस ग्राम के कुँवर कन्हैया हैं और किस ग्राम की गोरी है? नन्दग्राम के कुँवर कन्हैया और बरसाने की गोरी है। कन्हैया के हाथ में क्या है और गोरी के हाथ में क्या है? कन्हैया के हाथ में ढाल है और गोरी के हाथ में लठा है। ग्वाल-बाल और गोरी क्या कर रहे हैं? सब ग्वाल-बाल ढाल रोक रहे हैं और गोरी लट्ठ चला रही हैं। ब्रज में कुँवर कन्हैया की होली हो रही है।

साजन संग गरकोम होली
बांगना तो रंग बनी की तोड़
बांगना तो पिचकारी
कच्चो कली ता रंग बने माता
उनमा कंचन ता पिचकारी
निहतुल पिचकारी नित्तुल टोड़ पर्‌रो
बाटोड़ सब नाहच्चि सितुल दिकडिंग

सरडाड बाई नाकुन मनी नाहमा
साजन संग गर्सका होली

मैं साजन के साथ होली खेलूँगी। मैं किसका रंग बनाऊँ और किसकी पिचकारी? कच्ची कली से रंग बनायेंगे और कंचन सी पिचकारी लायेंगे। उसने मेरे ऊपर पिचकारी से रंग डाला और मैं पूरी की पूरी भींग गई। ननद बाई! मुझसे झगड़ो नहीं, मैं साजन के साथ होली खेलूँगी।

केसर ता उड़े माता फुहारा कदम ते
नादीता सांवलो ना मुहरत
बच्चो मन केसर निवा विरज ते
बच्चो मन उड़े फुहार
नादीता सांवलो ना मुरत
अरमुल मन केसर मावा विरज ते
अरमुल मन अड़े मन मावा फुहार
नादीता सांवलो ना मुरत

कदम के झाड़ के पास केशर रंग उड़ रहा है। रंग से साँवली सूरत हो गई है। ब्रज में कितने मन केशर घोला है और कितने मन गुलाल उड़ रही है। नौ मन केशर घोला है और नौ मन गुलाल उड़ रही है। कदम के नीचे रंग में कुँअर कन्हैया भींग रहे हैं।

ब्रज ते मदान वाले कन्हैया
गरसीतोल अच्छो फाग, ब्रज ते मदान वाले कन्हैया
संग ने हरयुड ग्वाल बाल, अंगा ते निहची-निहची गुलाल
अच्छो ढपली नेकततोल बलराम दादाल
ब्रज ते मदान वाले कन्हैया ...
पड़ा सजे मासीकेल वाता है, वरसाने ता टूड़ील
ओड़ा नडडूम है राधाल नवड़ी
गर्सी लातोड़ नन्द बाबा न अवार ते
पोगी लाता रंग ता धार
ब्रज ते मदान वाले कन्हैया ...

ब्रज में रहने वाला कन्हैया फाग खेलने लगा है। उसके साथ ग्वाल-बाल हैं और उनके पास बहुत सारा गुलाल है। बलराम भैया बड़े उत्साह के साथ ढप बजा रहे हैं, इतने में बन-ठन कर बरसाने की लड़कियाँ आ गई हैं और उनकी नायिका राधा हैं, जो दुल्हन के जैसे सजी-धजी हैं। दोनों नन्द बाबा के घर के सामने खूब एक-दूसरे पर रंग-गुलाल डालने लगे हैं।

ना पर्‌रो मनी वाटमा गुलाल कन्हैया
अना तो अहुने रंगे मातान निवा रंग ते ना पर्‌रो
बागना तो रंग बने किती, वागना तो पिचकारी
केसर ता रंग बनी किंतुम, बद्‌दुड ता पिचकारी
नीची पिचकारी सामुख जितोल, नानचित नावा दिकड़ी
जो केंजानुल नावोल मुड़ियाल, वायाअले सिनाल गरसिले गलिडे
जो केंजानुल तथा मुडियाल नावोल, इटियल सिनल अटियल सिनल रोंते
जो केंजानुल मोइंदो नावोल, इंयाल सिनल रोत रोपा

कन्हैया मुझ पर रंग मत डालो, मैं तो वैसे ही रंग में डूबी हूँ। किसकी पिचकारी और किसका रंग बना हुआ है। केशर का रंग और बाँस की पिचकारी है। पिचकारी भर कान्हा ने मेरे ऊपर मारी और मेरी साड़ी भिगा दी। यह सुन मेरे ससुर ने मुझे बाखर में और जेठ ने मुझे खाना बनाने वाले कमरे में भी नहीं घुसने दिया और यह सुन मेरे पति ने मुझे अपने कमरे में और बिस्तर पर नहीं सोने दिया।

अरे इंगी, पेन सेवा निवा अले वायो
गणेश पेन गरीब पेन, सेवा अले वायो

अरे इंगी बांगना गनपति बने माता
बेंग पर्‌रो पेन मढ़े माता
अरे इंगी सड़ा पिता गनपति पेन बने माता
कुत्तुल पर्‌रो मढ़े माता
अरे इंगी पेन बांगना खाना तिंदा लातूल
बेगादा येर ऊड़ा लातूल
अरे इंगी पाल बंजी जौड़ी ना खाना तिंदा लातूल
गंगाता येर उड़ा लातूल
पेन सेवा निवा अले वायो

हे देव! मैं तुम्हारी सेवा कैसे करूँ? किस वस्तु से गनपति बनाऊँ और उन्हें कहाँ मढ़ाऊँ। गोबर के गणपति बनाऊँ और पटा पर मढ़ाऊँ। देव किस प्रकार का भोजन करते हैं, कहाँ के जल से अंचवाते हैं। देव दूध-भात का भोजन करते हैं और गंगा जल से अंचवाते हैं।

राधा गरसिता होली रो मनमोहन संग
बच्चो मन केसर घोली कितुल
बच्चो मन उड़े माता गुलाल
अरमूल मन केसर घोली कित्तुल रो

पद मन तुड़िता गुलाल
बोना छिंट ओलो आता रो
बोना पंचरंग फाग
राधा ता छिंट ओलो आता रो
कान्हा ता पचरंग फाग
बाहुन बत्ताल नावा छिंट रो
वाडांग पंचरंग फाग
उड़िताल बत्ताल छिंट रो
मुरसिकुन पंचरंग फाग

राधा मोहन के साथ होली खेल रही हैं। कितने मन केशर घोला और कितने मन गुलाल उड़ रहा है? नौ मन केशर और दस मन गुलाल उड़ रहा हैं। किसकी चुनरी भीगी है और किसकी पचरंग पाग? राधा की चुनरी भीगी है और मोहन की पचरंगी पाग। चुनरी और पचरंगी पाग कैसे सूखेंगे? चुनरी लहराते हुए और पचरंगी पाग झोंका खाते हुए सूख रहे हैं।

ओयाले अल वायो सिपाई यार
ओयाले अल वायो लाल
फागुन ता महिना वासेत सिपाई यार
ओयाले अल वायो लाल
नावा संगना सखी सहेली
सवता आसि तुन गर्सवाल लाल
नावा संगना रंड रंड गर्ससुता
नावा उंदी ना आयो लाल
ओयाले अल वायो लाल ...

फागुन का महीना आ गया, साजन अभी तक विदा कराने नहीं आये। मेरे संग की सभी सखी-सहेली के लड़के-बच्चे चलने लगे हैं और मेरे साथ की सभी सखियाँ दो-दो लड़के-बच्चों को खिला रही हैं। मेरे एक भी नहीं हैं। साजन अभी तक विदा कराने नहीं आये।

निहचिकुन रंगता पिचकारी,
पिचकारी जित्तुल रो गिरधारी
गिरधारी येतूल केसरता झोली, जित्तुल ना पर्रो
जित्तुल रो गिरधारी
वाटतुल इच्चो रंग पुरो नान राधा ना दिकड़ी
जित्तुल रो गिरधारी

दिकड़ी नानतुन नानतुन छिंट, जुड़ी तुन सखी संगना
सारो बजे कितुन ताली
जित्तुल रो गिरधारी

रंग भरकर गिरधारी ने राधा पर पिचकारी मारी। गिरधारी ने झोली में केशर लेकर राधा के ऊपर डाला। राधा की साड़ी रंग से पूरी तरह सराबोर कर दी। साड़ी के साथ-साथ चोली भी भीग गई। सारी सखियाँ ताली बजा-बजाकर भागने लगीं।

पहिले मानि किकाट गिरजा ता लाल
काल कने तल्ला नवा किसी
पडेक धूप बाती अनि मेवा
तल्लाडे सिन्दूर लंकी काट
सेवा किका अधनाशक हो देवा
बुद्धि पुंटाल हो देवा
मढ़डी सेवा किता गनपति ना
फाग नई वारसि कुन

पहले हम लोग गिरिजा के पुत्र गणेश को मनाते हैं। उनके चरणों में सिर नवाते हैं। अक्षत, धूप, दीप तथा सब प्रकार के मेवा चढ़ाते हैं। सिर पर सिन्दूर चढ़ाते हैं। तुम सिद्धि देने वाले एवं बुद्धि वर देने वाले हो। मंडली तुम्हारा गान करती है और फाग गाती है।

बोल भजन राम ता कितुल,
पड़ा मजा ओल कितुल
पुरो समय लकि तुल तन मन धन
सब अरापेन किसि सितुल
इरतुल भक्ति तजि कितुल कपेट मन ताह
निरगुण पड़ोल पेन ता
आतुल हदांले समुन्द्रेर पारते,
अरमुल-अरमुल पड़ोल अरिकेत
मढ़डी भजे कितुल पड़ोल पेनकना
अले मंदाना दुनिया ते

जिसने राम का भजन किया, उसने जिन्दगी का बड़ा मजा उठाया है। पूरे तन-मन-धन से अपने आपको अर्पण कर देना चाहिए। कपट को छोड़कर निर्गुण ब्रह्म की ओर ध्यान लगाना चाहिए। मंडली कह रही है कि इस जगत में इसके बिना कुछ नहीं है।

मिले माम सब तुन प्रेम ताल
मानवाना येवनी ते वासी केल
पद्दियाना है वरता पान अपलोता
बातते मौका अल पुटनाल
बच्चो आयता अच्चो किसेना भलाई
इद दुनिया ते वासि केल
तिजेनट इजेनट सिसिम ऐचेंट
इतोना मिक समझिकिसी कुन
मढ़डी इंता बोने मनि जेमट
अपलोता काहे ताचि केल

यह मानव शरीर तुम्हें मिला है। सबसे प्रेम कर लो, यह जीवन कुछ दिन का है। तुम मेहमान हो। अगर कर सको तो भलाई के काम करो, अच्छा खा लो, अच्छा पी लो और अच्छा दान करो। मंडली तुम्हें अपनी बाँह उठाकर यही समझा रही है।

ब्रज ते आया लाता फगनई,
सुहानो दट हुड़कार दादाल
हातुड़ लत पथ गोप अनी गोपी
सब आसिकुन बार कट
ऐंची कुन राधा कोर बिन पर्रो,
लाल गुलाल लंकी तुल
मढ़डी ता काल सेवक रहे
मासी ध्यान लंकी सी
ओल कियातुल बपोडे बी ब्रज ते
आया लाला फगनई सुहानो

ब्रज नगरी में बहुत अच्छी फाग हो रही है, चलो हम लोग देखते हैं। इस नगरी में सभी गोप और गोपियाँ रंग में सराबोर हैं और फाग गा रहे हैं। कान्हा ने लाल गुलाल लेकर राधा के गाल पर लगाया है। मंडली कह रही है कि हम भगवान के सेवक हैं और ध्यान लगाकर कह रहे हैं कि भगवान हमारी सहायता करें। ब्रज में बहुत अच्छी फाग हो रही है।

निवा सेवा किका दिने रात पड़ापेन
ताना फल नाकुन उन्चा सिसि किट
मुड़ियाल बन कितोल कोडयान बजेटा
मावा बांझ पनतुन ईमा मिटिकिम
तैया मुड़ियाल बन कितोल कोडयान बजेटा

मावा बांझ पनतुन ईमा मिटिकिम
शेरडू इनतोल नावा भाभी बजेटा
मावा बाँझ पनतुन ईमा मिटिकिम

हे महादेव! तेरी सेवा दिन-रात करूँ। मुझे एक फल दो। हे महादेव! ससुर कहते हैं कि बहू बाँझ है। बाँझ का नाम मिटा दो महादेव। जेठ कहते हैं कि बहू बाँझ है। बाँझ का नाम मिटा दो महादेव। देवर कहता है कि भौजी बाँझ है। बाँझ का नाम मिटा दो महादेव। मुझे एक बच्चे का फल दे दो महादेव! मुझे बाँझ के नाम से मुक्ति दो।

दिन फागुन महिनाता वाया लातुंग
लिलो आंकींग कमकाल आया लातुंग
नरका घटे मावा लातुल
दियांग बड़े माया लातुल
तुड़ी लातुंग आकींग नालुंगटे खाक
नडी ता रुक फैले माया लातुल
इता डे मढ़डी मावा
बोल सवा तिता कोवदे लागा नुल

फागुन का महीना आ गया है और पेड़ों के पत्ते पीले पड़ने लगे हैं। रात घटने लगी है और दिन बढ़ने लगे हैं। सभी तरफ पेड़ों के पत्ते उड़ते हुए दिखाई देने लगे हैं। हवा तेज चलने लगी है। मंडली कहती है कि यह मौसम कितना सुन्दर दिखने लगा है।

मान वल बगैर मोत वोय नुल मवा नार
पहले ओयाले मुड़ियाल वातुल
मुड़ियाले हुड़ितुल मन मुरझे मातुन
दूसरो बार ओयाले सेरंडु नावल वातुल
कोड़ा छोड़ी किसी केल बछेरी ते लातुल
तीसरो बार बागेल तया मुड़ियाल वातुल
तया मुड़ियाल संग चुहि नवा दाल
चौथो बार ओयाले नवा मोयदो वातुल
जल्दी वैसी कुन ओया लातुल

मैं साजन के बगैर ससुराल नहीं जाऊँगी। पहली बार मेरा ससुर आया, उसको देख मेरा मन मुरझा गया। दूसरी बार मेरा देवर आया, उसकी आदत खराब है, वह कहीं भी मुँह मारता है। तीसरी बार मेरा जेठ आया, जेठ के साथ भी मैं नहीं गई। चौथी बार मेरा सैंया आया और उसने मुझे चिपका लिया। मैं अपने साजन के बगैर नहीं जाऊँगी।

येर निहिताता जानकी झनी
बोना कोडियाड बोना रो टूड़ी
बोन मानवाना झनी
दशरतता कोडियाड झनक ना टूड़ी
राम मानवाना झनी
सिया हय्यू चुडुग गगरी है पड़ा
थर-थर कंपे मायता विचारी
तुलसीदास आस कियाता रघुवरता
हरि काल बलिहारी

जनक की बेटी जल भर रही है। यह किसकी बहू है और किसकी बिटिया है, और किसकी नारी कहलाती है? यह दशरथ की बहू है। जनक की बेटी है और राम की नारी है। सीता छोटी हैं और गगरी बहुत बड़ी है। वह बेचारी थर-थर काँप रही है। तुलसीदास जी कहते हैं- यह सब राम की लीला है और उनकी ही कृपा है।

अरे हां खबतेर रैतुंग डोंडा ता रेतते
उलांग लेंडी डंगान
खबूतेर रैतुंग डोंडा ता रेतते
अरे इंगी खबूतर बोल पाले कितुल मिट्ठू मैना
बोल पाले कित्तुल मल्क
अरे इंगी खबूतर राम पाले कित्तुल मिट्ठू मैना
लक्ष्मण पाले कित्तुल मल्क
अरे इंगी खबूतर वा पोकिंता मिट्ठू मैना
बांग-बांग पेकिंता मल्क
अरे इंगी खबूतर मोतिंग पेकिंता मिट्ठू मैना
दानांग पेकिंता मल्क
अरे इंगी खबूतर तुलसीदास ता है इदवारी
राम नाम सिर मल्क

अरे हाँ! कबूतर नदी में उतर आये हैं और जामुन की डाल पर बैठे हैं। ये कबूतर और मोर किसने पाले हैं? राम ने कबूतर पाले हैं और लक्ष्मण ने मोर पाले हैं। तोता-मैना और मोर क्या खाते हैं? कबूतर, तोता, मैना मोती चुगते हैं, दाना मोर चुगते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि यह सब राम नाम की लीला है।

ब्रिन्दाबन ता नंडुम गरसितोड़ होली
गरसितोड़ होली मड़ि कितोड़ होली

बैनल वातुल कुंअर कन्हैया
वैनल वातुल राधा टूड़ी
इन्नल वातुल कुंअर कन्हैया
अन्नल वाता राधा टूड़ी
बोना कैदा कनक पिचकारी
बोना कैदे गुलाल झोली
मोहनता कैदे कनक पिचकारी
राधा ना कैदे गुलाल झोली
आता लाल रो ब्रज ता मण्डल
सूरदास की बलिहारी

वृन्दावन में होली हो रही है। कुँवर कन्हैया और गोरी कहाँ से आ गये?। इधर से कुँवर कन्हैया, उधर से राधा गोरी आई हैं। मोहन के हाथ में पिचकारी है और राधा के हाथ में लाल गुलाल और रंग है। सूरदास कह रहे हैं कि सारा ब्रज मण्डल लाल हो गया है। यह सब कुँवर कन्हैया की लीला है।

झोपड़ी ते गर्मी आया लाता राम
काडियल पिडीयड मन बल ते छोड़ी किसी बेना
एसो पाढरी तुन हले छोड़ी कियाना
मड़ मिंग वाले मन बल ते छोड़ी किसी बेना
ऐसो कुंवारो तुन हले छोड़ी कियाना
सेनो सानो मन बल ते छोड़ी किसी बेना
ऐसो रइया तुन हले छोड़ी कियाना

अरे राम! झोपड़ी में गर्मी हो रही है। अगर काली-पीली होती तो मैं छोड़ देता, लेकिन गोरी को मैं नहीं छोड़ सकता। अगर शादीशुदा होती तो मैं छोड़ देता, लेकिन कुँवारी को छोड़ा नहीं जाता। अगर उम्र में अधिक होती तो मैं छोड़ देता, लेकिन ये तो जवान है, इसे मैं छोड़ नहीं सकता। झोपड़ी में गर्मी बहुत अधिक हो रही है।

गोगोरी पुंगार पोयता हो झल्लो
गोगोरी पुंगार पोयता
बडोंदा ठूसा लागता हो झल्लो
गोगोरी पुंगार पोयता
ढोलकी ता ठूसा लागता हो झल्लो
गोगोरी पुंगार पोयता

तुम गुलाब के फूल जैसी सुन्दर खिली हुई हो। लड़की तुझे किसका धक्का लग गया है, जिससे तुम उदास हो। क्या तुझे ढोलक का धक्का लग गया है, इसलिए तुम नाराज हो।

लीलो अंगिया लाले डोर
ये हो रेतो कुँवारी
टूड़ा निवा उरमाल राधो पड़ेल
ये हो रेतो कुँवारी
टूड़ा निवा टोटड़ी राधो पड़ेल
ये हो रेतो कुँवारी
पंडोल नाकेटाल बाई पंडोल छिनराल
ये हो रेतो कुँवारी

हरी अंगिया में लाल बन्ध लगे हैं। अरे लड़के! मैं तेरे कारण कुँवारी ही रहूँगी। अरे लड़के! तेरा गमछा खराब है जैसे पिंजरे में पड़ा हुआ तोता। तेरा चेहरा भी इसी प्रकार है। अरे लड़के! तू तो नकटा और बदचलन भी है।

काली काली फुन्देना लगी जगा जोत
ये बाजू बंदरो रे मोहनी माला
मोहनी माला टूड़ा बैरागी जोग
ये बाजू बंदरो रे मोहनी माला

अरे लड़के! मेरी बाँहों में काले-काले बन्ध लगे हैं, उनकी चमक तेरी आँखों को वैसे ही चमकाती है, जैसे मेरे गले में मोहनी माला चमकती है। अरे लड़के! जैसे मेरी मोहनी माला वैराग्य उत्पन्न करती है, वैसे ही तेरे मन में भी कहीं वैराग्य तो उत्पन्न नहीं हुआ।

बेना डंगूड़ा जेरी मोहन लाल
बेना डंगूड़ा बददूड यार
बोल केयसी जेरी मोहन लाल, बोल केयसी बददूड यार
राजाल केयसी जेरी महनसा, रानी केयसी बददूड यार
पड़ा डंगूड़ा जेरी मोहनसा, कजली डंगूड़ा नटका बददूड यार
बापीन नहे कीका जेरी मोहनसा, वापी कीकाट बददूड यार
मर्सते नटका जेरी मोहनसा सटीडे नटका बददूड यार
नाड़ी नट्टे कीकाट जेड़ी मोहनसा, चरनिह कीकाट बददूड यार
बेना डोबा परो जेड़ी मोहनसा, बैना डोबा परा बददूड यार
मोती जोड़ीत परो जेड़ी मोनसा, जामा जोड़ी परो बददूड यार
बोल अकाले जेड़ी मोहनसा बोय हकालेकिया बददूड यार
टूड़ाल अकाले जेड़ी, टूड़ी हकलाये रे बददूड यार

कौन से जंगल से जेरी लाना है तथा कौन से जंगल से बाँस। किसको बुलाकर जेरी लाना है, किसको बुलाकर बाँस? राजा को बुलाकर जेरी लाना है, रानी को बुलाकर बाँस। बड़े जंगल से जेरी, कजलीवन से लाना है बाँस? कौन से हथियार से जेरी काटना है तथा कौन से हथियार से बाँस? कुल्हाड़ी से जेरी तथा हंसिया से बाँस काटना है। नाड़ी से बाँधकर जेरी और चराट से बाँधकर बाँस लाना है। मोती जोड़ी पर रखकर जेरी तथा जामा बैल पर बाँस लाना है। जेरी की गाड़ी को लड़का हाँक लेगा और बाँस की गाड़ी को लड़की।

अवध बन फूल रही भाई, अवध बन फूल रही भाई
कौन मात के लक्ष्मण योद्धा, कौन मात के राम
कौन मात के भरत शत्रुघन, कौन मात के हनुमान
अवध बन फूल रही भाई
सुमित्रा के लक्ष्मण योद्धा, कोसल्या के राम
कैकई के भरत शत्रुघन, अंजनी के हनुमान
अवध बन फूल रही भाई
कौन काज को लक्ष्मण योद्धा, कौन काज को राम
कौन काज को भरत शत्रुघन, कौन काज को हनुमान
अवध बन फूल रही भाई ..
बान सहन को लक्ष्मण योद्धा, रावण मारण को राम
राज करन को भरत शत्रुघन, लंका फूकन हनुमान
अवध बन फूल रही भाई ...

अवध नगरी के वन में अच्छे फूल लगे हुए हैं। किस माता के लक्ष्मण और किस माता के योद्धा राम हैं और ये क्या करने के लिये हैं? किस माता के भरत-शत्रुघन हैं और किस माता के हनुमान हैं और ये क्या करने के लिये हैं? लक्ष्मण सुमित्रा माता के हैं और बाण सहने के लिए हैं। राम कौशल्या माता के हैं, रावण को मारने के लिए हैं। भरत कैकेई के हैं और राज करने के लिए हैं। हनुमान माता अंजनी के हैं और लंका दहन के लिए हैं। अवध के वन में फूल अच्छे खिले हुए हैं।

राम कहो मोरे भाई रे, तुलसी राम कहो मोरे भाई
शाम भयो दिन गयो भवन में, तुलसी सोच विचारे
गऊआ बछला बन्द किये हैं, सोटा लियो ससुराल रे
तुलसी राम कहो ...
आगे-आगे नदिया अगम घाट बहत है ताहे में मुर्दा जात बहायो
तुलसी जानी की ठूठ बहत है, वही पकड़ पार भयो रे .

तुलसी राम कहो ...
चौ मेर मेहनल फिर पायो ना मिल पायो दरवाजा
खिड़की बीच एक नाग लटक रहो, वही को पकड़ पार भयो रे
तुलसी राम कहो ...
पिया तुमने हमसे इतनो हेत लगायो, हरि से क्यों ना लगायो
वो भी जब पहुंचे बैकुंठ द्वार जहां हरि लगो दरबार
तुलसी राम कहो ...

मेरे भाई राम का नाम लो। तुलसीदास जी कहते हैं– शाम होते ही गाय बछड़े को बाँधकर शयन कक्ष में चले गये। आगे नदी का घाट है, वहाँ से मुर्दा बह रहा था, उसे ठूठ समझकर तुमने नदी पार कर ली। चारों तरफ महल घूमा फिर भी दरवाजा नहीं मिला। खिड़की पर नाग लटक रहा था, उसे ही पकड़कर महल के भीतर आ गये। तुमने संसार रूपी जीवन को इतना महत्त्व दिया, भगवान का तुमने कभी ध्यान नहीं किया। इस दुनिया से जब तुम चले जाओगे, तो सभी को भगवान के दरबार में मिलना है। इसलिए राम का नाम अभी से ले लो।

हम खेलें–खेलें खड़राय होली दा
हम खेलें–खेलें खड़राय होली दा
खड़राय होली हनुमान जोड़ी दा
हम खेलें–खेलें खड़राय होली दा
ये टूड़ा खेलें बहिनी साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...
ये टूड़ा खेलें भईया साथ होली दा
हम खेलें खेलें ...
ये भाभी खेलें भईया साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...
ये भाभी खेलें ननद साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...
ये देवर खेलें भाभी साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...
ये टूड़ी खेलें जिजा साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...
ये जिजा खेलें बहिनी साथ होली दा
हम खेलें–खेलें ...

हम लोग मेघनाथ और हनुमान जी के पास होली खेल रहे हैं। यह लड़का अपनी बहन

के साथ होली खेल रहा है। यह लड़की अपने भाई के साथ होली खेल रही है। यह भाभी अपने पति के साथ होली खेल रही हैं। यह भाभी ननद के साथ होली खेल रही है। यह देवर भाभी के साथ होली खेल रहा है। यह लड़की अपने जीजा के साथ होली खेल रही है। यह जीजा बहन के साथ होली खेल रहा है।

जब देखे जब टोपी वाले
ये टोपी वाले से लगी दोष दारी चुनरिया
जब देखे जब टोपी वाले

जब मै देखती हूँ, मुझे टोपी वाला ही नजर आता है। इस टोपी वाले से मेरी दोस्ती हो गई है।

रब्बो-रब्बो चली परदेश दा
नांदन में बोले कोयलिया
भैया मनावें ता ना माने भाभी
उड़ा निवोल मोयदो ना देश दा
नांदन में बोले कोयलिया
नीचे ऊँचे टेकड़ में चढ़ो-चढ़ो देखे
उड़ा निवोल मोयदो ना देश दा
नांदन में बोले कोयलिया।

वह धीरे-धीरे अपने पिया के देश जा रही है। रोती ऐसी है जैसे वन में कोयल कूकती है। देवर कह रहा है। भईया के मनाने पर भी भाभी नहीं मान रही हैं। वे कह रही हैं कि मेरे माता-पिता का घर छूटा जा रहा है। ऊँचे-नीचे पहाड़ी को चढ़कर देख रही है, मेरे माता-पिता का घर छूटा जा रहा है।

निवा हरियल भोले श्री भगवान
बिछिया के लाने मत रोवे टूड़ी, चिचोली बजार घमासान
निवा हरियल भोले श्री भगवान
तोड़ा के लाने मत रोवे टूड़ी, आठनेर बजार घमासान
निवा हरियल भोले श्री भगवान
कड़ली के लाने मत रोवे टूड़ी, भैंसदेही बजार घमासान
निवा हरियल भोले श्री भगवान
करदोड़ा के लाने मत रोवे टूड़ी, मुलताई बजार घमासान
निवा हरियल भोले श्री भगवान

ओ लड़की! तू बिछिया, तोड़ा, कड़ली और करदोड़ा के लिए मत रो। चिचोली,

आठनेर, भैंसदेही और मुलताई का बाजार बहुत अधिक भरा हुआ है। मैं यह सब लेकर तुझको दूँगा, तू मत रो।

सित्ता पिटोली निमा डेरा हो रईया निट
सित्ता सिसि मन भोरे केमट हो रईया निट
सित्ता पिटोली निमा ...
मरका पिटोली निमा डेरा हो रईया निट
मरका सिसि मन भोरे केमट हो रईया निट
मरका पिटोली निमा ...
इडूक पिटोली निमा डेरा हो रईया निट
इडूक सिसि मन भोरे केमट हो रईया निट
इडूक पिटोली निमा ...
सडेका पिटोली निमा डेरा हो रईया निट
सडेका सिसि मन भोरे केमट हो रईया निट
सडेका पिटोली निमा ...

इमली, आम, महुआ और अचार के पेड़ के नीचे तुम्हारा घर है। लड़कियाँ हम लोगों को इमली, आम, महुआ और चार देकर मत समझाओ।

अरे तम्बाकू देओ गोरी, तेरो नईयां भरोसा यार
काली चिड़ैया चिड़-चिड़ बोले, कऊंआ बोला डारम डार
तम्बाकू देओ गोरी ...
आड़ी ओ तेड़ी रेवा-नरबदा, रेवा चली परदेश
तम्बाकू देओ गोरी ...
आड़ी ओ तेड़ी माचना-सापना, माचना चली परदेश
तम्बाकू देओ गोरी ...
आड़ी ओ तेड़ी तवा-तासी, तवा चली परदेश
तम्बाकू देओ गोरी ...
आड़ी ओ तेड़ी गंगा-जमुना, गंगा चली परदेश
तम्बाकू देओ गोरी ...

लड़के-लड़कियों से कह रहे हैं कि गोरी! तुम तो जंगल की चिड़िया और कौए जैसी हो। जिस प्रकार काली चिड़िया और कौआ एक डाल से दूसरे डाल पर चहकते रहते हैं, उसी प्रकार तुम भी चहकती रहती हो। एक दिन तुम अपने पिया के घर चली जाओगी। अरे! हमें जरा सी तम्बाकू खिला दो। जिस प्रकार रेवा-नर्मदा, माचना-सापना, तवा-तासी, गंगा-जमुना ये सभी नदियाँ आड़ी-टेड़ी बहती हुई परदेश को निकल गई हैं, उसी प्रकार तुम भी चली जाओगी, तुम्हारा कोई भरोसा नहीं है।

बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो
बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो
दौड़े-दौड़े जाये दारी, सुनरा दुकान पर
माथा पर बेंदी चमक रही है
बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो
दौड़े-दौड़े जाये दारी, चुड़ला दुकान पर
हाथ की चुड़ी चमक रही है
बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो
दौड़े-दौड़े जाये दारी, चाटा दुकान पर
ओढ़न की चुनरी चमक रही है
बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो
दौड़े-दौड़े जाये दारी, मनहारी दुकान पर
गले में मोती चमक रही है
बिन्द्राबन ग्वालन घर बांधो

वृन्दावन में ग्वालन ने घर बनाया है। वह सजने-सँवरने के लिए जंगल में रहते हुए भी सुनरा, चुड़ला, चाटा और मनहारी की दुकान पर जाती है। सजने-सँवरने के लिए बेंदी, चूड़ी, चुनरी, मोती आदि खरीद कर लाती है।

दूर की अमरैया ओ समधन, दूर की अमरैया
या अमरैया में चाटा बसत है
साड़ी पै नाय, घर भेजो ओ समधन
या अमरैया में सुनरा बसत है
बिंदिया पै नाय, घर भेजो ओ समधन
या अमरैया में चुड़ला बसत है
चुड़ी पै नाय, घर भेजो ओ समधन
या अमरैया में चमरा बसत है
चप्पल पै नाय, घर भेजो ओ समधन

समधिन दूर की अमरैया है। इस अमराई में चाटा, सुनरा, चुड़ला सभी रहते हैं। क्या मैं तुम्हारे लिए साड़ी, बिंदिया, चूड़ी, चप्पल आदि तुम्हारे घर भेज दूँ।

काहे रे बंदरा अनमनो देखे
तेरो सूरत बड़ो मैलो लाल
कुर्सी पे बैठन को भल्लो बिराजे
फगुआ देने को रोवें लाल

क्यों रे लड़के! ऐसे आँख निकालकर क्यों देख रहा है, तेरी सूरत बड़ी खराब है। कुर्सी पर बैठना तो अच्छा लगता है और हमारा फगुआ देने को रोता है।

जेड़ो पूनो होली जले, हम खेलें भाई होली
काहे में काटूं रे बांस, काहे में छोलूं जेड़ो
पूनो होली जले
कुल्हाड़ी में काटूं रे बांस, बसुला में छोलूं जेड़ो
पूनो होली जले

होली पूर्णिमा के दिन जलती है, हम होली खेलेंगे। किससे काटूँ बाँस और किससे जेड़ो छोलूँ? कुल्हाड़ी से काँटू बाँस और बसूला से जेड़ो छीलूँ।

सोले जाटा मजुरा ना रोपा, सोले जाटा
जारा ओना चोंडी छाती, उडका ओना टोड़ दे
सोले जाटा मजुरा ना रोपा ...

खुजली वाले पेड़ के अन्दर सोया है खुंदो, उसकी चौड़ी छाती और उसके मुँह में पेशाब कर दो।

इद टूड़ी तरिता मरका मड़ाते रे
मरका मड़ाते सित्ता मड़ाते
टूड़ी ना काल वैसी, रेहानो टूड़ा जोड़ा ढोलकी ना बाजे
इद टूड़ी तरिता तोया मड़ाते रे
तोया मड़ाते इडूक मड़ाते
टूड़ी ना काल वैसी, रेहानो टूड़ा जोड़ा ढोलकी ना बाजे
इद टूड़ी तरिता कोहका मड़ाते रे
कोहका मड़ाते, सड़ेका मड़ाते
टूड़ी ना काल वैसी, रेहानो टूड़ा जोड़ा ढोलकी ना बाजे

यह लड़की आम और इमली के पेड़ पर चढ़ी है। लड़की का पैर पकड़कर पेड़ से नीचे उतारो, तब तक ढोलक नहीं बजेगी। यह लड़की गुल्लर और भिलवा के पेड़ पर, महुआ और अचार के पेड़ पर चढ़ी है। पहले उसका पैर पकड़कर उतारो, तब तक ढोलक नहीं बजेगी।

कौन खेलें राजा राम होली कौन खेलें
हम खेलें राजा राम होली हम खेलें
कौन डगुड को ये जाड़ो होली
कौन डगुड को ये हरो बांस

हम खेलें राजा राम होली हम खेलें
कजली डगुड को ये जाड़ो होली
बन्द्रा डगुड को ये हरो बांस
हम खेलें राजा राम होली हम खेलें
काहे में काटूं ये जाड़ो होली
काहे में काटूं ये हरो बांस
हम खेलें राजा राम होली हम खेलें
कुल्हाड़ी में काटूं ये जाड़ो होली
हंसिया में काटूं ये हरो बांस
हम खेलें राजा राम होली हम खेलें

राजा राम के साथ कौन होली खेलेगा? राजा राम के साथ होली हम खेलेंगे। किस जंगल से जाड़ो लाया है, किस जंगल से हरा बाँस? कजली वन से जाड़ो और वृन्दावन से बाँस आया है। किससे काटकर जाड़ो लाना है, किससे काटकर बाँस लाना है? कुल्हाड़ी से काटकर जाड़ो और हँसिये से काटकर बाँस लाना है।

काहे रे भैया लिम तरे सोयो
लिम तरे सोयो कि बहनी सात सोयो
बाड़ी रो भाऊ लिम सिर नाम तोनी
लिम सिर नाम तोनी कि निवा सेंलार संग नाम तोनी

भाभी देवर को चिढ़ाती है और कहती है कि क्यों भईया! तुम नीम के नीचे सोये हुए हो कि अपनी बहन के साथ सोये हुए हो।

ढोल जिया वायो, निकुन टिमकी जिया वायो
इगा बड़ा टूड़ा सार वाटकी
अना दाका टूड़ा ढोल जिया ले हनी टिमकी जिया ले

लड़कियाँ-लड़कों से बोलती हैं कि तुमको ढोल और टिमकी बजाना नहीं आता। इधर आओ, तुम लोग ये सार पकड़ो, हम लोग ढोल और टिमकी बजायेंगे।

खेल लो गोरी रंग गुलाल
कौड़ी तोय नल जितोल बे लाल ..
खेल लो ...
खेल लो गोरी रंग गुलाल
पेड़ा तोय नल जितोल बे लाल
खेल लो गोरी रंग गुलाल

डुडी तोय नल जितोल बे लाल
खेल लो गोरी रंग गुलाल
तला तोय नल जितोल बे लाल
खेल लो गोरी रंग गुलाल
थुथड़ा तोय नल जितोल बे लाल

लड़के-लड़कियों से कहते हैं कि गोरी! हमारे साथ होली खेलो, नहीं तो हम लोग तुम्हें गाल, पीठ, सिर, मुँह को सूजने और लाल होने तक मारेंगे।

फगवा देने कि नईयां यार, तुम पर उड़े गुलाल होरी
आसुन को फगवा नहीं छोड़ें, भैया देओ हमारो फगवा
बेचो तुम्हारी हरदा हवेली, देओ हमारो फगुआ
बेचो तुम्हारी संगी बहनिया, देओ हमारो फगुआ
बेचो तुम्हारो अंगो की दिकड़ी, देओ हमारो फगुआ

तुम पर होली की गुलाल उड़े, तुम फगवा नहीं दे रहे। इस साल हम लोग फगवा नहीं छोड़ेंगे। भईया! हमारा फगवा दो। चाहे तुम अपनी बड़ी हवेली, सगी बहन और कपड़े बेचो, लेकिन हमारा फगवा हमें दो।

आत्तआद्रक्क लृद्र÷

गोंड, भोई, सौंर एवं सहरिया

डॉ. ओमप्रकाश चौबे

हमारा देश उत्सव प्रिय देश है। यहाँ प्रत्येक ऋतु में एक न एक उत्सव मनाने की परम्परा सदियों से चली आ रही है। समाज के स्वस्थ जीवन के लिए व्यक्ति की दिनचर्या में विनोद, हास और उल्लास के लिए भी कुछ क्षण आवश्यक हैं। मनोविज्ञान का नियम है कि मानव की सहज प्रवृत्तियों में यदि अवरोध हुआ तो मानव मन स्वच्छ और स्वस्थ नहीं रह सकेगा। पूरे वर्ष में होने वाले उत्सवों, तीज-त्योहारों में होली ही एक ऐसा त्योहार है, जिसमें मानव मन सहज ही उन्मुक्त हो जाता है। शिष्टाचार और मर्यादाओं का उल्लंघन भी सहजता से स्वीकारा जाता है - आदिवासी आवास चूँकि ग्रामों में होते हैं, इसलिए उनके त्योहार मनाने के तौर-तरीके बिल्कुल सामान्य वर्ग के लोगों जैसे हो गये हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि आदिवासी भी उसी गाँव के लोगों के साथ मिलजुलकर त्योहार मनाते हैं, उनके गाने-बजाने का ढंग सामान्य लोगों जैसा है, न उनकी कोई अलग भाषा है, न संस्कृति, न ही पूजा-अर्चना का ढंग। फाग संकलन में भी आदिवासी वर्ग के लोग ग्रामीणों के साथ मिलकर ही गाते बजाते हैं।

हमारी संस्कृति में हर तीज-त्योहार पर गीत गाने की परम्परा है। गीतों के साथ नृत्य भी होता है जैसे- सावन में सैरा, कजरी, दीवाली पर दिवारीं गायी जाती हैं, होली के समय फागें। और वे उसी पर्व के नाम से जाने जाते हैं-

नयी गोरी के बालमा, नयी होरी की झांक
ऐसी होरी दागियो, तोरे कुले ने आवै आंच ..
समर के यारी करो मोरे बालमा .....

कालिदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में वसंतोत्सव का वर्णन है। नाग-वाकाटक काल में मदनोत्सव शुरू होता था, जो कि वसंत ऋतु के आगमन पर होता था। चंदेल नरेश परमर्दिदेव के समय भी वसंत उत्सव का वर्णन मिलता है। नारद पुराण में फाल्गुन की पूर्णिमा को होलिका पूजन होता था।

पैलऊं देवी शारदा गाईये
फिर लिये राम के नाव .....

होली जीवन जागृति का राष्ट्रीय त्योहार है। होली के समय हास-परिहास तथा उल्लास अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर दसों दिशाओं में उमड़ पड़ता है। पूरे वर्ष भर के त्योहारों में होली ही एक ऐसा त्योहार है, जो अपने रंग में सभी वर्ग, समुदाय, उम्र के लोगों को रंग लेता है-

केसरिया रंग डारो रे हमपै
केसरिया रंग डारो लाल

आदिवासियों में होली को कुछ इस तरह से मनाया जाता है- फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक के आठ दिनों में होलिकाष्टक लगते हैं। इस समय हरेक घरों में स्त्रियों द्वारा गोबर की मलियाँ बनाई जाती हैं और होलिका दहन के दिन होली की अग्नि से इन मलियों को जलाया जाता है। इन्हीं मलियों पर हर घर में गाँकड़ बनाकर सेकी जाती है। जिस स्थान पर होली जलती है, वहाँ पर हुरियारे इन दिनों लकड़ी, कंडे, झाड़-झँकाड़ एकत्रित करते हैं। हर घर से होली की लकड़ी, कंडे माँगकर उस स्थान पर एकत्रित किये जाते हैं। जो झाड़-झँकाड़ खेतों में होते हैं, उन्हें भी एकत्रित करके होली में डाला जाता है। इसके पीछे शायद यही कारण रहा होगा कि खेतों में फसल कटने के पश्चात् मार्ग के काँटों की सफाई की जाती थी।

दुरगा तुमपै अखेवर छाये
मड़िया के खोलो किवार.....

होलिका दहन के पूर्व आदिवासी गाँव के लोगों के साथ उस स्थल पर एकत्रित होते हैं, जहाँ होलिका जलनी होती है। सब मिलकर होलिका का पूजन करते हैं। सब लोग अपने हाथों में कुछ गेहूँ की बालियाँ लिये होते हैं, जिन्हें होली जलने पर थोड़ी जला ली जाती हैं। कुछ लोग उड़द लेकर जाते हैं, जिन्हें अपने परिजनों के सिर पर पाँच बार उतारकर जलती होली में डाल देते हैं। उनका ऐसा मानना होता है कि इससे उनकी अलाय-बलाय (बाधायें) दूर हो जायेंगी अर्थात् बाधायें जल जाएँ। होली के बीचोंबीच एक बाँस गाड़कर उसमें झंडा लगाया जाता है। जिस दिशा में वह बाँस गिरता है। उससे शुभ-अशुभ का अनुमान लगाया जाता है। होली का पूजन करके ग्राम का प्रमुख या पंडित होली में आग लगाता है। आग जलने पर लोग उसकी परिक्रमा करते हैं। इस समय सौवत फागें गायी जाती हैं-

सिर बांदे मुकट खेलें होरी

अगले दिन सुबह समस्त ग्रामीण सौवत के साथ होलिका वाले स्थान पर जाते हैं। जाते समय फागों का गायन चलता रहता है। वहाँ पहुँचकर सब होली की राख उठाते हैं। ऐसी मान्यता है कि होलिका होली में जलकर राख हो गई थीं, तो वह राख उन्हीं की राख मानी जाती है।

साक्षात्कार में पूछे जाने पर कुछ लोगों ने बतलाया कि होलिका हिरण्यकश्यप की बहिन थी। उसे देवीजी ने 'अगनियां चीर' दिया था। होलिका उस चीर को ओढ़कर होली में बैठी थी, इसलिए नहीं जलती। वह चीर देने से पूर्व होलिका से यह कहा गया था कि तुम सत्कर्म करोगी, तब तक ही यह चीर तुम्हारे साथ रहेगा और जब अन्याय का साथ दोगी, तो वह चीर चला जायेगा। जब होलिका हिरण्यकश्यप के कहने पर प्रह्लाद को गोदी में लेकर बैठी, तो वह चीर होली के जलते ही उनके ऊपर से उड़ गया था और वे उस होली में जलकर राख हो गई थीं। उस राख को उठाकर लोग हर देवस्थान पर चढ़ाते हैं, फिर उसी राख को एक दूसरे के माथे में लगाकर आपस में गले मिलते हैं।

चुनरी रंगी रंगरेज ने, गगरी गड़त कुमार
बिंदिया जड़ी सुनार ने, सो दमके माझ लिलार
बिंदुलिया लै दई रसीले छैल ने

फागों के साथ संगीत और नृत्य भी होता है। नृत्य वृत्ताकार में होता है। नर्तक अपने हाथ में गमछा लेकर नाचते हैं और गीत गाते हैं। नृत्य घूमकर, बैठकर एवं खड़े होकर किया जाता है। जब फाग का अंतरा गाया जाता है, तो वह संवाद के रूप में होता है। उस समय एक व्यक्ति गाता है, सारे नर्तक गोले में खड़े होते हैं। अंतरा गाते समय संगीत नहीं बजता, मुखड़ा के आते ही संगीत एवं नृत्य पूर्ववत् होने लगता है। फागों का संगीत दर्शक श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है। संगीत तो ईश्वर प्रदत्त कला है जो कि मनुष्य के दु:ख-दर्द भुलाकर उन्हें शांति और सुख प्रदान करती है। वाद्य मानव के चिरंतन साथी हैं। कुछ विद्वान मानते हैं कि शब्द और स्वर यानी काव्य और संगीत का जन्म साथ-साथ हुआ होगा-

आजा नंद किशोरा, मोरे घर आजा रे

फागों के प्रति शिष्ट समाज में एक भ्राँति सी है कि फागों में फूहड़पन तथा अश्लीलता ही होती है, चूँकि होली के समय कहीं-कहीं अश्लील फागें भी गायी जाती हैं, शायद इसीलिए ऐसा सोचा जाता है, लेकिन गहराई से देखें तो फागों में लोकजीवन की बहुरंगी झलक और विषयगत विविधता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है-

बिछड़ना होत आज लछमन जी सें
आये नें पवनकुमार

आदिवासी समाज में भी फागों के विविध रंग हैं। इनके गायन, संरचना तथा संगीत के आधार पर कई वर्ग हैं, लेकिन आदिवासियों द्वारा मुख्य रूप से- सुमरनी की फाग, रसिया, साखी की फाग, डिढ़खुरयाऊ, बारामासी, झगड़े तथा अनरये की फागें ही प्रमुख गायी जाती हैं। झगड़े की फागों में रामायण, महाभारत, आल्हा-ऊदल आदि की लड़ाइयों को चित्रित किया जाता है। अनरये की फागों में शरीर की नश्वरता, जीवन सम्बन्धी शिक्षा आदि विषय होते हैं। होली के समय अनरये में फाग ले जाने का प्रचलन है- अगर किसी के घर में गमीं हो गई हो तो

उस घर में या रिश्तेदारों के घर फागों की सौवत ले जायी जाती है। वहाँ जाकर फागों द्वारा मृतक के परिजनों को संवेदना व्यक्त की जाती है। उस समय रंग-गुलाल भी लगाया जाता है।

प्रस्तुत संकलन में चार जनजातियों की फागों को संकलित किया गया है- गोंड, भोई, सौर तथा सहरिया। कुछ फागों के अंतरे भले मिलते-जुलते हों, लेकिन उनके पदों में अंतर है। दूसरी बात यह है कि सामान्य वर्ग के द्वारा गाई जाने वाली फागों तथा आदिवासियों द्वारा गायी फागों में समानता है, क्योंकि इनकी अपनी न कोई अलग भाषा है न ही संस्कृति, वे सब तो अन्य ग्रामीणों में मिलकर गाते-बजाते हैं।

पिचकारी श्यामलिया ने मारी
पैली पिचकारी मेरे घुंघटा पै मारी
मेरे काजल की शोभा बिगार डारी .....
दूजी पिचकारी मेरे सन्मुख मारी
मेरी चोली की शोभा बिगार डारी .....
तीजी पिचकारी मेरी कम्मर मारी
मेरी सारी की शोभा बिगार डारी .....
वृन्दावन की कुंज गलन में
होली खेलें ब्रज की नारी .....

स्रोत- श्रीमती राधा सहरिया, गुना

कृष्ण ने रंग से भरी पिचकारी मेरे ऊपर चला दी। उसने पहली पिचकारी मेरे घूँघट पर मारी तो रंग के कारण मेरा काजल धुल गया। दूसरी बार मेरे सामने पिचकारी मारी तो मेरी चोली भीग गई। फिर कमर पर मारी उससे साड़ी भीग गई। कृष्ण वृन्दावन में होली खेल रहे हैं।

चौकड़िया

सवै काल ने खाये, अमर कोऊ न आये
राजा बल वे अमर कहाये, पहरे राम लगाये
भागीरथ न अमर कहाये, वो गंगाजी लाये
अमर नहीं हैं धांदू पंडा, दुरगा शीश चढ़ाये
जन्में जोवे जगत में आकें, तिने काल ने खाये .....

स्रोत-श्री राधेश्याम सहरिया, गुना

इस संसार में जो भी आया है, उसे एक न एक दिन जाना पड़ता है। कोई अमर नहीं है। राजा बलि बहुत बड़े दानी थे, लेकिन प्रभु ने उनको भी बुला लिया। भागीरथजी भी नहीं रहे। देवी भक्त धांदू ने अपना शीश देवी माँ को अर्पित किया था। जो इस संसार में जन्मा है, उसे काल के गाल में जाना ही होता है।

चुंगल चिड़िया की फाग

अफ्रीका एक मुलक है, जानत सकल जहान
चुंगल चिड़िया प्रगट भई, उसी के दरम्यान
हो गई मनुष्य खों दुखदाई, चुंगल चिड़िया भाई
धन्य देखो अफ्रीका के चारऊ दिस, पर गई हाहाकार
ब्याकुल हो गये नर और नार, सब घबराने
रोजई चुंगल चिड़िया आवै, मानुष पकड़-पकड़ कें लावै
उड़कर आसमान पै खावै, अति दुख पायो
देखो उसी तरह कें मार, आती रोज बारंबार
मानुष खाये कई हजार, अति दुख पायो
लाखन मनवा बच्चा मारे, जाने कईयक गांव उजारे
मनुष हा-हा करे विचारे, सब पछताये
कईयक हजार मानुष चिड़िया ने खाये
वीरान गांव करा दिये, जब उसने मारे

स्रोत-श्री महेश सहरिया, गुना

अफ्रीका में एक चुंगल चिड़िया थी, वह चिड़िया नरभक्षी थी। उसने असंख्य मनुष्यों को अपना ग्रास बना लिया था। सब उस चिड़िया से भय मानते थे।

ताड़ी बरके लाई रे कीचड़ो, ऊपर गी की वाटकी,
जीयो मारा श्याम जनी जी, भावे करिया जानकी
जियावे बेटी जाट की .....
बाबा म्हारो काम गियो है, न जाने कब आयेलो
उनके बरोसे मेरो बेटो सामरो, भूको ही सो जावे ले
बाबा म्हारो गाम गयो है, न जाने कब आयेलो
जिनके मेरे जय में जीयेगू, ऐसे काये लागती
वारी-वारी मूं मंदर जाती, तोड़-तोड़ पट कोलती
सामरिया री बैठी काट पै, करणी-करणी बोलती
करणी-करणी बोलती .....

स्रोत- श्रीमती द्रोपदी सहरिया, श्योपुर

मैं एक थाली में कीचड़ भरकर लाई हूँ। हे मोहन! आप जीम लें। अभी मेरा बाबा काम पर गया है, वह पता नहीं कब लौटे। उसके भरोसे बैठने से तो तू भूखा ही सो जायेगा। मैं बार-बार मंदिर जाती हूँ और द्वार खोलकर देखती हूँ।

होड़ी खेले रे कृष्ण मुरारी, राधा जी के संग
होड़ी खेले रे .....
तबला बाज सारंगी बाजी
फेर बाज मिरदंग जी
माना जी की मुरली बाजी
राधाजी के संग
होड़ी खेले रे .....
होड़ी खेलें कृष्ण मुरारी
राधा जी के संग .....

स्रोत–श्री रामदास सहरिया, चंद्रपुर

आज राधा तथा कृष्ण होली खेलते हैं। होली के त्योहार में तबला–सारंगी एवं मृदंग वाद्य बजते हैं। कृष्ण अपनी मुरली बजाते हैं।

राधे तू बड़भागनी, कौन तपस्या कीन
तीन लोक तारन–तरन, सब तेरे आधीन
ऐसा मारूंगी कान्हा कान पकड़कर तोय
जब मोही मिलहो कुंअला बावड़ी
रस्सी से मारूंगी कान्हा .....
मेरी कोरी पहरी सारी
रंग से सराबोर कर डारी
माने नाहीं मोरी बात बिहारी
कौन बहाना घर में करोगी
मेरी का गति होय .....
ऐसा मारूंगी .....

स्रोत– श्री सीताराम बाथम, श्योपुरकलां

हे राधे! आप बड़ी भाग्यशालिनी हैं, जो कि वे त्रिलोकीनाथ प्रभु भी आपके वश में हैं।

अरे ओ कान्हा! मैं आज तेरी धुनाई कर दूँगी। तेरे कान पकड़कर तुझे पीटूँगी। जब तुम मुझे कुँआ–बावड़ी में मिलोगी तो तेरी रस्सियों से पिटाई करूँगी। मैंने आज नई–नई साड़ी पहनी थी, लेकिन तुमने रंग डालकर उसे रंगीन बना दी। अब मैं घर जाकर क्या बहाना बनाऊँगी। मेरे घरवाले वैसे भी बड़े शंकालू हैं।

ब्रज चौरासी कोस में, चार गाम निज धाम।
बंदावन और मदपुरी, बरसानो नंदगाम॥

झूलो मति डारे रे बनवारी, झूलो मति डारे रे बनवारी
पतली डाल कदम पै .....
राधा के नादान मचोड़ी, मुड़ देवेगो बनवारी
पतली डार कदम पै .....
होली आई बड़ो रंग लायी
रंग गुलाल मा डूबे नरनारी
झूलो की कांसे सुध आयी
पतरी डार कदम पै
झूलो मति डारो रे बनवारी .....

ब्रज की चौरासी कोस की परिक्रमा है, उस परिक्रमा में चार गाँव ही बड़े महत्त्वपूर्ण हैं, उनमें वृन्दावन, मदपुरी, बरसाना तथा नंदगाँव हैं। अरे कृष्ण! कदम्ब की पतली डाली पर झूला नहीं डालना। डाली नाजुक है टूट जायेगी। होली का त्योहार है। यह रंगों की बहार लाया है। ब्रज के स्त्री-पुरुष रंग में नहाये हैं और तुम्हें झूला डालने की पड़ी है। होली है तो रंग गुलाल खेलो, झूला मत डालो।

फगुवा आओ बालम नीलो रंग
अचरा नीलो रंग भाई नीलो रंगा
फगुना आयो .....
नीले में बालम पीलो रंगा
अचरा पीलो रंगा, भई पीलो रंगा
फगुना आयो .....

फाग का त्योहार आया है, मेरा पति नीले रंग में रंगा है। मेरे आँचल का भी नीला रंग है। नीले के साथ पीले रंग में भी रंगा है और मेरे आँचल का रंग नीले रंग के साथ पीले रंग का भी है। होली का त्योहार रंगों की बहार लेकर आया है।

लै गव रे भौरा बेईमान
कच्ची कली रस लै गयो रे .....
दाग चुनरिया पै दै गयो रे
वो रंग रंगीलो करि गयो रे
कच्ची कली रस लै गयो रे .....

बाग में भँवरा कच्ची कलियों का पराग लेकर चला गया। एक रसिक भी भौंरे की तरह कच्ची कली (अवयस्क) का रंग ले गया। रंगों के दाग चूनर पर रंगे हुए हैं।

गजरा गोदें री मलिनिया, बागन मिले श्री भगवान
मिले श्री भगवान, बागन मिले श्री भगवान .....

कौने गोदये गजरा गजरियां, कौने नौ लख हार
कौनां खों बैजन्ती माला, कौनां खों पचरंग पाग .....
रामा खों सोहे गजरा गजरियां, सीता नौ लख हार
हनुमान बैजन्ती माला, लछमन पचरंग पाग
गजरा गोदें री मलिनियां .....

स्रोत–श्री बुन्देलसिंह सहरिया, गुना

अरी मालिन! तुम फूलों के गजरे तो बना दो, क्योंकि बगीचे में श्रीरामजी आये हुए हैं। किसके लिए गजरे–गजरियाँ तथा नौलखाहार बनाये जायेंगे? श्रीराम को गजरा–गजरियाँ, सीताजी को नौलखाहार, हनुमानजी को वैजन्तीमाला तथा लक्ष्मणजी को पाग पहनायी जायेगी।

होरी जा खेलें राम लला
अरे राम लला गोविन्द लला.....
केसर की पिचकारी मारें
मानो भदइयां परे झला
होरी खेलें राम लला .....
रंग अबीर लयें हाथों में
काऊकी न माने दशरथ लला
होरी खेलें राम लला

स्रोत–रामेती बाई, केसली

होली का त्योहार है। श्रीरामजी होली खेलते हैं। राम के साथ में कृष्ण भी होली खेल रहे हैं। वे दोनों अपनी–अपनी पिचकारियों में केशरयुक्त रंग भरकर बड़ी तेजी से चला रहे हैं। रंगों की बरसात सी आई हुई है। जिस तरह से मघा नक्षत्र में पानी की झड़ी लगती है, उसी तरह से दोनों रंगों की होली खेलते हैं। वे अपने हाथों में रंग तथा अबीर लिये हैं, आज वे किसी की नहीं मानते।

मोय नें सुहावै ऐसी होरी, पिया के बिना
मोय नें पुसावै ऐसी होरी
जबई पिया परदेश गये हैं,
आय गई बैरन होरी पिया के बिना .....
ढोलक बाजे रे मंजीरा बाजे
तारें बजे रे दस कोड़ी पिया के बिना
मोय नें सुहावै ऐसी होरी .....
ठांड़े ननदोइया अरज करत हैं
खेली दुलइया रानी होरी हमारे संग

मोय नें पुसावै ऐसी होरी .....
वारे से देवरा अरज करत हैं
खेलो भौजईया मोरी होरी हमाये संग
मोय नें पुसावै ऐसी होरी .....
ठांड़े जे सुसरा मोरे अरज करत हैं
खेलो बहुरिया होरी सखों के संग
मोय नें पुसावै ऐसी होरी .....

स्रोत–श्रीमती कमला गोंड, मेंड़की

मुझे मेरे पति की अनुपस्थिति में यह होली का त्योहार बिल्कुल भी नहीं भा रहा। अभी–अभी तो वे परदेश गये हैं और उनके जाने के पश्चात् यह त्योहार आ गया है, इसमें तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। होली में ढोल, मृदंग, मंजीरे आदि बज रहे हैं। मेरे ननदोईजी मुझे समझाते हैं कि होली खेल लो, लेकिन मैं होली नहीं खेलना चाहती। मेरा छोटा देवर मुझे समझाता है कि भाभी मेरे साथ होली खेल लो। ससुरजी बोले कि बहूरानी तुम अपनी सखियों के साथ में होली खेल लो।

राम नहीं कहे नर, खाये जनम बेबाद
उरिया उत्तम नीर, गलन में महय कहावै
उपजे रंग सुगंध, फेर तुलसा खों धावै
तुलसा तो गंगे मिली, गंगे सिंध समान
अंदा के चंदन करे, संगत के गुन माय .....
आपन करनी हीन करे, वे साद कहावै
आपन गोता खाय, और खों ज्ञान लखावैं
गुन छोड़े औगुन करें, पड़े नरम की खान
आंगे को का सोचे प्राणी, होत मूर में हान
राम नहीं कहे .....

स्रोत–श्री राजाराम गोंड, मेंड़की

पूरे जीवन में राम का स्मरण नहीं किया। बिना भगवत भजन के सारा जीवन ही अकारथ गया। असाधुओं के जैसे कर्म करके साधू कहलाने लगे। स्वयं तो डूब रहे हैं और दूसरों को शिक्षा दे रहे हैं। सद्गुणों को छोड़ अवगुणों का साथ कर लिया, जिससे नर्क में ही जाना पड़ेगा। जब जीवन का प्रारम्भ ही ठीक न हो तो फिर आगे का परिणाम भी तो ठीक नहीं रहेगा।

पवनसुत हाल बतादे लंका कौ, कैसी शोभादार
कैसी शोभादार बचन बोले हनुमाना
सुनिये दीनदयाल, लंक कौ करो बखाना

गिर त्रिकूट ऊपर बसी, जहां घर कठवा के नौ लाख
कठवा के नौ लाख, लाख तुम पांचों जानो
निरबक पत्थर फेर, नगर मैंने पहचानो
चांदी के हमको दिखे, गिनती सात कड़ोर
जहां राज रावण करे, जयको चले ने जोर
जयको चले न जोर, एक कड़ोर नौ नीलमनी के
छै कड़ोर घर घास, इष्ट-पुष्ट घर ढंग तरीके
सौ योजन में फैलती, बसी समुन्दुर पार
तुलसीदास कथकें कहें, दल लैके चढ़ें रघुनाथ

पवनपुत्र अंजनी सुत हनुमान जब सीता माता का पता लगाकर श्रीराम के पास आये तो प्रभु उनसे पूछने लगे कि- हे पवनपुत्र! आप हमें लंकापुरी के विषय में कुछ बतायें। हनुमानजी बोले कि- हे नाथ! त्रिकूट पर्वत के ऊपर लंका बसी है, वहाँ पर नौ लाख लकड़ी के मकान बने हैं, नगर के चारों ओर पत्थर का परकोटा बना हुआ है। चाँदी के मकान सात करोड़ बने हैं। जहाँ रावण रहता है, वहाँ तो साधारण मनुष्य की क्या कहूँ, यमराज का वश भी नहीं चलता। करोड़ों मकान मणियों के बने हैं। छः करोड़ घास-फूस के घर तथा अनेक विशाल भवन बने हैं। लंका का विस्तार सौ योजन तक फैला है। समुद्र के किनारे से लंकापुरी शुरू होती है। भक्त तुलसीदासजी कहते हैं कि अब श्रीराम अपने दल-बल समेत लंका पर चढ़ाई करेंगे।

को भव रे महराज, दानी को भव रे .....
एक बेर राजा हरीचन्द भये, प्रजा बहुत अमोल
सूखा परे चाहे तीता, राजा औरई जांचन जाय
सूदे पेलो राजा के, ओंधे देत किसान
इतनई पै राजा यज्ञ करें, गऊ देत भिकारों दान
दानी को भव रे ..... ।।1।।
एक बेर राजा बल भये, भरभूंजा झोंके न भार
तेली करे न सोहनी, ढीमर फेंके ने जाल
एक बेर बालक आंचर पिये, दूजे करे न अहार
दानी को भव रे ..... ।।2।।
गये-गये नर कहां गये, गये गुरु के पास
गुरु विधि बतलाइयो, इंद्रासन पावै राज
दानी को भव रे ..... ।।3।।
बोले गुरुवा जा कहे, सुनले राजा बात
ओंधे तपियो तप करो, ओंधे करो कपात
घी के कुंआ भरायकें, कंचन रहट लगाय देव

नौ दिन बेदी होम के इन्द्रासन पाहो राज
दानी को भव रे ..... ।। 4 ।।
ओंधे तप में तप करे, ओंधे करे कपात
घी के कुंआ भरायकें, कंचन रहट लगायकें
नौ दिन बेदी होमकें, इंद्रासन धोका खाय
दानी को भव रे ..... ।। 5 ।।
बोले प्रभु जा कहें, सुनले नारद बात
जलनी खोलो साटका, देखो बेद पुराण
ऐसो दानी को भव, इन्द्रासन झोंका खाय
दानी को भव ..... ।। 6 ।।
नारद खोले साटका, देखे बेद पुराण
ऐसे दानी राजा बल भये, इन्द्रासन झोंका खाय
दानी को भव ..... ।। 7 ।।
बोले प्रभु जा कहें, सुनले नारद बात
को बैठे मोरे बैठकों, को इतनो कर लेत
चौंसठ लाख पोड़ो बसे जो, छड़ में भोजन देय
दानी को भव ..... ।। 8 ।।
बोले नारद जा कहें, सुनलें प्रभु बात
हम बैठे तुमारे बैठकों, हम इतनो कर लेत
चौंसठ लाख पोंड़ो बसे, हम छिन में भोजन देत
दानी को भव ..... ।। 9 ।।
चार अंगुल के हांत बनाये, छै अंगुल के पांव
लठिया टेक ठांड़े भये, सो बल हांसों गिर जाय
दानी को भव रे ..... ।। 10 ।।
बोले राजा जा कहें, सुनलें ब्राह्मण बात
दान कौन से चाहिए, हमखों देव बताय
दानी को भव ..... ।। 11 ।।
बोले ब्राह्मण जा कहें, सुनले राजन बात
वे वामन हमें न जानियो, आटे की मांगे भीक
तीन पग धरती दै दियो, रहें मढ़ैया छाय
दानी को भव ..... ।। 12 ।।
बोले राजन जा कहें, सुनलें ब्राह्मण बात
तीन पग धरती को का करहो, बीघा देहों साठ
दानी को भव ..... ।। 13 ।।

जब प्रभु ने देह बढ़ाई, हुमक चरन भये भारी
तीन लोक धरती के नापे, सो भई अड़ाई पैर
दानी को भव ..... ।। 14 ।।
बोले राजा जा कहें, सुनलें प्रभु बात
तीन पग धरती हमने दई, सो भई अड़ाई पैर
सूरदास कथकें कहें, फिर नापो हमारी पीठ
दानी को भव ..... ।। 15 ।।

स्रोत–श्री पूरन सिंह, पथरिया

इस जगत में कौन–कौन से महादानी हुए हैं? पहले दानी महाराज हरिश्चंद्र हुए, उनके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी। राजा प्रजा का हर प्रकार से ख्याल रखते थे, सभी वर्गों की मदद किया करते। भिखारियों को, जरूरतमंदों को दान दिया करते थे। अन्न दान, गऊ दान, सोना–चाँदी दान, इसके अलावा यज्ञ भी किया करते थे।

दूसरे दानी राजा बलि हुए हैं, उनके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी। भड़भूंजा भाड़ नहीं भूँजता, तेली तेल नहीं पेरता, ढीमर जाल नहीं डालता। उनके समय श्रीविष्णु ने वामन रूप बनाकर उनकी परीक्षा ली। छोटा रूप बनाकर वे राजा के पास गये और बोले कि– महाराज! मुझे यज्ञ करने हेतु मेरे तीन पैर के बराबर भूमि दीजिए। राजा बलि की दानशीलता सर्वविदित थी। उनके समक्ष इन्द्रादि देवता भय मानते थे, कहीं दान–पुण्य के परिणामस्वरूप राजा बलि इन्द्रासन का अधिकारी न हो जाये, इसीलिए प्रभु ने वामन अवतार लेकर राजा की परीक्षा ली थी। प्रभु ने राजा से जब तीन पग भूमि की याचना की, तो राजा बोले कि मैं इससे भी कई गुना भूमि आपको दान में दे सकता हूँ, लेकिन ब्राह्मण को तो उतने की ही आवश्यकता थी। उस बालक ने जब तीन पग धरती नापी तो एक पग में पूरी धरती, दूसरे में आकाश, तीसरे पग के लिए भूमि कम पड़ गई तो राजा बोले कि आप हमारी पीठ पर पैर रखकर तीसरे पग की पूर्ति कर लें।

तोरी सेवा करों मनाय, मढ़ी के जोगीरा
लुड़को–लुड़को अड़ा फिरे, लुड़कख चारऊ देश
मन के आटक ने मिलें, कहा अड़ा ठैराय ..... ।। 1 ।।
पाताल सें पुरहन चली, ढिगों उपज गई दूब
मनके आटक मिल गये, अड़ा रहे ठैराय ..... ।। 2 ।।
अड़ा फूट दो पला भये, एक धरनी इक आकाश
बाबा लख पैदा भये, बिन भाई बिन बाप ..... ।। 3 ।।
बाबा अंग मीई हते, पुतला धरो समार
बनावन के हते बालिका, उपजी गौर नार ..... ।। 4 ।।
एक ईंट दो मढ़ी बनाईं, मढ़िया द्वारे तीन
तुमतो गौरा मढ़ में रहो, हम वन भेंवे जांय ..... ।। 5 ।।

बोले गौरा जा कहे, सुनले बाबा बात
तुम वन भेंवे जात हो, करेजा मोरे साथ ..... ।।6।।
बोले बाबा जा कहें, सुनले ओ गौरा बात
हम वन भेंवे जात हैं, धरमीड़ो दोई हांत ..... ।।7।।
गौरा हांत मीड़े हते, फोला पड़ गये तीन
कब जे फोला फूटहें, ब्यादी बड़ गई खूब ..... ।।8।।
सातों महीना संत के, आठों लागे अंग
नवें मास फोला फूटहें, फिर घटवे आदी पीर ..... ।।9।।
पैले फोला विरमा भये, दूजे विष्णू भगवान
तीजे फोला भये महादे, कहें गौरा सेंजा ..... ।।10।।
तीनई लड़ रये, तीनई भिड़ रये, तीनई करें विचार
हम दो तो गौरा से माता कहें,
भोला तोरी कहां सें नार ..... ।।11।।

स्रोत- श्री पूरनसिंह, पथरिया

अरे मठ के निवासी बाबा महादेव! हम आपकी सेवा करते हैं। एक अंडा लुढ़क रहा था, वह कहीं स्थिर नहीं होता। लुढ़कते-लुढ़कते वह एक स्थान पर ठहर गया। वह अंडा जब फूटा तो उसके एक भाग धरती तथा दूसरे भाग से आकाश बना और उसी से महादेव जी प्रकट हुए। उनके माता-पिता नहीं थे। फिर उन्होंने एक पुतला बनाया, उसे बड़े जतन से सँभालकर रखा। महादेवजी एक लड़की बनाना चाहते थे, लेकिन उस पुतले से गौरा पार्वती प्रकट हो गईं। उन्हें देखकर महादेवजी ने कहा कि हमें रहने के लिए घर बनाना चाहिए और एक मठ बना लिया। उस मठ के तीन द्वार बनाये। महादेव बाबा गौरा से बोले कि आप यहाँ रहिये, मैं वन में जाता हूँ। गौरा ने उनसे कहा कि आप तो वन में जायेंगे, मैं यहाँ क्या करूँगी? बाबा बोले कि आप अपने हाथ आपस में रगड़ती रहो। भोलेनाथ के जाते ही पार्वती अपने हाथ आपस में रगड़ने लगीं। हाथों के घर्षण से उनके हाथ में तीन फफोले पड़ गये, जब वे फूटे तो एक से ब्रह्मा, एक से विष्णु तथा तीसरे से महादेव उत्पन्न हुए। अब तीनों आपस में विवादग्रस्त हैं- ब्रह्मा, विष्णु बोले कि गौरा हमारी माता हैं। लेकिन आपकी पत्नी कैसे हुईं?

आरीये दुरगा तुमपै अखेवर छाये रे
मड़िया के खोलो किवार-दुरगा तुमपै अखेवर छाये
ये भुवानी काहे की मड़िया बानी, अरे काहे के लागे किवार .....
अरे रूपे की मड़िया बानी, अर चंदन लगे किवार .....
दुरगा तुमपै अखेवर छाये .....

स्रोत-श्री तुलसीराम सौर, पथरिया

- हे दुर्गा माता! आपके स्थान पर वटवृक्ष की घनी छाया है, आप अपने मठ के किवाड़

खोलें, आपके सेवक दर्शनार्थी आपके दर्शन करना चाहते हैं। माता की मड़िया काहे की बनी है, उसमें कौन से किवाड़ लगे हैं ? माता भगवती की मड़िया चाँदी से निर्मित है, उसमें चंदन के किवाड़ लगे हैं।

हरि के बिना कौन हरे मोरी पीरा .....
असाढ़ मास घन गरजन लागे, साहुन गैर गंभीरा
भादों मास झुमक झिर लागी, गलियों में वैरये नीरा .....
क्वांर मासके तीखे घामें, कातक जुर गई भीर
अगन मास हरि आवत नैयां, कौना पै ओढ़े चीरा .....
पूष मास में जाड़े परत हैं, माव सतावै शीत
फागुन मास हरि आवत नैयां, कौन पै डारों नीर .....
चैत मास में टेसू फूलो, बैशाखे सब फूल
चंद्रसखी जब जेठ निकर गये, आवत हैं रगवीर .....

स्रोत–श्री अमोल सिंह, पथरिया

कृष्ण कुब्जा के साथ रह रहे हैं और यहाँ ब्रज में उनकी सखियाँ उनके दर्शनों के लिए तड़प रही हैं। जब प्रिय प्रवासी हो तो फिर प्रेयसी विरहिणी हो जाती है। उन सब सखियों में राधा की विरह वेदना शीर्ष पर है। वे कहती हैं कि मेरी पीड़ा मेरे प्रभु के अलावा कोई नहीं मिटा सकता। आषाढ़ के आते ही मेघ आसमान में आच्छादित होने लगे, गर्जना शुरू हुई तथा श्रावण में तेज बारिश होने लगी। भादों में पानी बराबर बरसता रहा, गली कूचों में जल ही जल दिखता है। क्वाँर में बड़ी तेज धूप होती है। कार्तिक में शीत व्यापने लगी। अगहन में कृष्ण नहीं आये शीत पड़ती है, लेकिन विरहाग्नि इतनी तेज है कि रात्रि में भी कपड़े नहीं ओढ़ सकतीं। पूष–माघ में शीत सताने लगी। फिर फागुन का रंग–रंगीला त्योहार आ गया, अब किस पर रंग डाला जाये, वे होते तो रंग–गुलाल का कुछ मजा आता? चैत्र में टेसू फूले हैं, वैशाख तक फूलों की छटा चहुंओर बिखरी है। चंद्रसखी कहते हैं कि ज्येष्ठ निकलने पर प्रभु आये।

हमारे पिया तो बदरिया हो रये,
बहुरे ने एकऊ बेर .....
असाढ़ मास आगी लगी, जल गये सकल शरीर
प्रेमबूंद बरसे नहीं, जीरा धरे ने धीर
साहुन में सुख होत है, पिया मिलन की आस
पिया मिलाये ने मिलें, फिर दै गये करेजें घाव
भादों रात भियांयदी, लागे अंधरो पाक
मन भौंरा जा कहै, लै चलो पिया की सेज
क्वांर कमंडल लये हांत में, अंग लपेटी भबूत
ऊंचे अटा चढ़ देखें राधका, नीरे बसें कै दूर

कातक महीना लाग रहे, खेती करें किसान
हम राधका का करिये, घर नैयां नंद के लाल
अगन अमीरा लाग रहे, फूल रहे फुलवार
जो कऊ होते घर नंद के, कुसम सें देती चीर रंगाय
पूष रजैया भराऊती, और गदेला रब्बार
पिया संग पलंग पै पौड़ती, फिर उड़ती अजब बहार
माव महीना लाग रहे, हमें सतावै शीत
सब सखियां पिया संग सो रयीं, हमें होत अनरीत
फागुन महीना लाग रहे, सब सखियां खेलें फाग
हम राधका का खेलिये, घर नैयां नंद के लाल
चैत चरेरे घाम परे, छाती फटे जिया अकुलाय
पिया बदरिया हो रहे, हमपै पाती लिखी न जाय
बैशाख महीना लाग रहे, सब सखियां वर पूजन जांय
हम राधा का पूजिये, घर नें आये नंद के लाल
जेठ महीना लाग रहे, करिये कौन विचार
कुबजा सौत के बस में परे, बहुरे न एकऊ बार
जगन्नाथ की बारामासी, गावै सब संसार
बारा सें तेरा लगे, फिर बहुरे नंद के लाल

स्रोत–श्री दयाराम रावत (सौर), बड़तूमा

कृष्ण प्रवासी हैं, उनके लिए सारी ब्रजबालाएँ प्रतीक्षारत् हैं, लेकिन वे नहीं आये। कृष्ण उस बदली की तरह हो गये हैं जो छाती तो है, लेकिन बरसती नहीं, उसी तरह से कृष्ण आने का तो कह गये थे, लेकिन आये ही नहीं। आषाढ़ की तपन विरहणियों को विरहाग्नि में जलाती रही, लेकिन उनकी तपन बुझाने के लिए प्रेमरूपी जल बरस जाता तो कुछ शीतलता मिल जाती, लेकिन निराशा ही हाथ लगी, अब मन अधीर हो रहा है। सावन आया मन में आस थी कि वे आयेंगे, लेकिन जब वे नहीं आये तो कलेजा छलनी हो गया। भाद्र मास में तेज बारिश होती है, अंधेरी रातें भयावनी लगती हैं। इस समय ऐसा लगता है कि पंख लग जाते तो उड़कर मैं उनके पास पहुँच जाती। क्वाँर में जब वे नहीं आये तो फिर वियोग के कारण वैराग्य ने मन में अपना स्थान बना लिया, शरीर में विभूति रमा ली, कमण्डल लेकर उन्हें देखने को निकल पड़ीं। राधा एक ऊँचे स्थान पर जाकर देखती हैं कि कृष्ण पास में हैं या दूर हैं ? कार्तिक में किसान अपनी खेती में जुताई तथा बुवाई का काम करते हैं, लेकिन राधा को कोई काम ही नहीं सूझता। कृष्ण होते तो कुछ करने का मन बन जाता। अगहन के आगमन पर फूल फूलने लग गये, इन फूलों को देखकर ऐसा लगता है कि नंद बाबा के लाड़ले होते तो उनके लिए कुसुम रंग के फूलों से एक वस्त्र रंगवाकर उन्हें उढ़ा देती। पूष में ठंड व्यापने लगी, यदि कृष्ण होते तो ओढ़ने–बिछाने के वस्त्रों में रुई भरवाकर उनके साथ शयन करती, तब मजा आता। माघ में शीत की अधिकता

बढ़ गई, राधा की सखियाँ तो अपने-अपने पति के साथ सोती हैं, लेकिन राधा अकेली ही बिस्तर में करवट बदलती रहती हैं। फागुन का महीना मन को भाने वाला है, इस महीने में होली आ गई, सारी सखी-सहेलियाँ फाग खेलती हैं, लेकिन राधा सोचती हैं कि वे किसके साथ फाग खेलें, कृष्ण तो आये ही नहीं ? चैत्र में तेज धूप हो गई, बड़ी व्याकुलता हो रही है, लेकिन कृष्ण तो प्रवासी हैं, उन्हें कोई पत्र लिखने का मन नहीं करता। वैशाख में राधा की सखियाँ वटवृक्ष का पूजन करती हैं, लेकिन राधा सोचती हैं कि जब कृष्ण ही नहीं तो फिर किसके लिये पूजन करें? धीरे-धीरे ज्येष्ठ का महीना आ गया, अब क्या करें कुछ समझ नहीं आता, वे तो कुब्जा के साथ रह रहे हैं और अभी तक नहीं आये। कवि कहता है कि यह बारामासी जगत के नाथ की है, इसे सारा जग गाता है। पूरा वर्ष बीत गया, बारह महीने हो गये, लेकिन कृष्ण नहीं आये। कृष्ण तेरहवें महीने में आये थे। आकर सबको मिले और सबकी शिकायतें दूर कीं।

संतहो खोजो पुरानी बानी .....
टका-टका में पोथीं बिक रयीं, वेदों में खेंचातानी
पुन्न हते पाताल चले गये, पाप भये अगवानी .....
गड़ मूरत मंदर में धर लई, पूजे आद भुवानी
ओ साहब खों कबऊं ने पूजें, जेकी नाम निशानी .....
भेड़ो काटो बुकरा काटो, ऊँट करी कुरवानी
ओ साहब ने गरदन मांगी, सोनें करी कुरवानी .....
जियत पिताखों लातें मारें, मरे में तिरपन पानी
लम्मी टान कुशा की टोरें, देत ढकेला पानी .....
जियत ने दीनी गांकरे, मरें गंग लै जांय
बना गकरियें घटपै धरें, फिर कौवों खों बाप बनांय .....
मान भनेंजा कबऊं ने मानें, सारे नेउत जुवावै
कहत कबीर सुनो भाई साधू, कर लई नरक निशानी .....

स्रोत-श्री श्यामलाल

हे साधु संतजन! तनिक पहले के समय की तो सोचो कि पहले क्या था और अब क्या है? इस समय तो धर्म का रूप ही परिवर्तित हो गया, धर्म के मूल्यों में ह्रास हो गया है। धर्म सम्बन्धी पोथियाँ-पुस्तकें कौड़ियों के दाम में बिकने लगी हैं, वेद शास्त्रों में मतभेद हो गये हैं। पुण्य कर्म का लोप हो गया है, पाप का बोलबाला है। पत्थर की मूर्ति का लोग पूजन करते हैं और उनका पूजन कभी नहीं करते, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है। बली चढ़ाई जाती है। बकरा, मुर्गा, ऊँट आदि की कुर्बानी दी जाती है और अगर उनसे स्वयं की कुर्बानी माँगी जाये तो नहीं देंगे। जब उनके माता-पिता जीवित रहते हैं, तब उन्हें अपमानित ही किया जाता है, मृत्यु उपरान्त उनके नाम पर कुश से पानी देने का दिखावा करते हैं। जीवित अवस्था में कोई उन्हें पानी के लिए नहीं पूछता। इसी प्रकार से उनको जीते जी ठीक से भोजन नहीं मिलता, मरने पर उनके

नाम से कौवों–कुत्तों को पिता–माता मानकर खिलाते हैं। भान्जे को कभी नहीं मानते, सासों–सरहजों की सेवा–सुश्रुषा करेंगे। संत कबीर धर्म के इस रूप को ढकोसला मानते हैं। कबीरदासजी कहते हैं कि इस तरह के लोग ही नर्कगामी होते हैं।

सादो लागो जमाना खोटा .....
वैश्या पैरे शाल दुशाला, लगो जरी को गोटा
पतिव्रता इक रहे आड़में, क्या बड्डा क्या छोटा .....
रामभजन को भरम ने जाने, सिरपै रखा लव जोटा
कहे कबीर सुनो रे बंदो, लगो जमाना खोटा .....

यह समय तो बिल्कुल ही बदल गया, बड़ा विपरीत समय आया है। लोग बाजारू औरतों पर धन लुटाते हैं, लेकिन स्वयं की पत्नी, जो इज्जत से रहती है, सबकी सेवा करती है, आदर–सम्मान भी देती है, उसका सम्मान नहीं करते। ऐसे लोग जो पूजा–पाठ को बिल्कुल नहीं जानते, वे जटाजूट रखकर साधु बन जाते हैं। कबीरदास के अनुसार यह सब पाखण्ड है।

बोलो माताराम तुमारे कैसे बेदल मन हैं .....
सुन पारथ के वैन बचन बोली कोतरमा
महालक्ष्मी सादो व्रत महान, नगर में फिरो बुलौवा
लेकिन मौसी ने दओ ने हमें टिरउवा
पूजा की सामग्री बनी, धरी और सबई सामान
बेटा मौसी ने बड़ो, करो मेरो अपमान .....
बड़ो करो अपमान, क्रोधवंत अरजुन हो गये
लओ धनुष अर बान, तुरत वे बाहर आ गये
पाती लिखी सुरेश खों, खेंच दओ है बान
देवराज तुम बेग सें, पौचाओ ऐरावत बलवान
ऐरावत बलवान तुरत इन्दर सजवाये
पाखर डारी पीठ, कान कुण्डल पैराये
ऐरावत पूजे गये कोतरमा सी माय
कोतरमा बोली हतीं, ऐसे होवे पूत सपूत .....

स्रोत–श्री सन्तूराम सौर, विलेकी

अर्जुन अपनी माता को उदास देखते हैं तो वे पूछते हैं कि हे माँ! आप उदास क्यों हैं? इसका कारण बतलाइये। अपने पुत्र पार्थ की बात सुनकर कुन्ती बोली कि आज महालक्ष्मी पूजन का त्योहार है। जेठानी गान्धारी ने पूरे बस्ती की स्त्रियों को आमंत्रित किया है, लेकिन मुझे नहीं बुलाया, मेरा अपमान किया है। मैंने पूजन की सामग्री एकत्रित कर ली थी, लेकिन मुझे पूजन में नहीं बुलाया गया। अपनी माता की बातें सुनकर अर्जुन क्रोधित होते हैं। उन्होंने क्रोध में

अपना धनुष उठाकर एक बाण से देवराज इन्द्र को संदेशा पहुँचाया। वह संदेश था कि आप शीघ्र ऐरावत को पृथ्वी पर भेजें। इन्द्र ने अर्जुन से ऐरावत को रास्ता बनाने के लिए कहा। पार्थ ने एक बाण से स्वर्ग तक रास्ता बना दिया। इन्द्र ने अपना गजराज ऐरावत हस्तिनापुर भेज दिया। कुन्ती ने हाथी का पूजन किया। कुन्ती बोली कि अर्जुन जैसे पुत्र भगवान सभी को प्रदान करें।

रामगत पारने पाहे कोई
राम चले गये, दशरथ चले गये, जे करतार न होई
बीस भुजा बल रावण चलो गव, सोने की लंका खोई .....
गोकल वाले गये कनैया, संग सखा गये सोई
पांडव जाय हिमाचल सीजे, वीर बचो न कोई .....
कच्छ-मच्छ बाराह रूप धर, नरसिंह रूप धरो सोई
परसराम बलशाली चले गये, कैसे कहें दुख रोई .....
ब्यास कहें सुन राजा पारीक्षत, ब्याध डसेगा सोई
धनमंतर जाय बीच में डस लये, सोगत उनकी होई .....
जो उत्पात अब भयो जगत में, सुख सपने न होई
कहें कबीर सुनो भाई साधू, जागत सबकी होई .....

स्रोत- श्री सन्तू सौर

ईश्वर की माया का कोई पार नहीं पा सका। इस संसार में जो भी जन्मा है, उसे एक न एक दिन जाना ही पड़ा है। श्रीराम, महाराज दशरथ इस संसार से विदा हो गये। लंकापति रावण जिसकी बीस भुजायें दस सिर थे, उसे भी जाना पड़ा। द्वापर में श्रीकृष्ण अवतरित हुए थे, उनके ग्वाल सखाओं की तथा कृष्ण की लीला की भी इति हुई। पाण्डव भी इस पृथ्वी पर नहीं रहे। ईश्वर के दस अवतार हुए, वे सभी अवतार आये और चले गये। परसराम भी गये। व्यासजी महाराज परीक्षित से कहते हैं कि आपको एक सर्प डँसेगा, उन्हें सर्प ने डँसा और उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। यह संसार तो बस एक भ्रम में चल रहा है, कोई सुखी नहीं है। संत कबीरदासजी कहते हैं कि एक न एक दिन सबका अंत होना है।

अंधकार इंदयारो अवधू अंधकार इंदयारो .....
ये घट भीतर बाग बगीचा, ऐई में मंदर त्यारो
ये घट भीतर लगी फुलवारी, ऐई में सींचनहारो .....
ये घट भीतर गंगा जमना, ऐई में मंदर न्यारो
ये घट भीतर नाव डरी है, ऐई में खेवनहारो .....
ये घट भीतर हीरा मोती, ऐई में परखनहारो
ये घट भीतर चोर बसत हैं, ऐई में पकड़नहारो .....
ये घट भीतर चंदा सूरज, ऐई में नौलख तारो
कहें कबीर सुनो भाई सादो, सतगुर ने पहचानो .....

हमारे भीतर ही सब कुछ है, फिर भी मनुष्य सब कुछ खोजने के लिए मृगतृष्णा की तरह बाहर जाता है। हमारे हृदय में ही ईश्वर है, इसी में संसार की अच्छाई-बुराई, तीर्थ-धाम, अच्छा-बुरा सबकुछ समाया है। हमें उसे पाने के लिए वैसी सूझबूझ, वैसे ज्ञान चक्षुओं की आवश्यकता है। उसके लिए हमें सच्चे गुरू से लगन लगानी होगी, वही हमें सत्मार्ग दिखा सकता है, वरन् हमारे पास न तो दृष्टि है और न ही उस मार्ग का ज्ञान।

सखी आये हैं हमारे पावने, अंतस के रिस्तेदार
अंतस के रिस्तेदार आंव में जिनकी नारी
मोरे पिया घरे नयी आय, काटकें दये सुपारी
मैं उनसे काहे कहूं, कैसे करूं बतकाव
ये सखी मैं कैसे निकरूं, बैठे सामूद्वार
बैठे सामूद्वार लगेंवे भौतऊ प्यारे,
लाज सरम सब छोड़ फिरूं में घूंघटमारे
पलका डारो बैठवे, बातें पूछी चार
खातरदारी ने करों, फिर नाव धरे सिंसार
नाव धरे सिंसार लगों मैं उनखों प्यारी
होन लगी तैयार रसोई खीर सुहाई
आलू घुइयां साकमें, बने मसालेदार
पांव धुवाये ब्यारी करी, फिर जाड़े में बेहाल
जाड़े में बेहाल, संग ल्याये ने कपड़ा
मोरे पिया गये परदेश, साथ में लै गये कमरा
परदनियां उनकें हती, तरें बिछालव प्यार
सकरा कुकरी वे करें, मैंने धुतिया ऊपर डार
धुतिया ऊपर डार, जाड़े में रात गुजारी
पावनो है दिलदार, बातें करें प्यारी
बात करें कैने सकें, जिज्जी देखें मोरी कोद
कहें फकीरेलाल जी, फिर जोलों हो गई भोर

स्रोत-श्री श्यामलाल, रजाखेड़ी

हे सखी! आज मेरे घर पर मेरे करीबी पाहुने आये हैं और इसी समय मेरे पति घर पर नहीं हैं। वे होते तो उनका स्वागत-सत्कार करते, कुछ नहीं तो पान-सुपारी देकर अतिथि का मान बढ़ा देते, मैं उनसे कुछ बोल भी तो नहीं सकती, संकोच होता है। वे मेरे सामने के कक्ष में बैठे हैं, मैं उनके सामने से कैसे निकलूँ। लेकिन मैं अपना सारा संकोच छोड़कर अपना घूँघट काढ़कर उनके सामने से निकल रही हूँ। उन्हें बैठने के लिए पलंग बिछा दिया तथा उनके घर के समाचार पूछ लिये। यदि मैं इतना न करती तो लोग मुझे ही दोष देते कि अतिथि का मैंने कोई

सत्कार ही नहीं किया। मेरे पाहुने मुझे बड़े अच्छे लगे। उनकी बातों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं भी उन्हें अच्छी लगी।

इसके पश्चात् मैंने उनके भोजन की व्यवस्था शुरू कर दी, उनके लिए खीर बनाने लगी। साक में आलू, घुइयाँ की मसालेदार तरकारी तथा पूड़ी बनाई थी। उनके पैर धुलवाकर उन्हें भोजन कराये। अब सोने के लिए कपड़े नहीं थे और ठंड अधिक पड़ने लगी थी। मेरे पति जाते समय अपने साथ कम्बल ले गये थे। मेरे अतिथि भी अपने लिए कोई कपड़े नहीं लाये थे, अब क्या करूँ, बड़ी असमंजस में पड़ गई हूँ। मैंने पलंग पर पुवाल बिछा दिया तथा ऊपर से उनकी धोती बिछा दी। अब रात बढ़ने के साथ ठंड भी अपना असर दिखा रही थी, लेकिन पाहुने बड़े अच्छे थे, हम अच्छी-अच्छी बातें करते रहे। वे बातें तो करते, लेकिन आगे कुछ न कह पाते, बस! मेरी तरफ टकटकी लगाकर देखते थे। किसी तरह से रात व्यतीत हुई। फकीरेलाल जी कहते हैं कि इसी तरह सुबह हो गई।

अधरम के खुले किवार, धरम धरनी में समा गये
अधरम के खुले किवार, बैन भैया ने चीने
मनकी लेवें बात कांच भैया की खोलें
देवर भावी सो गये, बांद गये जा टेक
जेठ बहू की का चली, घर हो गये एकामेक
हो गये एकामेक, लेखने रही किसी की
ब्याही और क्वांरी सवई, दांत रंग लेत मिसी के
ब्याव करेते बाप ने, अच्छे घरे विचार
ब्याव धनी के नें रहे, फिर ढूँढ़े छैल दिलदार
ढूँढ़े छैल दिलदार, बजी है ऐसी नारी
नारो के क्या हाल हैं, नरको सुनो हवाल
लरका अपने बापखों, फिर मारे सिर पै लात
मारे सिर पै लात, साऊकार सें करजा काड़े
दाम मंगावै साऊकार, लौटकें घंट बतावै
बलीराम गाकें कहें, सुनो फाग के हाल
भरी सभा में बैठकें, लरकों के करें ईमान .....

स्रोत-श्री प्रेम रावत सौर, बिलेकी

यह कलियुग का बड़ा विपरीत समय आया है। इस समय धर्म लुप्त हो रहा है तथा अधर्म अपना आधिपत्य जमा रहा है। बहिन भाई का पवित्र रिश्ता भी बदनाम हो गया। देवर-भाभी, जेठ-बहू का रिश्ता सब कुछ मिट गया। अब तो ब्याही और क्वाँरी की पहचान ही जाती रही। क्वाँरी भी विवाहित स्त्री की तरह शृँगार करने लगी हैं। अपने दाँतों में मिस्सी लगाती हैं। पिता ने अच्छा घर-वर देखकर लड़की का विवाह किया था, लेकिन वह अपने पति को छोड़ किसी

यार के साथ चली गई। यह तो स्त्रियों की बात थी, लेकिन पुरुष भी कुकर्मों में कम नहीं हैं। लड़के अपने पिता की कोई इज्जत नहीं करते। किसी से पैसा ले लेंगे और उसके माँगने पर अकड़ बताते हैं। बलीरामजी कहते हैं कि इनके ये हाल हैं कि झूठी बात में भी अपने लड़कों की कसम खा लेते हैं।

हमें दुहरी बनवादे बालमा, नुंगरिये शोभादार
नुंगरिये शोभादार, चंदोली बांदा साही
बंगरी शोभादार अंगारें चूरा चईये
चालीस भर ककना बने, ककना झंजरीदार
ढरमां के टोड़र बने, फिर छड़ा छबीलेदार
छड़ा छबीलेदार परोखा होवे न्यारो
बाजूबंद के बीच, झूमका लटके प्यारो
नेपाली चुटला बने, बिंदिया गुच्छेदार
बिंदिया दुहरी कोरकी, फिर होवै फूलोंदार
होवै फूलोंदार, हमें उंगठाने चईये
बिच-बिच मुंदरी होंय, सांकरें वे भी चईये
कम्मर कसने के लिए, करधोनी शोभादार
माथे खों बैदा बने, आपई में दियै लिलार
आपई सें दिये लिलार, गरे में बेसर नामी
होंय तरूकला कान, नमूना हो बादामी
इतनो जेवर ला दो पिया, चंपकली कौ हार
छतियों पै दमकत फिरें, फिर लिपटो गले हमार
फिर लिपटो गले हमार, पलंग पै होय उजाला
अतर मसालेदार, अंग-अंग महकावै
धोती रेशम कोर की, चमके बीच बगार
कहें फकीरेलाल जी, फिर कैसी उड़े बहार

एक पत्नी अपने पति से जेवर बनवाने के लिए कहती है। उक्त फाग में बुन्देली गहनों का क्रमवार वर्णन हैं- हे पतिदेव! आप मुझे गहने बनवा दें। दुहरी तथा नौगरे बनवा दीजिए। इनके अलावा चंदोली, बंगरी, चूरा, झँजरी वाले ककना, ढलवाँ तोड़ल, छड़ा, परोखा, बाजूबंद जिनमें झुमके लगे हों, नेपाली चुटला, गुच्छेदार बिंदिया, उंगठाने, सांकर वाली मुंदरी, कमर की करधन, माथे का बेंदा, नाक की बेसर, गले का हार, कानों के तरूकला, चंपकली का हार, रेशमी साड़ी, महकने वाला इत्र। हे पति! इतनी चीज़ें ला दो तो फिर मजा रहेगा। मैं जहाँ से भी निकलूँगी, अलग दिखूँगी। फकीरेलालजी कहते हैं कि इनके मन की मुराद पूरी हो जाये तो उनके जीवन में बहार आ जायेगी।

सखीरी मैं ब्याहों नहीं वर बूढ़ो है, मोरी गिरजा है सुकमार
गिरजा है सुकमार, देख शंकर की माया
व्याकुल भवो शरीर, लोग जब देखी काया
भिनभिनात मांछी हतीं, अर छता लगे हैं घेर
घेर फेर ऊपर नेचें, सांपों के लागे ढेर ।। 1।।
सांपों के लागे ढेर, हिमान्चल अचरूज माने
गिरजा को भव सोस, भई हैं ब्याकुल रानी
मोरी बिटिया लाड़ली, वै गई धारई धार
बेटी खों जो का लिखो, बिरमा बीच लिलार ।। 2।।
बिरमा बीच लिलार, रंज माता खों भारी
गिरजा जू धर हयान, शिंभू के मन में ठानी
भकृ के मन की जानकें, हरि भाया लयी समार
सबके मन की बात खों, हिरदे में लीनी टार ।। 3।।
हिरदे में लीनी टार, कला कोऊने न जानी
कंचन भये शरीर, देख गौरा मुस्कानी
निरंकार औतार हैं, माथें चंद्र विशाल
बिरमा विष्नू सामू ठांड़े, फिर कोटन मायाजाल ।। 4।।
कोटन मायाजाल भरम के खुले किवारे
घर-घर मंगलाचार, सजे हैं बंदनवारे
शोभा बड़ी अपार है, ब्याव भओ तत्काल
दद्दा जी की किरपा सें, कै रहे फकीरेलाल ।। 5।।

स्रोत-श्री रज्जा ठाकुर गोंड

शिवजी के विवाह में गिरिजा की माता ने जब बारात देखी तो वे घबरा जाती हैं। वे सोचती हैं कि मेरी फूल जैसी नाजुक पुत्री के लिये यह बूढ़ा दूल्हा मिला है? मैं इसके संग अपनी बेटी का विवाह नहीं कर सकती। दूल्हा बने शिव के शरीर पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, गले तथा हाथों में सर्प लिपटे थे। देखने वाले उन्हें देखकर घबराते थे। यह सब देखकर गिरिजा सोच में पड़ गईं। गिरिजा की माँ अपने दामाद के बारे में सोचती हैं कि ब्रह्माजी ने मेरी बिटिया के भाग्य में कैसा दूल्हा लिखा है? उधर गिरिजा के मन की बात शम्भू समझ रहे थे। वह अपनी माया से रूप बदलकर असली रूप में आ गये। वही शरीर अब देवताओं के जैसा हो गया। बारातियों में भी ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य देवगण थे। दूल्हे की सूरत जब वधू पक्ष वालों ने देखी तो उन सबका भ्रम जाता रहा।

सखी री अर रर अर रर .....
मोहे लागी श्याम सों प्रीत सखी री .....

मैं जल जमना भरन जाततीं
कान्हा नें छिड़को नीर
झलक गयो सर रर सर रर .....
जमना किनारे श्याम खड़े हैं
ग्वाल बाल के बीच
मोहे लागी सांवरिया सों प्रीत
सखी री अर रर, सर रर
अर रर, सर रर .....

स्रोत- श्री रामलाल सहरिया, शिवपुरी

मुझे कृष्ण से प्रेम हो गया है। मैं यमुनाजी में जल भरने जा रही थी, तो कन्हैया ने मेरे ऊपर पानी डालकर मुझे भिगो दिया। कृष्ण अपने ग्वाल-बालसखाओं के साथ होली खेल रहे थे।

ब्रज हरि होरी मचाई, नंद घर बजत बधाई
इत से आई सुघर राधका, उतसें आये कन्हाई
हिलमिल फाग लाल भये अम्बर, शोभा वरनी न जाई
नंद घर बजत बधाई .....
पिचकारी मेरे सारी पै डारी, सारी की शोभा बिगारी .....

आज कृष्ण ने ब्रज में होली का त्योहार मनाया। नंद बाबा के घर-आँगन में मंगल वाद्य बज रहे हैं। एक तरफ से वृषभान सुता राधा आईं तो दूसरी तरफ से कृष्ण आ गये। इतनी ज्यादा फाग खेली गई कि उस रंग-अबीर से आसमान भी लाल हो गया। कृष्ण के रंग में राधा ग्वाल-बाल सभी रंगे हुए थे।

दीन भये सुख होय, दीन पथ सार है
दीन भये प्रहलाद, पिता गिरवर से ढारे
कोटन करे उपाय, भरे कैसऊ ने मारे
पावक जारे ने जरें, जल सें लेत उवार
खम्भ फार परगट भये, स्वामी ऐसे सुनी पुकार ।। 1।।
अम्बरीक जर जायें करी साहब ने छाया
ऋषि दुरवासा जाये, ग्वाल के चक्र चढ़ाये
तीनों लोक भागत फिरे, राख सको ने कोई
ठाकुर चरनो में गये, सो भगत द्रोही होय ।।2।।
जिनको कोऊ ने होई, जिनें आपन रस साजे
लैंये समुन्दुर सोक, नमक टीटई के लाने
गरव अहारी बेधनी, करें गरव की हान

राखें पेज गरीब की, करें असुर की नास ।।3।।
सात सुदर्शन बांद, काल ऊपर हो डारे
सदा भरोसा रामको, जाई राम की रीत
विष के अमृत हो गये, मीरा खों परतीत ।।4।।
बीस भुजा दस शीश हतो, शिव को वरदानी
सोने की गढ़ लंक, जात काहू ने जानी ।।5।।
नाटक चेटक करें, रामखों नहीं डरावै
नहीं मुकुट की छांय, कहो कैसे निनवारें
दास गनेश रक्षा करें, झांको सबद निदान
तुलसीदास कहें बैरागी, गये चरन लिपटाय
दीन पथ सार है ।।6।।

स्रोत–श्री रामकिशन गोंड, मेंड़की

यदि हम दीन–दुखियों के हितैषी बन जायें तो हमारा जीवन ही सार्थक हो जायेगा। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को बहुतेरा समझाया कि भगवत भक्ति छोड़ दे, लेकिन उसका कोई असर न हुआ। फलस्वरूप हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को मरवाने हेतु बहुतेरे उपाय किये। पर्वत की चोटी से गिराया, अग्नि में जलाया, पानी में फेंका, अंत में रक्त तप्त लौह खम्भ से प्रहलाद को बाँधा गया, लेकिन श्री विष्णु नृसिंह रूप में खम्भे को फाड़कर प्रगट हुए और उन्होंने हिरण्यकश्यप को मार डाला। जिसका कोई न हो, उसका ईश्वर रक्षक होता है। एक समय टिटही ने अपने अंडे रखे थे, लेकिन बारिश होने पर पानी आया और समुद्र का पानी अंडों को डुबाने लगा, लेकिन समुद्र को सोखकर प्रभु ने टिटही के अंडों की रक्षा की।

भक्त मीरा ने विषपान किया। वे अपने इष्ट श्रीकृष्ण के ही भरोसे थीं, लेकिन उन्होंने विषपान किया और नटनागर श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा की, जिससे वह विष अमृत हो गया। कुछ लोग आसुरी प्रवृत्ति के होते हैं, जो धर्म के विपरीत आचरण करते हैं।

जोधा गरज रहो दल में भारी,
फिर कुम्भकरन बलवान।
कुम्भकरन बलवान ऊतो महाबल भारी।
कई मन करे अहार, पिये वो मटकों पानी।
कोट–कोटन मद पिये, ढेरों खावे मांस।
महाबली असरासुर है वो, सोय नींद छै मास॥
सोये नींद छै मास, ऊंसे सब जग हारो
नाद सुने इन्द्रासन हले, सये भूम ने भार॥
दोई दल में खलबल मचे, करे भौत उत्पात
घायल करके पवनसुत, नल नील खों दये पछार।

कोई ने पावे पार, हार प्रभु कपिन की देखी।
सात बान मारे प्रभु, सिर भुजा दई है उड़ाय।
शीश गई है दसशीश ढिग, धड़ गिरो भूम पै जाय॥
धड़ गिरो भूम में जाय, मची हलचल लंका में।
खा-खा गिरे पछाड़, राक्षस हैं शंका में।
परलो पर गव, जुलम गुजर गव, कीने डारे मार।
रावन केवे कोऊ देख ले, महलो में परे घमासान॥
जोधा गरज रहो दल में भारी॥

स्रोत-श्री रामचरन गोंड, बिलेकी

कुंभकर्ण लंकापति रावण का भाई था, जिसे ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त था कि वह छह मास सोयेगा तथा छह माह जागेगा। वह बहुत बलवान था। भयंकर गर्जना करता हुआ युद्ध में लड़ने आया। वह बहुत भोजन किया करता था, मटकों पानी पी जाता था। वह जब छह माह सोकर जागता था, तो उसकी गर्जना से इन्द्र का आसन भी डोल जाता था। युद्ध में उसने पवन पुत्र हनुमान को घायल कर दिया, नल एवं नील को पछाड़ दिया। जब प्रभु श्रीराम ने अपने योद्धाओं की यह हालत देखी तो उन्होंने कुंभकरण को सात बाण मारे। हाथ एवं सिर काट दिये। उसका सिर लंका में रावण के पास गिरा। इस प्रकार वह प्रभु राम की कृपा से मोक्ष को प्राप्त हो गया। यह देखकर लंका में हाहाकार मच गया। रावण एक बार यह सब देखकर डर गया।

नजर टेड़ी नें करो सीदी है राह, करो देह की शान
करो देह की शान, बने हो ऐसे बाबू
देखत में अच्छे लगे, आफीसर जैसे
चटक मटक बतला रहे, धर खींसा में नोट
जा अंगरेजी काट के, फिर कसें बटन सें कोट
कसें बटन से कोट, जुवानी का है नस्सा
फिरत बताते ठट्टा, बतलाते कोरो ठुस्सा
घर में खावे नहीं जुरत, बने फिरत हैं मेंट
अरे बातें तो ऐसी करें, जे होवें धन्नासेठ
सीना काड़े वे फिरें, दसा है जिनकी न्यारी
तेल डारकें बालों में, बन गये बाबूसाब
गैल घाट में देख ले वे, उमठे आपई आप
उमठे आपऊ आप, चाल जे चलें दिवानी
अपने दिल में बने नहीं, कोई मेरी सानी
सदा जवानी ने रहे, भूल गये सब हाल

एक जरासी बात में, काहे खों बढ़ाबें रार
काहें खों बड़ा रये रार, नैन में सुरमा आंजे
फिर रये खोरन खोर, रूप खों अपनो साजें
धोती पैरे फेन्सी, डांटे फिरे कमीच
चार जनन के बीच में, बोलन की नहीं तमीज
बोलन की नहीं तमीज, नजर टेड़ी ने करो

स्रोत- श्रीरामचरन गोंड और साथी, अधारपुर

अरे ओ जवानी के नशे में मदहोश रहने वाले! तनिक सीधी राह पर चलना तो सीख लो। ये धन-दौलत और शरीर तथा रूप पर गुमान करना छोड़ दो। तुम्हें उस नशे में कुछ सूझता ही नहीं है। अपने आगे किसी की नहीं सुनते। बस! छैला बनकर ताक-झाँक करते फिरते हो, अगर थोड़ी सी तमीज सीख लोगे तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायेगा? अरे! तुम्हें तो बोलने की भी तमीज नहीं है।

नटवर नंद किशोर, दई माखन सुन पाई
मचगव हाहाकार, सकीं सब दौरत आई
कर मोहन खों बीच में, सकियां ठांड़ी घेर
हांत बांद दोऊ लये, फिर गुलचा मारे ते
कर लेहें बरयाकें मिले हैं, दाव आज अपने मनकी
गुलचा मारी फेर, काय देखत हो ठांड़ी
उसन कनक सी लेव, डारके इनखों आड़े
कै रये के जीरा घबरात, तन मन धरे ने धीर
ऐई भड़या ने चोरी करी, जमना में चुराये चीर
जमना में चुराये चीर, जोई तो बेंचे चुरियां
जोई बैद बन जाय, दवाकी लैकें पुरिया
जोई तो मनहारी बने रे, अपनो रूप छिपाय
गुदना गोदन के लिये, फिर बरसाने लों जाय
बरसाने लों जाय, जोईतो धेन चरावै
उर विन्द्रावन के बीच, दई की कीच मचावैं
के हमें अकेले में मिले, होंवे ऐई को राज
वा सुद कनैया कहां गई, फिर मुख से बोले आज
मुखसें बोलो आज, कायरी ललता प्यारी
उर तनक दया नई आय, करे जग की जो हानी
अबै कछू के नहीं रहे, चल नईं रहे उपाय,

वादिन तुमहों देखें सो, जेदिन परहें दाव
जेदिन परहें दाव, ओड़कें कारी कमरी
उर छिन में लेंहों उतार, तुमारी गालो की लाली
के बलीराम कथकें कहें, सुनले चतुर सुजान
वेतो कनैया नहीं मिले, फिर ढूंढ़न को संसार

एक समय लीलाधारी कृष्ण माखन की चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़े गये। उनके पकड़े जाने की खबर पूरी बस्ती में फैल गई। ब्रज की सारी सखी-सहेलियाँ एकत्रित होकर कृष्ण को घेर लेती हैं, उन्हें आज कृष्ण से बदला लेना है। सबने मिलकर उनके हाथ-पैर बाँध दिये, कोई चपत लगाती हैं तो कोई कहती हैं कि यह कान्हा बड़ी मुश्किल से पकड़ा गया है, आज हम इससे गिनगिनकर बदला लेंगे। कोई कहती हैं कि इसे लिटाकर इसकी धुनाई कर दो, कोई कहती हैं कि इसने ही हमारे वस्त्र चुराये थे, यही मनिहारी बनकर आया था, यही गोदना गोदने आया था, हम इसे ऐसे न छोड़ेंगी, यह बड़ा छलिया है। यह समझता है कि जैसे सारे ब्रज में इसी का राज है। हमारी दही की मटकियाँ छीनकर दही की कीच मचा देता है। अरे कान्हा! अपनी करतूतों की याद तो कर लो, तुम्हें हमें छेड़ने में, परेशान करने में तनिक भी दया नहीं आती। अरे! हमने भी सोच रखा था कि कभी तो हमें मौका मिलेगा, जब हम तुमसे बदला ले लेंगी। कवि बलीरामजी कहते हैं कि तुम सब अपने मन में क्यों भ्रमित हो रही हो। अरे! वे तो छलिया हैं, वे तुम्हें नहीं मिलेंगे, चाहे तुम उन्हें सारे संसार में ढूँढ़ लो, यह तो तुम्हारा भ्रम है कि उन्हें पकड़ रखा है।

ननदी सांजे दियला काये ने जराये
तोरे धसे महल में चोर
ठाट ने टूटो घर ने फूटो, लैगव तारो होर
दस दरवाजे बंद पड़े रये, निकर गयो की छोर
दुलरी लैगव बंगरी लैगव, दई समद में बोर
गगन गुफा में बैठी सुहागन, लगी राम सें डोर
जोलो ननदी दिया उजारो, जोलों होगव भोर
जमराजा छाती चढ़ आये, डारे प्रान झकझोर
कहत कबीर सुनो भाई साधू, नगर में हो गव शोर

स्रोत- श्री कल्लू गोंड और साथी, गुटौरी

अरी ओ ननद जी! आपने साँझ होते ही दीपक क्यों नहीं जलाया, अँधेरे घर में चोर आ गये और तुम्हारा सब कुछ लूटकर ले गये। आशय यह है कि हमने अपने जीवन में सब कुछ किया, लेकिन हमने उस परमात्मा का स्मरण नहीं किया, जिसने हमें यहाँ भेजा था और अब

अंत समय आ गया तो अब जाना ही है, अब पछताने से तुझे क्या मिलेगा, अब तो इस शरीररूपी घर से जीवरूपी आत्मा अर्थात् धन चला गया। यमराज आकर जीव को ले गये, शरीर पड़ा रह गया। न तो घर का ताला ही टूटा, न चोरों ने घर को फोड़ा। इस शरीर के दस द्वार हैं, वे सब बंद हैं फिर वह जीव कहाँ से कैसे चला गया ? हमारा तो सब कुछ चला गया, जब तक हमें यह चेतना आई कि हम राम से लगाव लगायें, तब तक समय ही जाता रहा। यमराज छाती पर चढ़ आये और जीव को ले गये। कबीरदासजी कहते हैं कि जीव के जाते ही शोर हो गया कि अमुक व्यक्ति नहीं रहा।

जनम धोके में खो दव
दो-दस बरस बालापन बीते, बीस में ज्वान भयो
तीस बरस माया के डरते, देश-विदेश गयो
चालीस बरस अंत जब लागो, बाढ़ो मेह नयो
धन और धाम पुत्र के कारन
निशदिन सोच भयो
बरस पचास कमर भई टेड़ी, सोचत खाट परो
लरका बहुएँ बोली बोलें, बुढ़ऊ मर ने गयो
बरस साठ सत्तर के भीतर, केस सफेद भयो
वात पित्त कफ घेर लओ है, नैनो नीर बहो
ने गुर सेवा ने साधु की सेवा, ने शुभ करम करो
कहें कबीर सुनो भाई साधू, चोला छूट गयो .....

यह सारा जीवन हमने धोखे में ही निकाल दिया। प्रभु के स्मरण का समय ही नहीं मिल पाया। दस वर्ष बचपन में व्यतीत हुए, जवानी आई तो माया-मोह में फँस गया, इस आयु में पत्नी-पुत्र और माया से मोह रहा। पचास वर्ष के आते ही शरीर शिथिल होने लगा, कमर झुक गई, खटिया का सहारा लेना पड़ा। ऐसी स्थिति में बेटे-बहुएँ कोसने लग गये कि इस बूढ़े को मौत क्यों नहीं आ जाती? उम्र बढ़ने से शरीर के बाल सफेद, वात-पित्त-कफ प्रकोप, आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होती है। अब क्या हो सकता है- पूरी ज़िन्दगी में न हमने सत्कर्म किये, न ही हरि भजन किया। कबीरदासजी कहते हैं कि अब तो हमारा इस शरीर को छोड़ने का समय आ गया, अब क्या हो सकता है।

राधा खों परे ने चैन, मुरलिया फिर बाजी रे मोहना .....
काहे की तोरी मोहन मुरलिया, सो काहे की लागी डोर
काहे की लागी डोर मुरलिया
हरे बांस की मोहन मुरलिया, सो रेशम लागी डोर
कैसे कें फूट गई मोहन मुरलिया, कैसे टूट गई डोर

बाजत टोटी मोहन मुरलिया, सो खींचत टूटी डोर
रसना ने जो रहस रचाये, सो राधा नचीं घनघोर

स्रोत–श्रीमती रामेती गोंड, केसली

कान्हा की मुरली बजी तो सुनकर राधा बेचैन हो गईं। यह मुरली बड़ी जादुई है, जिसका प्रभाव बड़ा दूरगामी पड़ता है। कृष्ण की मुरली काहे की बनी है, उसकी डोर कौन सी है? मुरली बाँस की तथा रेशम की डोरी है। मुरली कैसे टूटी तथा डोरी कैसे ? बजाते में मुरली तथा खींचते में डोर टूट गई। कृष्ण ने रास रचाया और मुरलीवादन किया। उस रास में राधा ने नृत्य किया था।

अरे नगनियां बनके डसलव, मोहन तोरी बांसुरिया .....
न सुन्ने की न रूपे की, बनकी नांकरिया
सास हठीली ननद छबीली, घर में देउरिया
कैसे कें हम आंहे मोरे मोहन, बाजे पायलिया
रिमझिम–रिमझिम मेवा बरसे, चमके बिजुरिया
कैसे कें हम आंहे मोरे मोहन, भीजे चुनरिया .....

स्रोत– सुश्री सरोजबाई गोंड, परासिया

अरे कान्हा! तुम्हारी बाँसुरी ने आज नागिन का काम किया, जिस तरह से नागिन के डँसने पर व्यक्ति पानी नहीं माँगते, उसी तरह से कृष्ण की मुरली का असर होता था। कृष्ण की बाँसुरी साधारण सी लकड़ी की थी, न तो सोने की थी, न ही चाँदी की, फिर भी वह अपना जादुई प्रभाव दिखाती थी। कृष्ण ने मुरली बजाकर एक ब्रजबाला को अपने समीप आने का आमंत्रण दिया। वह बाला कहती है कि– मेरे घर में मेरी सास, ननद तथा देवर बड़े चालाक हैं, मैं कैसे आ सकूँगी और अगर आने का सोचूँ भी तो मेरे पैरों की पायल के घुँघरू मेरे चलने से बजते हैं। इसके बावजूद भी आ जाऊँ तो इस समय पानी रिमझिम बरस रहा है, बिजली चमक रही है। अगर घर से निकलूँगी तो मेरी चूनर पानी में भींग जायेगी और वापस आने पर सारा भेद खुल जायेगा।

ऐसी सुगर पनहारी, मजा रे पानी ने बिगारी .....
लंये गगरिया समद में बोरी, समद उठो रे किलकारी
कौना की बेटी, कौना की बहुरिया, कौना के घर की नारी
राजा हिमांचल की बेटी कईये, भोले की घर नारी
जोकऊ गौरा मोरेनां आजा, मोंतन मांग भरा दऊं
जीवन नैयां बिन भोलानाथ हमारो, घट गव धरम तुमारो
सांत समुदा मोरे भैया लगत हैं
मालन कहे रे घरवारे

इतनी बात सुनी है भोला ने
सात तिनूका डारे .....

एक समय पार्वती माता समुद्र में पानी भरने जाती हैं। जैसे ही गौरा ने अपनी गगरी समुद्र में डुबाई, समुद्र बोला कि आप किसकी बेटी, किसकी बहू तथा किसकी पत्नी हैं? गौरा बोलीं कि मैं हिमाचल की पुत्री तथा भोलेनाथ की पत्नी हूँ। समुद्र कहने लगा कि अगर आप मेरे घर आ जायें, तो मैं आपकी माँग मोतियों से भर दूँगा। पार्वतीजी बोलीं कि बिना भोलेनाथ के मेरा जीवन ही नहीं रहेगा, तुमने मुझसे जो भी कहा है, उसके परिणामस्वरूप तुम्हारा धर्म नष्ट हो जायेगा। सातों समुद्र तो मेरे भाई लगते हैं और तुम मुझे पत्नी बनाने की सोचते हो। जब यह बात भोलेनाथ ने सुनी तो उन्होंने समुद्र को सोखने का यत्न कर दिया।

लै दइयो सिंगार, हमें राजा चाइने है .....
माथे खों मोय बैंदा लैदे, बूंदा सदाबहार
कानों खों मोय कुण्डल लैदे, झुमकी शोभादार
गले खों मोय हरवा लैदे, माला शोभादार
गोरे बदन खों चोली लैदे, बाटन लगे हजार
हांतो खों मोय चुरिया लैदे, राजा तोरो सिंगार
पाउन खों मोय तोड़ा लैदे, लच्छा झजरीदार

हे प्रिय! मुझे जेवरात ला दो, मेरी बड़ी लालसा है कि मैं सोलहों शृँगार करूँ। मुझे माथे के लिए बैंदा-बूँदा, कानों के कुण्डल-झुमकी, गले का हार तथा माला। शरीर के लिए सुन्दर चोली, जिसमें हजारों बटन लगे हों, हाथों के लिए सुन्दर चूड़ियाँ, पाँवों के तोड़ल तथा झँझरी वाले लच्छे ला दो।

हटकी ने मोहन माने, चुनरिया ताने रे मोहना .....
कौना नगर की सुगर ग्वालन रे मोहना
काहे तुमारो नाव चुनरिया .....
मथरा नगर की सुगर ग्वालन रे मोहना
अरे राधा हमारो नाव चुनरिया .....
कहना दद बेचन जाय रे मोहना
गोकल दद बेचन जाय .....
कंस रजा को राज बुरओ है रे मोहना
तन्नक दही के लाने चुनरिया .....
चंद्रसकी मोहन को झगड़ो रे मोहना
छलिया जुगल किशोर चुनरिया .....

राधा दही बेचने जा रही थीं और कृष्ण उनकी चुनरी को खींचते हैं। वे राधा से पूछते हैं

कि अरी ग्वालिन! तुम कहाँ की रहने वाली हो, तुम्हारा क्या नाम है? राधा बोलीं कि- मैं मथुरा में रहती हूँ और मेरा नाम राधा है। कृष्ण ने पूछा कि- तुम दही बेचने कहाँ जाती हो ? राधा बोलीं कि- मैं गोकुल में अपना दही बेचने जा रही हूँ। यहाँ पर कंस का राज्य है, वह बड़े कठिन स्वभाव के हैं, तुम थोड़े से दही के लिए मेरी चूनर खींचते हो। चंद्रसखी कहते हैं कि यह तो राधा और मोहन का झगड़ा था, जो चलता ही रहता था।

घर में दो-दो नार अकेले बालमा .....
पैली कहे मोय बैंदी चायने, दोजी कहे हमें सोई बलमा .....
पैली कहे हमें झुमकी चायने, दूजी कहे हमें सोई सैयां .....
जेठी कहे हमें हरवा चायने, लुहरी कहे हमें सोई सैयां .....
जेठी कहे हमें कंगना चायने, लुहरी कहे हमें सोई सैयां .....
घर में दो-दो नार अकेले बालमा .....

जिसके घर में दो पत्नी हो वह बड़ा परेशान रहता है, क्योंकि उन दोनों में हर समय किसी न किसी चीज़ की माँग हुआ करती है। अगर एक को ला दो तो दूसरी को भी लानी पड़ती है। पहली पत्नी ने कहा कि मुझे बेंदी ला दो, तो दूसरी ने भी बेंदी की फरमाइश कर दी। फिर इसी तरह झुमके, हार, कंगन आदि दोनों पत्नियों को चाहिए, अब वह पति क्या करे, इसी चक्कर में वह हमेशा परेशान रहता है।

पिंजरा मैके पाले सुआ, उड़ जाय गंगाराम ये रामा
उड़कें सुअना कुअल पै पौंचे, डिमरा को लरका बड़ो रे चालू
उड़ मारे गुलेल ये रामा .....
उड़कर सुअना तलों पै पौंचे, सो धुबिया को लरका बड़ो चालू
उठ मारे गुलेल ये रामा .....

स्रोत- केसली फाग पार्टी, गोंड

पिंजरे में तोते को पाला, लेकिन वह उड़ गया। तोता उड़कर कुँए पर बैठा, लेकिन ढीमर का लड़का बड़ा शरारती है, उसने तोते को गुलेल मार दी। फिर तोता उड़कर तालाब पर पहुँचा, वहाँ धोबी के लड़के ने उस तोते पर गुलेल चला दी।

डरवाले घंगरिया में लाल, डोरा डरवाले .....
कहना बसे तुमने लै लई घंगरिया
कहना सेंजा चुनरिया रे .....
कटनी सें लै लई जा घंगरिया
गढ़ाकोटा सें लै लई चुनरिया रे .....
कुहनो ने लै दई तुमहों घंगरिया
कौना लै दई चुनरिया रे .....

सैयां लै दई हमहों घंगरिया
देवरा लै दई चुनरिया रे .....
घेराहो लटक रयी लाल घंगरिया
फर-फर उड़वे चुनरिया रे .....

तुम अपने घाघरे में लाल रंग का नाड़ा डलवा लो। ये घाघरा कहाँ से मँगाया था तथा चूनर कहाँ से ली थी? घाघरा कटनी से तथा चूनर गढ़ाकोटा से मँगवायी थी। तुम्हें ये दोनों चीज़ें कौन लाया था? मेरे पति मेरे लिये घाघरा तथा देवर चूनर लाये थे। घाघरा बड़ा घूम-घुमारा है, वह चारों तरफ लटकता है तथा चूनर फर-फर करके उड़ रही है।

जनक के बागों में, सीता ने लये औतार
थारी में लाड़ू लये, चली मंदोदर नार
उठ सीता भोजन करो, ना हुइयो लंकपतनार
ऐसे भोजन ने करें, ऐसे हमें ने पुसांय
कै मर जैहे बंसा भिरे में, कै संगे राम के जांय
ऐसी सीता सतपति रे, एक पुरष की नार
कायखों लंके आईती, सो घटहों देतीं सराप
लछमन देवरा लाड़रे रे, वाचा लई हराय
तीन लोक दिन में जरें, सो लंका के दरम्यान
घर-घर लंका मायको रे, कईये मंदोदर माय
रावन कईये पिता हमारे, सो तुमखों देय वताय
कैसो लंका मायको रे, कैसी मंदोदर माय
कैसे कईये पिता तुमारे, सो हमखों देव बताय
धोई लंगोटी सादुओं की, दांतन दाग हटाय
राजा जनम के बाग में, जे गरव दये खिसलाय
सादों पै रम्छा करें, असरो देव बिनास
तुमें रड़ापे जब चढ़ें, जब भुजा कटे दसशीश .....

विदेहराज जनक के बाग में सीताजी अवतरित हुई थीं। सीताजी का अपहरण करके रावण लंका ले आया, उन्हें अशोक वाटिका में रखा गया। सीताजी को भोजन हेतु रावण की पटरानी मंदोदरी एक थाल में लड्डू भरकर लायीं तथा सीताजी से बोलीं कि- हे सीता! उठकर ये लड्डू खा लो, फिर तुम्हें लंकापति रावण की पत्नी बनना है। सीताजी मंदोदरी के वचन सुनकर बोलीं कि- मैं इस तरह भोजन न करूँगी, मुझे यहाँ का भोजन ही नहीं करना है। रही तुम्हारी दूसरी बात तो मेरा जवाब सुनती जाओ कि इस तरह की स्थिति आई तो मैं बाँस के झुंड में अपनी जीवनलीला समाप्त कर लूँगी या फिर मैं श्रीराम के साथ जाऊँगी। मंदोदरी कहती है कि- जब

तुम इतनी पतिव्रता हो तो फिर यहाँ आई ही क्यों थीं? उसी समय लंकापति को श्राप दे देतीं? सीताजी बोलीं कि- मैंने अपने देवर लक्ष्मण को यह वचन दिया है कि तुम्हारी यह सोने की लंका कुछ दिनों में ही जलेगी और राक्षसकुल समाप्त हो जायेगा, इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ। और यह भी सुनती जाओ कि लंका मेरा मायका है, रावण पिता तथा तुमसे माँ का रिश्ता है। मंदोदरी ने सीता की रहस्यमयी बात को सुनकर पूछा कि- किस तरह से लंकापति तुम्हारे पिता हुए और मैं माँ हुई? सीता बोलीं कि- बचपन में तुमने महाराज जनक के यहाँ साधुओं की सेवा-सुश्रूषा की, उनके वस्त्र धोये, जब उनकी लंगोटी का दाग नहीं छूटा तो तुमने अपने दाँतों से दाग छुड़ाये थे, फलस्वरूप तुम गर्भवती हो गयी। चूँकि तुम क्वाँरी थी, इसलिए वह गर्भपात जनकजी के बाग में हुआ। श्रीराम ऋषि-मुनियों के रक्षक हैं तथा असुरों के विनाशक। मैं यहाँ आई हूँ तो उसका परिणाम यह होगा कि सारा राक्षसकुल समाप्त होगा। रावण भी मारा जायेगा और तुम विधवा हो जाओगी।

मांगे रे कैकई बरदान
रामा रे निकर बनखों गये हां .....

महारानी कैकेई ने महाराज दशरथ से वरदान में राम को चौदह वर्ष का वनवास माँगा था।

दैदे रे बंसी की टेर
राधा रे हिरानी मोरे कुंजो में हां .....

अरे कान्हा! तुम बाँसुरी बजाओ, क्योंकि राधाजी कुंज गलियों में खो गई हैं, वे बंशी की आवाज सुनकर यहाँ आ जायेंगी।

अमिया रे अरे टोरत डार
सुआ रे हरामी अरे नें मरे हां .....

ये तोता बड़ा बेईमान है, वह आम की डाली पर बैठकर आमों को कुतर रहा है।

पैलऊं रे आरे सुमरो गनेश
दूजे रे मना ले माता शारदा हां .....

गायन में सर्वप्रथम विघ्नहर्त्ता गणेश देव का आव्हान करेंगे, तत्पश्चात् स्वर की अधिष्ठात्री माता शारदा का आव्हान करेंगे।

खेलत नैयां फाग आनारो लेंवे .....
विन्द्रावन की खोरयें, रंग बरसत आवै
हाय-हायरे रंग बरसत आवै .....
काहे की मटकी में रंग घुराये

काहे की पिचकारी रे .....
सोने मटकिया में रंग घुराये
बंसा की मारी पिचकारी रे .....

होली किसी से बैर लेने को नहीं खेली जाती, यह तो आपस के भेदभाव को मिटाती है। कृष्ण होली खेलते हैं, उनकी होली तो बड़ी धूमधाम से खेली जाती थी, वृन्दावन की गली-गली में रंगों की बरसात सी आ गई है, चारों ओर रंग गुलाल की धूम मची है। रंग कौन सी मटकी में घोला गया और पिचकारी कौन सी है? सोने की मटकियों में रंग घोला गया है तथा हरे बाँस की पिचकारियों से रंग डाला जा रहा है।

का सुक भओ सासरे भईयां, हमें कायखों गुइयां .....
परबू करे दूद पीवे खों, सास के संगे सैयां
दिनभर भरी रात संकीरन, चढ़े ससुर की कईयां .....
भर-भर देखो करें दूर से, देखत हमें तरइयां
कटी बजर की रात ईसरी, लटी होत लटकैयां .....

मुझे ससुराल आने का क्या सुख मिला? अरी सखी! देखो तो मेरे पति अभी भी अबोध हैं, वे अपनी माँ के साथ सोते हैं, अभी भी उनका दूध पीते हैं तथा अपने पिता के कंधे पर चढ़ते हैं, उनका अभी बचपना नहीं गया। हमारे घर में यही झगड़ा चलता रहता है। वे मुझे दूर से देखा करते हैं। रात मुझे वज्र के समान लगती है। मेरा विवाह तो मुझे अभिशाप बन गया है।

ठांड़े हैं ग्वाल बाल नंदलाला .....
बिन्द्रावन की संकरी हैं गलियां
कांहो निकर जाय ब्रजबाला .....
आंगे हो श्याम ठांड़े, पीछे बलराम ठांड़े
बीचन में घेरे हैं ग्वाल बाला .....
आंगे सें रंग मारे, पीछे से गुलाल मारें
बीच में मारे पिचकारी .....

आज ब्रज में होली का त्योहार है। कृष्ण, बलराम तथा ग्वाल-बाल वृन्दावन में हर गली में घूम-घूमकर आने-जाने वालों को रंग-गुलाल से सराबोर कर देते हैं। कुछ ब्रजबालाएँ वहाँ से निकलीं तो हुरियारों ने उनका रास्ता रोक लिया, किसी ने रंग की पिचकारी चला दी तो किसी ने गुलाल लगा दी।

अरूवा मारे मरें नें, मरुओं के कंदो पै धरे बंदूक .....
छै अंगरा दारू भरी, छर्रा टोपीदार
सूद मिलाकें रें गये, जेकर खटियों की आड़ .....

बोले अरूवा जा कहे, सुनले मरुवा बात
परूओ पै डेरा डरे कें, तुम परे रहो छैमास .....
हरीराम कथकें कहें, कईयक मारे सेर
मरूवा में आगी लगी, मरो ने एकऊ बेर .....

एक कमजोर व्यक्ति अपने कंधे पर बंदूक रखकर उल्लू मारने को निकला है, लेकिन वह उल्लू को नहीं मार पाता। उसने भरमार बंदूक में बारूद भरी ऊपर से छर्रे डाले तथा टोपी चढ़ाकर बंदूक लेकर निकला। उसने अपने शिकार का निशाना मिलाया। बंदूकधारी ने खाट की आड़ से निशाना साधा था, लेकिन वह चूक गया। उल्लू ने देखा तो वह शिकारी की ओर हँसकर बोला कि- इस तरह से तुम छः मास तक भी निशाना साधकर खाट पर पड़े रहोगे फिर भी तुम मेरा शिकार न कर पाओगे। हरिराम कहते हैं कि शिकारियों ने तो कई शेर मारे हैं, लेकिन यह मरियल तो किसी काम का नहीं, इससे एक उल्लू भी न मर पाया।

हीरी-पीरी पर गई रे, मोरी रेशम की सारी .....
मोहन ने मनमानी कर लई, मार-मार पिचकारी.....
ऐसो लगत कबऊं ने धोवें, अंग रंग ने सारी .....
रोम-रोम में रंग भरो है, ठंडी पर गई छाती
और श्याम रंग में रंग गई सारी .....
झूम-झपटकें बैयां पकरी, रन-वन की भई सारी
ऐसो लगत हिये लिपटाकें, वन जावे घरबारी .....

आज कृष्ण ने एक ब्रजबाला के ऊपर रंग से भरी पिचकारी चलाई तो उसकी रेशमी साड़ी रंग-बिरंगी हो गई। वह बाला अपने मन में बहुत खुशी मनाती है, वह कृष्ण को अपना प्रेमी मानती है, इसलिए उसे बड़ा अच्छा लगा। सोचती है कि उनके द्वारा रंगी यह साड़ी मैं कभी नहीं धोऊँगी, क्योंकि वह कृष्ण रंग में रंगी हुई है। उसके मन की मुराद पूरी हुई। साड़ी के साथ उसके शरीर पर भी रंग रंगा हुआ है, वह तो समूची श्याम रंग में रंगी थी। कृष्ण ने उसके साथ झूमा-झटकी की थी, उस समय तो उसे ऐसा लगा था कि कृष्ण को छाती से लगा लूँ और उनकी पत्नी बन जाऊँ।

टुरिया बिगर गई बालापन में, खोटी है मुरऊ की चाल .....
खोटी है मुरऊ की चाल, घर हटके मां बाप सगे भैया भौजाई
लरकों खेलन जात है, सो फरिया आवै छोर .....
फरिया आवै डार, कुरावै निशदिन चुरियें
उर सूता डारे टोर, खोकट की चोली बनी
अपन तो खुद लिपटत फिरे, लरकों खों लगावै दोख .....
लरकों लगावै दोख, कहो जा कैसे बदहें

करके जेई हाल, जहां जा ब्याही जेंहे
जान पराई जानके कईयक से तकरार .....
कईयक सें तकरार जवें हती भोरी बारी
अब हो रई जे लाल, अब न काऊ खों खोरी
बलीराम कथकें कहें, जो हुइये जात कुजात .....

एक युवती का बचपन से ही चाल-चलन बिगड़ गया, क्योंकि उसका स्वभाव शुरू से ही ऐसा था। छोटी उम्र में वह लड़कियों की बजाय लड़कों के साथ खेलती थी। उसी समय उसके माँ-बाप, भाई-भाभी उसे लड़कों के साथ खेलने के लिए मना करते थे, लेकिन वह किसी की बात पर ध्यान नहीं देती थी। जब वह खेलने जाये तो अपनी चुनरी वहाँ छोड़ दे तो कभी हाथों की चूड़ियाँ तुड़वाकर आ जाती, कभी गले का धागा तोड़ लेती। घर में जब कोई उससे पूछता तो कह देती कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं, मुहल्ले के लड़के ही खराब हैं। जबकि वह अपनी मर्जी से लड़कों के साथ खेलती थी। माँ-बाप बड़े चिंतित थे, वे सोचते थे कि इसका भविष्य क्या होगा, अगर अभी ये हाल हैं तो विवाह के पश्चात् यह क्या करेगी? लड़की के चाल-चलन से उसके माँ-बाप ने आसपास के लोगों से बैर ले लिया था। वह तो बचपन था, लेकिन अब तो उसकी जवानी आ गई, अब किसे दोष दें? बलीरामजी कहते हैं कि यह लड़की आगे चलकर पता नहीं और क्या-क्या गुल खिलायेगी?

फूले रईयो गुलाब नईयां गरज भौरा खों .....
कृष्ण केतकी में हरसे,
हरसिंगार में हरी, चतुर चंपा में दरसे
बकावली में बिहारी, जूही में जुगलकिशोर
गैंदा में गोविन्द हैं, मैं रैगई हांत कटोर .....
कनहर में कनैया, सूरजमुखी में श्याम
बसो मुरली बजवइया
जगपति जासोन में, बेला में विराट
मनमोहन मुचकंद में, मोरो अव खों गवो उचाट .....
नरगिस में नारान, मोरछत में माधव
मोगरा में मधुसूदन
गुलाब में गोपाल हैं, सौसन में शालिगराम
चमेली में चक्रधर, जे रम रये आठों धाम
चंपा चमेली चांदनी, कुसुम कदम कचनार
सूरजमुखी अरू सेवन्ती, तुम फूलो फलो हजार .....
फूलो फलो हजार, मनई मन शंका खाऊं
भगवन पै भगवन कौन विद चढ़ाऊं

मालन भूली बाग में, इते भूलो सिंसार
लछम कहें महिमा अपार, कोऊ ने पावै पार .....

अरे गुलाब! तुम कितने ही फूले रहो, लेकिन भँवरे को तुम्हारे पास नहीं आना। कृष्ण को केतकी का फूल प्रिय है, विष्णुजी को हरसिंगार का, चंपा का फूल भी उन्हें भाता है। बकावली के फूल में बिहारी तथा जूही जुगलकिशोर को पसंद है। गेदा गोविन्दजी को, कनेर का फूल कन्हैयाजी को, सूरजमुखी श्याम को जो मुरलीवादन करते हैं। पसन्द है जगपति को जासोन का फूल तथा बेला का फूल भगवान के विराट रूप को अच्छा लगता है। मुचकुन्द मनमोहन को, नरगिस श्रीनारायण को, मोरछली का पुष्प माधव को, मोंगरा मधुसूदन को, गुलाब गोपालजी को, सौसन शालिग्राम को और चमेली चक्रधर को पसन्द हैं। ये तो प्रभु की लीला है, सब फूलों में उनका वास है, उन्हें सारे फूल पसंद हैं। मालिन फूल तोड़कर भ्रमित है कि फूलों में जब ईश्वर निवास करते हैं, तो फिर ईश्वर को ईश्वर ही कैसे चढ़ाऊँ, इसी प्रकार सारा संसार भ्रमित है।

आत्तआद्रूक्ल्क लृ्द्र÷

गोंड, भोई और सौंर

डॉ. सुधीर तिवारी

फूलों खों मचल गई रे रानी भानमति
साराई सुबना दो हते रे रहें पींजरा वास
ऊपर पखोरन पींजरा नेचे सेज सजाव,
साराई सुबना से कहें तोरी खुनखुन मांग बसाय,
सारी रात बातें सुनी भुनसरिया मार गई रार
काहे खो माँग बसाय ओ जनम में मानस हते
पंछी लयें ओतार होनी की कोन विचारे
ओ जनम में खोंबें नौ फुला मोरी ओई में मोव बसाय,
बोले रानी जा कहें मोरे जियरा बड़ें उदास
बोलो राजा जा कहे कैसे मनहीन काय चिता ने घेरों
रानी राजा से कहें सुन लो राजा बात,
कैं तो मांगा दे नौ फुला न तर पलकों तजों पिरान,
सत फुल आपने बाग में अठ फुल हाट बिकाय,
बोले माली जा कहें नौ फुल राजा बिराट के उते मरन खों जाय,
बोले माली जा कहे सुन ले राजा बात,
खरचा दे-दे मोरी मतारी लेन मरन हम जाय,
फूलों खों मचल रई रे रानी भानमति।

स्रोत-गंगाबाई एवं साथी, ग्राम-झिरिया

रानी भानुमति एक ऐतिहासिक पात्र है, जो लोककंठ में आज भी सजीव है। बुन्देलखण्ड में निवासरत जनजातियों और अन्य समुदायों द्वारा गायीं जाने वाली फागों में जिक्र आया है। रानी अपने शयन कक्ष में लेटी हैं, वहीं पर सारस तोता का पिंजरा टँगा है। अर्द्धरात्रि में सारस-तोता आपस में बात करते हैं कि तुमसे मन को मोहित करने वाली सुगंध क्यों आती है? इसका राज

बताइए। सारस कहता है कि उस जन्म में मनुष्य देहधारी था, मेरे पास दुर्लभ नौ फूल थे, उसी की महक इस जन्म में मेरे शरीर से आती है। उसी के कारण मेरी मृत्यु हुई थी, क्योंकि वे फूल राजा विराट के पास हैं। यह सारी बात रानी सुन रही थी। प्रातः होते ही उसने राजा को संदेश पहुँचाया कि रानी बड़ी उदास एवं चिंता में डूबी है। राजा तुरंत रानी के निवास पर आता है और पूछता है कि प्रिय क्यों उदास हो? रानी रात वाली सारी बात बताती है कि मुझे वो दुर्लभ नौ फूल चाहिए, नहीं तो प्राण दे दूँगी। राजा प्रिय को समझाकर दरबार में आता है। माली को दरबार में बुलवाकर, राजा विराट के यहाँ से नौ फूल लाने की शर्त रखी जाती है। माली कहता है कि महाराज दुर्लभ महक वाले फूलों को लाना मौत को दावत देने के समान है। महाराज से प्रार्थना है कि मेरे परिवार को पालने की जवाबदारी ली जाए तथा अनाज घर पहुँचा दिया जाए।

श्याम बने मनहारी ब्रज में
सो मारी भर पिचकारी
बिंद्रावन की कुंज गली में
डोलत फिरे बिहारी
उस को हे इन महलन को मालक
सो चुरिया पेरों हमारी ब्रज में,
ऊँचे अटा चढ़ टेरें राधिका
इते आओं मनहारी
उर ऐसी चुटिया हमें परादें
सो लगों श्याम खो प्यारी ब्रज में
बाँय पकर पैरा उन लागे
लाल हरी री पीरी
उर घूंघट के पट खोलें राधिका,
सो छब निरखें गिरधारी
चुरिया पेरी मन मुसकानी,
उर चंद्र सकि मोहन की लीला
सो दुखिया शरम तुमारी ब्रज में

स्रोत–ग्राम–झिरिया

वृंदावन की गलियों में श्याम मनहारी का भेष धारण किये हैं और गलियों में टेर लगा रहे हैं कि मेरी चूड़ियाँ पहनों एवं जहाँ मौका मिलता है– रंगों से भरी पिचकारी मारते हैं। इस महल का मालिक कौन है? आवाज लगाते हैं कि चूड़ियाँ पहिन लो। महल की छत से राधिका प्यारी आवाज देती हैं, कि हे मनहारी! यहाँ आओ, लाल–हरी–पीली चूड़ियाँ पहिना दो, जो मेरे मनमोहन श्याम को प्यारी लगे, ऐसी चूड़ी पहिनाना। छलिया श्याम बाँह पकड़कर रंग–बिरंगी चूड़ियाँ कलाई में सजा रहे हैं। राधिका घूँघट की ओट से बार–बार गिरधारी को देखती हैं। मन

ही मन मुस्कराया तो प्रभु की छवि बार-बार देखती हैं। चंद्रसखि मनमोहन छलिया की लीलाओं का बड़े ही अद्‌भुत ढंग से वर्णन करते हैं।

परे होय हैरानी विपदा
छोड़ गये रजधानी राजा
पेली विपदा हरिश्चंद पे
बिक गय तीनों प्रानी
नित उत एक टका लेत है मरघट
सो भरे डोम घर पानी
दूजी विपदा रामचंद्र पे
सीता भई बिरानी
सक्तिवान लगे लछमन खों
सो रो रये अंतरध्यानी, विपदा.....
तीजी विपदा पांच पंडवा
हार गये रजधानी
उर हस्तनापुर की बैठ हारे
सो चीर द्रोपती रानी, विपदा.....
चौथी विपदा राजा नल पे
सो निकर गये दोऊ प्रानी
मांगे दान मिले नई राजा
सो भोग रही रानी विपदा

स्रोत-ग्राम-झिरिया

प्रस्तुत फाग में विपत्तियों के बारे में कुछ उदाहरण दिए गए हैं। जब राजा हरिश्चंद्र को विपत्तियों ने आ घेरा था, तो अपने पुत्र-पत्नी और स्वयं को बाजार में गुलाम के रूप में बेच दिया था। खुद को चाण्डाल के हाथों बेचा, श्मशान घाट में मुर्दा जलाने का काम करते थे और उसी के घर का पानी भरते थे। दूसरी विपत्ति भगवान रामचंद्र पर पड़ी थी, जिनकी पत्नी सीता का हरण हो गया था, अनुज लक्ष्मणजी को शक्ति लगी थी। इतने अपार दुख के कारण प्रभु राम विलख-विलख कर रो रहे हैं। तीसरी विपत्ति महाभारत के पाण्डव पर पड़ी थी, जो चौपड़ में अपनी राजधानी एवं हस्तिनापुर दरबार की बैठक हार गए थे, जिसमें उनकी पत्नी द्रोपदी का चीरहरण हुआ और वे कुछ नहीं कर सके। पाँचों पाण्डव महारथी एवं महाबली थे, लेकिन आँखों के सामने चीरहरण होता रहा, कुछ न कर सके। चौथी विपत्ति राजा नल पर पड़ी थी, जो अपना सारा राजपाट छोड़ भीख माँगते थे और उन्हें भीख नहीं मिलती थी। सत्य की राह पर चलना बहुत टेढ़ीखीर है, इसका उदाहरण सामने है।

अरि ऐ सकि जा बेंदी तुमारे माँथे
देती अजब बहार, सकि जा बेंदी तुमारे माँथे की।
देती अजब बहार, लगे प्रानन से प्यारी
कानन में कनफूल झुमका भारी,
बेंदी भोंहन बीच में सुरमा दोऊ नैन
नाक नथुनिया देख के जीरा में कें परे न चैन
बेंदी.....
जीरा में परे न चैन दबाये मुख में बीरा
झुटिया पहने गले बिचोली पैरो प्यारी
बाहें में बाजूबंदे ककना गुच्छादार,
बांगरी चंदोली हाथ में लच्छा है नगीनादार
लच्छा गुच्छादार सकि जा बेंदी .....
लच्छा नगीनादार, बदन पर मोहनमाला
चोली कसे विसाल कमर करधुनिया नोनी,
धोती पेरें रेसमी चमक किनारीदार,
पाँवन में टोड़ल कसे बिछिया की छनकार
सकि तुमारे माथे.....

स्रोत-ग्राम-झिरिया

प्रस्तुत फाग में स्त्री के शृँगार का वर्णन किया गया है। एक-दूसरी के शृँगार अलंकारों की शोभा का बखान करती हुई कहती हैं कि तुम्हारे माथे पर बेंदी बहुत ही सुन्दर लग रही है। तुमसे प्यारी तुम्हारी बेंदी अच्छी लग रही है। कानों में बड़े-बड़े झुमके तथा नैनों में सुरमा, नाक में नथ देखकर मेरा हृदय मचल रहा है। मुख में पान, गले में हार, बाहों में बाजूबंद, कलाई में गुच्छा दार कंगन, चंदोली की बंगरी, पैर में नग वाले लच्छा (बुंदेली आभूषणों के नाम) अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। बदन पर मोहन माला, कसी हुई चोली पहने हुए कमर में करधोनी और चमकीली किनारी वाली रेशमी साड़ी पहने हुए है। पैरों में टोडल तथा बिछिया की अजब झनकार पैदा हो रही है।

घलवाले पिचकिया धीरे से
गोरी भागो ने दूर तुम धीरे से,
अरे इते उते गोरी ने भागों
लाल हरीरों रंग तो पें डारों
केसरिया री उर पीरे से
घलवाले पिचकिया धीरे से
लाल हरीरो रंग अबने डारो

गोरो बदन मोरों पर जेहे कारों
अरे छोड़े ने आज दिन डारे से।
गोरी भागो न दूर तुम धीरे से
घलवाले .....
अरे लर हें ननद बहाने से
लय हे ननदी बहाने से
सास ननद को डर ने मानों
अरे डार हें ने आज बहाने,
अरे छोड़े ने आज बहाने।
फागुन कैसी हे फाग प्यारी
मारो तोखों जात पिचारी
अरी बच हो ने आज बहाने से

स्रोत-ग्राम-झिरिया

ननद बहाने से होली खेलने गई है। प्रेमी कहता है कि प्रिय दूर क्यों जा रही हो? मैं धीरे और प्यार से पिचकारी से रंग डालूँगा। लाल-हरा-पीला रंग तुम्हारे ऊपर डालने के लिये ही तो लाया हूँ। नायिका कहती है कि अब रंग मत डालो, नहीं तो मेरा गोरा बदन काला पड़ जाएगा। मुझे लगता है, तुम रंग डाले बगैर नहीं मानोगे। मेरी सास-ननद मुझसे लड़ेंगी, मुझे बहुत डर लग रहा है। नायक कहता है कि डरो नहीं, फागुन के महीने में होली की धूम है, इसलिये डरो नहीं। तुम कितने भी बहाने करो, रंग डलवाना ही पड़ेगा।

अरि ऐ बिरज में बांदे मुकुट खेलें होरी
बलदऊ कृष्ण मुरार ब्रज में।
बांदे मुकुट .....
सकियें संग हजार, फाग खेलें नंदलाला,
होरी-होरी हो रई के होरी घूमत अपार
बिन्द्रावन के बीच में खेलत हैं नंदलाल,
बांदे मुकुट .....
खेलत हैं नंदलाल राधा संगे बिहारी
गुआल बाल है संगे नरनारी,
ललता रुकमन राधिका, सकियाँ संग हजार,
भर पिचकारी मारिये, हो रई लाल गुलाल,
बिरज में .....
हो रई लाल गुलाल चुनरिया मोरी भीजें
सराबोर सब हो गई सकिया सारी

बिन्द्रावन की खोरन में कीच मची घनघोर,
दँय मुरली की घोर, ब्रज में बांदे .....

भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम दोनों भाई सिर पर मुकुट धारण किए ब्रज में हजारों ब्रज बालाओं के साथ होली खेल रहे हैं। ऐसी होली हो रही है, जिसका वर्णन भी नहीं किया जा सकता। छलिया श्याम अपने सखा ग्वाल-बालों के साथ एवं पत्नी रुक्मणी, ललिता तथा प्यारी राधा के साथ होली खेल रहे हैं। सखियाँ भर-भर कर पिचकारी से रंग डाल रही हैं। वृंदावन की गलियाँ रंगों में रंग गई है। प्रभु ने ब्रज बालाओं की चुनरियाँ रंग दी हैं। ऐसी होली हो रही है कि गलियों में कीचड़ मच गया है, पिचकारियों से रंगों की बारिश हो रही हो।

अरि ऐ कंठ मैं आन बिराजो जगदम्बा
ऐ फिर बिगर विनासन हार कंठ में आन
बिगर विनासन हार आप जग की महारानी
बिद्या कर में जोत जले अखण्ड
नास करन कंस कोलिये ब्रज में ओतार
उर मारे गर के नाय से गोकल खों कीनो पार
कंठ में आन .....
गोकल खों कीनो पार अजय बन पालनहारी,
लय खापर तिरसूल, निसार मारन हारी
तिरेता में जब आयके रूप करो बिस्तार,
अद्‌भुत राउन खों हनो जब भेमा ने करतार
भेमा ने करतार भुवानी कंठ विरौजो
कर जिभ्या में बास बिजरी को माजो
निश दिन भजन भरों रहे, उर हिरदे में देव गियान,
कड़ी सुद्द कर जोरियो, आवे ने हमखों हार
कंठ में .....

स्रोत-ग्राम-झिरिया

हे जगत की महारानी आदिशक्ति बिगड़े कार्य बनाने वाली माँ! मेरे कंठ में आकर वास करो, ताकि मेरे गाना गाने के दौरान कोई त्रुटि न हो। आपकी अखण्ड ज्योति कई युगों से निरन्तर प्रज्ज्वलित है। आपने महाबलशाली दुष्ट कंस का नाश करने के लिये ब्रज में अवतार लिया। आपने दुष्ट अत्याचारियों से गोकुल वासियों के जीवन की रक्षा की। आपके पास त्रिशूल रूपी अस्त्र तथा हाथ में खप्पर है। आपने महाकाली का रूप धारण किया। त्रेतायुग में आपने अपनी शक्ति का विस्तार किया। राक्षस राज रावण का वध किया तथा निशाचरों का संहार किया। अत: आपने असत्य पर सत्य की विजय करवाई। आपका भजन करने से प्राणी मात्र को सद्‌ज्ञान की प्राप्ति होती है।

काही ने मोरें बालमा, समझावे सुन्दर नार
सुनो पत अरज हमारी, समर के लने सवार
कहाँ की करो तैयारी, कही हमारी मान ले
तजो आग को संग, कै राजा कनवज रहो
नातर चलें तुमारे संग, बिकल भई राजदुलारी
तुम जाओ परदेस उमर है मोरी बारी
तेल की फारिया ने फट, छूटे ने हरद के दाग
आसा बिरह ने लगे, जे जरे हमारे भाग
जरे हमारे भाग, लिखीगत करमन की
ऐसे में छोड़ आप जाते हो रन खों
पिया-पिया पपीहा रटे लागे वचन कठोर
मोय चैन कैसे परे वन में कुहक रई मोर
वन में कुहके मोर, कहे कुसमा सुकमारी
कैसे कट है रेन पिया कारी इंदयारी
महिलों भोजन रूचे जेवलेव जिवनार
सेजों पे आराम है पान मसालेदार।

स्रोत-ग्राम-झिरिया

प्रस्तुत प्रसंग बुंदेलखण्ड में प्रचलित आल्हा काव्य से लिया गया है। ऊदल के मित्र लाखन राणा की नवविवाहिता अपने पति को समर में जाने से रोकती है। राणा के लिए दूसरी तरफ ऊदल की मित्रता भी महत्त्वपूर्ण है। पहले वीर योद्धा वचन के पक्के होते थे। लाखन की नवविवाहिता उनको संग्राम में जाने से रोकते हुए कहती है कि हे प्रिय! मेरा अभी गौना होकर आया, आप परदेश जा रहे हैं। आप मेरे खातिर ऊदल का साथ छोड़ दो। आप साथ न जाएँ या तो कनवज के राजा रहें, नहीं तो मैं आपके साथ चलूँगी। मैं आपके बिना नहीं रह सकती। अभी मेरी उम्र ही क्या है। अभी शादी को कितने दिन हुए हैं। मेरे वस्त्रों से हल्दी भी नहीं छूटी है। शादी के दौरान जो चुनरी ओढ़ी थी, वह तेल वाली चुनरी भी तार-तार नहीं हुई है। मेरे ऊपर आपको बिल्कुल दया नहीं आती। आप इतने निष्ठुर होंगे कि मुझे वियोग सहन करना ही मेरी किस्मत में लिखा है।

ऋतु भी ऐसी है कि पपीहा की रट मेरे हृदय में हूक सी पैदा करेगी। ये मोर मुझे जीने नहीं देंगे। मुझे अकेला छोड़ के परदेश मत जाइए। उस पर इस अंधियारी रात्रि में मेरा क्या हाल होगा। यह सुन्दर सेज काल के समान प्रतीत होगी। आपकी सुकुमार सुन्दरी ने अपने हाथों से भोजन तैयार किए हैं, एवं मसालेदार पान का बीड़ा तैयार किया है। आप भोजन करके विश्राम कीजिए। समर में जाने का कार्यक्रम बदल दीजिए।

मोरी बिगरी सुदर गई काय राधे
कोसम की पतरी अहिल्या है
वे तो पत्थर हो गईं काय राधे
राम के भइया लछमन हैं काय राधे
अपनी धोके से लग गई काय राधे
सोने की लंका रावण की काय राधे
धोके से बर गई काय राधे
रावण की बहिना सूपनखा काय राधे
नाक धोके से कट गई काय राधे
राम की पत्नी सीता हैं काय राधे
हरण धोके से होगय काय राधे
मेघनंद की पत्नी सुलोचना है काय राधे
भुजा धोके से होगय काय राधे

स्रोत–ग्राम–झिरिया

प्रस्तुत फाग में नायक कहता है कि मेरी बिगड़ी हुई हालात सुधर गई है। क्यों राधे! बताओ? क्या अहिल्या श्राप बस पत्थर की हो गई थी? स्वयंवर सीता का था, लेकिन लक्ष्मण जी का विवाह क्या धोखे से हो गया? रावण की सोने की लंका थी, क्या वह भी धोखे से जल गई? क्या रावण की बहन सूर्पणखा की नाक भी धोखे से कटी? क्या सीता जी का अपहरण धोखा था? मेघनाद की पत्नी सुलोचना के आँगन में भुजा क्या धोखे से गिरी थी? नहीं, क्योंकि अहंकार, धोखा एवं असत्य पर सत्य की विजय होती है।

अरे रंग डारी गिरधारी रे रंग पे लाल
ऐसी मारी भर पिचकारी।
मारी भर पिचकारी रंग पे रंग डारी गिरधारी मारी पिचकारी
गाल के ऊपर सोर बोर भई सारी
भागी भौं भुमावत, कर हाँ रन बन की भई सारी
भर–भर के पिचकारी, मारी रंग गय अटा अटारी
ओर ईसुर कहत नंद के दोरें लला लाज टो डारी
रंग पे गिरधारी

स्रोत–ग्राम–झिरिया

प्रभु श्री कृष्ण सारी ब्रज बालाओं के साथ होली खेल रहे हैं और एक–एक ब्रज बाला को रंगों से सराबोर कर दिया है। उनके सारे वस्त्र रंगों से भिगो दिए हैं। प्रभु ने रंग से भरकर पिचकारी पहले गालों पर मारी, जिससे साड़ी भीग गई है। वृंदावन के बड़े–बड़े महल रंगों से

भीग गए है। नंदबाबा के दरवाजे पर रंगों की बारिश हो रही है। लोक लाज से सब आज के दिन मुक्त रहते हैं।

कर दई निंदिया खराब, बजा-बजा के बांसुरिया
अरे हां कनैया रे काहे की जा बांसुरिया
अरे हां रे कनैया हां रे बांस की बांसुरिया
अरे रेशम की लागी डोर कनैया बांसुरिया
अरे हां रे कनैया के सुर बाजे-बांसुरिया
अरे के सुर बाजे बीन कनैया बाज के
अरे हां कनैया नौ सुर बाजे बांसुरिया
दस सुर बाजे बीन कनैया बाजा के
अरे हां रे कैसे टूटी बांसुरिया
अरे कैसे टूटी डोर कनैया बाज बिहंस के
अरे हां रे बाजत टूटी बांसुरिया
अरे खेंचत टूटी डोर कनैया बाजा बजाके

स्रोत-ग्राम-झिरिया

प्रभु श्रीकृष्ण ने आधी रात में बाँसुरी बजा-बजाकर ब्रज बालाओं की नींद हराम कर दी है। प्रभु की बाँसुरी हरे बाँस की बनी हुई है, उसमें रेशम की डोरी लगी हुई है। प्रभु की बाँसुरी और बीन में कितने-कितने स्वर बजते हैं? प्रभु कहते हैं कि बाँसुरी में नौ स्वर बजते हैं तथा बीन में दस स्वर। आपकी बाँसुरी कैसे टूट गई और डोरी कैसी टूट गई है? वे बताते हैं कि बजाते समय बाँसुरी टूट गई है और खींचने में डोरी टूट गई है।

आला चलो फाग समर करवे, बिरमा के रचो ब्याह
लगुन मैं लिखीं लराई रकत के बूँदा डार खून की करों स्याही
सात लड़ाई भारत लिखीं, हुकम काज तरवार सुनतउँ नाहीं
करी खों मरबे खों जाय आला चलो फाग समर करवे
हार आला ने खाई जे भारत के काज भोत बच है बचाई
ऐसे करमों में आगी लगे, हमखों नहीं पुसायँ
जितने जेहे ब्याह सबरे मारे जाय
कहें उदल से भाई सुन दादा बलधार
हार बिरमा खाई उड़ी कुनाबे देस मैं
मुलकों हुई बदनाम बड़े लड़इया महोबे बारे
राजा खों गये डराय-आला चलो फाग समर करवे
लोग करते हांसी हमसे सुनी ने जाय, लगी हिरदे में

गासी सब पांव पुजे हैं, विरथी राजे से बैला के ब्याहे
चीर पांच सूर के लड़बे खों उपजों मुलक में बीर
आला चलो फाग समर करवे, बिरमा के रचो ब्याह

स्रोत–ग्राम–धवई

प्रस्तुत फाग में बताया गया है कि पृथ्वीराज चौहान की पुत्री ब्रह्मा का विवाह रचाने के लिये समर फाग करने दिल्ली गये। लाव–लश्कर के साथ जाने को तैयार है। लगुन में लड़ाई लिखी है, इस प्रकार खून की धारा बहेगी। रक्त से कलम की स्याही बनाई। आल्हा तलवार की दम पर सात युद्ध को जीत चुका। तलवार किसी का हुक्म नहीं सुनती। आल्हा फाग समर करने को चला। आल्हा ने हार कभी मानी नहीं। आल्हा पृथ्वीराज चौहान से बैर ठान रहा है, जो दिल्ली का सुल्तान है। लड़ने जो जाएगा एक भी जिंदा वापस नहीं आएगा। ऊदल सुनो! दादा बलधारी अगर हार गए, तो देश में बहुत बदनामी होगी। देशों–देशों में बदनामी होगी कि महोबा वाले लड़ने में बहुत माहिर थे, फिर क्यों जबरदस्ती युद्ध लेने की ठान ली। आल्हा को सब मिलकर भयभीत कर रहे हैं, जिससे कि वह अपना फैसला बदल दें। लेकिन आल्हा किसी की नहीं मान रहा है। लोग महोबे वालों पर हँसेगे, जो मेरे हृदय में बाण के समान बातें चुभेंगी। पृथ्वीराज चौहान का सब लोहा मानते हैं। आल्हा को ताव आ जाता है। वह कहता है कि पाँच सूरवीर योद्धा लड़ने को ही पैदा हुए हैं। पृथ्वीराज की पुत्री का विवाह रचा कर लौटूँगा। आल्हा ब्याह के समर फाग का ऐलान करता है और फौज को कूच करने का हुक्म सुनाता है।

कोऊ गुदना गुदालो सकारे से
देखो गुंइयां बुला रई इसारे से
सांवरी सलोनी सुकोमल कुमारी
सर से सिरक रई सिलकन की सारी
बूंदा नोनो दमक रओं लिलार से
कोना गांव से आई गुजरिया
कोउ बड़ी–बूड़ी संगे काय नैयां
को है आई जमुना किनारे से
राधा कहें छोड़ो ललता से बातें
गुदना बना तोखों कैसे हैं भाय
कहें ललता तो सुन लो परिवार रे
गुदना तो बस मोखों भला सुहाय
झूले पे राधा खों काना झुलायें
कोउ गुदना गुदा लो सकारे से

गुदना निरालो गोदो गुदनारी
राधा ने मोहन की सूरत निहारी
कोना हो सांची कह दो इसारे से

स्रोत–ग्राम–झिरिया

श्याम गुदनारी बनकर ब्रज की गलियों में घूम रहे हैं। आवाज दे रहे हैं कि जल्दी–जल्दी गुदना गुदवा लो, नहीं तो शाम हो जाएगी। सखियाँ इशारे से बुला रही हैं– ऐ गुदना गोदने वाली! यहाँ आओ। सखियाँ पूछती हैं कि गुदनारी! तू कौन से गाँव की गुजरिया है? तेरे साथ और कोई नहीं हैं। श्याम कहते हैं कि मैं जमुना के पास वाले गाँव से आई हूँ। तभी प्यारी राधा ललिता से बोली– बातें बाद में करना, मुझे गुदना गुदवाना है। श्याम पूछते हैं कि आप को क्या गुदवाना है। ललिता कहती हैं कि मुझे झूला वाला गुदना, जिसमें राधा को श्याम झुला रहे हों, ऐसा गुदना गुदवाना है। श्याम मन ही मन मुस्करा रहे हैं और उनकी बातों का मजा ले रहे हैं। गुदनारी अच्छे निराले गुदना गोदो, जो मेरे मोहन को अच्छे लगें। राधा ने ज्यों ही गुदनारी की सूरत गौर से देखी, तो इशारे से बोली सही–सही बताओ तुम कौन हो।

हरे गांजो ने पियो मोरे बालमा
गांजे की छोड़ दे चाल बालमा
गांजो ने पियो मोर बालमा
गांजो पी लव, आँजो पीलव हो गये अदाधुंध
अरे घर के जाने मर गये मोरे जीरा बड़े आनंद
कच्ची कली कचनार की पानी को पुट लेय
कोरी चिलम कुमार की फिर हुबक–हुबक दम देय
टोर बामूर की पत्ती ओर धरी बिलिया में
ओंट आँट धर दई, चुटकी से टोर दई टान
लागत मर गई भंसिया, थालत मर गई गाय
भर बसकारें घर टूटो, साती में धक्का आय

स्रोत–ग्राम–झिरिया

पत्नी अपने पति से कहती है कि प्रियतम गाँजा (नशीला पदार्थ) पीना छोड़ दो। इसकी आदत एक बार लग जाती है तो छूटती नहीं है। गाँजा पीने के बाद मनुष्य नशे में धुत्त हो जाते हैं, उन्हें अपने तन बदन का होश नहीं रहता। गाँजे पीने वाले गाँजे को अदखिली कचनार के पुष्प की उपमा देते हैं। उसको तोड़कर हथेली पर पानी डाल–डाल कर मलते हैं, तब कहीं गाँजा पीने योग्य होता है। उसकी गोली बनाकर मिट्टी की चिलम (जिसमें गाँजा पिया जाता है) कुम्हार के यहाँ से लेकर गाँजा की गोली को रखते हैं, उसमें अंगार रखकर फिर उसको दम मारते हैं। दम

मारते समय चिलम के अग्र भाग से आग के भभका निकलते हैं, जो देखने में अच्छे लगते हैं। इसकी लत आदमी को और परिवार को बरबाद कर देती है। नौबत यहाँ तक आ जाती है कि घर-परिवार पर ध्यान न देने से मिटता ही चला जाता है। जब गाँजे की व्यवस्था नहीं होती तो उसके बदले में बमूरा की पत्तियाँ तोड़कर पानी में भिगोकर उसकी गोली बनाकर पीते हैं। गाँजा पीने वाले के परिवार को दूध देती हुई भैंस मर गई और गर्भ धारण किये गाय भी मर गई। भारी बारिश से घर की दीवारें गिर गयीं, इतनी विपत्ति जब एक साथ आई तब जाकर हृदय पर चोट पहुँची।

आज हम आपने मन की कर लैहें
बरया के मिले दाव आज हम
काय रे छलिया, कनैया तुम घुस गये दई खावे के लाने
भाग कहां को भाग, तेरे तुमें देखे लऊँ आज
माखन चोरी करत में तोय ने आई लाज
तोय ने आयी लाज, काय रे छलिया
तुम घुस गये दई खावे के लाने
कठन मवासो आज, हम अपने मन की कर लैहें।

स्रोत-ग्राम-झिरिया

ब्रज की ग्वालिन कह रही है कि श्याम! आज हम अपने मन की करेंगे। बहुत दिनों में रंगे हाथों तुम पकड़े गये हो। आज क्यों रे कन्हैया! धोखे से छलने वाले आप दही खाने के लिये चोरी-चोरी हमारे घर में घुस आये हो, आज तुमको नहीं छोड़ूँगी। आज आप भागकर कहीं नहीं जा पाओगे। आज अच्छी तरह से तुम्हारी खबर लूँगी। क्यों रे नटखट छलिया! माखन चुराते समय तुझे जरा सी भी शर्म नहीं आयी। आज आप बच के नहीं जा पायेंगे, आज हम अपने मन की करेंगे।

मुरलिया बाजे प्यारे मोहन की
जमना के पेले पार, मुरलिया
मोहन के पेले पार, कदम पे चड़े मुरारी
उर राधा-राधा टेर रही है बन्सी प्यारी,
जब राधा ने सुन लई, पलभर परे ने चैन,
परी अकेली सेज पे, लगे सियाम से नैन
कहो अब केंसो करिये, श्याम बजा गये बीन
चलो जमना लों चलिये, जुर मिल सकिया आ गई

पोंची जमना नीर, सूरत देखी श्याम की
जे मोहत भये, सरीर मुरलिया बाजे प्यारे
कहे बिरज बाला, गउयें बैठीं घेर
उतईं बैठे नंदलाला रिसी बैठ हते पा रहे ते गियान।
विरमा भूले, वेद में शंकर ने छोड़ दय ध्यान।

स्रोत–ग्राम–झिरिया

श्याम जमुना के किनारे कदम वृक्ष की डाल पर मुरली बजाने में बहुत मस्त थे। कदम वृक्ष के नीचे गायें–बछड़े मुरली की धुन में मस्त हैं। मुरली प्यारी राधा–राधा बुला रही है। ज्यों ही राधा प्यारी ने मुरली की धुन सुनी तो प्यारे मोहन से मिलने के लिये दिल तड़पने लगा। राधा सेज पर पड़ी–पड़ी तड़प रही थी, श्याम से कब आँखें दो–चार होंगी। इतने में सखियाँ आ गईं। राधा को साथ लेकर जमुना किनारे कब पहुँच गई, पता ही नहीं चला। ज्यों ही प्यारे श्याम की सूरत देखी तो ऐसी भाव विह्वल हो गई कि तन–बदन का होश ही नहीं रहा।

ब्रजबाला कह रही है कि देखो चारों तरफ गायें घेर कर बैठी हैं। बीच में श्याम मुरली बजा रहे हैं। वहीं साधु–संन्यासी भी बैठे हैं, वे भी कृष्ण की बाँसुरी में खो गये हैं। भगवान ब्रह्मा भी अपना कार्य भूल गये हैं। भगवान महादेव शिवशंकर की मुरली की धुन–सुनकर तो समाधि ही टूट गई। कृष्ण की मुरली की धुन ने सभी को मोहित कर रखा है।

जल में तुमरिया डुबई ने पाई,
धोखे से दसरथ ने मार दय बान
आय हैं सरमन के कड़ गय प्रान,
राम–राम कैकैं धरन गिर गय सरमन,
पानी बिन अंधों की बच हे ने जान,
को नई आवाज, परी राजा के,
भक्तों की हस्ती बिगर गई,
लेके तुमरिया चले राजा दसरथ,
हम से हो गये घातक महान,
बेटा तुमारे नई रय जगत,
अब थोड़ो सो कर लेव जलपान,
दे दैई सराप कठिन राजा खों
अंधा उर अंधी के कड़ गय प्रान,
कोना आवाज परी राजा के
हाथों गिर गय धनुस उर बान,

स्रोत–ग्राम–झिरिया

भक्त श्रवण कुमार के अंत समय की फाग है। श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता को तीर्थ यात्रा के लिये काँवर में बैठाकर ले जा रहे थे। घने जंगलों के बीच में माता-पिता की प्यास के मारे जान निकल रही है। श्रवण कुमार का भी प्यास से कंठ सूखा जा रहा है। श्रवण कुमार ने तुमरिया उठाई और पानी की तलाश में दूर निकल गये। ज्यों ही पानी भरने के लिये नदी में तुमरिया डाली तो उससे जो आवाज हुई, उससे महाराज दशरथ ने शब्द भेदी बाण मार दिया। यह सोचकर मार दिया कि शेर पानी के लिये आया है। मनुष्य की कराह सुनकर राजा घबरा गये कि बड़ा अनर्थ हुआ। राजा दौड़े-दौड़े श्रवण कुमार के पास पहुँचे, तो राम-राम का नाम लेकर पृथ्वी पर गिर पड़े। राजा ने श्रवण कुमार का सिर गोद में रखकर हाल पूछा, तो वे कहने लगे कि मेरे माता-पिता आँखों से अंधे हैं, उनको कौन तीर्थ यात्रा करवायेगा? उनकी जान तो वैसे ही निकल जायेगी। आप तुमरिया में जल भरकर मेरे माता-पिता की प्यास बुझा दो और उनके प्राण निकल गये। राजा पानी की तुमरिया लेकर अंधे माता-पिता के पास जाकर खड़े हो गये। बड़े प्रयत्न के बाद राजा बोले- बाबा पानी लीजिये। ज्यों ही आवाज सुनी, बोले- आप कौन हैं? बेटा श्रवण कहाँ है? मेरा दिल घबरा रहा है। पहले आप जल ग्रहण करिये। वे नहीं माने। कड़ा दिल करके दशरथ बोले- मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है। शेर के धोखे में मैंने आपके पुत्र के प्राण हर लिये हैं। इतना सुनते ही माता-पिता ने विलाप करते हुये राजा को श्राप दे डाला कि जैसे मैं अपने पुत्र वियोग में तड़पा हूँ। राजन! आपके भी पुत्र वियोग में प्राण जायेंगे और अंधे माता-पिता के प्राण निकल गये। जब राजा ने यह सब देखा तो उनके हाथ से धनुष और बाण छूट गये।

फाग सी खेले वीर सरसा बारे रंग रहे बदन में छाय
बिना नहीं पाये बलहारे घोड़ा पे असवार
हाथ लये नगन दुलारे, अस्सी लाख रन में धसें
जे सिरसा के सरदार, फाग सी खेले वीर सरसा बारे
फिरता है खोले सीना जिरना से जिर रहे अंग से।
खून पसीना, खूनो की नदियां बही,
पूड़ चड़े सम बल रितु बसंत सी हो गई,
फिर रंगये कुसुम सो फूल फाग सी
खून की छूटे पिचकें हाथी घोड़ा ऊँट लाल से
लख बिचके मलखे की घन घोर में नदियों पे हाल,
उड़-उड़ के बारूद लगे जैसे मानो असल गुलाल,
चमक रही सबके तय में गज मोतन कैं सास बहु।

स्रोत-श्री सरमन गोंड एवं साथी, ग्राम-झिरिया

घोड़े पर सवार वीर मलखान सिरसा के सरदार का पूरा शरीर रंग से लिपटा हुआ है, जिसके कारण वे पहचान में नहीं आ रहे हैं। हाथ में शस्त्र लिये अस्सी लाख फौज के साथ युद्ध

पर डटे हुये हैं। अपने मद में चूर सीना ताने हुये लड़ रहे हैं। अंगों से खून–पसीना नदी की धारा के समान बह रहा है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे नदी में अथाह पानी बह रहा हो। बसंत ऋतु आ गई हो। रंगे हुये योद्धा मानो ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, जैसे पूरी रणभूमि कुसुम रंग में रंग गयी हो। युद्ध दृश्य बड़ा भयानक प्रतीत हो रहा है। जिस तरह फाग में पिचकारी से रंग तेजी से गिरता है, उसी तरह योद्धा के शरीर से निकले खून से हाथी, घोड़ा, ऊँट लाल हो गये हैं। वीर मलखान लाखों की भीड़ में ऐसी मार काट मचा रहे हैं जैसे घनघोर बारिश से नदी में उफान आता है। तूफान की तरह बारूद के गोले फट रहे हैं, जिसका धुआँ चारों तरफ फैल रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो फाग के मौसम में गुलाल उड़ रही हो। बाकी योद्धा ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, जैसे गजमोतिन का हार धारण करने पर उसका प्रकाश चमकता है, उसी तरह खून से योद्धा के शरीर चमक रहे हैं।

सेर जंगल के राजा हो रहे, गरजे से गरब गिरजाय
सेन भयो दीवानी रिछला बड़ा मंत्री
खास कलम गुलबाघ बिगना बड़ा संत्री
जाल बाल चीतो बनो, विप्र सुना बड़े वकील
लुखरों भंडारन बनी फिर खुल गये सबके नसीब
खुल गये सबके भाग बहुत से बन बन बिलवा
बचों ने मूसा एक हिरन मुंसी जू
नौरा टोपदार, सेई रेडा मालगुजार,
लड़ई बकीली कर रई फिर गोपी थानेदार
गोपी थानेदार केसरिया करें अमीरी
बिच्छु किच्छु करें मुंसी गिरी
सिर गोचा सरपंच नाच गिलहरी कर रई
फिर सब बैठे सिरदार
सब बैठे सिरदार राम है कौन करैयाँ।
जीव जन्तु सब प्राण बचैयो
बारह सुगरा चीतरा सुरहन गउ तुरंग।
बलीराम कल के कहें फिर छोड़ो इनको संग।

स्रोत–ग्राम–झिरिया

प्रस्तुत फाग में जंगली जानवरों की हैसियत और महत्त्व के आधार पर उनको वर्गीकृत किया गया है। लोककवि बलिराम ने शेर को जंगल के राजा की पदवी दी। कैसे शेर की दहाड़ से गर्भधारण औरतों या जानवरों के गर्भ नष्ट हो जाते हैं। सेन राजा का दीवान है। रीछ बड़ा मंत्री है। राजा के खास बाघ बिगना चौकीदार हैं। चीता बहुत ही चालाक होता है। सुना जानवर वकालत कर रहे हैं। लुखरों गोदाम की प्रभारी, फिर क्या बात है, सबको खाने को मिलेगा। वन में रहने वाली बिल्ली के नसीब खुल गये। चूहे की तो बन गई है। हिरण मुंशी का कार्य करने लगे

हैं। नेवला दरोगा एवं सेई रेडा मालगुजार बन गये हैं। लड़ैया थानेदार हो गये हैं। बंदर जंगल के अमीर हो गये हैं। सिरगोचा सरपंच, गिलहरी नाच दिखायेगी। सब जंगल के सरदार बैठकर सभा कर रहे हैं। इन सबको सरदारों की पदवी मिल गई। जंगल के छोटे जीव-जंतुओं का तो राम ही रखवाला है। बलीराम कहते हैं कि बारहसिंघा, चीतल, सुरहन गाय इनका साथ छोड़ो।

हरे फल खाये बगीचा रावन के
हिरदे में सुमर भगवान।
दूत एक दोस्त आबे सुन राजा रनधीर बाग में।
बांदरा आये सुनत बचन, रावन हंसों टेरें अंकछकुमार
बै गयों जैसे लाड़रे, बंदरा खों डारो मार हरे
फल खबर लंका मैं कीनी मेघनंद बलवान बगीचों।
कोंचों जाई एढ़ रचो भात से रकत मास
भये कीच ब्रम्मफांस में फांस के लये सभा के बीच
नीच सम मारन धाये, कहे भीषण बात दूत मारो नई जावें
कप की ममता पूछ बह तक प्रेम बड़ाय,
तेल बोर पट बाद के पावक देव लगाय। हरे फल .....
सुमर सम्भू कीने हनुमान महाराज रूप छोटे धर लीनें।
कूद अटारी चढ़ गये लंका डारी जार
सपत कर कुमकरण की नार। हरे फल .....
राम की करें बड़ाई कूदें समम मजार
हिये की तपन बुझाई तुरत पवन सुत निक
चले आये राम दल फेर पहले भेंट अंगद भई
फिर दूजे श्री राम। हरे फल .....

स्रोत-ग्राम-झिरिया

रावण के दरबार में दौड़ता हुआ दूत आया- बोला महाराज! बागों में एक बंदर उधम मचा रहा है। पेड़ों की डालियाँ तोड़ रहा है। फलों को तोड़-तोड़ कर आधे खाता है, आधे फेंक देता है। बगीचे नष्ट कर उसने बहुत से सिपाहियों को मार डाला है। वह बहुत बलशाली वानर है। राम का नाम उच्चारण करता है। दूत के वचन सुनकर रावण ने अट्टहास किया। अपने प्यारे बेटे अंकछ कुमार को आदेश दिया कि उस वानर को मार डालो। अंकछ कुमार सिपाहियों के साथ बगीचे में जाकर बंदर को ललकारता है। वानरराज ने सभी सिपाहियों को मार-मार कर भगा दिया, और अंकछ कुमार का वध कर दिया है। खबर दरबार में पहुँचते ही मेघनाद को बगीचे में भेजा जाता है। मेघनाद हनुमान को ब्रह्म पाश में बाँधकर दरबार में लेकर आते हैं। इस नीच अधम वानर को मार दिया जाये, इतने में रावण का भाई बोलता है कि महाराज दूत को मारा नहीं जाता है। महाराज! वानर की ममता पूँछ पर होती है, इस कारण तेल में डालकर पूँछ में

आग लगा दी जाय। हनुमान ने प्रभु का स्मरण कर अपने शरीर को सूक्ष्म किया। उछल कूदकर पूरी लंका में आग लगा दी। शरीर की तपन बुझाने के लिये हनुमान जी समुद्र में कूद गये। अग्नि ज्वाला को शांति की। वापस लौटकर पहले अंगद से भेंट की फिर प्रभु राम के चरणों में शीश नवाया और सारा वृतांत कह सुनाया।

धूरा डारें पति की आँखों मैं सरमन की करकसा नार
सरमन की करकसा नार समज ले उसको धंधो
दौरी गई कुमार के जो चाहे मिल जाय
एक हंडी दो पेट की हमखों देओ बनाय
हमखों देव बनाय, खड़ी समझाने रंडी
बना दई चकवेत, बहू के दिल की हंडी
इनामें दै-दै डगरी हती, महलों पोची जाय
हंडी ले लई हाथ में, वा फूली नई समाय,
फूलीं नहीं समाय, हँसे बा अपने दिल में
ससुर सास मर जायं मजा जब बनहें मोरों
कपट की हंडी चढ़ गई, फुलकत भये सरीर,
सास ससुर खों महेरी, अपने लाने खीर,
अपने लाने खीर, रोज दूद भात बनावे,
सरमन सहज सुभाव, कपट ओखों ने जाने
एक दिना की बात कै, सरमन परसों धार
तातों देखो बाप खों, सो अपनो दओ सरकाय,
अपनो दओ सरकाय, पिताजी भोजन कीजे
बोले करकसा नार, धार अपनो न दीजो
भोजन करते समय, बाप खों बाड़ो प्रेम अपार,
सरमन बेटा खीर की, आजई उड़ी बहार,
आजई उड़ी बहार, पुत्र में सत्त बताये,
भौ दिना भये, महरों हम खों खातों
इतनी सुनके सरमन खों, बड़े भये अपसोस,
रोजउ घर में खीर बने, फिर कैसो अंधेर।
है कैसो अंधेर, उठाकें तुरत पिट्टों देखो
दुहरों पेट लखाय, बहू को करतब देखो
खुमान सिंह कथकैं कहें, चलो आपनो देस
अंधी अंधा काँवर में धर लय, सरमन चले विदेस,

स्रोत-श्री श्रवण कुमार, ग्राम-झिरिया

अपने पति को धोखे में रखे हुये भक्त श्रवण कुमार की खरी खोटी सुनाने वाली पत्नी का यह नित्य का कार्य था। श्रवण कुमार की पत्नी के दिमाग में एक घिनौनी युक्ति आई। वह जल्दी से कुम्हार के पास गई और बोली कि मुझे एक ऐसी हण्डी बनवाना है जो दिखने में एक सामान्य हण्डी जैसी लगे, लेकिन उसके अंदर दो हण्डी अलग-अलग हों। अत: कुम्हार ने एक हण्डी को अंदर से दो भागों में विभक्त करके बना दिया। कुम्हार को उचित इनाम देकर खुशी-खुशी चालाक औरत महल को आती है। अपनी होशियारी पर उसे गर्व है। खुशी से फूली नहीं समा रही है। सोचती है कि यदि सास-ससुर का स्वर्गवास हो जाय, तभी हमारा काम बन पायेगा। नाना तरह से विचार उसके मन में आते हैं। उसने छल की हण्डी पर खाना बनाना शुरू कर दिया। सास-ससुर जो आँखों से अंधे थे, उनके लिये महेरी (एक प्रकार का व्यंजन) और अपने तथा स्वामी के लिये खीर और दूध भात। श्रवण कुमार उसके छल को नहीं पहिचानते थे, वह तो यही समझते थे कि मेरे माता-पिता को भी खीर ही खिलाती है। होनी एक दिन सामने हो जाती है।

एक दिन की बात है कि श्रवण कुमार को खीर परोसी। श्रवण कुमार ने अपनी थाली सरकाकर उनकी थाली खुद ने ले ली और कहा- पिताजी आप भोजन करिये। चालाक औरत बोली- स्वामी! अपनी थाली मत दीजिये। भोजन करते समय बड़ा प्यार उमड़ रहा है कि आज स्वादिष्ट भोजन बना हैं, तबीयत प्रसन्न हो गई। इतने दिनों से महेरी खाते रहे थे। इतना सुनकर श्रवण कुमार को बहुत अफसोस हुआ कि रोज ही तो घर में खीर बनती है, यह कैसी अपरम्पार लीला है। एक ही हण्डी में से सामने सभी को खिलाती है। दिल में शंका हुई और हण्डी को अंदर से देखा तो देखते ही सनाका खा गया। एक ही हण्डी दो भागों में विभक्त है, इतना बड़ा अनर्थ।

लोककवि कहते हैं कि मन में आत्म ग्लानि से भरे श्रवण ने सोचा- यह तो माता-पिता के साथ अनर्थ कर रही है। यह अंधा-अंधी की लाचारी का अनुचित लाभ उठा रही है। श्रवण कुमार दोनों माता-पिता को काँवर में बिठाकर तीर्थयात्रा को निकल पड़े।

खबर कर लैइयो आर बाहे दिन की,
द्वारे में अड़े जमराज
दुआरे में अड़े जमराज, नीर नैनों से बहते,
मुख बोलत नहीं बने, बात सेनों में करते,
मात पिता भइया बहिन घेरे बैठे लोग,
पता किसी को ने चले, जे कहो निकर गय,
काटो निकर गय प्रान, परी रई माया सारी,
लोग कुटम परवार गई ने ढग भर वारी,
जे काया के संग मेकै हंसा करे बिलाप,

बाई संगे ने गई, सो का दुनिया की आह,
का दुनियां की आह चलो अब आंगे भाई,
इस मारग में जीव की होत है भोत कठनाई,
कांटे कंकर गड़त हैं और तातुरी धाम,
कै जोजन ने मिले, जे जन्तु खों विसराम,
जन्तु खों विसराम, नदी एक अगम द्वारा,
डूबे उर अतराय, कछु नई सहारा,
केवट तो पीर है, कर भर बहे रुधर की धार
बिना भजन, नई हो सकों तुम बंदे पेले पार,
बंदे पेले पार।

स्रोत–श्री भगवान सिंह गोंड एवं साथी गायक, धवई

हर प्राणी को इस मोह रूपी भवसागर से एक न एक दिन जाना है। किसके दरवाजे पर कब यमराज आकर खड़े हो जायें। जब मनुष्य का आखिरी समय आता है तो शरीर जर्जर हो जाता है, मुख से बोलते नहीं बनता, क्योंकि शरीर की सारी इंद्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। आवाज निकलती नहीं है, बातें इशारे में करते हैं। परिवार के लोग बैठ जाते हैं, दुख संताप के कारण नैनों से नीर बहता है, क्योंकि मृत्यु के देवता दरवाजे पर खड़े दस्तक दे रहे हैं। ईश्वर की लीला अपरम्पार है। शरीर से आत्मा कब उस परमात्मा में विलीन हो जाती है, किसी को पता ही नहीं चलता। यह नाशवान शरीर यहीं पड़ा रह जाता है। इंसान जो कुछ कमाता है, वह सारी माया यहीं पड़ी रह जाती है, कुछ भी साथ नहीं जाता। कुटुम्ब–परिवार एवं पत्नी एक पग भी साथ नहीं चलते, सब यहीं पड़ा रह जाता है। मनुष्य अकेला आता है, अकेला ही इस संसार को छोड़कर चला जाता है। यह काया रूपी शरीर जिसे सारी जिंदगी साबुन से साफ करते रहे, आखिरी समय में उसने भी साथ छोड़ दिया। जीवात्मा को भवसागर में भारी कष्ट है। माया का जाल, मोह, ममता, लालच, स्त्री, धन के लोभ में जीव को भारी पीड़ा होती है। नाना प्रकार के कष्ट भोगना पड़ते हैं। कई काल तक जीव को आराम नहीं मिलता है। जिन्दगी एक नदी की धारा के समान है, जिसमें मनुष्य नाना प्रकार के सुख–दुख उठाता है, पर उसे किनारा नहीं मिलता। कभी परमात्मा में ध्यान नहीं लगाया, यह जीवात्मा तो अमर है, उसे एक दिन उस परमात्मा में मिलना है। इस भवसागर रूपी धारा में वही सहारा देता है, मनुष्य को यह ज्ञात हो जाये कि यह माया सब यहीं पड़ी रह जायेगी। कोई साथ नहीं जायेगा। इस जीवात्मा को उस परमात्मा में लगाओ, वही इस भवसागर से मुक्ति देगा, वही पार लगायेगा।

खबर करले आर, बा दिन की अरे
छाती पे चड़े जमराज, खबर .....
घरी भर की ने माने
आँख नाक मो कान की

कट गये बंदक बार
उपर रे जमराज रे
बे देरय गदों की मार
भाई बंद उर कुटुम कबीला
बैठे आकें घेर
पता काऊ खों है नहीं रे
बे रे गय हँस हेरे
जा काया का काम की रे
का दुनियाँ की आड़
चलो भाई अब आगे भाई,
काटे कंकर गड़ रये
और ततुरी घाम
ऐ प्रानी की ओजना रे
तनक रहे आराम,
भरो एक अगम धारा
कऊ उखरे कऊ डूबेरे,
बहे रक्त की धार
बिना भजन भगवान की रे,
हुईयों ने पेले पार
देख जमराज, जहाँ धरमराज खड़े ते,
भैया पूछे प्रेम से,
का कर के आये तुम,
कछु ने कहे विचारे
भाग करो सब न्यारो
बलिराम कथ के काहे रे,
इनको कर दे चार,
जेने जेसी करनी करी रे,
भेज देव ओई धाम,

स्रोत–ग्राम–धवई

मानव माया रूपी भवसागर संसार में मदमस्त, मोह–ममता, नाते–रिश्तेदार में इतना खो गया है कि उसे यह नहीं ध्यान रहता कि एक दिन इस संसार से हर प्राणी को जाना है। जब शरीर जर्जर हो जाता है, हाथ पैर काम नहीं करते, ऐसे में सीने पर सवार यमराज आ जाते हैं। यमराज मनुष्य का समय पूरा होने के बाद ही आते हैं तथा एक पल का भी समय नहीं देते और आत्मा

का हरण करके चले जाते हैं। शरीर के अंग सब स्थिर हो जाते हैं। आँख, नाक-कान सब अपना कार्य करना बंद कर देते हैं। यमराज नाना प्रकार के कष्ट देते हैं, परिवार के सगे-संबंधी आकर घेरकर बैठे रहते हैं, फिर भी कोई नहीं समझ पाता और काया रूपी शरीर से आत्मा निकलकर परमात्मा में विलीन हो जाती है। मानव शरीर किस काम का जो किसी के काम न आये। मानव का शरीर किसी काम नहीं आता। इस संसार में मनुष्य को नाना प्रकार के सुख-दुख, मोह-ममता आ घेरती है। आत्मा को एक क्षण का भी विश्राम नहीं मिलता। यह एक ऐसी नदी की धारा के समान है, जिसका अंत नहीं होता। उसी तरह यह माया रूपी संसार में आत्मा को आराम नहीं मिलता।

परमात्मा के मिलन का मार्ग ईश्वर भजन से ही संभव है। इस भवसागर से जीवात्मा को मुक्ति मिलती है, पर मरने के बाद भी आत्मा को विश्राम नहीं मिलता। वहाँ पर भी धरमराज के कर्मी का लेखा-जोखा लिये खड़े रहते हैं। इसी आधार पर लोक कवि बलिराम कहते हैं कि ईश्वर दण्ड देता है। कामों के आधार पर मनुष्य को उस योनि में भेज दिया जाता है।

अरे पन्ना में होरी को खेलें घरे नैयां राजा अमान
अरना में परना बसे रे, खुरई अरे मैदान
दोऊ गाँव के बीच में चोपर के लगे बाजार
हरे पलना मैं होरी को खेलें घर नैइयाँ
आरना से परना लुटे लुट गई हीरा खदान,
बेंदी हजारों की लुट रई मत भई बेकार
अरे पन्ना में होरी को खेलें घर नैयां
चार हड़ा ततई धरे घोड़ी करे स्नान,
हाथी दंत की ककहई फिर ऊँछे लाछारे केस,
रोम-रोम मोती गुथे, जबाहर सात लाख,
ऐना जड़े फिर मोर रही मनाय, हरे पलना .....
राजा सियावर खेलन जा रये लये सिपाई चार,
कंसापुर की डांग में फिर हंका दये लगाय,
हाँकत-हाँकत दुफर भये रे, लोट गई छझवार
उर जंगल के बीच मैं राजा खों लगयाई पियास
को तो जेहें ताल तलैयों को जमना के नीर
इड़ियन छिड़ियन लिखी चतैयरी, बिहर बनी गुलजार,
राजा पानूं पीवे गये हिन्दू ने मार दई सांग,
उते से घोड़ी चल भई, चलत लगी ने ढेर,
घरी पहर के बीच में हिन्दू ने खुदाये ताल,

के तोरी काटो बच्छ खुरी, के जबो से केस
उर जंगल बीच में मरवाई राजा अमान
काहे खों काटे बछखुरी काहे जबो से केस
छीगत बरजत घोड़ी कसे तैयार तनक घरी
के सोचते खोटी बात हरे पन्ना में
घोड़ी रोई घुड़सार में ऊँट तला की पार,
बारा बरसें हो रई, बछेड़ी होना पाये असवार,
बामन रोये बनिया रोये, रोये सातऊं जात,
कलार देस-देस के रोयें मंगने कोकर है ऐसो दान,
हरियल रोबें हार के सुआ आम की डार,
पिंजरा में रोय मुनैया, मोरे कां गये राजा अमान
पन्ना कोंये मारको उस बिन ससुरा बिहाई
राजा अमान खों भर जुआनी में हो गई राड़
हरे पन्ना में होरी को खेलें घरे नैयां राजा अमान

स्रोत-ग्राम-धवई

पन्ना में राजा अमानसिंह का राज्य था। वे बड़े वीर योद्धा थे और उनकी रानी-राजा को बहुत प्यार करती थी। होली के समय अमानसिंह शिकार खेलने जंगल में गये हुये थे। उनके वियोग में पत्नी कहती है कि राजाजी घर पर नहीं हैं, इस कारण कौन फाग खेले। अरना-परना छोटे-छोटे गाँव ज्यादा दूरी का अंतर नहीं है। दोनों गाँव के बीच में चौपड़ की बिसात बिछी हुई है, देखने लोगों की भीड़ लगी हुई है। अरना ने परना को हरा दिया है, यहाँ तक हीरा की खदान और कीमती बेंदी भी हार गये हैं। घोड़ी नहा रही है। रानी हाथी के दाँतों निर्मित कंघी से अपने लम्बे-लम्बे बालों को सँवार रही हैं। सात लाख मोतियों से बालों को सजाया गया है। अनगिनत तो आरसी लगे हुये हैं। राजाजी चार सिपाहियों को साथ लिये हुये हैं। कंसापुर के जंगल में हाँका हल्ला देने से जानवर यहाँ-वहाँ भागते हैं। हाँकते-हाँकते सुबह से दोपहर, दोपहर से सूर्यास्त होने का समय हो चला। बीच जंगल में राजा को प्यास लगने लगी है। पानी लेने कौन सरोवर जायेगा और कौन यमुना का जल लायेगा? जंगल के मध्य में स्थित हिंदू राजा ने सरोवर ताल एवं सीढ़ी घाट बनवाये और बड़ी सुंदर बावड़ी बनवाई। ज्योंही राजाजी जल पीने नीचे उतरे, हिन्दू राजा ने सांग शस्त्र का प्रहार कर दिया, उनकी वहीं पर मौत हो गई। मौत होते ही घोड़ी अपने मालिक के घर आकर हिनहिनाने लगी। रानी कहती है कि सही-सही बताओ, नहीं तो तुम्हारे बछड़े की खुरी काट लूँगी और तुम्हारे बाल कटवा दूँगी। तू जंगल के मध्य राजा को मौत के घाट उतार आई, इसमें तेरी कोई गल्ती नहीं है, चल मुझे वहाँ ले चल। राजा अमानसिंह को वहाँ की प्रजा बहुत चाहती थी। इतना ही नहीं पशु-पक्षी, जानवर भी उनको बहुत प्यार करते थे। अस्तबल में घोड़ी रो रही है। सरोवर के किनारे ऊँट को भारी सदमा है, घोड़ी के बछड़े को दुख है कि 12

बरस की मैं हो गई, उन्होंने मेरे ऊपर सवारी तक नहीं की। सारे राज्य में हर समाज–जाति दुखी है। अमानसिंह दानी राजा थे और लाचारों पर स्नेह करते थे। आम्रवृक्ष की डालों पर बैठे तोतों को भी अपार दुख है। पिंजड़े की मैना विलाप कर रही है कि मेरे राजा अमान सिंह कहाँ गये। अभी रानी कम उम्र में ही विधवा हो गई है।

दगा बाजी से मारे बालमा, चोंड़ा को बुरअ हो जाय,
सुनी जब बेलानारी कुँअर तो मारे गये भोत जादा,
घबड़ानी रोंदन करत महलन में सुमन गई पहचान,
राजकुमारी की दसा, हमसे कहीं ने जाय दगा
अंग के भूसन टोर मारे मारे, फिरे जवाहर मोती सारे,
नख सुर बेंदी गिरी मोहन माला हार हीरा मोती सारे,
जड़ी जा दई जमीन पे डार दगा बाजी से मारे,
के दीनीं सुकमारी कहो चोली कहूं चीर कह हैं,
रेसम सारी मारी विपता में परी जा आला की नार,
दरवाजे में आन के मारी है ललकार दगाबाजी
तुरत धवन बुलवाये कागद कलम दवात
सभी समान मंगाय, बांदी ने सब लियान के,
धर दोनों समान उदल पाती लिखी, सो लगा पति से ध्यान
अरे तुम देउर प्यारे, घर में बैठे रहे,
जुजा दये कंथ हमारे, मलना ने पाले हते रे,
कूख की दूद पिलाय थोड़े दिनों के बासते,
फिर तुमें सरम ने आय दगा बाजी से
काय तुम बने जनाने रन के दूल्हा बने,
लुकत मरे ने के लाने जसराज के लाल जू,
उदल जबही कहाव, गढ़ दिल्ली में आन के,
हमरे पति मिलाव, दगा बाजी से
जुड़े हैं जब ही छाती बलों ने लिख दई छावन खों
पाती तुम महल न लों जाव, आला उदल से कहों
सेना लेव सजाव, दगा बाजी से मारे बालमा।

स्रोत–ग्राम–धवई

पृथ्वीराज चौहान की राजकुमारी की शादी परमार के पुत्र के साथ हुई। प्रस्तुत प्रसंग में बेला जब सुनती है कि वीर योद्धा चौड़ा ने उसके पति को धोखे से मार डाला है, तो वह क्रोध से बोली कि चौड़ा तेरा नाश हो जाय। सुमन सखी कहती है कि बेला रानी की दशा हमसे नहीं देखी जाती है, अपने कक्ष में बैठी रो रही है। इन लोगों ने धोखे से मेरे महाराज को मार डाला। बेला

शरीर पर शोभित आभूषणों को तोड़-तोड़ कर फेंक रही है। नथ, बेंदी, मोहनमाला एवं हीरा-मोती-जवाहरात सभी तोड़कर फेंक दिये। बदन के पूरे वस्त्र अस्त-व्यस्त हैं। दरवाजे पर आकर सिपाही को बुलाने का आदेश दिया कि साथ में कागज कलम लेकर आयें। बेला ने देवर ऊदल सिंह को पत्र लिखा कि तुमने उन्हें लड़वा दिया और स्वयं घर बैठे हो, आपको शोभा नहीं देता। रानी मलना ने हमारे प्रीतम को बड़े लाड़-प्यार से अपना दूध पिलाकर पाला है। आपको शर्म भी नहीं आती कि आप विश्राम कर रहे हैं। आप तो बड़ी-बड़ी डींग हाँकते थे कि आपका नाम है, आप तो युद्ध मैदान के सरताज कहे जाते हैं। अब क्यों छुप रहे हैं, आपके पिता जसराज हैं, मैं तो तब ही आप को ऊदल कहूँगी, जब आप गढ़ दिल्ली जाकर मेरे पति का बदला लेकर आयेंगे। हमारे हृदय को चैन तभी मिलेगा। पत्र को बंद कर हरकारे के हाथ दिया और कहा- तुरंत जाकर ऊदल को बोलो कि धोखे से हमारे पति को युद्ध में मार डाला गया है। सो, आप फौरन सेना को सजाकर गढ़ दिल्ली पर चढ़ाई करो।

सुर खों रे सुमरें सरसुती मां
बल खों रे सुमरें पवन कुमार
रन खों रे सुमरे लँय मैया सारदा
इनके रंग में ने रंग जैयो
इनने दुनिया रंग दई रे

स्रोत-श्री किशन गोंड एवं साथी गायक, निवारी खुर्द

लोक संगीत प्रारंभ करने से पहले लोक कलाकार सुर की देवी माँ सरस्वतीजी का आव्हान करते हैं कि मेरे कंठ में आ विराजो और बल-बुद्धि देने वाले पवन पुत्र हनुमानजी का स्मरण करते हैं। समर भूमि की देवी माँ शारदा का आह्वान करते हैं कि मुझे शक्ति देना तथा मेरी समर भूमि में रक्षा करना।

करजा की कठन मरोर,
सकि सोचों में दूबर बालमा।
घर लिखो घूरो लिखो लिखी चंदेनी भैंस
इतनई पे करजा ने चुको सौ लिखो इमरतिया हार,
परसी थरिया खीर मेपर दई मिलाय।
जब सुद आवे करजा की कौर धसो ने जाय,
रठिया में कठिया बई सो नेचे बे दई धान।
नंदयारे बई जूनरी सुआ परेबा खाय,
करजा बेरी ने चुको सो सूक टटेरों होय।
नीलकंठ कतकें कहें सो कैयक भये भिराल।
करजा की कठन मरोर।

स्रोत-श्री भगोनी गोंड एवं साथी गायक, घाना

ग्रामीण स्त्री अपने पति से कहती है कि कर्ज लेने से परिवार अस्त-व्यस्त हो जाता है। आप सोच-सोच कर दुबले हुए जा रहे हैं। कर्ज का ब्याज बड़ी मुश्किल से चुकता है। घर के दुधारू जानवर गिरवी रखे हुए हैं। इतना ही नहीं महाजन ने इमारती वाली उपजाऊ जमीन तक लिखवा ली है। उससे अपने पति की हालत देखी नहीं जा रही है कि सामने परोसी हुई थाली से निवाला भी नीचे नहीं जाता, जब कर्ज की याद आती है। रठिया वाली जमीन में गेहूँ बोया है और मील में धान लगी हुई है। अगर उसके आने से कर्ज नहीं चुका तो सूखकर टटेरा के समान हो जाएँगे, फिर शायद खाने के लाले पड़ जाये। लोक कवि नीलकंठ कहते हैं कि कर्ज में अनेक घर-बेघर हो गए हैं।

अबे रंग डारन दे महाराज,
डारन दे महाराज अबे रंग
कहां से केसर आये अब रंग,
ऐ फिर कहना से लाल गुलाल रंग,
ऐ भैया बंबई से केसर आये अबे रंग,
ऐ मैंई से लाल गुलाल रंग,
ऐ भैया काहे में केसर आये अबे रंग,
ऐ फिर काहे में लाल गुलाल अबे रंग,
ऐ भैया पुरिया में केसर आये अबे रंग,
ऐ फिर ओई में लाल गुलाल अबे रंग,
ऐ भैया कोना पे केसर डारे अबे रंग,
ऐ फिर कोना पे लाल गुलाल अबे रंग,
ऐ भैया रामा पे केसर डारे अबे रंग,
ऐ फिर ओई पे लाल गुलाल अबे रंग,

स्रोत-ग्राम-झिरिया

श्याम के ऊपर सखियाँ रंग-गुलाल डाल रही हैं। अच्छी किस्म की सुगंध डालकर रंगों को बनाया गया है, जिसकी खुशबू चारों तरफ फैल रही है। सब तारीफ कर रहे हैं कि रंगों में केशर को घोला गया है। यह केशर बंबई से आई है। पैकिट में केशर आई और पैकिट में ही लाल-हरे रंग मँगाये गये हैं, इनको घोलकर राम एवं कृष्ण पर रंगों को डाला गया है।

बेला के कठन ब्याव, आला लगुन फेर दे सम्मर की।
पांच लड़ाई भारत लिख दई, हुकम गाज तलवार।
लोऊ के बूंदा डार, रकत की करी स्यायी
जे कोऊ बेला ब्याहवे आहे, लौट एक ने जाय ....
लौट एक ने जाय, खबर ऊदल ने पायी

नाहर हार बलधारी दादा तुमन पायी
बड़े लड़ैया महुवे बारे, राजा सें मान गये हार ....
माव मास में लगुनें भेजीं, फागुन चढ़ी बरात
नमे भड़रिया भांवर पड़ी, सिर पै घूमें असाढ़ ....
हाथों के कंगन छूटे नहीं, नहीं हरद के दाग
तेल की फरिया फाटी नहीं, बारे में ही गई बला रांड़॥

स्रोत–श्री कुंदन सिंह गोंड एवं साथी, चौका

पृथ्वीराज चौहान की पुत्री बेला का विवाह महोबा के राजा परमाल के पुत्र के साथ संपन्न हुआ था, उसका पति युद्ध भूमि में मारा जाता है। आल्हा से कहती है कि लगुन वापस कर दो, रक्त की स्याही बनाई है। बेला को जो भी वीर योद्धा विवाह कराने आयेगा, वापिस नहीं जा पायेगा, ऐसा सरदार का हुक्म था। रणवीर ऊदल आपने पहले से क्यों हार मान ली है, आप लोगों का पूरे जगत में बड़ा नाम है। आप भीषण लड़ाई लड़ने में माहिर हैं और राजा से हार मान गये। जनवरी महीने में लग्न या शादी की प्रारम्भिक रस्म हुई थी, फागुन महीने में बारात आयी। भड़रिया नवम की भाँवर पड़ी थी और माह लग गया है। अभी हल्दी के दाग भी नहीं छूटे हैं न ही हाथ का कंगन खुला है। चुनरी से तेल के दाग तक नहीं छूटे हैं और बचपन में विधवा हो गई।

हंसा भये चालनहार, बहुर नइ मिलबे के
जब आये जमलोक से, लयें कगदवा हांत
जिनके पन्ना हो गये, चलो हमारे साथ ....
जम जोतें गाड़ी चले, बरे अगन की झार
कछु–कछु हंसा पार उतर गये, कछू हैं उतरन हार ....
हंसा पिंगल देश के उड़ आये बिराने देश
डारे मोती नें चुनें, हीड़े अपने देश ....
उड़ हंसा खेतों गये, मूरख बिड़ारन जांय
अरे–अरे मूरख क बावरे हंस नें कौरों खांय ....

स्रोत–ग्राम–घाना

आत्मा जब नाशवान देह का त्याग करती है, तो दुबारा लौट कर नहीं आती। काल निश्चित समय पर ही आता है, जिसका अंत समय आ जाता है, यमदूत प्राण हर कर चले जाते हैं। यमराज का विमान उनके गण खींचते हैं। आगे मशाल पीछे विमान चलता है। सद्कर्म करने वाले भवसागर में विलीन हो जाते हैं। कुछ का समय नजदीक आ जाता है, पवित्र आत्माएँ पिंगल देश में वास करने लगती हैं।

तुम लंके चढ़ आव, अंगद बाली के
पांच पान को बीड़ा रचो, चौवन लोंग ठटाई
जो कोऊ लंका जायगो, बीरा लेय उठाई ....
सभा अंगद ठांड़े भये, बीरा लये उठाय
हमतो लंके जायेंगे, पंचो शीश नवाय ....
बोले अंगद जा कहे, पांव खों नैया पांवड़ी, सिर खों नइयां पाग
बैठवे खों नइयां लीली बेछरी, को लंके चढ़ जाय ....
पांव खों देहों पांवड़ी, सिर खों पचरंग पाग
बैठवे खों देहों नीली बछेरी, तुम लंके चढ़ जाव ....
लीली घोड़ी राम की, अंगद से असवार
खुरी करावे रेत में, जले ने भीजें पांव॥

स्रोत–ग्राम–घाना

हे बाली पुत्र अंगद! तुम लंकापुरी जाओ। प्रभु श्रीराम की सभा में पाँच पानों का बीड़ा लगाकर बीचोंबीच रखा गया, तत्पश्चात् घोषणा की गई कि जो वीर यह बीड़ा उठायेगा, उसे लंकापुरी जाना होगा। बाली पुत्र अंगद ने सहर्ष बीड़ा उठा लिया तथा सभी पंचों को प्रणाम करके लंकापुरी जाने की घोषणा कर दी। तत्पश्चात् अंगद बोले कि मेरे पाँव में पहनने के लिए पाँवड़ी नहीं है, न सिर पर बाँधने की पगड़ी ही है, जाने के लिए नीली घोड़ी भी नहीं है, मैं किस तरह जाऊँ। फिर उन्हें सारी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की गईं। अंगद घोड़ी पर जो कि प्रभु श्रीराम की थी, बैठे और पवन वेग से लंका की तरफ चल दिये।

मेलों समद की पार, राम दल मेलों रे।
घाटन–घाटन सब दल मेलों, औघट मेले राम
बीच दलों में लक्ष्मन मेले, पर्वत पै हनुमान ....
लिख परमानों लक्ष्मन भेजो, रावन के दरबार
हांत जोड़ ले मिलो जानकी, कायखों बाढ़े रार ....
इतनी बात सुनी रावन नें, धरे मूंछ पे हांत
मेघनाद से जोधा मोरे, लड़हैं दिन और रात ....
हनुमान से जोधा उनके, हांक टरे पहार
उन जोधों से पार ने पांहों, छोड़ भगो हत्यार ....
भुज प्रसाद राम के कोपें, हुइये कुटन संधार
तुलसीदास आस रगवर के, राम मिले सें सार ॥

स्रोत–ग्राम–घाना

लंकापुरी में प्रभु श्रीराम जी का दल अपना डेरा डाले हुए है। समुद्र के किनारे–किनारे

दल रुका हुआ है तथा प्रभु श्रीराम अलग रुके हैं। लक्ष्मण जी दल के बीचों-बीच हैं। पवनपुत्र हनुमान एक ऊँची पहाड़ी पर रुके हुए हैं। अनुज लक्ष्मण ने रावण को एक संदेश लिखा कि लंकापति रावण अगर तुम अपनी खैरियत चाहते हो तो प्रभु श्रीराम के समक्ष देवी सीता सहित प्रस्तुत हो जाओ और श्रीराम से हाथ जोड़कर अपने किये की माफी माँग लो, वे तुम्हें माफ कर देंगे। क्यों व्यर्थ का बैर मोल लेते हो? रावण ने जब लक्ष्मण जी का संदेश पढ़ा तो वह घमंडी अपनी मूँछों पर ताव देता हुआ बोला कि मेरे मेघनाथ जैसे मेधावी योद्धा हैं, वे रात-दिन संग्राम करेंगे और राम को पराजित कर देंगे।

लेकिन राम दल में भी तो बड़े-बड़े योद्धा हैं। अरे! हनुमान अगर एक हाँक लगा दें तो पहाड़ अपनी जगह से डिग जाते हैं। वे दुश्मन के समक्ष आ जायें तो दुश्मन अपने हथियार छोड़ भागेंगे। यदि प्रभु श्रीराम युद्ध में आये तो तुम्हारे सारे कुटुम्ब का संहार कर देंगे। तुलसीदासजी कहते हैं कि रावण की प्रभु रामजी से संधि कर लेने में ही भलाई है।

सखी तज दीनों हमें मुरलीवारे, आये सें लौट गये द्वार।
आये सें लौट गये द्वार, कहें वृषभान दुलारी
मैंने कीनो गरव, सुनो तुम ललता प्यारी
अगहन में आये हते, गिरधारी मोर द्वार
गरव हमारो देखकें, फिर लौट गये करतार ....
लौट गये करतार, पूस में फिरों अकेली
तलफों में बिन श्याम, आवती संग सहेली
दिन बैरी कट जात हैं, समजानै ब्रज नार
रात हमें कैसे कटे, बिन मोहन नंद कुमार
बिन मोहन नंद कुमार, माघ में थर-थर कांपो
हिरदे व्यापै पीर, जुबन चोली ने नापों
मोर मुकुट की लटक पैं, अटके नैन हमार
खबर हमारी ने करें, जसुदा के राजकुमार ....
घर-घर उड़े गुलाल, श्याम हमखों तरसाये
रंग बिरंगी हा री ब्रज में घर-घर नार
टेसू फूले सकल वन, फिर हमखों है दुख भार ....
हमखों है दुख भार, बसन्ती रित जा आई
चैत चितेरे घाम, हमें ने कछू सुहाई।
नौ दुरगा पूरीं करौं, लगा देव तुम पार
भूल हमारी हा गई, मोरी विनती सौ-सौ दार
विनती सौ-सौ दार, धरम वैसाख महीना
जल बिन तलपौं मीन, करो हमें श्याम विहीना

मुरलीवारे आनकें, हमरो करो उद्धार
बहे पसीना देय सें, फिर हो गँव हमखों प्यार
हो गँव हमखों बैर, हमारो खात दहीना
हमे दये बिसराय, बीत गये छै-छै मईना
जेठ जगर ज्वाला जरे, तन में लगी दमार
जा गरमी कैसे कटे, फिर तम बिन कृष्ण मुरार ....
तुम बिन कृष्ण मुरार, रही न हमारी जानी
लागो अगम असाढ़, बरस रहो रिमझिम पानी
दादुर बोले जोर सें, बोले जीव हजार
मेघ गरजना कर रहे, इते सूनी सेज हमार
सूनी सेज हमार, लगौ सावन मन भावन
भारी जो त्यौहार हमें नें सोहे पावन
हमरे पीछे गोपका, सोच करें बृजनार
बारा बरस के मोहना, जियरा के प्रान अधार
जियरा के प्रान अधार लगी भादों इंदियारो
मघा नरवत अर्राय, हमें भूले गिरधारी
श्याम विहीना मैं फिरों, ढूढ़ों डारन डार
चूक हमारी छोड़ दो, फिर प्रानों के आधार
चरनों में आधार, शरद रित क्वांर कहाई
देश दशेरा होय, घरों घर बजे बधाई
सब कोऊ हमरो भरो है, लाख लोग परवार
श्याम बिना सूनो लगे, फिर देखो सब संसार
देखों सब संसार गोबरधन पूजा आई
कातक रूम्मन राधिका और विसाखा नार
कहें फकीरेलाल जी, फिर भेंटे नन्द कुमार
सखी तज दीनों हमें मुरलीवारे .....

स्रोत-ग्राम-चौका

वृषभान दुलारी कृष्ण प्रिया राधा अपनी सखी ललिता से कहती हैं कि सखी मुझे तो लगता है कि जैसे मुरली मनोहर ने मेरा त्याग कर दिया है, उनके बर्ताव का कारण मैं ही हूँ या फिर मेरा अभिमान है। यदि मैंने अभिमान नहीं किया होता तो कान्हा मुझे इस विरहाग्नि में जलते हुए छोड़कर नहीं जाते। सुनो ललिता बहिन! वो मेरे कृष्ण अगहन माह में मुझे मिलने मेरे ही घर आये थे, लेकिन मेरा अभिमान देखकर वे मेरे द्वारे से ही लौट गये। पूस मास में मैं अकेली उन्हें तड़पाती रही, बिना श्याम के मैं बावली बनी भटकती रही। मेरी सखियों से भी मेरा दर्द नहीं

छिपा था। अब ये हाल है कि दिन तो किसी प्रकार कट जाता है, लेकिन रातें बिन नंदलाल के नहीं कटतीं। माघ माह में शीत की अधिकता की वजह से मैं अकेली काँपती रही, मेरे हृदय में कृष्ण वियोग की पीड़ा सालती थी। मेरा यौवन उन्हें ही अपने अंक में समेटना चाहता था। उनका हर घड़ी ख्याल दिन में रहता था। उनका रूप-रंग, उनका मोरपंख का मुकुट, उसके लटकन इन सबके लिए मेरे नैन तरस रहे थे, लेकिन उन यशोदा के लाल ने मेरी खबर ही नहीं ली, कितने निष्ठुर हो गये हैं। जैसे-तैसे रंग रंगीला फागुन आ गया, इस समय घर-घर रंग-अबीर बरस रहा था और मेरे श्याम मुझे तड़पा-तरसा रहे थे। सारे ब्रज की नारियाँ रंग में सराबोर थीं। फागुन में सारे वनों में टेसू फूला था, कैसा सुहावना मौसम और बिन गिरधारी के मुझे कुछ भी तो नहीं सुहाता, न फागुन न बसन्त। फिर चैत्र का महीना आ गया, इस माह की धूप बड़ी तीखी होती है, लेकिन मैं तो बेसुध थी। नवरात्र के व्रत करती माता से विनती करती कि हे माँ! मेरी मझधार में अटकी नाव के खिवैया को बुलाकर पार लगा दें। मैं सैकड़ों बार विनती करती हूँ। चैत्र के बाद वैशाख आया, वैशाख तो धर्म का महीना माना जाता है, लेकिन इस माह में श्याम के वियोग में मेरी दशा उस मछली के सदृश्य हो रही थी, जिसे जल से निकालकर अलग कर दिया हो। हे मुरलीधर! आप आ जाओ, उद्धार कर दो, मेरे शरीर से पसीने की धार बह रही है। मुझे कृष्ण से प्रेम हो गया है। मेरा दही भी नहीं खाते और आते भी नहीं हैं, उनके वियोग में छह मास बीत गये। ज्येष्ठ महीने में ग्रीष्म की तपन और ज्यादा बढ़ जाती है, कृष्ण वियोग में तो इस तपन ने अग्नि का रूप धारण कर लिया है। हे माधव! अब तो मेरी जान ही निकली जा रही है। आषाढ़ में रिमझिम-रिमझिम पानी बरसने लगा, पानी के बसरते ही दादुर तथा अनेकानेक कीट-पतंगे रात्रि में बोलते हैं, आकाश में मेघ गर्जना कर रहे हैं। मैं अकेली अपनी सेज पर सोती हूँ, लेकिन यह सेज तुम्हारे बिना सूनी प्रतीत होती है। आषाढ़ निकलते ही मन को अच्छा लगने वाला श्रावण महीना आ गया। इस मास में तीज-त्योहार ज्यादा होते हैं, लेकिन मुझ विरहन को ये त्योहार बिलकुल भी नहीं भाते। यहाँ पर सारे सखा ग्वालबाल तथा ब्रजबालायें आपके न होने की कमी महसूस करती हैं। आपके लिये अफसोस व्यक्त करते हैं। कहते हैं कि बारह वर्ष के मोहन हमारे प्राणाधार हो गये हैं। उनके बिना यह जीवन ही व्यर्थ है। श्रावण जाते ही भाद्र माह आ गया। पानी और तेजी से गिरने लगा, जब देखो अँधेरी घटायें छायी रहती हैं। इस समय मघा नक्षत्र की झड़ी लगी, तो चहूँओर जल ही जल है। ऐसे समय में गिरधारी ने हमें भुला दिया है। मैं डाल-डाल, गली-गली ढूँढ़ती फिर रही हूँ, मैं अपनी गलती के लिए बार-बार आपसे क्षमा याचना करती हूँ, आप तो मेरे प्राणों के तथा जीवन के आधार हैं। अब शरद ऋतु आ गई, दशहरे का समय है, घर-घर में त्योहार की तैयारी चल रही है। मेरे घर में सब है, भरा-पूरा परिवार है, लेकिन एक तुम्हारे न रहने से सारा संसार सूना प्रतीत हो रहा है। जैसे कि इस दुनिया में कोई भी नहीं है। दशहरा-दीवाली भी हो गये और गोवर्धन का पूजन आ पहुँचा, लेकिन कार्तिक माह में मोहन अपने सखी-सहेलियों से मिलने आ गये। फकीरे लाल जी कहते हैं कि कृष्ण आकर राधा, ललिता, रुक्मिणी और विशाला नामक सखियों से गले लगकर मिले, मोहन के आने से विरह वियोग का संताप जाता रहा।

गति टारी ने टरे जा करमन की, ब्रम्हा नें खेंच दई रेख ..... ।
निरपत राजा हो गये, हरिश्चंद्र कहो वे कैसे दानी
कर्म गति से आन, डोम घर भरते पानी,
रानी ब्राम्हण घर रही, कर्म गति से आन
सत्य से छोड़ा निरपति ने, फिर भोगे दु:ख महान .....
भोगे ने दु:ख महान, गये सुरपुर वे राजा
कोटन गौवे पुन्न करीं, निहूं नर्ग राजा
अंत समय गिरगिट भये, परे कूप में जाय।
कर्मगति बलवान है, सौ नाहीं वरनी जाय .....
सो नाहीं वरनी जाय, लिखी काहो करमन में
सिया लखन अरू राम, फिरत ब्याकुल वन-वन में
इते जानकी हर लई, लंकापत का नाथ
तीन लोक के धनी पै, फिर पोंची विपता जाय
पोंची विपता जाय, विपत सें कोऊ ने जीता
जैसी होत व्यथा तैसी मिले सहाय
में ले जावे तरह खों, कै तरह तहाँ लै जाय .....
गति टारी ने टरे जा करमन की॥

स्रोत-ग्राम-चौका

विधाता ने हरेक की तकदीर में जो लिख दिया है, वह अटल सत्य है। वह कभी भी नहीं बदल सकता, अर्थात् ब्रह्मा की खींची रेखा अमिट है। एक समय की बात है कि पृथ्वी पर हरिश्चंद्र नाम के सत्यवादी राजा थे। उनकी किस्मत को देखिये कि इतने बड़े राजा और उन्हें एक डोम के यहाँ चाकरी करनी पड़ी। तात्पर्य यह है कि कर्म को नहीं बदला जा सकता। महाराज हरिश्चंद्र ने इतने कष्ट सहन करने के पश्चात् भी अपना सत्य नहीं छोड़ा, भले ही इसके लिये बड़ी मुसीबतें आईं, लेकिन सत्य पर अडिग रहे। अंत समय में उन्हें स्वर्ग में स्थान मिला, इसी तरह नर्ग राजा ने असंख्य गौवें दान कीं, लेकिन जरा सी भूल के कारण उन्हें गिरगिट की योनि में जाना पड़ा। कर्म के लेख के अनुसार ही सबको भोगना होता है। त्रेता में प्रभु श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण और सीता के साथ चौदह वर्ष का वनवास भोगा, वह भी उनके भाग्य का लेखा था जो कि उन्हें पूरा करना ही था। कर्मगति में अच्छा-बुरा जो भी लिखा है, वह सबको भुगतना पड़ता है।

भोजन करवे पावनें बैठे हैं, परसें धनी चौहान
परसें धनी चौहान भरो है जैसे मेला
हितुवा नातेदार बैठ गव लैं चंदेला।
चांदी के पटा धरे, जिनपैं बैठे वीर

सोने के गड़ुवा धरे पीवै खों कंचन नीर
पीवैं कंचन नीर, डार दयीं पतरों आंगे,
दार-भात और कड़ी सान में परसन लागे।
पापर खारे और बरा, रायता छौंका बगार
शक्कर में दौना भरे, हलुवा है मसालेदार
हलुवा है मसालेदार परस दये नरम सुहारी
परम प्यारी लगे, कचौरी की छब न्यारी
रसगुल्ला रस से भरे, लगी करारी धार
लड़ुआ परसे मगद के, फिर बरफी खोबादार
बरफी खोबादार, जलेबी और सेव खारे
दूध मलाई खूब, सबई के धरे अंगारे
कलाकन्द बादाम के, सूतें लच्छेदार
फैनी परसीं चुरमुरी फिर पांवना करें विचार
पावनें करें विचार, नात समरथ हम पाये
किसम-किसम के खूब, आज भोजन बनवाये
मालपुवा और दुधवरा, घी शक्कर में डार
खीर बदामी असवनी, बड़ी मसालेदार
बड़ी मसालेदार, चकाचक माल खुवावैं
सबखें एकई भांत खई पृथ्वी परसावें
बूढ़े अस्सी बरस के बिन दांतन के वीर
इक्छा भोजन हो रहे, आनंद भयो शरीर
आनंद भयो शरीर बने भजिया बेसन की
जब परसें नमकीन, और चटनी कैथन की
बूंदी मगोड़ा चटपट, बड़े तरवटदार
बेसन की बरफी बनी, घुइयां की साग तैयार .....
साग बनी तैयार बना के धरे अंगारे
रुच-रुच व्यंजन बने स्वाद सब न्यारे-न्यारे
सकल पदारथ सब कछु, मेवा और मिष्ठान
हांत जोड़ आज्ञा दई, पृथ्वीराज चौहान .....

स्रोत-ग्राम-चौका

चंदेलराज के पुत्र ब्रह्मानंद के विवाह में सारे बाराती पाहुने भोजन करने बैठे थे, तो दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान स्वयं उनको भोजन परोसते हैं। इस समय इतनी आवाजाही हो रही है कि जैसे मेला लगा हो। सब अतिथियों को पंगत में बैठाया गया। चंदेल वंश के समस्त आगन्तुक

बैठ गये। चाँदी के पटा डाले गये, जिन पर मेहमानों को बैठाया गया, स्वर्ण के लोटे में जल सबके समक्ष रखा गया। तत्पश्चात् पत्तलों में दाल, चावल, कढ़ी, पापड़-खारे, बड़ा, रायता, शक्कर, हलुवा, कचौरी, रसगुल्ला, मगज के लड्डू, बर्फी, जलेबी, सेव, दूधमलाई, कलाकंद बादाम, फेनी, मालपुवा, दुधवरी, खीर, असबनी इत्यादि भाँति-भाँति के व्यंजन बारातियों को परोसे गये। इसके अलावा चटनी, बुंदी, मगोड़ी, बेसन, बर्फी, घुइयाँ विविध तरकारियाँ परोसने के उपरान्त पृथ्वीराज ने सबको भोजन करने के लिए हाथ जोड़कर आग्रह किया।

लुहरी ने खोले किवार,
राते झगड़ा भव घर जेठी सें।
लुहरी ने खोले किवार, संग में परे प्यारे।
जेठी लग-लग सुने, दूर से करें इशारे
जबसे लौरी आई है, देरी मारी लात।
गतकें तो बोले नहीं, सोवें ने हमारे साथ .....
मैं हो रयी हों नीम, फिरत मैं मारी-मारी
जबसे लौरी आई है, देरी मारी लात।
गतकें तो बोले नहीं, सोवे ने हमारे साथ .....
सोवें ने हमारे साथ, लगे दरपन में प्यार
मैं हो रयी हों नीम, फिरत मैं मारी-मारी
जुड़ा सो मोरे पेट में, हुमके आदीरात
मोय चैन कैंसे परे, मैं सोऊँ कौन के साथ .....
मैं सोऊँ कौन के साथ, मोय ने परे रिहाई
अपन बड़ो बेईमान संग में करी लुगाई
अरबस में आगी लगे, दिन सूजे ने रात
ओमें का नोनो लगो, मोरी तनक ने पूंछे बात .....
तनक ने पूंछे बात, आये पैरावे साड़ी
हमसे इतनो कपट, मिले ने कारी कमरी
देखो बौटा बन गये, ओखों झझरीदार
ढरमा के टोडर बनें, फिर बिंदिया झूमकादार .....
बिंदिया झूमकादार, हमें जे नकली चूरा
उनके मान गुमान, हम तो माटी कूरा
बा सोवत है सेज पै, हम तलफत हैं सेज
सब पंचों से अरज है, मोय देव मायकें भेज .....
देव मायकें भेज, मजूरी हम कर खाहें

देखें उनके चमत्कार, तो हम मर जैहें
बलीराम कथकें कहें, सुनो फाग के हाल
जेठी के कैयक बने, लुहरी के फकीरे लाल
रातें झगड़ा भव घर जेठी सें॥

स्रोत-ग्राम-चौका

उक्त फाग में सौतिया डाह का सजीव चित्रण है। बुन्देलखंड में जिस पुरुष की दो पत्नियाँ होती हैं, उनमें से पहली पत्नी को जेठी तथा बाद में लाई पत्नी को लुहरी कहते हैं। यहाँ पर जेठी की मन:स्थिति का वर्णन है। जेठी जब लुहरी के कक्ष में गई तो उसने देखा कि किवाड़ बन्द हैं, उस पर जेठी ने किवाड़ खुलवाने के बहुतेरे प्रयत्न किये, लेकिन जब नहीं खुले तो रात्रि में ही दोनों सौतों में झगड़ा हो गया। जेठी बोली कि किवाड़ इसलिए नहीं खोले थे, क्योंकि उस कक्ष में पतिदेव मौजूद थे। जेठी कहती है कि जब से यह मेरी सौत आई है, तब से मेरे पति मुझसे कभी ठीक से नहीं बोले, न ही मेरे कक्ष में सोने को आये। मैं अब उनको दूर से ही निहारा करती हूँ। उन दोनों के लिए मैं नीम सी कड़वी हो गई हूँ। मेरे मन में जब दर्द उठता है, तो बड़ी बेचैन हो जाती हूँ कि उसी घर में मेरी जगह लुहरी ने ले ली, मैं किसके साथ रहूँ। मुझे न रात में नींद न दिन में चैन है। मेरा पति ही जब बेईमान निकला तो फिर क्या हो सकता है। ये दोनों मेरे साथ में इतना अन्याय कर रहे हैं, मुझे समझ नहीं आता कि उसमें ऐसा क्या है, जो मुझसे वे एक बात नहीं पूछते। उसे तो नित नई साड़ी आती है। मुझे कोई एक कम्बली भी नहीं देता। उसे जेवरात बन गये, झझरीदार बोंटा, तोड़ल तथा बेंदी बन गई, मुझे तो नकली जेवर भी नसीब नहीं है। उस लुहरी का बड़ा मान-सम्मान है और मैं अब मिट्टी-कूड़ा हो गई। वे दोनों तो सेजों पर सोते हैं। मैं सेज पर तड़पती रहती हूँ, अब तो मेरी सबसे यही अर्जी है कि मुझे मायके भिजवा दें। वहाँ पर मैं चाहे मजदूरी कर लूँगी, क्योंकि यहाँ पर इन दोनों के ढंग देखकर तो मैं अभी मर ही जाऊँगी। बलीराम जी कहते हैं कि जेठी की तरफदारी तो कई लोग कर रहे थे, लेकिन लुहरी का तो केवल एक ही था।

अन्जनी सुत प्रभु, मन मोरे भायो राम।
लाल लंगोट लगे अति सुन्दर, तैल सिन्दूर चढ़ायो
एक हांत गदा दूजे, दोनोगिर मूर सजीवन लायो
भरत ने मारे बान चलायो
लागो बान गिरे धरती में, राम-राम मुख लायो,
सुनतई भरत भयो अचरज मन, मैंने कोई भक्त सतायो
भरत ऐसे बतराने, कंपित-कंपित पौंचे भरत जी
कौन कहां से आयो
कौन राजा की करत चाकर, कौंने तुमे पठायो
भरत के बैन सुने अरे हां,

अंजनी सुत मोरो नाम जो कहिये, लंकापुरी से आयो
रामराजा की करत चाकरी, लक्ष्मण कुंवर सतायो
संजीवन लेने आयो।
आओ पवनसुत बैठो बान पै, बाणों गैल बनावें
दोनागिर पर्वत खों धरकें, बाण आकाश चढ़ावें
पवनसुत वचन उचारे हों।
इतनी सुनकें चले पवनसुत, एक छड़िक में आये
तुलसीदास सब दल आनंद छायो
भोर न होने पायो, संजीवन आय कें दीनी।

स्रोत–ग्राम–चौका

अंजनी पुत्र पवनसुत हनुमान मेरे मन को बहुत भाते हैं। वे अपने शरीर में लाल रंग का लंगोट धारण करते हैं तथा तैलयुक्त सिन्दूर का लेप उनके शरीर पर बहुत अच्छा लगता है। एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में द्रोणागिर पर्वत लिये सुभोशित हैं। एक समय लंकापुरी में जब लक्ष्मण को मेघनाथ ने शक्ति बाण से घायल कर दिया था, तब श्री हनुमान जी द्रोणागिर पर्वत पर संजीवनी लेने गये। लेकिन रावण ने अपनी माया से उसकी पहचान में भ्रम पैदा कर दिया, जिस पर हनुमानजी सारा पर्वत ही उठाकर ले आये। पर्वत समेत उड़कर जाते हुये भरत जी ने देखा तो मायावी समझकर उनको बाण मारा। बाण के लगते ही हनुमानजी गिर पड़े। उनके मुँह से प्रभु श्रीराम का नाम सुनकर भरतजी उनके पास आये। उनका परिचय जानने के उपरांत भरतजी को बहुत दुख हुआ, उन्होंने हनुमानजी को बाण पर बैठाकर समय से पहले ही उस स्थान पर पहुँचा दिया। उन्हें देखकर रामदल की सेना में हर्ष की लहर दौड़ गई।

टेक– *घर नईयां राज अमान अबे परनों में होरी*
को खेले घर नईयां .....
राजा चले शिकार खों संग सिपहिरा लोग
हंसापुर की डांग में, हांका दओ लगाय। अबे .....
हांकत–हांकत दुफर भये, लौट गई चकवार
हंसापुर की डांग में, राजा खों लगी प्यास। अबे .....
कौनऊ ढूंढ़े ताल तलैया कौनऊ तला की पार
हंसापुर की डांग में, हिन्दू ने खुदा दये ताल। अबे .....
इड़ियां बनी छिंड़ियां बनीं तला बनो गुलजार
राजा घुसे पानी पियन दुश्मन ने मारदई सांग। अबे .....

स्रोत–पं. विश्वनाथ दुबे, अमायऊ

महाराज अमानसिंह घर पर नहीं हैं, अब बिना राजा के उनके राज्य में होली कौन

खेलेगा? उनके बिना सब सूना-सूना लगता है। एक समय राजा शिकार खेलने गये, साथ में सैनिक भी गये। हंसापुर नामक जंगल में शिकार नहीं मिला। शिकार करने हेतु हाँका लगवाया गया। सारे सैनिक उस पहाड़ में पानी की तलाश में कुआँ, बावड़ी, तालाब आदि देखने लगे। उसी पहाड़ में हिन्दू राजा ने तालाब खुदवाये थे, वह तालाब बड़ा सुन्दर था, चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थीं। राजा जैसे ही पानी पीने सीढ़ियों से उतरने लगे, तो किसी दुश्मन ने उन पर भाले का वार कर दिया। राजा को धोखे से मार डाला था, अब उनके बिना उनका राज्य सूना हो गया। होली का त्योहार है, लेकिन समस्त राज्य में शोक व्याप्त है, कौन मनायेगा ऐसे में त्योहार को?

ललामी अरे छा रयी नदिया बेतवा पै,
लाखन की चली तरवार। ललामी .....
लाखन की चली तरवार उमर को है अलबेला।
दोई दलों के बीच मचा दओ ठेलम ठेला।
भूरी सांकर फेरकी, जोहर रयी दिखाय
कनबज बारे के सामने, फिर बिरलो सूर कटाय
बिरलो सूर कटाय, सामना करे ने कोऊ
दांत उंगरियां दाव रहे, दिल्ली पति सोऊ।
मोहनमाला गरे से, मधुर-मधुर मुस्काय॥
मधुर-मधुर मुस्काय, सुनो तुम लाखन राजा।
शूरवीर सरदार तुमें हमने पहचाना।
अटकी का है आपकी जो नाहक करो तकरार।
चलो महोबा लूटिये फिर दोनों मिलकें यार॥
राजपाट धन धाम, और हम सब ले लेंगे।
पृथ्वीराज की बात सुन, लाखन नहीं सुनाय।
ऐसी बातें करत में, फिर तुमें शरम न आय॥
तुमें शरम न आय, जान लई सब चौहानी।
तुमने समजी हती, नहीं कोऊ अपनी सानी।
धरम क्षत्रियन के नहीं, जो चढ़ घूंसे खाय।
दुश्मन का मुँह तोड़ते, वे क्षत्री हम आंय।
वे छत्री हम आंय, सामने से नहीं डरते।
जो मौका पर जाय, सूर के सन्मुख लड़ते।
लाखन की यह बात सुन, पृथ्वी कहीं ललकार।
कबसें तरबरिया हो गये, फिर बौधन खों तरवार॥
ललामी छार यी बेतवा नदिया पै।

स्रोत-फागपार्टी, सुरजपुरा खुर्द

नदी बेतवा के तट पर युद्ध हुआ, इतनी ज्यादा मार-काट हुई कि बेतवा के जल में रक्त मिल जाने से जल का रंग भी रक्त वर्ण हो गया। कनवज राजकुमार लाखन राना की तलवार ने तो दुश्मन फौज का सफाया ही कर दिया। लाखन की अभी बहुत थोड़ी उम्र है, लेकिन वह तलवार के धनी हैं, रण में उन्हें बड़ा कौशल प्राप्त है। उनकी हथनी साँकल घुमाकर सैनिकों को मारती है, लाखन के सामने बड़े-बड़े शूरवीर नहीं टिकते। उनकी वीरता पर दिल्लीपति पृथ्वीराज भी अपनी दाँतों तले अगुलियाँ दबाये हैं। पृथ्वीराज ने लाखन के गले में मोहनमाला पहना दी तथा बड़े सहज भाव में मुस्कराते हुए बोले- राजकुमार! तुम बड़े शूरवीर हो, मैंने तुम्हें जान लिया। लेकिन आपकी क्या पड़ी जो व्यर्थ में हैरान हो रहे हो। अरे! हमसे संधि कर लो, फिर हम दोनों मिलकर चढ़ाई कर देंगे। तुम्हें महोबा विजय के पश्चात् पारस पथरी दे देंगे और हम लूट का माल ले लेंगे। पृथ्वीराज की बात सुन लाखन बोले कि यह वीरोचित बात नहीं है, हम क्षत्रिय होकर किसी को धोखा करें। अरे! हम तो तेग के बल पर छीनना जानते हैं। मैंने अपने मन में तुम्हारी चौहानी राजपूती को जान लिया। अरे! आप कायरों की तरह बात करते हैं। हिम्मत हो तो सामना करो। अरे! हम तो वे क्षत्री हैं, जो दुश्मन के सामने लड़ते हैं। लाखन की बात सुन पृथ्वीराज क्रोधित हो गये और बोले कि ज्यादा बड़बोलापन अच्छा नहीं, तुम कब से शूरवीर हो गये, कब से तलवार चलाने लगे? उन्होंने लाखन को युद्ध के लिए ललकार लगाई।

मोरो अब गौनो नियरानो,
करबी कौन बहानो।
आऊन लगे पिया के घर के,
टिया टारिने कानो।
छूटे जात साथ सबही कों,
मन मतंग पछतानों।
हम एक दिन होने विदा ईसुरी
आगमन आन दिखानो॥

स्रोत-श्री कल्लू गोंड एवं साथी गायक, गुओरी

मेरे गौने का समय नजदीक आ गया है। अब कौन सा बहाना करें। मुझे लेने सुसराल वाले आने लगे हैं, कब तक क्या-क्या बहाने करूँ? मेरा मन घबरा रहा है कि सब संगी-साथी छूटे जाते हैं। ईसुरी कहते हैं कि एक न एक दिन तो जाना ही पड़ेगा। यह भविष्य दिखने लगा है, जिसने इस संसार में जन्म लिया है। उसे एक न एक दिन तो विदा होना पड़ता है, उसके सामने कोई बहाना नहीं चलता। इस संसार से विदा होते ही सारे रिश्ते-नाते छूट जाते हैं। यही सबसे बड़ा सत्य है।

कौसल भये सरदार, सगोना रूखों में राजा हो गये।
कौसल हैं सरदार बना है बड़ा कमिश्नर

जामुन मिट्टी आप जे चीफ कमिश्नर
सीताफल छिरोही भये, राजा भये अचार
घटोली पहरे वारो, मुंशी अनार बकोली
आंवला छेवला तहसीलदार
बाबू बनी बबान, मजिस्ट्रेट माहुल भये
धबा भये कसान, साज हल्का निस्पिट्टर
बहेरो है कम्पोटर, दईया खो दायनी भई
भिलमा लम्बरदार, करोंदा रहे दरोगा
मिरची है गुणवान, मैट है मैनर चम्पा
चौसा तेंदू बजरिया बीजों के ठेकेदार
कसई बमूरा सेमरा, पलटन के ठेकेदार॥
सगौना रूखों के राजा हो गये॥

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

उक्त फाग में सारे वृक्षों के गुण तथा उनके ओहदे दिये गये हैं। उक्त गीतों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बुन्देलखण्ड अंचल में भी वृक्षों का हमारी संस्कृति से अटूट संबंध रहा है।

ननदी सांजय दियला, काय ने जराये।
ठाँट ने टूटो घर ने फूटो, ले गव तारों टोर।
दस दरबाजे बंद पड़े रय, निकर गओं कौं ओर,
दुलरी लेगव बाँगरी ले गव, दई समंद में बोर
गगन गुफा बैठी सुहागन, लगी राम से डोर
जों लो ननदी दिया उजारों, जो लों होगव भोर
जम राज छाती चढ़ आये, डारें पिरान मकझोर
कहत कबीर सुनो भाई सादु, नगर में होगव सोर

कबीर साहब कहते हैं कि पति की बहिन से भाभी कहती है कि शाम के समय उजाला क्यों नहीं किया? न छप्पर ही टूटा न ही घर में सुरंग हुई और न ही ताला टूटा और चोरी हो गई। मनुष्य माया में इतना फँसा हुआ है कि अपने अंदर ज्ञान के प्रकाश का उजाला ही नहीं किया, जबकि शरीर का कोई अंग न तो क्षतिग्रस्त हुआ और न प्राण निकल गये।

तन को तनक भरोसो नइयां, काहे करत गुमाना
टेड़े चलें मरोरें मूंछें, माया में लिपटाना
ठोकड़ लगे चेत कें चलना, कर जाये पिरान पयाना
मेरा-मेरा करता डोले, माया देख लुभांना

ऐ बस्ती में रेनें नईयां, सांचे घर खों जाना
पीर फकीर ओलिया जोगी, रये नें राजा रानी
सबके ऊपर तक-तक मारें, काल अचानक बाना
काम क्रोध मद लोभ छोड़कर, सरन धनी के आना
कहत कबीर सुनो भाई संतों, हरि बिन नईयां कहीं ठिकाना।

स्रोत-ग्राम-चौका

संत कबीरदास जी कहते हैं कि माया रूपी संसार पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस शरीर का कोई भरोसा नहीं, कब इस शरीर से आत्मा निकल जाय। इसलिये इस शरीर के अभिमान में मनुष्य सीधा रास्ता नहीं चलता। उसको यह पता नहीं, जिस पर इतरा रहा है, एक दिन किसी काम का नहीं रहेगा। इस माया जाल से बाहर निकलो और सोचो कि यह शरीर नाशवान है, मृत्यु रूपी ठोकर लगने से पहले सतर्क होकर सद्‌गुणों की राह अपनाओ। क्या तेरा है, जो हर घड़ी माया लोभ में फँसता चला जा रहा है। इस माया रूपी संसार को एक दिन सभी को छोड़ विलीन हो जाना है, परमात्मा ही उसका साँचा घर है। काल की गति न्यारी है, वह किसी पर दया नहीं करता, जिसका समय पूर्ण हो जाता है, आत्मा शरीर के बंधन से मुक्त हो जाती है। चाहे पीर, फकीर, ओलिया, जोगी, राजा या रंक हों, सभी को एक दिन जाना है। कोई अमर होकर नहीं आया, सभी एक ही माटी के पुतले हैं। उसी में सबको मिल जाना है। परममुक्ति का यही उपाय है- काम, क्रोध, लोभ पर जो इंसान जीत जाता है, वह सद्‌गति को प्राप्त होता है। कबीरदास जी कहते हैं कि उस हरि के बगैर किसी का ठिकाना नहीं है, एक दिन उसी में समा जाना है।

दूर-दूर डेरा मिलन कैसे होय
कहां चंदा कहां सूरज रे
कहां तारे होंय दूर-दूर
कहां गंगा कहां जमना
कहां सूरज होंय दूर-दूर
कहां विरम्मा कहां बिसनु रे
कहां नारद होंय दूर-दूर रे
कहां रामा कहां लछमन रे,
कहां हनमत होंय दूर-दूर
कहां राधा कहां रूकमन
कहां मोहन होंय दूर-दूर
डेरा मिलन कैसे होय

स्रोत-ग्राम-परसिया

चाँद, सूरज, तारे, गंगा, जमुना और सरयू कहाँ स्थित हैं? क्या इनका मिलन संभव है?

ब्रह्मा, विष्णु, नारद, राम, लक्ष्मण, हनुमान, राधा, रुक्मिणी और मोहन सब अपने आपमें महान हैं, सबकी अपनी-अपनी गरिमा है, इनसे मिलन कैसे होगा? क्योंकि दूर-दूर इनका निवास स्थान है।

गोरा बियाय लय जाय री,
ऐसो मैंने बाबा नें देखो
महल अटारी उने नें भावे रे
परबत पे धूनी रमांय री,
हाती घोड़ा उने नें भावे रे,
बेला पे मलकत जांय री,
तारे झूला उने नें भाय री,
डमाडम डमरू बजांय री
डमरू बजाय चलो जाय री
तुलसीदास आस रघवर की
मगन होय चले जाय री,
गोरा बियाय लय जाय री
ऐसा मैंने बाबा नें देखो

स्रोत-ग्राम-परसिया

शिवशंकर जी विवाह करने जा रहे हैं। नगरवासी देखकर कह रहे हैं कि इतनी सुन्दर हमारी राजकुमारी को साधु बाबा विवाह करने आया है, बड़ा अजीब है। उसको महल अटारी अच्छे नहीं लगते, ना ही हाथी-घोड़ा पसंद है। कहते हैं- कैलाश पर्वत पर धुनी-समाधि में लीन रहते हैं। नंदी उनकी सवारी है। तारे मजीरा नहीं सूझते हैं, तो डमरू बजाते घूमते रहते हैं। पार्वती जी से विवाह कर अपनी धुन में मस्त चले जा रहे हैं।

माखन की चोरी छोड़,
कनैया में समजा रई तोय,
नो लख गौऊयें नंद बाबा की,
नित दिन माखन होय,
चोरी करन गये बरसाने,
जो लो हो गये भोर,
एक दिना गुआलन के घर में
रहे खिरकियां खोल,
जाग उठी चतुर सियानी,
पकर लये दोऊ हांत,

पकर हात बांद ले गये मोहन,
बाबा नंद के दोर,
टोर लबोदर आर की रे,
कहां मार दय तोय,
बोदर देखे मोहन रोबें,
दुख माता खों होय,
कहत कनैया सुनले मैया
हंस ललकारे मोय,
चोरी न छोड़े दद माखन की,
जो होने सो होय

स्रोत-ग्राम-परसिया

प्रस्तुत फाग में नटखट श्याम की बाल क्रीड़ाओं को दर्शाया गया है। राधा-श्याम से कहती हैं कि घर-घर में तुम माखन की चोरी करते हो? नौ लाख गायें आपके यहाँ हैं, हर दिन माखन होता है, फिर क्यों ऐसा करते हो। एक बार माखन चुराने बरसाने गये तो वहाँ पहुँचते-पहुँचते सुबह हो गई। एक चतुर ग्वालन के यहाँ खिड़की खोलकर अंदर घुस गये। ग्वालन की नींद उचट गई और वह पकड़कर दोनों हाथ बाँधकर नंद बाबा के दरवाजे ले गयीं। काँटेदार छड़ी तोड़कर कन्हैया को डराने लगी कि कहाँ से मारना शुरू करूँ, अब तो चोरी नहीं करोगे। कन्हैया क्यों डरने वाले थे? अपनी माता से हँसकर कहते हैं कि सुनले माता चोरी तो नहीं छोड़ूँगा चाहे जो करना हो कर लो, माखन तो चुराऊँगा।

तुम बिन चेन परत नइयां, मायके नें जाव ऐसे में।
चार मइना बसकारे के लागे, चूना चुअत बिछोना में
बंगलैइया छुआव में।
चार मइना जड़कारे के लागे, थर-थर कंपत बिछोना में
रजइया भराव ऐसे में।
चार मइना जेठ मासों के, चोली भींजे पसीना में
बिजनइया डुलाव ऐसे में।

स्रो-ग्राम-परसिया

नये-नये विवाह के कुछ समय पश्चात् प्रीतम पत्नी से कहता है- प्रिय! अपने मायके मत जाओ, तुम्हारे बगैर घर सूना-सूना लगता है। इस पर पत्नी कहती है कि बारिश आ गई है, बारिश का पानी छप्पर से सेज पर गिरता है, छप्पर मजदूर से ठीक कराओ, नहीं तो मैं मायके चली जाऊँगी। फिर ठंड का मौसम आने वाला है, ठंड में थर-थर काँपूँगी, गरम रजाई भरवाओ, नहीं तो मैं मायके चली जाऊँगी। गर्मी के मौसम में पसीने से मेरे वस्त्र भीग जायेंगे, तुम पंखे से मुझे हवा करना। अगर इतना काम नहीं किया, तो मैं मायके चली जाऊँगी।

ठांड़े दसरथ के दोर, रामा लखन मांगे दियो हाँ
रामा लखन दोउ हमखों दे-दे
मोरे कारज बन जावें
धरनी के भार उतर जावे

स्रोत-ग्राम-परसिया

संन्यासी राजा दशरथ के दरवाजे पर खड़े भिक्षा माँग रहे हैं। भिक्षा भी इतनी कीमती कि दशरथ जी से छोटे-छोटे सुकुमार बालक राम-लक्ष्मण को माँग रहे हैं। यज्ञ के रक्षार्थ, क्योंकि राक्षसों का अत्याचार बढ़ रहा था। पूजा में व्यवधान डालना उनका नित्य का कार्य था। इस कारण दोनों बालकों को कुछ समय के लिए माँग रहे हैं।

ब्राह्मण, साधु-संन्यासियों की रक्षा करना सूर्यवंशी चक्रवर्ती महाराज दशरथ आपका कर्त्तव्य है। आप मोह-ममता को त्यागिये। दोनों बालक धर्म की रक्षार्थ पैदा हुए हैं। राक्षस राज का अंत करने के लिए प्रभु ने अवतार लिया है। इस पृथ्वी से राक्षस कुल का विनाश इन्हीं के हाथों होगा, आप निश्चिंत रहिये। मेरा काम बन जायेगा।

राखो मोरी लाज
माता रानगिन बारी

जगत जननी माँ आदि शक्ति से प्रार्थना करते हैं। माँ मुझे आशीर्वाद देना, मुझे कार्य करने की शक्ति प्रदान करना।

झिलमिल फरिया पाटकी रे,
हमसे ने ओड़ी जाय,
बालापन की दोस्ती रे,
हम से ने छोड़ी जाय,
दोस्ती बालापन की निबाले,
कोना सुरा तोरो माई मायको
अब कोन पुरा सुसरार रे,

बचपन का प्यार पचपन की उम्र तक नहीं भूलता है। नायिका का विवाह हो रहा है। दु:ख से व्याकुल होकर कह रही है कि सितारों वाली झिलमिलाती चुनरी मैं नहीं ओढ़ पाऊँगी। क्योंकि बचपन की प्रीत मैं नहीं छोड़ पाऊँगी। मैं दु:ख से व्याकुल हूँ। नायक कहता है कि बचपन की दोस्ती और प्यार निभाने का समय आ गया है। कहाँ तुम्हारी माँ का घर है, कहाँ पर तुम्हारी शादी हुई है, मुझे बताओ।

मांगे रे कैकई ने अवदान,
रामा निकर बन खों गये हाँ,
धरनी हले धनुस के टोरे
देवरा थामे कैकयी रे

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

भगवान रामचन्द्र के राज्याभिषेक की तैयारियाँ चल रही हैं। अंदर रनिवास में रानी कैकेई कोप भवन में बैठी महाराज की प्रतीक्षा कर रही हैं। महाराज आते हैं रानी का हाल देखकर पूछते हैं- क्या बात है प्रिय? किस दु:ख से दु:खी हो? अपना हाल बताओ? कैकेई बोलीं- महाराज! आपसे दो वरदान चाहिए। आपने वचन दिया था, जब चाहे तब ले लेना, अब वह समय आ गया है। बस, इतनी सी बात- माँगो वर। महाराज सोच लीजिये। क्या सोचना। तो सुनिये पहला वरदान भरत को अयोध्या का राज्याभिषेक और दूसरा राम को चौदह वर्ष का वनवास। ये दोनों वर महाराज ने पूर्ण किये थे।

दे-दे रे बनसी की टेर,
राधा, हिरानी मोरे कुंजन में

सखियाँ श्याम से कहतीं कि प्रभु बाँसुरी की तान दें, क्योंकि राधा मेरे बगीचे में खो गई हैं। बाँसुरी की धुन सुनकर दौड़ी चली आयेगी।

अमिया रे हेरत डार,
सुआ रे हरामी अरेजे मरे हाँ,

आम्र के वृक्ष में छोटे-छोटे फल आ गये हैं, तोता एक-एक आम को देख रहा है। जो वृक्षों की रखवाली कर रहे हैं, उनको अपशब्द बोलकर उन्हें भगाने की कोशिश कर रहे हैं कि ये हरामी क्यों नहीं मर जाते, सारे आम कुतर-कुतर का फेंक रहे हैं।

पेंले रे सुमरें रे गनेस,
दूजे रे मना ले मैया सारदा।

मैं अपना कार्य प्रारम्भ करने से पहले विघ्न विनाशक गणेश जी की प्रथम स्तुति करता हूँ कि मेरा अमुक कार्य बगैर बाधाओं के पूर्ण हो। दूसरा मैं मैहरवाली जगत जननी माता शारदा का स्मरण करता हूँ कि माँ मेरी लाज रखना।

डारन दे महाराज आज रंग डारन दे
कै मन केसर घोरी बिरज में कै मन उड़त गुलाल
नौ मन केसर घोरी बिरज में दस मन उड़त गुलाल
कोना की भींजे चुनरी, कोना की पचरंग फाग रे,

राधे की भींजे चुनरी, काना की पचरंग फाग रे,
मोय रंग डारन दे महाराज

स्रोत–ग्राम–गुटोरी

ब्रज की बालाएँ कृष्ण से कहती हैं कि आप हम लोगों के साथ फाग खेलिये। आप आयेंगे, इस कारण नौ मन केशर घोल के रखा है। दस मन विभिन्न रंगों को इकट्ठा किया गया है। आप राधा जी के साथ रंग गुलाल खेलने में इतने मस्त हैं कि आपकी पगड़ी रंगों से सराबोर हो गई है तथा राधा जी चुनरी भींज गई है। आप हम लोगों को भी रंग डालने दीजिये।

बनसी दे–दे राधा मोरी रे,
काये की तोरी बनी बांसुरिया,
काहे की लागी डोरी रे,
हरे बाँस की बनी मुरलिया,
रेसम लागी डोरी रे,
ओ बनसी में मोरे प्रान बसत हैं,
वई बनसी गई चोरी रे

स्रोत–ग्राम–आधारपुर

कन्हैया राधा से अपनी मुरलिया माँगते हैं। प्यारी राधा कहती हैं कि यह बाँसुरी किस वस्तु से निर्मित है और इसमें कौन सा धागा लगा हुआ है? श्याम कहते हैं– हरे बाँस से बाँसुरी को बनवाया गया है और रेशम के धागे से सजी है और उसी के फुँदने लगे हुये हैं। राधा जी बोली– ये बाँसुरी मैं नहीं दूँगी। इसी में मेरी आत्मा निवास करती है और उस पर वह बाँसुरी तो चोरी चली गई है, मैं कहाँ से आपको दे दूँ।

सीता राम आ रे हिरदे बसा ले डेरा डार के
आ रे सीता राम हिरदे बसा ले डेरा डार के
भज ले सीता राम मन होले–होले।
भज ले सीता राम मन होले–होले।

स्रोत–ग्राम–आधारपुर

प्रभु श्रीराम–सीता को हृदय में बसा लो, जिनके भजन करने से जीवन सफल हो जायेगा। प्रभु श्रीराम के नाम स्मरण मात्र से यह लोक सुधर जायेगा, इसलिए धीरे–धीरे प्रभु श्रीराम नाम संकीर्तन से जीवन सफल करो।

मो पे रंगों नें डारो सांवलिया
मैं तो ऊँसई अतर में भींजीं लला
मो पे रंगों.....

भर पिचकारी ओके घुँघटों हो मारी
घुँघटों की सोबा बिगारी लला
मो पे रंगों .....
भर पिचकारी ओके नैनों हो मारी
नैनों की सोबा बिगारी लला
मो पे रंगों .....
मैं तो ऊंसई अतर में भींजीं लला .....
भर पिचकारी ओके गलुओं हो मारी
गलुओं की सोबा बिगारी लला
मो पे रंगो ने डारो .....

स्रोत–ग्राम–आधारपुर

ब्रज में होली की धूम मची हुई है और राधा ब्रज बालाओं के साथ होली खेलने में मस्त हैं। इतने में नटखट श्याम आकर राधा के ऊपर रंग डालने लगते हैं। राधा कहती हैं कि मेरे ऊपर रंग मत डालो, मैं तो इत्र में नहाई हुई हूँ, लेकिन छलिया श्याम नहीं मानते हैं। रंगों से पिचकारी भर प्यारी राधा के घूँघट और नैनों पर मारते हैं। राधा की साड़ी और सुन्दर वस्त्रों की शोभा बिगाड़ दी एवं गालों पर गुलाल मलकर खूबसूरती बिगाड़ दी है। राधा आग्रह करती हैं, मेरे ऊपर रंग मत डालो, मैं तो वैसे ही इत्र से नहाई हुई हूँ।

सिर बांदे मुकुट खेलें होरी
पेली होरी री मैंने मायके में खेली
ननदे भौजईया की है रे जोरी॥
दूजी होरी री मैंने ससुरै में खेली
देवर भौजईया की है रे जोरी॥
तीजी होरी री मैंने, अजुद्दया में खेली
रामा लछन की है रे जोरी॥
चौथी होरी री मैंने बरसाने में खेली
राधा किसन की है रे जोरी॥
पंचवी होरी री मैंने परवत में खेली
गौरा महादेव की है रे जोरी॥

स्रोत–ग्राम–गुटोरी

प्रभु सिर पर मुकुट धारण किये हुए होली खेल रहे हैं। पहली होली मैंने मायके में खेली। ननद–भाभी की होली देखने योग्य होती है, दूसरी देवर–भाभी के बीच होली का अलग ही आनंद आता है, तीसरी होली अयोध्या में भगवान राम और लक्ष्मण के बीच हुई थी, चौथी होली

बरसाने में राधा और कृष्ण के बीच, ये यादगार होली खेली गई। पाँचवी होली पार्वती और महादेव जी ने पर्वत पर खेली थी।

कजरी वन बारे भौरा रे
कौना कईये सिया जानकी
कौना की कईये गौरा रे॥
राजा जनक की सिया जानकी
अरे राजा हिमाचल गौरा रे॥
कौना हो ब्याह दए सिया जानकी
कौना हो ब्याह दए गौरा रे॥
राम हो ब्याह दए सिया जानकी
भोला को ब्याह गौरा रे॥
काहां उतर हे सिया जानकी
काहां उतर हे गौरा रे॥
मढ़िया उतर हे सिया जानकी
मढ़िया उतर हे गौरा रे॥

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

कजली वन के भौंरा बताओ जानकी और पार्वती जी किसकी लड़की हैं। भौंरा कहता है कि सीता जी राजा जनक की सुपुत्री तथा पार्वती जी राजा हिमाचल नरेश की राजकुमारी हैं। इन दोनों के विवाह किस-किस के साथ हुये हैं। जनकनंदनी सीता का स्वयंवर भगवान श्रीराम जी के साथ हुआ तथा पार्वती जी का विवाह पर्वतवासी महादेव जी के साथ हुआ है। इन दोनों का निवास स्थान कहाँ हैं? इन दोनों का स्थान मंदिरों में है।

जो तन बाग बलम कौ नीको
सीगें सुहाग अमीं कौ
श्री फल रये अंगिया भीत रे,
मदरस चुंअत लली कौ
लेत पराग अधर पै मधुकर
निकसी कमल कली कौ
ईसुर कात रखाये रइयो
हुयै न छैल गली कौ

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

प्रस्तुत फाग में नायिका के प्रीतम परदेश गये हुये हैं। वह अपनी सौत से कहती है कि शरीर रूपी बगीचे की देख-रेख कर रही हूँ, यह मेरे प्रीतम का है। मैंने अपने सुहाग से इस

बगीचे को सींचा है। नायिका यौवन में श्रीफल के समान चोली के भीतर से सीने के उभार को देखकर मद से भरी हुई प्रतीत होती है। नायिका के अधर की बनावट कमल कली के समान है। रसीले अधर को भ्रमर रसपान के लिए लालायित हैं। ईसुरी कहते हैं- इस मद भरे बगीचे को सम्भाल कर रखना, नहीं तो गली के मनचले युवक इसका रस पान कर लेंगे।

पिया खरचा नें करो धन घट जैंहे हटकत है पदमसी नार
गाँजो भाँग अफीम छोड़ दे, पान मसालेदार
इतनी बातें तुम करो, धन कौ नैयाँ पार,
मांगे से देबे नहीं, फिर घूरे पे की राख
घूरे पे की राख, काम जब बने तुमारो
घी सक्कर नईं खाव, देह क्यों देव कसारो
नेवतो ने बलइयो कबऊं, हितुआ नातेदार
भूल चूक आ जाँय कबऊं तो, करियो ने सतकार
करियो ने सतकार, चमक जब ओखों आवे
हार खेत उई घरों, माँगनों मुड़ी ने पावे,
जे इतनी बातें कर लियो, मानो तुम भरतार
भारी-भारी पाँवने, करो भोर के दोर।

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

एक गृहिणी अपने प्रीतम को फालतू पैसा खर्च करने से रोक रही है। प्रीतम पैसा खर्च नहीं करो, नहीं तो सारा धन खर्च हो जायेगा। नशीले पदार्थ-गाँजा, भाँग, अफीम और मसालेदार पान छोड़ दो, अगर इतनी बात मान लोगे, तो धन बहुत होगा। यदि तुम्हारा कोई काम बनने को होगा, तो कोई तुम्हारे काम नहीं आयेगा। सब पैसे के दोस्त हैं। वक्त पर तुम्हें कोई कचरा और घर की राख भी नहीं देगा। शुद्ध घी-शक्कर भी कम खाओ, नहीं तो अधिक चर्बी बढ़ेगी और आलस्य घेरेगा। अतः अपने संबंधियों एवं हितैषियों को कभी भोज्य का निमंत्रण मत करो। अगर भूल-चूक से निमंत्रण कर लो, तो सत्कार मत कर लेना। खेत-खलिहान, घर पर भिखारी आ जाए, तो खाली हाथ भगा देना। ये इतनी बातें दिमाग में बिठा लो। अगर बड़े-बड़े निमंत्रण बाहर से आयें, तो दौड़-दौड़ कर सबको लेकर जाना।

फागुन भर की फाग
राजा ससन भर के खेल ले।
प्रीत करो ऐसी जैसे लोटा डोर
अपनो गरो फंसाय के, पानी ल्याबे बोर।
प्रीतम प्रीत लगाय के, दूर बसन जिन जाव
रहो हमारी नागरी, तुम बिन कछु न सुहाय।

रहीमन धागा प्रेम का, जिन टोरें भटकाय
टूटे से फिर न जुरे, जुरे गांठ पर जाय।

स्रोत-ग्राम-गुटोरी

नायिका कहती है- मुझसे प्रीत कर दूर देश निवास करने क्यों जा रहे हो? फागुन का महीना नजदीक आ रहा है, मैं अपने राजा के साथ जी भर फाग खेल सकूँ। जिस तरह लोटा-डोर का साथ एक दूसरे से अलग नहीं होता, उसी तरह तेरा-मेरा साथ रहेगा। मैं आपका वियोग सहन नहीं कर सकती। आप मुझे घर पर छोड़कर परदेश बसने जा रहे हैं। कविवर रहीम की पंक्ति सत्य है - प्रेम की डोर एक बार बँध जाती है, तो डंडे से भी नहीं टूटती है, यदि एक बार टूट जाय, तो फिर जुड़ती नहीं है, वरन् गाँठ पड़ जाती है। इसी तरह प्रेम कच्चे धागे के समान है, एक तो टूटता नहीं है, टूट जाय तो हमेशा के लिए गाँठ पड़ जाती है।

जाव राधा चली जाव राधा
मनमोहन खों ढूंढ़ ल्याव, जाव राधा
फूलों की डलियाँ सिर पे रख लेव
मालन बनी चली जाव राधा
दैइरा की मटकी सिर पे रख लेव
ग्वालन बनी चली जाव राधा
चूरियाँ की डलियाँ बगल में दबा ले
मनहारन बनी चली जाव राधा
सुन्ने के कलसा हाथ में लेव
पनहारन बनी चली जाव राधा
पांच सकि जुर जाव राधा
उरायनो देवे चली जाव राधा

ब्रजबालायें राधा जी से कहती हैं- प्यारे मोहन को ढूँढ़कर ले आओ। किसी भी तरीके से चाहे मालिन बनकर फूलों की टोकरी सिर पर रखकर टेर लगाती हुई मोहन को ढूँढ़ो या ग्वाल बनकर दही की मटकी सिर पर रखकर या मनहारिन बनकर चूड़ियों की टोकरी सिर पर रखो, चाहे पनहारिन बनकर सोने की धातु से निर्मित कलश लेकर मनमोहन को खोज कर लाओ। हे राधा! तुम पाँच सखियाँ मिलकर उलाहना लेकर यशोदा के पास चली जाना।

भई ने बिरजा की भोरा रे
कहाँ रहती और कहाँ चुनती, कहाँ करती किलोला, रे भई
गंगा रहती और गोकल चुनती, कुंजल करती किलोला, रे भई
बिन्द्रावन के बड़े बगीचा रे, बैठी पंख सकोरा, रे भई
उड़-उड़ पंखी गिरे धरनी पे, बीनें नंद किसोरा, रे भई

उन पंखों के मुकुट बनत है, बांदे जुगल किसोरा, रे भई
चंद सकि भुज बाल कृष्ण छब, हरि चरनों की ओरा, रे भई

स्रोत–ग्राम–बांकोरी

हे प्रभु! मुझे ब्रज का मोर पक्षी बनाना, ताकि गोपाल कृष्ण की लीलाओं का आनंद उठा सकूँ। चंद्रसखि प्रभु श्याम के अनन्य भक्त हुए हैं। मैं मोर होती तो कहाँ दाना चुगती, कहाँ पर खेलती? गंगा किनारे निवास करती, गोकुल धाम में दाना चुगती, कुंज बगीचों में खेलती। वृन्दावन के बगीचे बहुत बड़े–बड़े है, मैं तो पंखों को समेटकर एक छोर पर बैठती, मेरे पंख पृथ्वी पर गिरते और नंद के लाल उनको बीनते। प्रभु उन पंखों के मुकुट बनाते और अपने सिर पर धारण करते, उस छवि को मैं बार–बार निहारती और उनके चरणों का गुणगान करती।

यसोदा मैया लाड़ दुलारे सें
मनमोहन बिगर गए बारे सें
माखन मिसरी दूद मलाई
ढूँढ़त फिरैं सकारे सें
मनमोहन बिगर गए बारे सें
जब हम जाबें पनियां भरन खों
कंकर मारे इसारे सें
सखियाँ हमखों बुला रही इसारे सें
सात सकि मिल उरायनों दे रईं
अबका होत सुदारे सें
जब हम जाबें जमना सपरन खों
चीर उड़ा लए इसारे सें
अबका होत सुदारे सें
मनमोहन बिगर गए बारे सें

स्रोत–ग्राम–बांकोरी

सखियाँ माता यशोदा से कहती हैं कि छोटे में अधिक लाड़–प्यार के कारण आपने ध्यान नहीं दिया, इसलिए कन्हैया बिगड़ गए हैं। उनका तो प्रात:काल होते ही नित्य का काम सखाओं के साथ माखन–मिसरी की ताक में घूमते रहना है। कब–किसका घर सूना हो और घुसकर माखन–मिसरी, दूध–मलाई खा लूँ। ब्रजबालाएँ पानी भरके जब निकलती थीं, तो मटकियों को कंकड़ मारकर फोड़ दिया करते थे। ब्रजांगनाएँ जब यमुना जी में स्नान करने जाती थीं, तो उनके वस्त्रों को समेटकर कदम्ब के वृक्ष पर रख देते थे, और कहते थे कि मैया से मेरी शिकायत करने आप लोग जायेंगी। नटखट श्याम ब्रजबालाओं को बहुत सताया करते थे। सखियाँ कहती हैं– अब अपने लाड़ले को सुधारने से थोड़े ही सुधर जायेंगे। वो तो बचपन से ही बिगड़े हुए हैं।

पवनसुत कैसी बनी है गढ़ लंका
हँस पूछें राजा राम पवनसुत कैसी बनी
चित्रकोट सोने की लंका हीरा लगे अपार
अनि चमकत है न्यारी घनी बेल सुंदर गोटादार
उर चौतरफा गढ़ एक सी पवनसुत कैसी बनी
सहर भरे अपार उतईं हते जंगी राजा
लयें धनुस बान हाथ नंगी तरवार
उर चंदन की चौखट लगी उर बज्जूर लगे किबार
दरवाजे पे ऐरे लग जे ठांड़े वीर मलखान
लख्खों घोड़ा पालकी उर लाखों घोड़ा ऊँट
बने अखाड़े भोत से जे गरजे चारों खूँट
गरजें चारों खूँट जहाँ रावन के मंदर
उतईं मनोहर बाग उर लंका के कल छाकीं
परें छावनी फिर नेंचे लगे बजार गढ़ लंका के
जहाँ नों मन को दानी सोवे लंक मंजार
बलिराम कतकें कहें निर्भूल डटी है नींद

स्रोत–ग्राम–निवारी खुर्द

प्रस्तुत फाग में रावण की स्वर्ण लंका की शोभा का वर्णन हनुमान जी कर रहे हैं। प्रभु राम हनुमान जी से लंका के बारे में पूछते हैं। समस्त लंका स्वर्ण से निर्मित है। उसके परकोटों पर सुंदर–सुंदर चित्र बने हुए हैं। उसमें हीरों की तो गिनती ही नहीं है। जवाहरातों के कणों की छटा निराली ही बिखर रही है। सुंदर बेलबूटे और गोटादार बनी हुई जालियाँ हैं। चारों तरफ एक से एक सुंदर महल, ऊँची अट्टालिकाएँ कलात्मक तरीके से बनी हुई हैं। महादैत्यों का पहरा है, वे चौबीस घंटे हाथ में धनुष–बाण और तलवार लिए चौकसी के साथ पहरा देते हैं। दरवाजों की चौखटें से मलयागिरी चंदन की खुशबू चारों तरफ महकती रहती है। उनके वज्र के समान पट वाले किवाड़ एवं उनमें भारी वजनी ताले लगे हुए हैं। उन हाथी दरवाजों पर बड़े–बड़े महाबली मल्ल कौशल में प्रवीण पहरा दे रहे हैं।

लाखों की तादाद में घोड़े, ऊँट, हाथी अस्तबल में बँधे हुए हैं, जो बेशकीमती नस्ल के हैं। शहर के चारों तरफ अनगिनत अखाड़े सजे हुए हैं, जिनमें पहलवान निरंतर अभ्यास करते दिखाई देते हैं। उनकी गर्जना, अट्टहास बड़ी भयानक प्रतीत होती है। इन सबके बीच में रावण का विशाल सुंदर महल बना हुआ है, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। उसी से मनोहारी सुंदर बाग–बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें अनेक किस्म के पुष्प एवं फलदार वृक्ष की खुशबू से मन को अति सुखदायी प्रतीत होता है। महल के ऊपर स्वर्ण कलश रखे हुए हैं, जिनमें बेशकीमती हीरे–जवाहरात जड़े हुए हैं, जिनकी आभा चारों तरफ फैल रही है। इसके पश्चात्

सेना की छावनियाँ बनी हुई हैं। नीचे मीना बाजार भरे हुए हैं। महल के ही बाजू से रावण का महाबली पराक्रमी भ्राता कुंभकरण महादानी जिसका वजन नौ मन है, अघोर निद्रा में लीन सो रहा है। लोककवि बलिराम जी कहते हैं कि रावण की लंका का वर्णन करना अतिशयोक्ति नहीं है।

हँस पूछे राजा राम, पवनसुत गढ़ लंक कैसी बनी,
चित्र-विचित्र महल बने हैं, सोने के भारी
हीरा पुखराज कनी चमकत है न्यारी
बेल भरी चमके घनीं, सुंदर बूटादार,
चौगरदा गढ़ लंक के, साहिर भरो अपार,
साहिर भरो अपार, जहाँ सुन्ने दरवाजे
आठऊं पहर बाजत है बाजे
किसम-किसम के ठौर पे घूमे तबल निसान,
दरवाजे के भीतरे लंका को बड़ो विस्तार
लंका को बड़ो विस्तार, द्वारे ठाड़े जंगी राजा,
लये धनुस ढार तरवार नंगी,
लख्खों कहिये हाथिया लख्खों घोड़ा ऊँट
बने अखाड़े भोत से गुरजा चारई खूट॥
गुरजा चारऊं खूट, बावरी हुए बराबर
ऊँची नेची जगह नहीं, सब एक बराबर
नौ रतन की महल बने, लगे कगूरों लाल
कलसा उपरे, खाली लगे बजार
खाली लगे बजार, उँतई रावन के मंदर,
मूरत धरी विसाल, ऊँतई कांवल सुन्दर
बलीराम कथके कहें सुनियो चतुर सुजान
राम लखन लंके चढ़े, असुर भये हैरान

स्रोत-ग्राम-बांकोरी

भगवान रामचंद्र जी तात हनुमान से पूछ रहे हैं- लंका नगर का बखान करो, कैसी बनी है? प्रभु! भिन्न-भिन्न शैलियों के सोने के महल बने हुए हैं। उनकी चित्रकारी बहुत कलात्मक ढंग से बनी हुई है। उसमें हीरा-जवाहरात, पुखराज के कण को सुन्दर ढंग से गढ़ा गया है। इतना ही नहीं, सुंदर बेलबूटे ऐसे चमक रहे हैं कि उन भवनों की शोभा का बखान नहीं किया जा सकता। लंका चारों तरफ से परकोटा से घिरी है और विशाल क्षेत्र में नगर बसा हुआ है। विशाल सोने के जड़े हुए दरवाजे बने हैं। चौबीस घंटे वाद्य यंत्रों की मधुर एवं जोशीली धुन बजती रहती

है। नगर के प्रमुख चौराहों, ठिकानों पर तबल निशान लिये योद्धा घूमते रहते हैं। वीर महाबली मल्ल योद्धा दरवाजे पर पहरा देते हैं। हाथ में नंगी तलवार और अस्त्र-शस्त्रों से सुरक्षित रहते हैं। लाखों की संख्या में घोड़ा, हाथी, ऊँट अच्छी नस्ल के हैं। लंका के चारों कोनों पर अखाड़े बने हैं, जिनमें योद्धा अभ्यास करते रहते हैं। चारों तरफ बड़ी-बड़ी सुंदर बावड़ी बनी हुई हैं। पानी की कोई कमी नहीं रहती। लंका समतल मैदान पर बसी है, ऊँचे-नीचे टापू टीले कहीं नहीं हैं। रावण के महल की शोभा देखते ही बनती है। नौ रत्न बहुमूल्य रंगीन पत्थरों से निर्मित एवं उसके लाल रंगों के कंगूरे बने हुये हैं। महल की गुर्ज पर विशाल सोने का कलश रखा हुआ है। बाहर से इतना खूबसूरत दिखता है, तो अंदर के सौंदर्य की तो बात ही निराली होगी। महल को घेरते हुए बाजार भरे हुये हैं। बहुत विशाल मूर्ति बनी हुई है। लोककवि बलीराम कहते हैं कि जब राम-लक्ष्मण ने लंका पर आक्रमण किया था तो असुर देखकर हैरान-परेशान हो गये थे।

अंगद बल के
ऐ फिर को चढ़ लंका जाय
पांव खों पनहई सिर खों सेला पाक,
उर बैठबे खों घोड़ली, फिर का चढ़ लंका जाय, अंगद.....
पांव खी पनहई देहों, सिर खों सेला पाग,
उर बैठबे खों देहों घुड़ली, फिर ओई चढ़ जाय
पनहई खो देंहों गामरों, सिर खों सेला पाग
बैठबे खों घुड़ला फिर ओई चढ़ लंका जाय
आरों धरी है, पनहई छुल्लो सेला पाग
घुड़सार बंदी है घोड़ली फिर ओई
अरे गिन बांदे पांगड़े, गिन-गिन बांदे बान
उर लीली घोड़ी साज के चल भय अंगदवीर
कारे पानी के घाट में उतर अंगद भय है पार
खुरी नवाई रेत में जे अंगद निचोरय वीर
अरे हतनापुर की गेल में पर गई दौड़ा दौड़
उर नर नारी सब देख रय, जे जा रय अंगद वीर
जा रय अंगद वीर और हनुमान,
उर राम लखन के काम में
सिया ने आवे हार, अंगद.....
अरे हतनापुर की गेल लड़कवा गेंद,
अंगद उनसे पूछ रहे राँउण के मड़ कौन, अंगद.....
पांच बरगद समाने, उर सूरज सामू दौर,
उर बरिया बांदी घोड़ली, खम्बा से टिक जाँय

को हे पहरेदार उर गांव कुटवार,
उर जल्दी खोल, आगड़े नै फारै बजर किबार
ने मिल है पहरेदार ने मिले गांव कोटवार
उर ने खुल है आगड़े ने फटे बजर किवार,
उर अर्जुन कइये, पहरेदार भीम सेन कुटवार,
उर मुट्ठी खोले, आगड़े उर चुटकी फारे बजर किबार
अलवारी में अंगद गये उर कांख दबी तरवार
अरे हो तो अंगद चोर कैसें घुस आए भीतरे,
उर गिन-गिन छोरे बान, सियाराम के काम में
फिर सिया ने आये हाथ, अंगद.....

स्रोत-ग्राम-निवारी खुर्द

अंगद रावण की लंका में जाने को तैयार हो गये हैं। पैर में पहनने को जूते और सिर में बाँधने को पगड़ी और सवारी के लिए घोड़ा चाहिए। इतना सामान चाहिए तभी तो लंका जा पायेंगे। यह सारा सामान तुम्हें दे दिया जायेगा। जूतों के लिए चमड़ा है, सिर के लिए पगड़ी, बैठने को घोड़ा, उसी पर बैठकर लंका जायेंगे। अमुक स्थान पर जूते रखे हुए हैं। खूँटी पर सेला पगड़ी टंगी है, अस्तबल में घोड़ा बाँधा है। अंगद जाने की तैयारी करने लगे हैं। गिन-गिनकर पगड़ी बाँध रहे हैं। गिनकर बाण तरकस में रख रहे हैं। नीले रंग की घोड़ी को सजाकर अंगद वीर योद्धा लंका जाने को निकल पड़े हैं। समुद्र को लांघकर अंगद पार हुये हैं। रेत पर घोड़े को रोककर पहनने के वस्त्र सुखा रहे हैं। रास्ते में हतनापुर नगर में पहुँचते ही भागदौड़ मच गई है। स्त्री-पुरुष बड़े गौर से वीर योद्धा अंगद को देखकर अचरज कर रहे हैं और साथ में हनुमान भी हैं। प्रभु श्रीराम के कार्य से गढ़ लंका की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। आगे राह में बालक गेंद खेल रहे हैं, उनसे अंगद पूछते हैं कि रावण का महल कहाँ पर स्थित है। पाँच वटवृक्ष बहुत घने हैं और सूर्य के सामने दरवाजे हैं। बरगद के वृक्ष से घोड़े को बाँध दिया है। खम्बे से टिककर आराम कर रहे हैं। इस गाँव का पहरेदार और कोटवार कौन है? आप तुरंत दरवाजे खोलिये, नहीं तो इन वज्र के दरवाजों को फाड़ दूँगा। न तुम्हें पहरेदार मिलेगा ना ही कोटवार, ना ही दरवाजा खुलेगा। धनुर्धारी अर्जुन पहरेदार हैं। भीमसेन कोटवार हैं। अंगद ने दरवाजे खोले, चुटकियों में वज्र के दरवाजे फाड़ डाले। अलमारी में से चोरों की तरह अंगद निकल गये, बाजू में ललकार दबाये हुए हैं। अरे! आपने चोरों की तरह प्रवेश किया और गिन-गिन कर बाण मार रहे है, भारी मार-काट मचा रहे हैं, लेकिन अभी सीता माँ के दर्शन भी नहीं हुये।

अरे सुर खों रे सुमरे माता सरसती,
अरे बल खों रे सुमरे रे पवन कुमार,
अरे रन खों सुमर लयँ मइया सारदा हौ

स्रोत-ग्राम-निवारी खुर्द

स्वर और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को स्मरण करना चाहिए। बल और भक्ति के दाता पवनसुत हनुमान को स्मरण करना चाहिए। युद्ध और रणभूमि की देवी माँ शारदा का आह्वान करना चाहिए, तब ही रण में विजय होती है।

कुँवर मारे गये आर सरसा बारे बंगाले गये उदराज
लिखी मलखे ने पाती बड़ आयो चोंहान वीर बुजुर कों
घाती सात लाख दल संग में दल लेत भेराय नदी सिंध के घाट
दल पनिया पंथ दिखाय कुँवर मारे गये आर सरसा वीर
कटीली फौज निकट दंगल में आये तीन माह तेरा दिना
कठन करी तरवार पिरथी राज चौहान खों फिर भागदेय कई बार
तुरत धावन बुलवाये कागद कलम दबात सभी समान
मँगाये बांदी ने सब ल्यान के घर दीनों समान उदल खों
पाती तुम महबों जाव कुँवर मारे गये आर सिरसा वीर
तुरंत धावन बुलवाये पाती दीनी गहाय वीर कन बज खों
धामे जा पाती उदल दिये उर कौये परनाम तुम दादा
बेगी चलो बुलवा रये वीर मलखान कुँअर मारे गये
जब पाती उदल ने बाँची, बाँचत लगी न देर वीर खों
धड़की छाती हाय भई कैसी भई रूठ गये करतार
बंगाले दादा फँसे सरसा में वीर मलखान कुँअर मारे
अब हम बंगाले जैहें वीर की कैद ..... बंगाले
से आँन कें सरसा कर मुकाम गढ़ दिल्ली में आन कें
अपने हने निसान कुँअर मारे गये आर सरसा बारे
जड़े हैं जब ही पाती बेला ने लिख दई धावन
खीं पातीं तुम महबे लो आला उदल से कहो
सेना लेव सजाय कुँअर मारे गये सिरसा वीर

स्रोत–ग्राम–निवारी खुर्द

प्रस्तुत फाग आल्हा में सिरसागढ़ की लड़ाई का वर्णन है। सिरसागढ़ के सरदार वीर मलखान युद्ध में मारे गये। सिरसा के वीर को पृथ्वीराज चौहान ने धोके से सात लाख फौज के साथ सिंध नदी के किनारे आकर घेर लिया है। फौज को डेरा डाले तीन माह तेरह दिन व्यतीत हो गये। सिरसागढ़ के वीर मलखान युद्ध में शहीद हो गये हैं और उसी समय उदय राज बंगाल गये हुए थे। इतनी मार–काट मचाई थी जैसे गाजर मूली कटती है, वैसे ही फौज में हाहाकार मचा रखा था। कई बार चौहान की मुँह की खानी पड़ी थी। अतः फौज को वापिस ले गये थे। तुरंत मुंशी को बुलवाया तथा आदेश दिया कि कागज और कलम–दवात लेकर उपस्थित हो। बांदी ने तुरंत सारे समान लाकर सामने रख दिये। ऊदल को पत्र लिखा– वीर सरसा मारे गये हैं आप

फौरन महोबे पहुँचने का कष्ट करें। हरकारे के हाथ पत्र देकर कहा कि राजा जयचंद के यहाँ ऊदल को यह पत्र देना, उनको प्रणामकर बताना- मलखान मारे गये हैं, फौरन महोबे पहुँचो। ऊदल ने पत्र बाँचने में ज्यादा समय नहीं लगाया। वीर योद्धा की भुजायें फड़कने लगी। मुँह समान भ्राता यह कैसी अनहोनी हुई, क्या ईश्वर रूठ गया है। बंगाल की लड़ाई में आल्हा फँसे और सिरसा के बारे मलखान कुँअर मारे गये। अपनी निशान तैयारी फौज को बंगाले कूच का हुक्म सुनाया। वहाँ से आकर सिरसा में मुकाम करूँगा, फिर गढ़ दिल्ली में भीषण संग्राम होगा। वहाँ रानी बेला ने हरकारे के हाथ पत्र लिखकर आल्हा-ऊदल को बुलवाया है कि सिरसा वीर योद्धा वीर गति को प्राप्त हुए हैं।

आत्तआद्रूल्क लृद्र÷

बैगा

डॉ. प्रतापसिंह चन्देल

मध्यप्रदेश के मण्डला, डिण्डौरी एवं शहडोल जिले में तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में बसने वाली बैगा जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई जनजाति है। इस जाति के लोग घने एवं ऊँचे जंगलों के बीच लकड़ी एवं बाँस निर्मित झोपड़ियों में रहते हैं। इनके जीवकोपार्जन के प्रमुख आधार वनोपज, शिकार एवं मछली मारना है। कुछ लोग जंगलों को जलाकर कोदों, कुटकी, मका, राई, रामतिल आदि की खेती करते हैं। सीमित आवश्यकताओं के कारण इनका जीवन खुशहाल व मौज-मस्ती से भरा होता है।

बैगाओं द्वारा फागुन के महीने में गाया जाने वाला 'फाग-गीत' बहुत ही मस्ती भरा एवं उन्मादक होता है। होली के पश्चात् लगातार चार दिनों तक चलने वाला फाग-गीत गायन का कार्यक्रम ग्राम के प्रत्येक घर में सम्पन्न होता है। इसके साथ-साथ चलने वाले वाद्ययंत्रों में मांदर, टिमकी, मजीरा, ढोलक एवं सींग प्रमुख हैं। लोग शराब के नशे में झूमते हुए गाते हैं, नाचते हैं तथा अनेक प्रकार के अभिनय भी करते हैं। गायक-मंडली के सभी सदस्यों के मुख पर गुलाल मला जाता है। लाल रंग घोलकर उनके ऊपर उड़ेल कर खुशी व्यक्त की जाती है। इन गीतों में महिलाएँ भाग नहीं लेतीं, वे मात्र दर्शक होती हैं। फाग-गीतों के विषय-वस्तु की सामान्य चर्या, प्रकृति का साहचर्य, स्त्री-पुरुष के गोपनीय प्रसंग, आखेट एवं परिहास आदि होते हैं। कुछ फाग-गीत हैं-

जिंदा बाही मान, मोर मन बसो जिंदा से लाल ऽऽऽ.....
जिंदा-जिंदा न कहे मामा
करिया-सांप लपट परे अंगरी मां ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....
बारी कगार के हर्रा रे, करिया-सांप आवे रे
लपट परे ओखर अंगरी मां ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....
काहिन के सूपा, काहिन के मुसरी रे

काहिन के दार-चाउर रे ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा
जिंदा मारों दार-चाउर, भै छोड़ सकुन के
लरका रे मैं लाजन मर जाऊँ ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....
गेहूँ के रोटी गुल-गुला रे, हड़िया के रोटी अरूस रे
खा ले रे जिंदा मन के तोर हिया जुड़ाये ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....
काहिन के हुक्का, कहाँ के लछी तम्बाखू
पीले रे जिंदा मन के तोर हिया जुड़ाये ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....
राई-रतनपुर के हुक्का रे, मंडला के लछी तमाखू
पी ले रे मोर मन जिंदा तोर हिया जुड़ाये ऽऽऽ..... मोर मन बसे जिंदा .....

मेरा मन चाहता है कि मैं हमेशा जीवित रहूँ, लेकिन मृत्यु का खतरा हमेशा भयभीत किए रहता है। हम अच्छे-भले रहते हैं कि अकस्मात् शरीर में सर्प लिपट जाता है। ये सर्प हमारी बाड़ियों, कगारों तथा आसपास ही रहा करते हैं। सर्प दंशित व्यक्ति जहर उतारने के लिए तंत्र-मंत्रों द्वारा उपचार करते हैं। इस उपचार विधि में सूप, मूसल, दाल एवं चावल प्रयुक्त होते हैं। मेरी इच्छा होती है कि इस मंत्र शक्ति के द्वारा मृत्यु को ही मार दूँ, ताकि आदमी के मरने का भय ही समाप्त हो जाए और वह अमर हो जाए। हे मानव! यह जीवन क्षणिक है, इसलिए जीते जी अच्छा-अच्छा खा-पी ले। हंड़िया की बनी कठोर चीजों को न खा, बल्कि गेहूँ की मुलायम-मुलायम रोटियाँ खा ले, इससे तेरा मन संतुष्ट होगा। तू अच्छा भला हुक्का-पानी पी ले। राई-रतनपुर में अच्छा हुक्का मिलता है और मण्डला में लच्छेदार तम्बाखू। तू मौज से जीते हुए इनका उपभोग कर ले।

चलो मोहन गोपाल, खेलत होरी बिंदरावन मां .....
नीचे सड़क मां केरा के बिरछा
हाथ लमाय के, गोड़ पसार के सोय रहो रे ऽऽऽ..... चलो मोहन .....
नीचे सड़क मां आमा के बिरछा
पैर पसार के हाथ लमाय के सोय रहो रे ऽऽऽ..... चलो मोहन .....
नीचे सड़क मां साल्हें के बिरछा
पैर पसार के हाथ लमाय के सोय रहो रे ऽऽऽ..... चलो मोहन .....
नीचे सड़क मां हर्रा के बिरछा
हाथ लमाय के पैर पसार के सोय रहो रे ऽऽऽ..... चलो मोहन .....

होली का अवसर आ गया है, मोहन-गोपाल वृंदावन में होली खेल रहे हैं। आओ, हम भी होली खेलें और मजे से रहें। अधिक भाग-दौड़ करने की जरूरत नहीं। हम पहाड़ों पर रहते हैं, यही हमारा सुखकर क्षेत्र है। देखो! नीचे मैदानी क्षेत्रों में भी लोग रहते हैं, वहाँ सड़कें हैं। उन सड़कों के किनारे-किनारे केला, आम, साल्हे एवं हर्रा आदि के पेड़ लगे हुए हैं, वे भी बहुत

अच्छे लगते हैं लेकिन हमारे इन पहाड़ों में तो स्वाभाविक रूप से उगे हुए नाना भाँति के वृक्ष एवं लताएँ शोभित हैं, इसलिए इसी में संतुष्ट होकर मजे से रहो।

अंगना मां होरी रसाबो लाल ऽऽऽ.....
सोने के टंगिया रे ऊपर ले बेंट
ऊपर चढ़िस ता टुटगे बेंट
अंगना मां होरी रसाबो लाल ऽऽऽ.....

आज हम आँगन में ही होली खेलेंगे। यहीं आनंद मनाएँगे। हमारी सोने की कुल्हाड़ी की बेंत लकड़ी की बनी हुई है। मैं कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर जाता हूँ, लेकिन रास्ते में ही उसकी लकड़ी से बनी बेंत टूट जाती है।

खोजब लाल कन्हैया ला मीत बिना
आसी ला खोजब, परोसी लाल खोजब
उलट-पुलट के खोजब ला कन्हैया ला
मीत बिना खोजब लाल कन्हैया ला .....

आज फाग के अवसर पर हम लोग कन्हैया को ढूँढ़ेंगे। आस-पड़ोस में ढूँढ़ेंगे तथा दूर-दूर तक उन्हें तलाशेंगे। हम बार-बार उलट-पुलट कर कन्हैया को ढूँढ़ेंगे। जब तक वे नहीं मिलेंगे, तब तक उन्हें ढूँढ़ते रहेंगे। बिना कन्हैया के फाग-गीत संभव नहीं है, उनकी उपस्थिति में ही इसका आनंद है।

महानन्दी अटाय गय भूंज मछरी .....
आयगे ओ पनकिन तोर ओसरी
महानन्दी अटाय गय भूंज मछरी .....
आयगे ओ अहरिन तोर ओसरी
महानन्दी अटाय गय भूंज मछरी .....
आयगे ओ गोड़निन तोर ओसरी
महानन्दी अटाय गय भूंज मछरी .....
आयगे ओ बमनिन तोर ओसरी
महानन्दी अटाय गय भूंज मछरी .....

इतनी बड़ी नदी का पानी सूखकर कम हो गया है, इसलिए सभी वर्ग के लोग बारी-बारी से यहाँ मछली मारेंगे। सभी लोग अपने-अपने क्रम से ही आकर मछली मारें। सर्वप्रथम पनिका जाति की औरतें मछली मारेंगी एवं भूनेंगी, तत्पश्चात् अहीर, गोंड एवं ब्राह्मण जाति की औरतें आकर अपनी बारी में मछली मारने एवं भूनने का कार्य करेंगी। इससे आपस में सामंजस्य बना रहेगा, आपसी झगड़े नहीं होंगे।

अलबेला ठाकुर के गांव, पानी मोटो के ऽऽऽ.....
अतल-बितल के बेंदुलिया हो बेंदुलिया
मोखां पानी भरन नहीं देय ..... पानी मोटो के ऽऽऽ.....
अलबेला ठाकुर के गांव .....

हम ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर निवास करते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में झरनों का पानी उपलब्ध है, जो चट्टानों पर गिरता है। उधर समतली क्षेत्रों में काली मिट्टी वाला मैदानी क्षेत्र है, जहाँ ठाकुर लोग रहते हैं। इन ठाकुरों ने अपने खेतों में कुँए बनवा रखे हैं, जिनका पानी वे स्वयं उपभोग करते हैं, किसी अन्य को पानी नहीं पीने देते। वस्तुतः समतली क्षेत्रों के लोग बहुत चालाक हैं, जो धरती माता से निःशुल्क प्राप्त जल पर कब्जा कर रहे हैं।

रिमझिम बरसे मेह, अंगना कीचड़ पड़े हो .....
अंगरी क चुटकी बिगड़ पड़े हो ऽऽऽ..... अंगना कीचड़ पड़े हो
हाथ क मुंदरी बिगड़ पड़े हो ऽऽऽ..... अंगना कीचड़ पड़े हो
गरो क सुतिया बिगड़ पड़े हो ऽऽऽ..... अंगना कीचड़ पड़े हो
गोड़ क बिछिया बिगड़ पड़े हो ऽऽऽ..... अंगना कीचड़ पड़े हो
पाव क पैरी बिगड़ पड़े हो ऽऽऽ..... अंगना कीचड़ पड़े हो

लगातार वर्षा से आँगन में कीचड़ हो जाता है। इस कीचड़ से शरीर के वस्त्र एवं आभूषण खराब हो जाते हैं। अँगुलियों की चुटकी, हाथ की मुंदरी, गले की सुतिया, पाँव की बिछिया तथा पैरी सभी वस्त्राभूषण इस कीचड़ से गंदे हो जाते हैं।

झोली कहाँ डारी लाल
मुसबा मार-मार सालर पाने लरका ..... झोली कहां डारी .....
सुंगरा मार-मार सालर पाने लरका ..... झोली कहां डारी .....
घोटरी मार-मार सालर पाने लरका ..... झोली कहां डारी .....
सामरी मार-मार सालर पाने लरका .... झोली कहां डारी .....

न जाने मैंने अपनी झोली कहाँ रख दी है? अपने बाल-बच्चों के पालन-पोषण के लिए जिस झोली में शिकार किए हुए जीव-जन्तुओं को रखकर घर लाता हूँ, वही झोली खो गई है। इस झोली में चूहों को, हिरण को, सुअर को एवं साँभर को मारकर उन्हें रखकर घर लाता हूँ, जो मेरे परिवार के लिए भोज्य बनते हैं।

मैं का जानों राम, मेरा सटंग लिया होरी मां लाल
जर गे राऊर रे फुट गे बांस
जर गे रानी के पैरी रे, मैं का जानो राम .....
जर गे राऊर रे फुट गे बांस

जर गे रानी के चुटकी रे, मैं का जानो राम .....
जर गे राउर के फुट गे बांस
जर गे रानी के सुतिया रे, मैं का जानो राम .....
जर गे राउर रे फुट गे बांस
जर गे रानी के मुंदरी रे, मैं का जानो राम .....
जर गे राउर रे फुट गे बांस
जर गे रानी के बिछिया रे, मैं का जानो राम .....

यह जीवन इतना एकाएक समाप्त हो जाएगा, इसका पूर्वाभास ही नहीं था। अकस्मात् मृत्यु आई और चल बसा। सदा के लिए मिट गया। जिस तरह जलता हुआ बाँस फटता है, उसी तरह मृत्योपरान्त दाह संस्कार के समय मृतक का शरीर भी जलता हुआ फटता है। फटने के बाद पुनः मूल रूप में नहीं आ सकता। चाहे राजा हो या रानी, सभी की मृत्यु सुनिश्चित है। सभी को बाँस जैसा जलना ही है। कोई कितना भी महान क्यों न हो, उसके कोई भी आभूषण पैरी, चुटकी, सुतिया, मुंदरी, बिछिया आदि कुछ भी साथ नहीं जाते।

साल्हे क खूरा सरिस के पाटी,
चढ़ भागे ढूढ़ बेंदरा हो लाल .....
भूमनिन टुरिया खेदा पारै हो
नहीं भागे ढूढ़ बेंदरा हो लाल ऽऽऽ.....
गोंडनिन टुरिया खेदा पारै हो
नहीं भागै ढूढ़ बेंदरा हो लाल ऽऽऽ.....
अहिरिन टुरिया खेदा पारे हो
नहि भागे ढूढ़ बेंदरा हो लाल ऽऽऽ.....
पनकिन टुरिया खेदा पारे हो
नहिं भागे ढूढ़ बेंदरा हो लाल ऽऽऽ.....
बमनिन टुरिया खेदा पारे हो
नहि भागे ढूढ़ बेंदरा हो लाल ऽऽऽ.....

साल्हे की लकड़ी से बनी खटिया के खुरे एवं सरिस की लकड़ी से बनी पाटी बहुत हल्की होती है। हल्की (कोमल) प्रकृति वाले से कठोर प्रकृति वालों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। उस ढीठ बंदर को देखो! वह हल्की काष्ठ से बनी खटिया की बाड़ को लाँघकर अंदर घुस आया है, जो अब बाहर नहीं भागना चाहता। भूमिया, गोंड, अहीर, पनिका एवं ब्राह्मण जाति की लड़कियाँ उस ढीठ बंदर को खदेड़ना चाह रही हैं, लेकिन वह दुष्ट नहीं भाग रहा।

मूड़ ऊपर आएंगे समैया सैंया हो
मैं नहि जान दौ फाग मां

छै कोरी लला छै कोरी लला
मोर हाथ के चुटकी ला दे सैंया हो
छै कोरी लला छै कोरी लला
जमुनी के पैरी ला दे सैंया हो
छै कोरी लला छै कोरी लला
गरो के सुतिया ला दे सैंया हो
छै कोरी लला छै कोरी लला
गोड़ के बिछिया ला दे सैंया हो
मैं नहि जान दौ फाग मां

फाग का त्योहार आ गया है। ऐ मेरे प्रियतम! तुम अभी तक मेरे लिए गहने नहीं लाए। जब तक मेरे लिये आभूषण नहीं लाओगे, तब तक तुम्हें फाग में नहीं जाने दूँगी। आज त्योहार का अवसर है, सभी लोग सज-धज रहे हैं। मेरे लिए हाथ की अँगुलियों में पहिनने की चुटकी, पाँव की पैरी, गले की सुतिया और पैर की अँगुलियों में पहिनने की बिछिया ला दो।

बंदरा कगरा डोंगर चिकनिया, लाठी देखत ले आवै लाल ऽऽऽ
बा भै के आवै बामनिन टुरिया, दै कै लाठी दचेड़े लाल ऽऽऽ
बंदरा कगरा डोंगर चिकनिया, लाठी देखत ले आवै लाल ऽऽऽ
वाहै बाट आवै पनकिन टुरिया, उठाके लाठी दचेड़े रे लाल ऽऽऽ
बंदरा कगरा डोंगर चिकनिया, लाठी देखत ले आवै लाल ऽऽऽ
वाहै बाट आवै गोंडनिन टुरिया उठा के लाठी दचेड़े रे लाल ऽऽऽ
बंदरा कगरा डोंगर चिकनिया, लाठी देखत ले आवै लाल ऽऽऽ
बाभै के आवै अहिरिन टुरिया, उठा के लाठी दचेड़े रे लाल ऽऽऽ
बंदरा कगरा डोंगर चिकनिया, लाठी देखत ले आवै लाल ऽऽऽ

पहाड़ी के बीचों-बीच रास्ता है। यहाँ एकांत एवं सूनापन है। इस निर्जन एवं पहाड़ी दुर्गम रास्ते के बीच एक नटखट बंदर है, जो आने-जाने वाली युवतियों का रास्ता रोकना चाहता है, उन्हें छेड़ता है। ये लड़कियाँ भी बहुत साहसी एवं चुस्त हैं। चाहे वह किसी भी जाति की युवती क्यों न हो, ज्यों ही वह बंदर उनकी ओर आता है, त्यों ही वे उसे डंडे से धर पीटती हैं।

मुरली दाना बोले रे कोई नहीं हाये लाल .....
नदिया के ईर-तीर छरिया चरत हैं
आवत सैंया मैं बेंड़ आयों ऽऽऽ..... मुरली दाना .....
नदिया के ईर-तीर गैया चरत हैं
आवै गोसैंया मैं बेंड़ आयों ऽऽऽ..... मुरली दाना .....

इस जंगली क्षेत्र में बिल्कुल सूनापन है, कोई किसी की आवाज को सुनने वाला नहीं। मोर बोल रहे हैं, जिनकी आवाज कोई नहीं सुन रहा। नदी के किनारे बकरियाँ चर रही हैं, उनके मालिकों का अता-पता नहीं। मैंने उन्हें काँजी हाउस में ले जाकर बंद कर दिया। नदी के किनारे गायें चर रही हैं, उनका भी कोई रखवाला नहीं। मैंने उन्हें भी ले जाकर काँजी हाउस में बंद कर दिया।

चलो भेजो पराय के तिरिया
सीता को हर लाने लाल ऽऽऽ.....
सोन कुटी मा सीता माई, बन मा लछमन राम
भेस लपेटी रावण तन मां हरी जानकी बन मां
सीता को हर लाने लाल ..... चलो भेजो .....
राम रोवै लछमन रोवै, औ रोवै बड़े भैया
धरो धनुस तुम जनकपुर लानो सीता मैया
सीता को हर लाने लाल ..... चलो भेजो .....

मंदोदरी कहती है कि- ऐ रावण! तुमने बहुत गलत काम किया है, तुम दूसरे की औरत का अपहरण करके अपने घर ले आए हो, यह ठीक कार्य नहीं। इसलिए शीघ्र ही राम की पत्नी सीता को वापस भेज दो। अपनी सोने की कुटिया में सीता रह रही थीं। राम और लक्ष्मण वन गए हुए थे, उस वक्त सूनेपन का लाभ उठाकर तुमने अपने शरीर में राख लपेटकर वेश बदल लिया और छल से सीता का अपहरण कर लिया। सीता के वियोग में उनके पति राम रो रहे हैं, लक्ष्मण भी रो रहे हैं। तुम दोनों भाई बिल्कुल मत रोओ। तुम धनुष बाण उठाओ और सीता को छुड़ाकर वापिस ले आओ।

लछमन वीर कहाए रे जग मां, लछमन वीर कहाए लाल .....
उचटौ वीर चढ़ौ लंका मां, पर गय हो हाहाकारी
हो जाये के छित मां लंका जलाये लाल
लछमन वीर कहाए जग मां .....

संसार भर में लक्ष्मण ही सबसे वीर हैं। वे क्षणभर में छलाँग मारकर लंका पहुँच जाते हैं, उनके वहाँ पहुँचते ही हाहाकार मच जाता है। वे क्षणमात्र में लंका को जला देते हैं। वास्तव में वे महान वीर हैं।

जातो भांजा हनुमान, लंका डाँक डारे, सीता रावन हरी -------
डोंगरी कुटी मां सीता माई, वन मां फिरे लछमन राम
भेस लपेटी रावन तन मां, हरी जानकी वन मां
सीता रावन हरी, जातो भांजा हनुमान ----------

हे हनुमान! तुम सीता की खोज हेतु लंका चले जाओ। रावण ने ही सीता का अपहरण

किया है और लंका ले गया है। उस समय जब सीता माई अपनी जंगल की कुटिया में अकेली थीं और उनके पति राम एवं देवर लक्ष्मण वन में विचरण कर रहे थे। तब रावण ने अपने शरीर में राख लपेटकर रूप बदल लिया तथा छल से सीता का अपहरण कर लिया। इसलिये तुम्हें सीता की खोज हेतु लंका जाना है।

उगती जनिहा, रात राजा कैसे आये
मोरे पिया कहाँ रोय लाल -------
आवत राहब जावत राहब, अधर गली भेंटहैगे लाल
उगती जनिहा -------
भारी कछेरी मां बैठन नहि पायो, राजा हो कैसे आये लाल
उगती जनिहा -------

हे राजा! इस रात्रि में मैं बिल्कुल अकेली हूँ और तुम हो जो चाँद निकलते ही उसके उजाले का लाभ लेकर मेरे पास आ गये। मेरे पति कहाँ गये हैं, मुझे मालूम नहीं। लेकिन इस घर में अन्य बहुत से लोग हैं, इस कारण तुम यहाँ से चले जाओ, हम आते-जाते रास्ते में ही मिल लिया करेंगे। यहाँ इस वक्त तुम्हें बैठा भी नहीं सकती।

डोरी बिना बटुआ सरके नहीं, टूरी बिना टूरा टरके नहीं
टूरी बिना टूरा सोवै नहीं ----- डोरी बिना -------
टूरी बिना टूरा खावै नहीं ----- डोरी बिना -------
टूरी बिना टूरा नाचै नहीं ----- डोरी बिना -------
टूरी बिना टूरा जावै नहीं ----- डोरी बिना -------

थैली में लगी डोरी के आधार पर ही थैली खुलती एवं बंद होती है, उसी प्रकार स्त्री के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है। बिना स्त्री के कोई भी पुरुष कोई भी कार्य नहीं कर सकता। वह उसके बिना सो नहीं सकता, खा नहीं सकता, नाच नहीं सकता तथा कहीं भी आना-जाना नहीं कर सकता।

जामूं न टोरे, जामूं न टोर, जामूं न टोरे जामूं न टोर
जामूं न टोरे, धोति रचि जाय रे ..... जामूं न टोरे .....
जामूं न टोरे, जिभिया रचि जाय रे ..... जामूं न टोरे .....
जामूं न टोरे, बंडी रचि जाय रे ..... जामूं न टोरे .....
जामूं न टोरे, साफी रचि जाय रे ..... जामूं न टोरे .....

तू पके हुए जामुनों को मत तोड़। यदि उन्हें तोड़ेगा तो तेरी धोती में उसका रंग लग जाएगा। तू जामुन खाएगा तो तेरी जीभ रच जाएगी। तू यदि जामुन तोड़कर कपड़ों में रखेगा तो कपड़े रच जाएँगे।

ये चिट्ठी बहुते दगावारे, लिखनां मां नहिं आये लाल
कौन तोरे कागज बांचे कौन तोर पोथीं
कौन तोर कलमा चलायें ..... लिखनां मां नहिं आये लाल
राजा तोरे कागज बांचे, रानी तोर पोथी
लालू तोर कलमा चलाये ..... लिखनां मां नहिं आये लाल

यह लिखा हुआ प्रेम पत्र धोखा है। कारण कि 'प्रेम' एक भाव है, जो हृदय के अंदर उठता है। उसे कागज में लिखा नहीं जा सकता। कागज में प्रेम की सच्ची अभिव्यक्ति हो ही नहीं सकती। राजा-रानी जो प्रेम पत्र लिखते हैं, वह प्रेम की सच्ची छवि नहीं अंकित कर पाते। बैगा ही इस प्रेम को अभिव्यक्त कर सकता है।

अधर गली बाघ सिंग ठनकय, न जात बने हम से रे
भीक देवय हमसे अशीष देवय तुमसे न जात बने हम से रे .....अधर गली .....
अपन गली बाबन गली तिरपट बाजार गली
गली गलीच फिर आयेब
फिरन नहिं पायेब घर के भिमसाहिन बाई ..... अधर गली .....

रास्ते में बाघ-शेर दहाड़ रहे हैं, इसलिये हम बाहर नहीं जा पा रहे। अपना सीधा-सादा रास्ता है, पर तिराहा-चौराहा वाला रास्ता जटिल है, जो हमें भ्रमित कर देता है। वहाँ अनेक खतरे एवं परेशानियाँ रहती हैं। हे भिमसाहिन बाई! तुझसे आशीर्वाद माँगते हैं, बदले में तुम्हें भिक्षा देते हैं।

मेला चाका बाही रे .....
तोकी बासी रांध कहों रे .....
कुटकी के पेज रांधों चाका बाही रे ..... मेला चाका बाही रे .....
आये है पूरा बहे तो बारू
मायावारी तो होते पियाते दारू, ... मेला चाका बाही रे .....
खाल्हे घिनौची, ऊपर छैला रे,
दारू पियले होथै, अबे के छैलारे ..... मेला चाका बाही रे .....
आवै तो नंदी केवेक बोहै धार
तिरिया जवानी हवै दिन चार ..... मेला चाका बाही रे .....
आमा के डार माँ चढ़ै चिटिया रे
तोरे नाने बिछाहूँ मोवार मचिया रे ..... मेला चाका बाही रे .....
बोली ल सुन के त रस चढ़ि जाय
तोरे संगत मां जोड़ा मनसा न अघाय ..... मेला चाका बाही रे .....

हम गोल-गोल घूम रहे हैं। मैंने अपनी प्रेमिका (पत्नी) को बासी राँधने के लिये कहा था,

वह खाना बनाकर तैयार रखी होगी। कुटकी की पेज बनाई होगी, यही मेरा आदेश भी था। जैसे नदी में बाढ़ आने से उसका प्रवाह बढ़ जाता है, वैसे ही यदि तेरे हृदय में मेरे प्रति वास्तविक प्रेम होता, तो अवश्य मुझे आमंत्रित करके मदिरा पिलवाती। घिनौची के ऊपर मटकी रखी है, जिसमें पानी भरा है। यह नया-नया लड़का अभी से प्रेम में मतवाला हो रहा है और मदिरा पीने की इच्छा करने लगा है। जिस तरह नदी में बाढ़ आती है और शीघ्र ही बाढ़ का पानी उतर जाता है, इसी तरह युवती की यह यौवनावस्था भी कुछ समय तक के लिए ही है। आम के पेड़ में चींटी चढ़ रही है, मैं तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ। ज्यों ही आओगे, तुम्हारे लिए मोवा की मचिया बिछा दूँगी। तुम्हारी मीठी बोली सुनकर मेरे हृदय में प्रेम रस उमड़ उठता है। तुम्हारे साथ-साथ लगातार रहने पर भी संतुष्टि नहीं होती।

आत्तआद्रूक्क लूद्र÷

कोल

सन्तोष कुमार तिवारी

डग्गा

हमको बृजनारि सतउती हई, गलिन-गलिन माँ कुँआ बउलिय,
रेशम डोरी, डरउतीं हुई। हमका बृजनारि.....
सोनेन इनके बने घइलना हमसे मूड़े ढोबउती हई। हमका बृजनारि.....
अपने घर के काम गुदुरूआ, सब हमसे करबऊती हई। हमका बृजनारि.....
भादौं के हीले माँ देखा झऊआ, हमरे मूड़े धरऊती हई। हमका बृजनारि.....
हरी चुनरिया लाल घाँघरा, सब गहना पहिरऊती हईं। हमका बृजनारि.....
मर्द के भेष जनाना करके, अपनें साथ सोवउती हई। हमका बृजनारि.....

कृष्ण अपनी आपबीती सुना रहे हैं- हमें ब्रज की नारियाँ सताती हैं, परेशान करती हैं। गलियों-गलियों में कुँए और बावड़ियाँ हैं, जिनमें ये सब हमको रेशम की डोरी डालने को विवश करती हैं। इनके मटके सोने के बने हुये हैं जो ये हमारे सिर पर रखकर ढुलवाती हैं। अपने घर के सभी छोटे-बड़े काम ये मुझसे ही करवाती हैं। भादौं मास के कीचड़ में भी हमारे सिर पर टोकना (टोकनी) रखती हैं। हमें हरी चूनर, लाल घाघरा और सभी गहने पहनाती हैं। मर्द को जनाना वेषधारण कर अपने साथ हमें सुलाती हैं।

हरि ए बाजै नगारा हो
बाजै शिवम का बाजा।।
बीतै घड़ी दुई चारि
शिवम का बाजा।।
ठाकुर दुआरे मादल बाजै
गंगा बीचे घड़ियार
नाहर बाजा बँधाने बाजै
बाजन केर दरबार
अनहद बाजा बाजै रोहनिया मां

अनहद बाजा बाजै
शिव भोले का होत बियाह
बाजै नगाड़ा हो, शिवम का बाजा।।

शंकर जी का विवाह हो रहा है। उत्सव में कल्याणकारी लोक वाद्य नगाड़ा बज रहा है। दो–चार पल लगातार बाजा बज रहा है। ठाकुर यानी बड़े दरवाजे पर आदिवासियों का विशेष वाद्य मादल बज रहा है। तरह–तरह के वाद्य एकत्र हैं। गंगा के किनारे घंटे बज रहे हैं और ऊँचे बंधान पर नाहर वाद्य बज रहा है। रोहिनियाँ में अनहद नाद बज रहा है।

दहका

मोरो दीन्ह दधि खाले कन्हैया, मोरो दीन दधि खाले,
का जानी कबै होई भेंट कन्हैया, मोरो दीन दधि खाले।
अंतरा–*केखर आहै लालना भला, लालना का है तुम्हारा नाम*
कहना के तू काहनी का है तुम्हारा देस कन्हैया।
मोरो दीन दधि खा ले
नंद बाबा के ललना भला ललना श्री कृष्ण हमारा नाम
मथुरा में है रहनी हमारी, उहै हमारा देस।
मोरो दीन्ह दधि खा ले।।

मेरा दिया हुआ दही खा लो कन्हैया। क्या पता अब कब दोबारा हमारी तुम्हारी मुलाकात होगी? तुम किसके पुत्र हो क्या नाम है तुम्हारा? तुम कहाँ के हो और कौन से देश से आये हो? हम नन्दबाबा के पुत्र हैं, कृष्ण हमारा नाम है। हम मथुरा में रहते हैं और वही हमारा देश है।

हरो तन का पीरा पवनसुत,
अंजनी के तुम जनम लियो है, खेंच पियो है छीरा,
होत भोर सुरिजन लीला देवन विनती कीना
लै के वीरा चले पवनसुत उतरे सागर तीरा।
रामचन्द्र के दिहिन मुद्रिका सीता के मन घीरा।।
शक्ति बान लगे लक्ष्मण के रोवत हैं रघुवीरा,
मूल संजीवन लेन पठायो पवन पुत्र बलवीरा।।
फूट पताल बैठे जिमि कातर बैठत है बलवीरा,
अहिरावण के भुजा उखार के फेंक दिहिन्ह रणधीरा।।
ज्वाला अग्नि उठी भीतर से सहि न सकत सरीरा,
तुलसीदास विश्वास राम के निर्मल होत सरीरा।।

हे पवन सुत हनुमान! हमारे कष्ट और पीड़ा से हमें मुक्ति दें। तुमने प्रातः होते ही सूर्य को निगल लिया था, समुद्र को एक ही साँस में पिया है, अंजनी के पुत्र सभी देव तुम्हारी स्तुति करते

हैं। तुमने संकल्प लिया और सागर पार उतरकर राम की मुद्रिका सीता तक पहुँचायी और उनके मन को शांति पहुँचायी। लक्ष्मण को जब शक्तिबाण लगा, तब विह्वल हो गये। ऐसे में तुम संजीवनी बूटी लेकर आये। जिस शिला पर तुम बैठ जाते हो, वह पाताल को चली जाती है। तुमने अहिरावण की भुजा उखाड़ फेंक दी थी। हमारे शरीर से अग्नि की ज्वाला उठ रही है, जिसे सहन नहीं किया जा सकता। तुलसीदास जी कहते हैं कि राम के विश्वासपात्र का स्मरण करने से शरीर निर्मल हो जाता है।

पिया मारन चले काली कोयलिया,
काली कोयलिया ना मारो सइयाँ, जो लेत राम को नाम।
मारय का चाही उन छैलन का, जो हरै परायी नार।
पिया मारन चले काली कोयलिया।
हरे सुआ ना मारो सइयाँ, जो लेत राम को नाम।
मारय का चाही उन छलियन को, जे करत देस बदनाम।
पिया मारन चले काली कोयलिया।

पिया काली कोयल का शिकार करने जा रहे हैं। पिया काली कोयल को मत मारो, वो तो राम का नाम लेती है। मारना है तो उन युवकों को मारो जो दूसरों की स्त्री का हरण करते हैं। हरे तोतो (तोता) को मत मारो, वो राम का नाम लेते हैं। मारना ही है तो उन्हें मारो जो देश को बदनाम करते हैं।

फूलन से कुम्हलानी सेजरिया,
पूरब दिसा ना जा मोरे स्वामी, पूरब का लागन पानी।
पानी पिये तू मरि जइहे, हम धना होवै विरानी,
पश्चिम दिसा ना जा मोरे स्वामी, पश्चिम की नार सयानी।
रात सोवावैं रंग महला माँ, भोर भरावैं पानी,
दखिन दिसा ना जा मोरे स्वामी, दखिन द्वारिका धामी।
जाय द्वारिका श्राप ले अइहै, पितर ना पावै पानी,
उत्तर दिसा ना जा मोरे स्वामी, उत्तर अयोध्या धामी।
डलियन-डलियन फूल चढ़त है, लोटियन-लोटियन पानी,
फूलन से कुम्हलानी सेजरिया।

फूलों की सेज कुम्हलाने लगी है। हे स्वामी! तुम पूर्व दिशा को मत जाओ। पूर्व का पानी अच्छा नहीं है। पानी पीकर तुम मर जाओगे तो हम अकेली रह जायेंगी। पश्चिम को मत जाओ, पश्चिम की स्त्रियाँ चतुर हैं, वे रात में अपने शयन कक्ष में सुलाती हैं और सुबह पानी भरवाती हैं। दक्षिण दिशा को मत जाओ, वहाँ द्वारिका धाम है, द्वारिका में अगर श्राप मिल जायेगा तो पितरों को भी पानी नहीं मिलेगा। उत्तर दिशा की ओर मत जाओ, वहाँ अयोध्या धाम है। अयोध्या में टोकनी भर फूल और लोटे-लोटे पानी चढ़ता है।

माथै ना दें दहिया मोर ओइसै कन्हाई लेय रे।।
कऊने काठ की बनी मथनिया काहेन नेता लागे
कउन सखी दहिया बगरावैं कउन कुंअर के साथ।।
चंदन काठ की बनी मथनिया रेसम नेता लागे
राधा सखी दहिया बगरावैं कृष्ण कुंअर के साथ।।
मथै मथनियाँ दधि बगरावैं कृष्ण कुंअर के साथ।।
मथै मथनियाँ दधि बगरावै कर से नेता ले
फिटिका दही जामुन दह गिरिगा
हँसि के कन्हइया लेय रे।
माथै ना दें दहिया

यशोदा माता! मेरी दही कन्हैया मथने नहीं देता, वह जबरन ही छीनकर ले जाता है। दधि मथने की मथनी किस लकड़ी की बनी है और उसे खींचने के लिए रस्सी कैसी है? कौन-सी सखी दही फैलाती है? और कौन कुँवर दही खाता है? मथनी चन्दन काष्ठ की है और रस्सी रेशम की है। राधा रानी दधि फैलाती हैं और कान्हा दधि खाते हैं। कान्हा ने दधि की मटकी यमुना में फेंक दिया। राधा शिकायत करती हैं कि कान्हा दधि नहीं मथने दे रहे हैं।

ददरा

भय आँगन भीर जनक के, सब सखियाँ करै तैयारी,
भय आँगन भीर.....
रात तुरत सब सजी बराती, लागे झरोखर परम सुन्दरी।
अवधै अवध बिहारी।
जनक के भय आँगन मां भीर,
सब सखी मिलकर एक मत ठानी, देय लाल का गारी।
ये हो लाल कंकन नहीं टूटै, हार देत महतारी,
इतना सुनकर बोले जनक जी, वह सकुचावहिं नारी।
जे मेरा रे धनुग्रह तोरी, कंकन वही बिजारी।
जनक के भय आँगन मांभीर

जनक के आँगन में सभी सखियाँ इकट्ठी हुईं। रात को राम की बारात सजी। गज (हाथी) पर राम बैठे। यह शोभा (दृश्य) बहुत अच्छी लग रही है। सब सखियों ने तय किया कि राम को गाली देंगी। हे राम! तुमसे कंकन नहीं छूट रहा है, अपनी माँ को बुलाओ। यह सब सुनकर जनक बोले कि- अरे लड़कियों! संकोच तो करो, जिसने धनुष तोड़ा है, वह क्या कंकन नहीं तोड़ सकता?

आत्तआद्रूक्ष्क लॄद्र÷

गोंड

रूपसिंह कुशराम

टेक– हाँ रे हाँ शुरू माँ वंदन शारदा दाई ला,
गोड़न तरी गिरवं दाई तोर, अगारू भजों मैहर के शारदा दाई ला।
सुरुच माँ भजों दाई शारदा ला दूसर मा सरसेनी माय, तीसर माँ जानव दाई ददा
अर गुरजी भूले अंछर सरसेती दाई आय के कंठ माँ समायजा आज।। 1।।
गोड़न तरी हवों दाई बिनती मोंर एहिच आय
राग तान नठाय झय बस्ती माँ शोर हय जाय।। 2।।
हांथन बिनती एही है दाई खोरी–खोरी नाव हय जाय
मैं गरीब फाग गवैया दाई नवा–नवा तोर फाग बन जाय।। 3।।
अक्किल बुधि मोर तनक हस आये के बताये दे रीत
मैहर के लक लकाती शारदा दाई सफ्फा जघा माँ होवय जीत।। 4।।
सगली जघा माँ होवय जीत दाई तोर रताप ला जानी
ता जिंदगानी तो छतर छांव रहय मोर दाई भवानी। 5।।

हे शारदा माँ! सर्वप्रथम मैं आपकी चरण वंदना करता हूँ। प्रथम नमन् माँ शारदा का, द्वितीय माँ सरस्वती एवं तृतीय माता–पिता एवं श्रद्धेय गुरु को, ताकि भूले हुये अक्षर भी कंठ में विराजमान हों। चरणों में शीश झुकाकर मेरी यही प्रार्थना है कि सुर न बिगड़े तथा गाँव में कीर्ति हो। माँ मुझ पर दया करें, जिससे नित नई सभा में आपके आशीर्वाद से मुझे जीत ही हासिल हो।

टेक– दहीं चरटा उचट झय जाय दसोदा हरू के डुलाने झुलना ला,
दाई दसोदा मोर हरू के डलावे पलना ला।
काहिन जति के ढाय पलना दाई, काहिन के बांधे डोरा दसोदा।। 1।।
हित्थी आवे दसोदा नकरी चंदन के गढ़य पलना तेमा बांधे रेसम के डोरा।। 2।।
दाई मोर दसोदा केन आय पौढ़य झुलना मा, तेखर डलनहा बनिहार।। 3।।
दाई मोर दसोदा गैया चरवैया पौढ़य झुलना, मां तेखर डलनहा दसोदा माय।। 4।।

यशोदा माँ! झूले को अहिस्ता-अहिस्ता झुलावें। कहीं नटखट माखनचोर जग न जायें। पालना किसका बना है, व उसमें रस्सी किसकी बांधी गई है? चंदन की लकड़ी का पालना बना है, जिसमें रेशमी रस्सी बँधी है। कृष्ण जी को कौन झुला रहा है, एवं पालने में कौन झूल रहा है? गायों का चराने वाला कृष्ण झूल रहा है और उसे माता यशोदा झुला रही हैं। माँ यशोदा! झूले को धीरे-धीरे हिलोरें।

टेक- खंटिया मा फदाफद होथय रे देवर पैरी लैय दे बजवैया।
सुनयस गा देवर कित्थे गढ़थय पैरी ला।
अर कतेक भंजावय हार रे देवर पैरी लैदे बजवैया।। 1।।
तैय सुनबेगा देवर सिवनी मां गढ़य पैरी ला।
गढ़ मंडला मा नक्खी बिकाय रे देवर पैरी लय दे बजवैया।। 2।।
भला सुन तो देवर केन आय लैसे पैरी ला।
तेखर केन आय पटावय दाम रे देवर पैरी लय दे बजवैया।। 3।।
तीर मा आय ले देवर धनी आय लैदे पैरी ला।
तय जाय के पटाय दे दाम रे देवर पैरी लैदे बजवैया।। 4।।
बाह रे देवर कैसे के टुट गय मोर पैरी।
तेमा कैसे उड़ाथस बहार रे देवर पैरी लैदे बजवैया।। 5।।
देख तो देवर पहरत ला टुट गइसि मोर पैरी।
झिटका पुदकी मा उड़थय बहार रे देवर पैरी लैदे बजवैया।। 6।।

देवर-भाभी के बीच में बातचीत चल रही है कि आप तो पलंग पर छमाछम कूद-उचक रहे हो, मेरे लिये घुँघरू बजने वाले पायल खरीद दो। अरे देवर! इतनी सुंदर ये पायल कहाँ बनती है और कहाँ बिकती है? सिवनी शहर में बनायी गई है एवं गढ़ मंडला में नकद बिक रही है। ये पायल मेरे लिये कौन खरीद के लाये हैं, एवं इनका दाम किसने चुकाया है? पायल मेरे पति देव जी खरीदे हैं, आप इसका दाम चुकता कर दें। अरे देवर जी! ये पायल कैसे टूट गई और आप अपनी मस्ती में मग्न हो रहे हैं। देवर जी, सुनिये! ये पायल पहनने में टूट गई और खींचातानी में उड़ गई इसकी बहार।

टेक- दगा छली झय करबे ना, पकरवाय देहूँ तोला थाना मा,
छैला सुन ले उघार के कान पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।
अरे हां रे छैला तोर चुंदी के हुलिया लिखवाय के-
अर तोर ककई ला करवाहूँ लिल्लाम रे
पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।। 1।।
तोर धोती ला लिखवाय देहूँ थाना मा-
अर तोर बंडी हय जाही लिल्लाम-
पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।। 2।।

तोर हाथ के चूरा ला लिखवाहूँ थाना मा–
अर तोर मुंदरी ला करहूँ लिल्लाम,
पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।। 3।।
तोर गोड़ के मोजन ला बताहूँ थाना मा–
अर तोर पनही ला करवाहूँ लिल्लाम–
पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।। 4।।
जादय मा तोहिच ला लिखवाय के थाना मा
अर तोर बहनी ला कर देहूँ लिल्लाम,
पकरवाय देहूँ तोला थाना मा।। 5।।

प्रेमिका अपने प्रेमी से कह रही है कि तुम हमसे बदमाशी मत करना और मुझे धोखा मत देना, नहीं तो मैं तेरे खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराकर तुम्हें पुलिस के हवाले करा दूँगी। तेरे जुल्फों की हुलिया लिखाकर बाजार में तेरी कंघी नीलाम करा दूँगी। धोती, हाथ का चूड़ा, पैरों के मोजे तथा तुम्हें खुद को थाने में पेशकर और बाजार में तेरी कमीज, हाथ के छल्ले, पैरों के जूते व तुम्हारी बहिन समेत सबको नीलाम करवा दूँगी।

टेक– तय बताव जल्दी वो तोर मूंड़ ले गघरी कैसे मा गिरिस
तोला सोठ के मढ़ाय देहूँ आज नहीं बताव
तोर मूंड़ ले गघरी कैसे गिरिस।
पानी भरेला मैं झिरिया मा गयवं
वहाँ देवर रहय ऊहा ठाड़
ओखर ठिगली कराई मा मूंड़ ले गघरी गिरिस।। 1।।
तलवा गयवं चिथरा लत्ता खल्हारे ला
तहां ठन नन्दोई रहय ठाड़,
ओला दखाई मा मूंड़ को गघरी गिरिस।। 2।।
कुरिया के पिछवारे छैला रहय ठाड़
चूमा चाटी के टेम मा मूड़ ले गघरी गिरिस।। 3।।

पति अपनी पत्नी से गुस्से में झल्लाकर पूछ रहा है कि तेरे सिर से पानी की गगरी कैसे गिर गई। जल्दी बताओ वरना मैं तुझे पीट–पीट कर तेरी हालत खराब कर दूँगा। तब पत्नी अपने पति से कहती है कि मैं पानी भरने कुँआ पर गई थी, जहाँ मेरे प्यारे देवर खड़े थे, उनके मजाक करने से मेरे सिर की मटकी गिर गई। तालाब में कपड़े धोने गई थी, जहाँ मेरे ननदोई जी थे, उन्हें देखने में ध्यान खो बैठी, जिससे मेरे सिर से मटकी गिर गई। अपने घर के पिछवाड़े में मेरे बचपन के यार खड़े थे, जिन्हें प्यार लेने–देने में मेरे सिर की मटकी गिर गई।

टेक– मूंड़ मा बांधे कलंगी खेलयं होरी,
खेलयं री होरी रे खेलयं होरी,
मूंड़ मा बांधे कलंगी खेलयं होरी।
अग्गारू के होरी अजधिया मा खेलयं
सीता मैया अर राम कस जोरी मूंड़ मा बांध के कलंगी।। 1।।
दुसरैया होरी बिरंदाबन अर गोकल मा
राधा रानी अर किसन कस जोरी, मूंड़ मा बांध के कलंगी।। 2।।
तिसरैया होरी कैलास के करखा मा
भंगेरी अर गौरा कस जोरी, मूंड़ मा बांध के कलंगी।। 3।।
चौथैया होरी दूध नंदी मा खेलयं
लक्ष्मी नराइन कस जोरी, मूंड़ मा बांध कलंगी।। 4।।
सब ले पाछू होरी गढ़ लंका मा खेलयं
मंदोंदर रावन कस जोरी, मूंड़ मा बांध के कलंगी

अपने सिर में ताज (मुकुट) पहने हुये होली खेल रहे हैं। होली अयोध्या में मर्यादा पुरूषोत्तम राम एवं माता सीता जी खेल रहे हैं। द्वितीय होली वृंदावन (गोकुल) में भगवान कृष्ण जी और राधा रानी की शोभायमान हो रही है। तीसरी होली कैलाश पर्वत पर माता पार्वती जी के साथ भांग पीकर शंकर भगवान जी खेल रहे हैं। चौथी होली क्षीरसागर में विष्णुजी एवं लक्ष्मी जी खेल रहे हैं। अंतिम होली लंका में रावण मंदोदरी के साथ खेल रहे हैं।

टेक– हां रे हां भाटो दु:ख झय देबे नान बैया ला,
हमार बैया–हमार बैया, हमार बैया लड़ैतिन बेटी आय,
अरे हमार बैया लड़ैतिन बेटी आय कि भांटो दु:ख झय देबे नान बैया ला।
हमार बैया पियारो के आय खाथय जायद मिठाई
एखर मारे लग गये हमार कमाई
दुनिया भर के देवी–देवता ला मनायन,
तनक जादय सांसत के बैया आय,
तेला जानथय संसार भांटो दु:ख झय देबे नान बैया ला।। 1।।
तेला जानथय संसार बैया हमार बिलकुल भोरी है भांटो जी,
मोला तो भगवान सगली तीज दैइस,
अर तोला दैइस अराम अब पैसा चाहे जतना लगय बैया ला
झय करवाय काम भांटो दु:ख झय देबे नान बैया ला।।2।।
बैया ला झय करवाय काम छाड़ के पेज अर पानी,
हैरान आने झय करबे बैया के है
अभी उमर नदानी हरू–हरू चलतय जाही

तोर घर के काम जुगुत लगाय के चूम ले
हमार बैया के गोर-गाल भांटो दु:ख झय देबे।।3।।
हमार बैया के उज्जुर गाल, उमर है तोर सियानी
बैया है अदान झय हो-हो झीका
तानी समो जोग जो लग गय ता रोवे
घर के मूंड़ अर मिलाप के जो बूता बैया ले
लेवे ता रोज मी सही जोड़ भांटो दु:ख देबे।

सुनिए बहनोई जी (जीजा)! हमारी छोटी गुड़िया को ज्यादा दु:ख मत देना और सताना भी नहीं। हमारी गुड़िया बहुत लाड़-प्यार से पली है, इसकी आदत मीठा खाने की बहुत है। हमने इसकी मिठाई के लिये अपनी पूरी कमाई लगा दी है। इसे सदा खुश रखने की उम्मीद में हमने संसार के सभी देवी-देवताओं को बहुत मनाया तथा पूजा-पाठ किये हैं। इस बात को सकल जगत जान रहा है। मुझे तो भगवान ने सारी चीजें दी हैं। धन-सम्पत्ति जो भी लगे, पर हमारी प्यारी गुड़िया से किसी प्रकार का कार्य मत करवाना। इससे मात्र खाना भर पकवाओ, क्योंकि इसकी उम्र अभी नाजुक है। आपके घर का कार्य तो धीरे-धीरे चलता ही जायेगा। आपकी उम्र बहुत ज्यादा है। गुड़िया की उम्र बहुत कम है। आप लोग खींचातानी नहीं करना, मिलाकर कार्य करायेंगे तो आपका पैर दबायेगी, वरना आपको सिर पकड़कर रोना पड़ सकता है।

टेक- रे आल्हा तोर मंदिर ढलकी बजय, अरे तोर मंदिर ढलकी बजय
आल्हा-आल्हा बजैया उदयसिंह राव
आल्हा तोर मंदिर ढलकी बजय।
काहिन काठ के बने है ढलकी,
अरे काहिन के बांधय डोर
आल्हा तोर मंदिर मा ढलकी बजय।। 1।।
चंदन काठ के बने है ढलकी,
अरे रेशम के बांधय डोर रे आल्हा
अरे रेशम के बांधय डोर रे
आल्हा तोर मंदिर मा ढलकी बजय
बजैया उदय सिंह राव रे
आल्हा तोर मंदिर मा ढलकी बजय।। 2।।

गीत में आल्हा का गुणगान किया जा रहा है कि आल्हा आपके मंदिर में ढोलक बज रहा है, जिसे उदयसिंह राव बजा रहे हैं। कौन सी लकड़ी की ढोलकी बनी है, उसमें रस्सी किसकी लगी है? चंदन लकड़ी की ढोलकी एवं रेशम की रस्सी से उसमें गुँथाई की गई है।

टेक- लाने ला गैस बैमान मोला लाने ला गैस बैमान लाल
जब लगि से माह अघनवा मोला लाने ला गैस बैमान लाल
चारि महिना गरमी रितु लागय, टप-टप चुहय पसीना
मोला लाने ला गैस बैमान लाल।। 1।।
चार महिना बरसा रितु लागय मूसर कस धार बहय बंगलवा,
मोला लाने ला गैस बैमान लाल।। 2।।
चार महिना जड़कार रितु लागय, थर-थर कंपय शरीरण
मोला लाने ला गैस बैमान लाल

जब मैं मायके में थी, तब मुझे मेरे पति (बेइमान) लेने आये। चार महीने गर्मी का मौसम था, जिससे पूरे शरीर से पसीना टपक रहा था। चार महीने गर्मी के बाद बारिश का मौसम आया, जिससे (बंगलवा) मकान में टपकने के बजाय पानी की धार बह रही थी। तत्पश्चात् ठंड का मौसम आया, जिससे पूरा शरीर ठंड से थर-थर कांप रहा था।

टेक- अरे हां रे लड़ैया के फाग मचे है जड़कारे में
अब लोखरी नाव गुलाल लड़ैया फाग मचे है जड़कारे में।
बलौआ देत फिरय लड़ैया फागन के भाई
जरियन-जरियन फिरय सब ला टेरत भाई,
रोजगुरही चितवा चलय जुर गईन
सामर बघवा भलुवा, लड़ैया के फाग मचे है जड़कारे में।। 1।।
आय लड़ैया के दांव बैठके बजावय बाजा
भलुवा चितवा तेंदुवा सुन्हा मिलके गावयं फाग
उचट-उचट के आज के दिन और गुल बाघ
लड़ैया के फाग मची जड़कारे में।। 2।।
आज के दिन गुल बाघ लड़ैया सबके ऊपर नावय रंग
जहां न पूजय हाथ तहां पिचकारी मा मारय
लड़ैया के फाग मची जड़कारे में।। 3।।
कौवा कहय अरूव ते इनखर देखा हाल
मारे रंग गुलाल के सब मीज रहे है गाल
लड़ैया के फाग मची जड़कारे में।। 4।।
सब मीज रहे है गाल भलुवा और गेड़ा आये देख के
इनखर हाल फाग मा तेंदुवा नाचय मुसवा दौड़ के
देख के लैय गय बीच गुलाल
लड़ैया फाग मची जड़कारे में।। 5।।
छरिया घेरत ला रे बिडडर और खबीस लानय

पिचकारी मारयं लम्हा भाई गवैया
कहय हय काय रंग बिरंग
भलुवा कहय हिरदे में बसों अब इनखर छोड़ो संग
लड़ैया फाग मची जड़कारे में।

ठंड के मौसम में लोमड़ी फाग में लीन है। साथ में लोखरी (लोमड़ी प्रजाति की छोटी लोमड़ी) सभी जानवरों के ऊपर गुलाल उड़ा रही है।

लोमड़ी सभी जानवरों को फाग का निमंत्रण दे रही है। सभी को चिल्लाकर कह रही है कि फाग में जरूर आना। अपना स्वार्थ भी साध रही है। बेरियों की झाड़ी में जाकर बेरी भी तोड़कर खा रही है। फाग में चीता, शेर, सांभर, भालू सभी जानवर इकट्ठे हो गये। निमंत्रण देकर आयी लोमड़ी बैठकर बाजा बजाने लगी। भालू-चीता, तेंदुवा, सुन्हा (जंगली कुत्ता) सब मिलकर फाग गा रहे हैं। सभी जानवर एक-दूसरे के ऊपर रंग-गुलाल डाल रहे हैं। जहाँ हाथ नहीं जाता, वहाँ पिचकारी से रंग डाल रहे है। कौवा अरूवा से बोला कि इन सबका हाल देखो। सभी अपने-अपने गालों को मसल रहे हैं। ये देखकर रींछ और गेंडा आया उनके बीच में चूहा दौड़कर आ गया और बीच में घुसकर गुलाल उड़ाने लगा। बकरी को देख भेड़िये के मुँह में पानी आ गया। घेरा डालते हुए सभी पिचकारी मारते हैं, जिन्हें देखो सभी रंग में सराबोर हैं।

टेक- हां रे हां बिरझ में झुलाय के फिरय कंधैया।
हां रे बिरझ मं नौ मन रंगा घोरयं,
जेमा दस मन उड़य गुलाल, बिरझ में झुलायके फिरय कंधैया।। 1।।
हां रे हां बिरझ में केखर फिलय चुनरिया
औ केखर पचरंग फाग-बिरझ में ..... ।।2।।
हां रे हां बिरझ में राधा के फिलय चुनरिया
कान्हा के पचरंग पाग, बिरझ में झुलाय के फिरय कंधैया
खाय ले पी ले परसन है जाय, बिरझ मा झुलाय के फिरय कंधैया।। 4।।

वृंदावन में कृष्ण जी गुमसुम भटक रहे हैं। जहाँ फगवार नौ मन रंग एवं दस मन का गुलाल उड़ा रहे हैं। फाग में किसकी चुनरिया भींग रही है एवं फाग कौन गा रहा है? राधा की चुनरी भींग गई एवं कृष्ण जी फाग गीत गा रहे हैं। खावो-पीओ, आनंद में रहो। वृंदावन में खूब फाग गाओ।

टेक- मोर उप्पर रंग झय नाव सांवरिया मोर उप्पर रंग झय नाव आर
काहिन के तोर रंग बने है, काहिन के तोर पिचकारी
मोर उप्पर रंग झय नाव आर।। 1।।
छिवला फूल के रंग बने है, बांसन के पिचकारी
मोर उप्पर रंग झय नावे आर।। 2।।

कसना रंग गैया कसना रंग बिछया, कैसना रंग हवय चरवैया
मोर उप्पर रंग झय नावे आर।। 3।।
लाल रंग गैया चरका रंग बछिया, करिया रंग हवय चरवैया
मोर उप्पर रंग झय नाव आर।। 4।।

प्रियतम अपने प्यारी से कह रहे हैं कि तुम मेरे ऊपर रंग मत डालना। रंग किसका बना है एवं पिचकारी किस चीज की बनाये हो। परसा फूल का रंग एवं बाँस की पिचकारी बनी है। गाय एवं बछड़ा कौन से रंग में हैं एवं चराने वाले का रंग कैसा है? लाल रंग की गाय एवं सफेद रंग का बछड़ा है, श्याम रंग चराने वाले कृष्ण जी का है?

लीली घोड़ी चितकाबरी रे पतरैला सवार देखयं न पायो नजर
भर मां घुंघटा बैरी आय देखयं नह पायवं नजर भर मा।। 1।।
गाड़ी चलय बलगहना रे उतरय शहडोल करय बाजार करपा के
उतरयं शहडोल करयं बजार करपा के।। 2।।
सड़क मा चलय मोटरिया चलय रेलवैया मा रेल
ऊपर चलय हवैया
देखो किस्मत के खेल ऊपर चलय हवैया।। 3।।
मूंड़ मा झौवा धर केरे मौहा बीनय जाये मौहा बीनय जाय
कैसे है मौहा रसीले, रस्सा चूहत जाये कैसे है मौहा।। 4।।
अंबय जमाना के टुरिया रे छैना बीने ला जांय छैना बीने ला जाय
घर मा चलाकी करके छैला खोजे ला जाये घर मा चलाकी करके।। 5।।

नीली रंग की घोड़ी जिसके शरीर में सफेद-काले रंग के चिट्टे हैं। एक दुबला-पतला सवार उस पर बैठा है, उसके सिर में घूँघट पड़ा है, जिससे वह देख नहीं पा रहा है। बेलगहना से चलकर गाड़ी शहडोल पहुँच रही है। शहडोल के ही किनारे करपा बाजार लगता है। सड़क में मोटर, लोहे के रास्ते पर रेल एवं आकाश में हवाई जहाज चल रहे हैं। ये किस्मत की बात है- सिर पर टोकनी रखकर महुआ बीनने जा रहे हैं, जो बहुत रसीले हैं। महुए का रस टपक रहा है। आजकल की लड़कियाँ कंडा बीनने के बहाने घर से निकलकर लड़कों की तलाश करती रहती हैं।

टेक- हां रे हां कूंआ मा ठाड़े परदेसी दुई झना मोर धनी के अनुहार
कूंआ मा कोन बरग घोड़ा ला बांधय
कोन बरग असवार, कूंआ मा ठाड़े परदेसी।। 1।।
कूंआ मा चरका बरग घोड़ ला साधयं
करिया बरग असवार, कूंआ मा ठाड़े।। 2।।

कुँआ के किनारे दो मुसाफिर खड़े हैं, जो मेरे पति के हमशक्ल दिखाई दे रहे हैं। कुँए पर

कौन से रंग का घोड़ा बंधा है एवं घोड़े की सवारी का रंग कैसा है? सफेद रंग का घोड़ा बँधा है, जिसमें श्याम रंग की सवारी है।

टेक- हां रे हां बिरज मा बांधे मुकुट खेलयं होरी
राधा के नंद किशोर....बिरज में....
बिरज में केखर फिर गये चुनरिया
केखर पचरंग पाग। बिरज में..... ।। 1।।
बिरज मा राधा के फिलगय चुनिरया
कंधैया के पचरंग पाग। बिरज में..... ।। 2।।
बिरज मा कय मन के सिरगाड़ी है
कय मन उड़य गुलाल। बिरज में..... ।। 3।।
बिरज मा दस मन के सिरगाड़ी है
दस मन उड़े गुलाल। बिरज में..... ।। 4।।

ब्रज में कृष्ण एवं राधा सिर पर अपना मुकुट पहने हुए फाग खेल रहे हैं। ब्रज में किसकी चुनरी भींग गई है और किसका अंगोछा भींग गया है। राधा रानी की चुनरी एवं कृष्ण जी का पीताम्बर अंगोछा भींग गया है। सिरगाड़ी कितने की है और कितने का गुलाल उड़ रहा है। दस मन की सिरगाड़ी एवं दस मन का गुलाल उड़ रहा है।

टेक- भरे सरोवर ताल कमला फूली रहय
फूलयं फूल गुलाब भंवरा गुंजार रहे।
कोन सखी पानी ला जाय मूंड़ मा कय गघरी
भरे सरोवर ताल कमला फूली रहय।। 1।।
राधा सखी पानी ला जाय मूंड़ मा दुई गघरी
भरे सरोवर ताल कमला फूली रहय।। 2।।
गली मा मिलय नंदलाल झटक के बांह पकरी
छांवाड़ दे छैला मोर बांह मूंड़ मा है दुई गघरी
भरे सरोवर ताल कमला फूली रहय।। 3।।
एक फूटय दुई चार बिसाह दवों आवा भरी
भरे सरोवर ताल कमला फूली रहय।। 4।।

तालाब में चारों तरफ पानी लबालब भरा हुआ है, जिसमें कमल के फूल खिले हैं। साथ ही गुलाब फूल भी फूले हुए हैं। तालाब से कौन पानी लेने जा रही है तथा सिर में कितने घड़े रखी है? राधा रानी सिर में दो मटके रखे हुये पानी लेने जा रही हैं। बीच रास्ते में ही कृष्ण जी मिल गये और राधा को झपटकर पकड़ लेते हैं, तब राधा रानी कहती हैं कि नंदलाल मुझे छोड़ो, मैं सिर पर दो घड़े रखी हूँ। तब कृष्ण जी कहते हैं कि अगर एक घड़ा फूट जाये, तो बदले में चार मटके खरीदवा दूँगा।

टेक– *हां रे हां पवनसुत खोजत फिरय गढ़ लंका मां, खोरिन मां बीर हनुमान*
खोरीन मां बीन हनुमान, बैद घर खोजत आई,
बैद सुसेन मकान पता पूछय कपिराई
खार खोर खोनत फिरय महावीर बलवान,
आधी रात के समो मां लंका रहय सूनसान।। 1।।
लंका मां रहय सूनसान, एक झन मिल गय भाई,
गरीब के बोल सुन के हिरदे मां।
राम आये पता बताव बैद के घर के अस्थान,
बैद सोय खटिया बिछाव सोय रहय मकान।। 2।।
सोय रहय मकान जगय कोई नहीं भाई,
हाथन मां उठाय के चलय कपिराई
रामदल मां जाय के धर दईस बीर महान,
बैद सुसेन ला जगाय के कहय बीर हनुमान।। 3।।
कहय बीर हनुमान तोला भगवान बलाय,
सुसेन ला घर के राम के तीर मां
लानय भगवान लखन ला दिखाव ता....
बैद करय पहचान, अति घाव छोटे के सुनों राम भगवान।। 4।।
सुनो राम भगवान, सजीवन हब्बा बलवाओ
लखन लाल ला पियाय के अर घाव मां लगवाओ
लखन के दवाई पीयत भर मां जागय हमार रहगय मान
क्षत्री वंश के राजा तुम, मन मां धीरज धरों आन।। 5।।
मन मां धीरज धरो आन सुरूज नाईन निकर झय पावय
सजीवन बूटी ला मंगाय के लखन जल्दी खाय लेवय
हा हा कार मचय राम दल मां सुन ले किरपा निधान
कोन जोधा है हमार बीच मां जोन हब्बा लानय आन।। 6।।
अब हब्बा लानय आन कोन बलधारी
दुरनागिर ले जाये के दवा लानय हितकारी,
उठय पवनसुत बीर सुनय किरपा निधान
तोर पनही के परताप के दवाई लान्हू भगवान।। 7।।
हुकुम तोर हयजाय, ता बूटी लानव आन राधेश्याम
कथकर कहय महाबीर बलवान
दुरनागिर डहर ला चलिस सुमर के किरपा निधान।। 8।।

वीर बजरंगबली जी लंका में खोज कर रहे हैं। गली-गली में हनुमान जी वैद्य सुसेन का

घर ढूंढ रहे हैं। लंका में उस समय सूनसान था, पवनसुत यहाँ–वहाँ तलाश कर रहे थे, इतने में ही राम भक्त हनुमान जी को एक व्यक्ति दिखाई दिया, उन्होंने जिससे वैद्य जी का पता पूछा। पता चला कि वैद्य जी अपने घर में गहरी नींद में सो रहे हैं। इतना सुनते ही हनुमान जी वैद्य जी के घर पहुँचे और सोये हुये हालत में उठाकर उन्हें लेकर चले। वैद्यजी की नींद टूटी, तब उन्होंने लाने का कारण पूछा। हनुमान जी ने उन्हें राम दल के पास लाकर कारण बताया। वैद्य जी ने हनुमान को संजीवनी बूटी लाने को कहा और बोले कि घाव अधिक गहरा है, लखन जी अचेत पड़ चुके हैं, मगर ध्यान रहे कि सूर्योदय के पहले ही दवा लाना होगा। जितना जल्दी हो सके, इन्हें पीसकर दवा खिलायी जाये। तब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी बोले कि हमारे दल में ऐसा कौन वीर है, जो संजीवन बूटी ला सकता है। इतनी बात सुनकर बजरंगबली ने भगवान श्री रामचंद्र जी को प्रणाम किया और दवा लेने चल दिये। द्रोणागिरी पर्वत से दवा संजीवनी बूटी लेकर हनुमान जी आ गये।

टेक– हां रे हां पहले देवी शारदा ला भज ले हो
फेर लय लेव गुरून के नाव, पहले देवी शारदा गाय लेहो
पहली मां सुमरवं ठाकुर देव ला, दूसर मां खैर बहेर।। 1।
तीसर मां सुमरवं धरती मात ला, चौथ मा गौरी गनेश।। 2।।
पांचय मां सुमरवं चंदा अर सुरूज ला, धरती मां फेकय उजियार।। 3।।
आखिर मां सुमरवं देवी दुर्गा ला, छिन मा होही सहाव।। 4।।

प्रथम नमन देवी शारदा का कर लें, फिर अपने–अपने गुरू का स्मरण करें। सर्वप्रथम ग्राम के ठाकुर देव एवं द्वितीय स्मरण खैर एवं बहेड़ा, तृतीय स्मरण जन्मभूमि एवं चतुर्थ स्मरण गौरी सुत बिघ्न विनाशक गणेशजी का करें। पंचम स्मरण चाँद एवं सूर्य नारायण का जो जगत को प्रकाश प्रदान करते हैं और सहाय होते हैं।

टेक– सुन्ना है अजुधिया राम बिना
राम बिना भगवान बिना, सुन्ना है अजुधिया राम बिना।
केखर लागय धिया पतौहा, केखर लागय भोजैया, राम बिन.... ।। 1।।
लागय परम सुंदरिया, केन हरके लय जाय, राम बिन... ।। 2।।
केखर लगय परम सुंदरिया, केन हरके लय जाय, राम बिन.... ।। 3।।
राम के लगय परम सुंदरिया, रावन हरके लय जाय, राम बिन.... ।। 4।।

अयोध्यापुरी आज भगवान श्री रामचंद्र के बिना सूनी पड़ी है। सीता जी किसकी बहू एवं किनकी भाभी हैं। अयोध्या नरेश श्री दशरथ जी की बहू व लक्ष्मण जी की भाभी हैं। वे किनकी पत्नी है एवं कौन हरण कर ले गया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी की अर्धांगिनी है एवं रावण हर कर ले गया। अयोध्या आज सूनी पड़ी है।

टेक- आज कान्हा झूल रहे, झूल रहे कान्हा झूल रहे।
काहिन के तोर खाम गड़े है, काहिन के तोर डोर-कान्हा झूल रहे।। 1।।
चंदन काठ के खाम गड़े है, रेशम के तोर डोर-कान्हा झूल रहे।। 2।।
कोन झूलय कोन झूलावय, कोन झीकय डोर-कान्हा..... ।। 3।।
कान्हा झूलय राधा झुलावय, संखिया झीकय डोर-कान्हा झूल रहे।। 4।।

आज कान्हा झूला में झुला रहे हैं। झूले में गड़े हुये खम्बे कौन सी लकड़ी के एवं रस्सी में क्या लगाया गया है? चंदन की लकड़ी के खम्बे एवं रेशम की रस्सी लगी हुई है। कौन झूल रहा है एवं कौन झूला रही है? सखियाँ रस्सी खींच रही है।

टेक- धीरे-धीरे चलबे गिरधारी रघुवर, धीरे रेग गिरधारी रघुवर।
ईहा के गलिन मां ऊच नीच घटिया
हलुक परत शरीरा, रघुवर..... ।। 1।।
डोंगर गली मां कांटा कटीला,
धोती चिरय हामारी, रघुवर..... ।। 2।।
असना गली मां ठाढ़े दुफरिया,
टप-टप झरय पसीना, रघुवर..... ।। 3।।

प्रभु आप धीरे चलें। यहाँ के रास्ते बराबर नहीं है। कहीं गड्ढे और कहीं घाट हैं। आपका शरीर बहुत कोमल है। यहाँ के रास्तों में चारों ओर कांटे लगे हुये हैं, जिसमें फँस के कहीं मेरी साड़ी न फट जाय। हमें रास्ते में ही दोपहर हो गई है, शरीर से पसीना टपक रहा है।

टेक- तनको माया नहिआय करेजा मां,
तनको माया नहिआय मन मां आर।
तोला चीर करेजा दिखायवं,
तनको माया नहिआय मन मां लाल।
तोर ले चंदा अर हार गय सुरूज अर हारय
हार गय बादर तरैया-मन तनको नहीं आय..... ।। 1।।
दाई अर हारय दादा अर हारय
हार गैईन सफ्फा लो गईया-तनको..... ।। 2।।
कहत राधेश्याम जी हारयं
अब कन्नो नहीं समझैया-तनको..... ।। 3।।

आपके हृदय में मेरे लिये कोई जगह नहीं है। मैंने आपको अपने दिल की हर बात बताई, मगर आपको कुछ भी समझ में नहीं आया। तुमसे चाँद-सूरज तो क्या आकाश के तारे भी हार गये। माता और सभी महिलायें भी समझाते-समझाते हार गई। गायक राधेयाम आपको समझाकर हार मान लिये, अब इसके बाद तुम्हें समझाने को कोई भी नहीं बचा, मगर तुम नहीं समझ सके।

टेक- ऊमर झिरिया के पानी ओ समधिन ऊमर झिरिया के पानी लाल
पानी-पानी समधिन ऊमर झिरिया के पानी लाल।
सास कहय बहु ला पैरी पहर ले, पैरी के रंजन भर के।। 1।।
सास कहय बहु ला टोडर पहर ले, टोडर के रंजन भर के ।।2।।
सास कहय बहु ला करधन पहर ले, करधन के रंजन भर के ।।3।।
सास कहय बहु ला बंहकर पहर ले, बंहकर के रंजन भर के ।।4।।

ऊमर वाले झिरिया में पानी है। सास अपनी बहू से कह रही है कि बहू तुम पायल, टोडर करधन, बखौरा पहनकर ऊमर वाली झिरिया से पानी ले आओ।

टेक- पोहना भरे फगुनवा घूमत है गांव के गलियन मां
अरे हां पोहना घूमत गांव के गलियन मां।
गांव-गांव का शोर मचावय
खाय पी के भांग धतूरा।। 1।।
कनो के बात कनो न सुनय
पोहना भरे फगुनवा, घूमत है गलियन मां।।2।।

फाल्गुन मास मेहमान की तरह वर्ष में एक बार ही आता है। फाल्गुन में मेहमान गाँव के रास्ते में घूम रहे हैं। गाँव-गलियों में शोर मचाते, गांजा व भांग में धुत्त होकर घूम रहे हैं। सब अपने-अपने मस्ती में मस्त हैं, किसी की कोई नहीं सुन रहा है। कीचड़ और गोबर का गुलाल बनाकर खेल रहे हैं।

टेक- हां रे हां गांजा झय पीवे मोर बालेमा
गांजा है जहर गंभीर-मोर गांजा झय पीवे बालेमा
गांजा है जहर गंभीर, गांजा मां है गुण तीन
तनक तमाखू तनक कली, तनक पानी के टीप
फेर हुमक-हुमक दम ले..... ।। 1।।
दुमक-दुमक दम लेवय पित्त सुखावय
साऊ गैया होय फिर आंखी ललामी होय।।2।।
आंखी ललामी होय गांव के दिखय गन्ना
बिकव पुरान घी गांजा पीयेला झय छोड़ना
चाहे लरका मांगय भीख.... ।।3।।

हे प्रियतम! तुम गांजा नहीं पीना, गांजा में अत्याधिक जहर समान तत्व होता है। गांजा में तीन गुण हैं- थोड़ा तम्बाखू, थोड़ा गुड़ाखू एवं दो-तीन बूंद पानी डालकर बनाया जाता है। फिर पूरी शक्ति लगाकर दम लेते हैं। दम लेने के बाद नशा चढ़ने पर आँख लाल हो जाती है। नजरे

पालतू गाय की तरह झुकी रहती हैं। गाँव में हर तरफ गन्ने ही गन्ने नजर आते हैं। घर से पुराना घी निकलता है। गांजा पीना मत छोड़ो, चाहे अपने बच्चों को गांजा के लिये भीख क्यों न मांगना पड़े।

टेक– हां रे हां शेर डोगरा के राजा तय कहाये
गरजे मां गरजे मां गरभ गिर, शेर डोगरा के राजा तय कहावे
गरजे मां गरभ गिर जाये बने है दिवाना चितवा मंत्री चंचल रहेना है
तेला खरहा मनुआ पुलुस के कम्पनी
मुड़खोदा बने खबी लोखरी मंजरन
बने तब सबक के सुलय नसीब–
शेर डोगरा के राजा तय कहाये।। 1।।
सबके सुलय नसीब हिरना भय
जिहला दरोगा बिलरा पलटन सजो
मजा गारी ने भोगा, रेड़ा पूछी अंटिआय के चढ़े कचहली जात
लड़ैया बकाकत कर रहे सांभर के सजा हैच जात।। 2।।
सांभर के सजा हैच जात अदालत है भारी
बन भैंसा रेंकत फिरय बंदरा के गवाही
तेतुवा तो मुंशी बने बिगवा हवलदार
मजिस्ट्रेट है भेड़िया फिर सुंगरा थानेदार।। 3।।
फिर सुंगरा थानेदार नीलगाय तलब गवाही
बंदरा ने वारंट गिरफ्तारी करवाई
आज करिस फैसला जो हाकम की राय
लड़ैया बहुत गुस्सा भये फिर मिस लई उठवाये।। 4।।
फिर मिस लई उठवाये टेसन आये
सिकिन किलास की टिकिट कटाये,
दाम भर पूर चुकाये गदहे ने सीटी बजाई
छूट गई एक्सप्रेस–नरसिंहपुर मां फैसला फरे
भगिस होशंगाबाद ऊहां तक देख के आव
कनो झगरा होय तो नहीं नींद भर सोईहा
राधेश्याम कथकर कहें कुशराम समझाये
गंगा जी के तीर मां कोई ला कोई झय तंगाय
शेर डोगरा के राजा तब कहायें।

शेर जंगल का राजा होता है, जिसके गरजने से गर्भ गिर जाते हैं। जंगल में जानवरों की अदालत बनी है, जिसमें चतुर चीता मंत्री है, जिसके अंगरक्षक रीछ व खरगोश हैं। भुड़खोदा चौकीदार एवं छोटी लोमड़ी रसोईया बने है, जिससे सभी की किस्मत चमक गयी है। हिरण को

जेल का दरोगा, बिलरा सेनानायक, लकड़बग्घा पूँछ मरोड़ते हुये कचहरी जा रहा है। लोमड़ी ने वकील बनकर वकालत की और सांभर को सजा हो गयी। अदालत बहुत बड़ी है, वन भैंस चिल्लाते घूम रही है। गवाही के लिये तेंदुवा, बिगवा हवलदार और भेड़िया मजिस्ट्रेट एवं सूअर थानेदार बने हैं। नीलगाय और बंदर का भी वारंट कटा, चील-बाज ने फैसला दिया, जो सर्वसम्मिति से पारित किया गया। लोमड़ी को बहुत गुस्सा आया, जिससे पेशी अगली तारीख तक बढ़ गई। पेशी दूसरी अदालत में तय की गई। स्टेशन पहुँच गये, सेकण्ड क्लास की टिकिट कटाई, गधे ने सीटी बजाई, तब रेल चली नरसिंहपुर। फैसला होशंगाबाद में हुआ कि सभी जानवर नींद भर सोएँ, अब किसी को कोई जानवर नहीं सतायेगा।

टेक- हां रे हां रेवा परगट हैगय जग तारे ला तहाँ बहय निर्मल धार
रेवा परगट हैगय जग तारे ला
बहथय निर्मल धार करय जब शिव संधारा
परलय काल जब हैस भसम करिस संसार
बहय काल के धुसरती मां बहत कुंड
मां जाय फेर कनिया के आकार।। 1।।
कनिया के आकार शंकर जी ला रूप दिखावय
कनिया अपन जान के तुरतय कोरा मां बैठगय
रेवा तोर नाव है तोर ले माया हमार अमरकंटक
एक धाम भईस फेर बहय दूध के धार
पोहना भरे फगुनवां घूमत हैं गलियन मां।। 2।।
बहथय दूध के धार दिखावय महिमा भारी
कपिल मुनी जपतप करय नरबदा
मंडला धूंआधार गवारी फेर पोहचे भेड़ाघाट।। 3।।
फेर पोहचे भेड़ाघाट बीच में शिवपुरी पंचवटी से चलय बावन गंगा
बहय न्यारी ब्रह्मा जी ने जग करिस तब बनिस घाट बरमान
ओमकार के पुरी मां फेर शिव शंकर स्थान।। 4।।
शिव शंकर स्थान चलय धन पावत
फोरत जाय गिरी हिमालय जहां से
महिमा जोरय कहथय हन्नूलाल जी मन
मुब्बाह फल पाये अर दरसन से तर जावे।। 5।।

पावन तीर्थ अमरकंटक से माँ रेवा जगत कल्याण हेतु प्रगट हुई हैं, जिनसे नदी के रूप में निर्मल जलधार प्रवाहित हो रही है। शिवशंकर जी ने जब संहार किया, भस्मासुर को भस्म कर सबका संशय दूर किया और तब कन्या के रूप में माँ नर्मदा प्रकट हुई। छोटी सी कन्या को देखते ही शिवजी ने मां नर्मदा जी को अपनी गोदी में पुत्री समान बैठाया और बोले कि हे कन्या!

तुम्हारा नाम रेवा है, तुमसे हमें बहुत ममता है। अमरकंटक एक धाम है, वहीं से दूधधार के रूप में प्रवाहित हुई हैं। दूधधारा से आकार बढ़ता गया, जिसकी महिमा अपरम्पार है। कपिलमुनी ने तपस्या की जहाँ का नाम कपिलधारा पड़ा, जो गढ़मंडला को घेरते हुये तिलवारा ग्वार घाट, धुँआधार, भेड़ाघाट पहुँची बीच में त्रिपुर सुंदरी ब्रह्मघाट होते हुये होशंगाबाद एवं बावन गंगा होते हुये ओंकारेश्वर तीर्थधाम पहुँची, जहाँ शिवजी का उत्तम तीर्थ स्थान है। ओंकारेश्वर से आगे की यात्रा में समुद्र में समाविष्ट हुई। हन्नुलाल जी कहते हैं कि माँ रेवा के दर्शन से ही लोग तर जाते हैं।

टेक- हां रे हां चिरैया मजा मार ले
जिन्दगी के नहि पावे मनुस अवतार
चिरैया मजा मार ले जिन्दगानी के।
नहीं पावे मनुस अवतार लरकई मां खेल गंवाये
तन मा कोई अक्किल नहीं फोकट मां समो गंवाये,
बीस बरस हय जब सज बज के हैगये जवान,
काम के न बूता के कहाँ समावय सान।। 1।।
कहां समावय सान तेल जुलफन मां भारी,
ढोंग धतूरा के मारे बुध मां लगय बिमारी
ससता घड़ी हाथ मां सूट बूट तियार आंखिन
मां करिया चसमा फेर का लगय संसार।। 2।।
फेर का लगय संसार मन मां मुकदमी छावय
गांवन-गांवन फिर लगय तस के उमर आवय
चालीस बरस के होत मनमां करय विचार
सफ्फा लरकन के कारण मूंड़ मां आवय भार।। 3।।
मूंड़ मां आवय भार मति माया छेड़ी,
जस के बरस होय पचास तस के कनिहा टेड़ी
खटिया मां लोटे पड़े रहय-घेरय माया जाल
राधेश्याम कथकर कहय एला नहि आवय काल।। 4।।
एला नहि आवय काल साठ मा आवय सफेदी
लगय सत्तर के चोंट तस के रोग छेदी
लकवा बाब दमा घेरय आंखी ले बहय नीर
अईसनय होत अस्सी पोंहचय फेर अब लगय नैया तीर।। 5।।
अब लगथय नैया तीर विपत काम के ठिकाना
एक ले एक रोग घेरत रात कटय ना होय बिहाना
धरम करम करे नहीं और न कभू सतसंग

राधेश्याम कथकर कहय अब चोला छांड़य संग
चिरैया मजा मार ले जिन्दगी के।।6।।

बड़े भाग्य से मनुष्य का जन्म मिला है। जिंदगी को अकारथ कभी नहीं करना चाहिये। दोबारा मनुष्य का तन नहीं मिलना है। बचपन खेल खेलते बिताये, समझदारी न होने से फालतू समय बर्बाद हुआ। बीस साल की उम्र में सजकर तैयार हुये। कोई काम धंधा नहीं किया। अपनी मस्ती में चूर रहे। जैसे-तैसे समय बीतता गया। मन में नवाबी बनती रही, सिर का बाल बढ़ाया, हाथों में घड़ी, सूट-बूट पहिने और आँखों में चश्मा लगाये घूम रहे हैं। भटकते-घूमते समय गुजरा, जब तक उम्र चालीस में पहुँची, घर का बोझ और बच्चों का झंझट बढ़ता गया। धीरे से उम्र पचास की हुई, अब माया जाल घेरने लगा। अब तक कमर टेढ़ी हो गई, खाट पर समय काटे नहीं कट रहा है। घर के लोग सेवा-खुशामद छोड़कर कोस रहे हैं कि इन्हें काल क्यों नहीं घेर लेता। कराहते हुये साठ साल की उम्र में पहुँचे। लकवा-दमा एवं अनेक प्रकार के रोग से ग्रसित हो गये, आँखों से आँसू बह रहे हैं। इस तरह अब मौत के नजदीक ही हैं। काम का कोई ठिकाना नहीं, रात नहीं कट रही है। सबेरा जल्दी नहीं हो रहा है। कभी धर्म नहीं किये और न ही अच्छे लोगों का सत्संग किया। इस तरह से जिंदगी समाप्त हुई और पुनर्जन्म को तरसते रह गये।

झूला

अरे हाँ पहुरे ले सुमरौंव बड़ा देव गोंड़न की,
साजा के हो, साजा के
साजा के तरी जनमाय
पहुरे सुमरौंव बड़ा देव गोंड़न की।
दूसर सुमरौंव ठाकुर देवता।।
तीसर हरदू लाल....
पहुरे.....जनमाय।।
चौथे मां सुमरौंव बाघ बघासुर।।
नरियर भोग लेवैय
पहुरे.....जनमाय।।

प्रथम स्तुति देवी-देवताओं को स्मरण कर गाया जाता है। गोण्ड जनजाति अपने बड़ा देव को प्रथम स्मरण करते हैं- हे बड़ा देव! आप हमारे सहायक हो, साजा वृक्ष के नीचे आपने जन्म लिया है। द्वितीय स्मरण ठाकुर देवता को तथा तीसरा हरदूलाल जी को एवं चौथे बघेसुर देवता को कर रहे हैं। नारियल का भोग लें और हमें सदा सहाय करें।

चले जाय चटकीला ऐंड़त,
चले जाय चटकीला लाल।

गाड़ी जइसे खीला,
ऐंड़त चले जाय चटकीला।
हाथ पांव मा कम ताकत दिखथैय।
ताकत दिखथैय,
रूप बदन सब ढीला।
ऐंड़त चले जाय चटकीला लाल।।
कारी ला सोहैय कारी कुरता।
कारी कुरता।
अरे टोपी के रंग हव नीला।
ऐंड़त चले जाय चटकीला लाल।।

गाड़ी के पहिये लगे हुए हैं, पहियों में खीला जैसे पैर की ऊँगलियों में पहिने हो और अपने पैर की ऐंड़ लगाते हुए चल रहे हों। हाथ-पैर में ताकत नहीं। शरीर पूरा ढीला है और ऐंड़ लगाते हुए जैसे चल रहे हों। काले रंग का कुरता है और टोपी का रंग नीला है।

झुम कईया रे लाल, झुमकत साजन आ जाबे।।
आरे बढ़ई ले बोलो बढ़ई रे लाल
खैर के डण्डा बना जाबे
झुम कईया.....आ जाबे।।
लोहरा ले बोलो लोहरा रे लाल,
खैर के डण्डा मां लोहा के सामी लगा देबे।
झुम कईया..... आ जाबे।।
सोनरा ले बोलो सोनरा ले लाल,
खैर के डण्डा मां लोहे के सामी मां,
सोने के शांकर लगा देबे।
झुम कईया.....आ जाबे।।
पटवा ले बोलो पटवा रे लाल
खैर के डण्डा मां लोहे के सामी मां,
सोने के शांकर मां, रेसम के फुन्दरा लगा देबे।
झुम कईया.....आ जाबे।।

अरे साजन! तुम खेलते-कूदते आ जाना। बढ़ई भाई से बोला है कि भैया खैर का डण्डा बना देना। फिर लोहार से बोला कि खैर के डण्डा में लोहे के सामी (खीला) लगा देना। इसी तरह सोनार से बोला कि खैर के डण्डा और लोहे के सामी में सोने का सांकल लगा देना। पटवा से बोला कि खैर के डण्डा में, लोहे के सामी में और सोने के सांकल में रेशम का फुंदरा लगा देना।

बाले मा मोरे बाले मा
जहाँ खुशियाँ छाई अपार रे बाले मा।
एक ईंट कुँआ की सवा लाख पानिहार
बिन रस्सी के पानी भरय री कौन
पुरुष के नार हो-बाले मा।
चीटी मूतय रेत मा की मकर बनावय जाल
धोबी फीचय कपड़ा
ढीमर घुमावय जाल हो
बाले मा.....
नान-नान टूरीन के बड़े-बड़े जूरा
जूरा मा आगी लग गय
कि फुट गय तमूरा रे
बाले मा.....

बचपन में खुशियाँ ही खुशियाँ छाई हुई हैं। एक ईंट का कुँआ बना है, जिसमें सवा लाख पानी भरने वाली हैं, लेकिन वह कौन पुरुष है जो बिना रस्सी के पानी भर रहा है। चींटी रेत में पेशाब कर रही है, जहाँ पर मकड़ी जाल फैला रही है। धोबी कपड़ा धो रहा है और ढीमर जाल फैला रहा है। छोटी-छोटी लड़कियों के बड़े-बड़े जूड़ा हैं, लेकिन जूड़े में आग लगने से तूमड़ी फूट गई।

पयले पार मोहन गऊवा चरावय
ओइले पार खेलय रे लाल
मय कईसे आहूं कुंवर कंधईया
गोड़य के बिछिया भींगय रे लाल
गोड़य के बिछिया उतार धरि आहो
रमक-झमक चली आहो लाल
रमक-झमक चली आहो सजन बहू।।

उस पार गायें चर रही हैं और इस पार मोहन खेल रहे हैं। राधा कह रही हैं- कुँवर कन्हैया! मैं कैसे आऊँ? मेरे तो पैर की बिछिया भींग जायेगी। कन्हैया कह रहे हैं कि राधा! पैर की बिछिया को उतारकर रख दो और जल्दी-जल्दी उछलते-कूदते आ जाओ।

लय देहूं जोड़ा मोर कमाई मा
लय देहूं जोड़ा मोर।
मंडला बाजार मा पायल बिकत है
पायल बिकत है।

पायल ला लय भागे चोर कमाई मा
लय देहूं जोड़ा मोर।
मंडला बाजार मा टोड़र बिकत है
टोड़र बिकत है।
टोड़र ला लय भागे चोर कमाई मा
लय देहूं जोड़ा मोर।
मंडला बाजार मा करधन बिकत है
करधन बिकत है।
करधन ला लय भागे चोर कमाई मा
लय देहूं जोड़ा मोर।।

मेरी मेहनत की कमाई में ले दूँ। मण्डला के बाजार में पायल बिकती है। पायल तो जरूर खरीद दूँगा, परन्तु चोर तो न ले जांय। इसी तरह टोड़र, कमर की पट्टी (करडोरा) खरीदने की सोचता हूँ, लेकिन चोर के चुरा लेने का भय भी हो रहा है।

तिन तलिया

अमदरी के नाचे खुजीहा रे
लहरपुर के चोर, लहरपुर के चोर
बीजापुरी के छलहीया, जावय जहिला ओर
बीजापुरी के छलहीया।।

अमदरी के नृत्य करने वाले खोजकर (खुजीहा) नाचते हैं और लहरपुर के नाचने वाले चोर हैं। बीजापुर के नृत्यकार कपट वाले (छलिया) हैं, जो कि जोहिला नदी के किनारे-किनारे जा रहे हैं।

पोंड़ी मा चल गय टेक्टर रे
उतरय शहडोल, उतरय शहडोल
करय बजार कोतमा के, खाले बीरा पान।।

पोंड़ी में ट्रैक्टर चल गये। शहडोल में जाकर उतरना है। कोतमा में बीड़ा पान खाकर बाजार करेंगे।

नान-नान बिरछा कदम के रे,
भुंइया लफकय डार, भुंइया लफकय डार,
ऊपर बइठे कन्हैया, मुख मुरली बजाय
नानस श्याम कन्हैया।।

छोटे-छोटे (नान-नान) कदम के वृक्ष हैं, जिनकी डालें जमीन पर झूल रही हैं। कृष्ण जी वृक्ष पर बैठकर बन्शी बजा रहे हैं।

नदिया भीतर के गोंदला रे
बूड़ेय उफलाय, बूड़ेय उफलाय
धन रे जवानी के रेंगना, रेंगैय पसताय
धन रे जवानी के रेंगना।।

नदी के भीतर गोंदला का पौधा डूब और उतरा रहा है। तुम जवानी की चाल में चल रहे हो, फिर चलते-चलते पश्चाताप क्यों कर रहे हो?

साकस खोरी गोकुल के हो,
राधा पनिया को जाय, राधा पनिया को जाय।
माझे मा मिलगय कंधैया, गरो लैय लपटाय
माझे मा मिलगय कंधैया।।

गोकुल का रास्ता संकरा है, जिससे राधा पानी भरने को जा रही हैं। उसी बीच रास्ते में श्रीकृष्ण मिल गए और राधा के गले से लिपट गए।

बजे मजीरा खना खन रे
तबला गुहकाय, तबला गुहकाय
निहुर के नाचे कंधैया, राधा नहीं आय
निहुर के नाचे कंधैया।।

श्रीकृष्ण जी का मजीरा वाद्य खनन-खन बज रहा है और तबले की आवाज गुहक रही है। श्रीकृष्ण जी झुक-झुक कर नाच रहे हैं। उस समय तक राधा जी नहीं आई।

सड़क मा चले मोटरिया रे
रेलवईया मा रेल, रेलवईया मा रेल।
ऊपर चले हवईया, किसमत का खेल।
ऊपर चले हवईया।

सड़कों पर मोटरगाड़ी चलती है और रेल की पांत में रेलगाड़ी चलती है। हवाई जहाज ऊपर चल रहा है। ये सब विज्ञान का खेल है।

कोलिया के मुनगा, ऊपर फेंकय डार रे
ऊपर फेंकय डार।
जो कुछ होही करम ला

तय आबे मोरय पास
जो कुछ होही करम ला।।

घर के पिछवाड़े मुनगा की डगाल लगाये हैं, जिसकी शाखा निकल रही है। मेरे भाग्य में कुछ भी हो जाय, लेकिन तुम जरूर आओगे।

गयेला डोंगर काटेला बाघी रे
काटेला बाघी।
तय तो हवस ओ बइया
मोरेच गादी
तय हवस ओ बइया।।

जंगल जाकर महलोइन की रस्सी काटी हैं, परन्तु तुम मेरे बराबरी के हो।

बीड़ी ला पीवैय ऊपर दम ले रे,
ऊपर दम ले।
गलीया मा खड़े रहबे
हमार मन ले रे
गलीया मा खड़े रहबे।

बीड़ी को पी-पीकर अपना दम ले रहे हो, लेकिन रास्ते में जरूर खड़े रहना और हमारी याद अवश्य करना।

पानी ला पीवैय पसर करिके रे,
पसर करिके।
तय माया ला जोरे, कसर करिके,
तय माया ला जोरे।।

दोनों हाथ करके पसर में पानी पी रहे हो। ऐसा प्रेम फँसाये हो कि दोषी होने की सम्भावना है।

सन भांजे सुतरी, उलट भांजे डोर रे
उलट भांजे डोर।
गारी बोली दैय ले, माया ला झैय टोर
गारी बोली झैय दे।

सन की आंठे चढ़ा-चढ़ाकर उल्टे में भांजकर रस्सी बनाई है, परन्तु गाली जरूर दे देना, लेकिन प्रेम को नहीं छोड़ना।

पान ला खाये, रचाये मुँह लाल रे
रचाये मुँह लाल।
माया झैय करबे, होय जाही काल
माया झैय करबे।।

पान को खाने से मुँह लाल हो गया है फिर भी तुम प्रेम नहीं करना, अन्यथा जी के काल हो जाओगे।

करिया के कुकरी पियर अड़वा रे
पियर अड़वा।
आसो भर चमकले, माहे मा मड़वा
आसो भर चमकले।।

काली मुर्गी का पीला अण्डा है। तुम इस वर्ष भर खेल-कूद लो। फिर माघ के महीने में मण्डप गड़ना है।

बारी मा फेंकय रजर खरसी रे
रजर खरसी।
केला गवाबो जबर जसती रे
केला गवाबो।

बाड़ी में कूड़ा-कचरा के खाद फेंके है, लेकिन बिना मर्जी के किससे गीत गवायेंगे।

चौंर के बासी भुजल बरी
चल बहनी बनी करैय
लरका सोवायदे पिछोरी तरी।।

चावल का भोजन है, बड़ी की सब्जी है। बच्चे को रजाई के नीचे सुलाकर मजदूरी करने को चलें।

सरई पान के खीलो खोला
ओमा ठोला जोर ना हव
खुदुर बदुर तोर चोला होथैय
कहाँ भिड़ाना तोला हव

साल पत्ते का दोना (पत्तल) बनाकर उसमें ठोला (खाद्य सामग्री) रखना है। मेरी आत्मा तो व्याकुल हो रही है, तुम्हारी हमसे मुलाकात कहाँ होगी।

बिन पीपर के खेरो रे
बिन मुखिया के गांव
बिना पुरुष के नारी

घूमय सारी रात
बिना पुरुष के नारी।।

यहाँ पीपल वृक्ष और ग्राम के मुखिया के बिना पति की नारी की तुलना की गई है। यदि ग्राम की सीमा (खेरो) में पीपल (पीपर) वृक्ष न हो और गाँव का पटेल (मुखिया) गाँव में न हो, तो गाँव देव-रक्षा और मर्यादा तथा अनुशासन विहीन हो जायेगा। उसी प्रकार जिस स्त्री का पति न हो तो वह स्त्री पूरी रात घूमती रहती है, अर्थात् उस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रहता है।

रूचि-रूचि कांवर बनाए सरवन रे,
धर लय बाप अव महतारी
कर लईन बनकी तियारी।।

सरवन कुमार ने सुन्दर गढ़कर कांवड़ बनाया और अपने माता-पिता को बैठाकर वन जाने की तैयारी करने लगे।

बेढ़ा मा फूले बेढ़निया रे,
अंगना मा गुलाब, अंगना मा गुलाब।
साजा मा फूले समरीया
बोलो सीता राम।

टाटा में बेढ़निया के फूल खिले हैं। आँगन में गुलाब का फूल और साजा वृक्ष में सेमरिया के फूल फूले हैं। सब बोलो सीता राम।

गघरी मा लिख दे लिखना रे।
गुड़नी मा सलाम, गुड़नी मा सलाम,
कागत मा लिख दे नमस्ते
टूरी नहीं आय।।

गगरी में भाग्य लिख दिया। गुड़नी में सलाम लिखा। कागज में नमस्ते लिखा, लेकिन लड़की नहीं आई।

आसों के अमली फरेला चपटी रे
फरेला चपटी
भीतर हवय माया, बाहर कपटी रे।।

इस वर्ष की इमली चपटी फली है। आत्मा से तो प्रेम है, लेकिन बाहर से कपट है।

नदिया भीतर के ककरा रे
पथरा देख-देख जाय, पथरा देख-देख जाय।
धनओ सनीचर टुरिया, डकरा देख-देख जाय।

नदी के अन्दर का केकड़ा पत्थर को देख-देख कर जा रहा है। बदचलन की लड़की बूढ़ों को देख-देख कर जा रही है।

सांकस कुंआ भीतर पानी
तय जानी की मय जानी, तय जानी की मय जानी
सांकस कुंआ भीतर पानी
तय जानी की मय जानी।

संकरे कुँआ में भीतर पानी है। इस बात को तुम और मैं ही जानते हैं।

बरा ले निकरय बरोहिन रे
उमर ले मसान
तेरेता मा जन्मे रामा
दशरथ के लाल।

बरगद के झाड़ से बरोहिन की शाखाएँ निकली, गूगल की झाड़ से मसान निकला। दशरथ के पुत्र राम त्रेता युग में जन्म लिये।

लंका के रावण रे
जादय होशियार
सीता ला लई गय हर के
राम भटके बनमा जाय।

लंका का रावण बहुत होशियार था, जो वनवास से सीता को चुराकर ले गया। तब राम सीता की खोज में जंगल में भटके।

डोंगरा ले निकरय बइला रे
तेखे ऐड़ा बेंड़ा सींग
बारा कोस के रेंगना
होइगय बिहान।।

बैल जंगल से निकला, जिसका टेढ़ा-मेढ़ा सींग है। बारह कोस चलते-चलते प्रातः हो गई।

चोंगी ला पीवय ऊपर दम ले रे
ऊपर दम ले।
गलीया मा ठाड़े होय के
हमार मन ले रे।

पत्तों से बनाई गई चोंगी में तम्बाखू भरकर दम ले रहे हो और तुम रास्ते में खड़े होकर, हमारे मन को भी ले रहे हो।

गये ला तो डोंगर काटेला बंदा रे
काटेला बंदा।
तय तो हवस चिरैया
गाँव मा चंदा।

जंगल जाकर घास की रस्सी काटकर लायेंगे। तुम मेरी बराबरी के हो और गाँव में तुम्हारा नाम रोशन है।

राही

राही गायों न जाय, राही गायों न जाय
राही के राह नहीं पायो।।

राही फाग गीत गा रहे हो, लेकिन राही गीत की लय धुन नहीं पा रहे हो।

दीला दय के ना मार, दीला दय के ना मार
दे-दे जहर मरी जांव रे।।

प्रेम के बंधन में फँसा कर नहीं मारना। नहीं तो मैं जहर खाकर मर जाऊँगा।

सीता बिहाहो न जाय, सीता बिहाहो न जाय
जब तक धनुष न टूटे।।

सीता की शादी नहीं होगी। जब तक धनुष टूट न जाय।

राम रंग मा रंगे, राम रंग मा रंगे
सीता रंगे हरदी तेल मा।।

सीता हल्दी और तेल में रंगी है और राम रंग में रंगे हैं।

दिन भर करले काम, दिन भर करले काम
रात के भजन करले राम के।।

पूरे दिन काम करिए और रात में राम का भजन कीजिए।

नदी आवैय रे हिलोर, नदी आवैय रे हिलोर
राधा के बह गय चुनरिया।।

नदी की लहर में राधा की चुनरिया बह गई।

चुनरी उड़-उड़ जाय, चुनरी उड़-उड़ जाय
लैय चल बारू रेत मा।।

तुम्हारी चुनरी उड़ी जा रही है, मुझे बालू की रेत में ले चलो।

पलका ऊपर गेस, पलका ऊपर गेस
गेस के उजेला मजा मार ले।।

पलंग के ऊपर गैस जल रही है, गैस के प्रकाश में मजा कर लो।

टिमकी मा गड़ेश, टिमकी मा गड़ेश
ढोलकी मा बइठे मईया शारदा।।

टिमकी वाद्य में गणेश भगवान और ढोलक वाद्य में माँ शारदा देवी विराजमान हैं।

पातर मुनगा डार, पातर मुनगा डार
चिरैया बइठिने फुला झार के।।

मुनगा की डालें पतली हैं, जिसका फूल झड़ चुका है, जहाँ पर पक्षी बैठे हैं।

गोरी चढ़ गए रे पहार, गोरी चढ़ गए पहार
हाथ मा रूमाल गुन्डा संग मा।।

गोरी हाथ में रूमाल रख और प्रेमी के साथ पहाड़ पर चढ़ गई।

लहंगा लटरत जाय, लहंगा लटरत जाय।
धन रे जवानी तोर रेंगना।।

धन्य है जवानी की चाल जो कि लहंगा जमीन से झूलता है।

मोर बईहा ना मुरेर, मोर बईहा ना मुरेर।
लत्ता छुड़ाले मईके जान दे।।

मेरी बाहों को मत ऐंठो। कपड़े छुड़ा लो, लेकिन मुझे अपने मायके जाने दो।

मजा ऐ दिन के आर, मजा ऐ दिन के आर
जब तक ललन नहीं आए कोरा मा।।

जब तक बच्चा गोद में नहीं है, तब तक मौज कर लो।

चार पंचों के बीच, चार पंचों के बीच
गलती करीगे माफ करना।।

चार पंचों के बीच त्रुटि हो गई है, लेकिन माफ जरूर करना।

कियो बइठे हो आर, कियो बइठे हो आर
लमबो चुटईया गोला मूड़ के।।

गोल सिर है, जिसके लम्बे चुटैया हैं, फिर यहाँ क्यों बैठो हो?

फूल फूले रे गुलाब, फूल फूले रे गुलाब
भंवरा के मन मुसकाये रे।।

गुलाब का फूल फूला है, जहाँ पर भँवरे गुन-गुना रहे हैं।

शंकर भोलेनाथ, शंकर भोलेनाथ।।
भवसागर ले सबला उबारे।।

हे शंकर भगवान! आप इस दुनिया के तारण-हारण हैं।

दही बेचेला जाय, दही बेचेला जाय
राधा के फिल गय चुनरिया।।

राधा दही बेचने को जा रही थी, तब राधा की चुनरी भींग गई।

राम रटते रहो, राम रटते रहो
राम के भजन दिन करिले।

हमेशा राम का नाम जपते रहिए, तब ही भलाई है।

टहूका

देवी शारदा गालै हो पहले।
लैय हो गुरून के नाव, पहले.....
पहले ले सुमरों ठाकुर देवता
दूजे मा खैर बहेर, पहले.....
तीजे मा सुमरों धरती माता
चउथे मा गौरी गनेश, पहले....
पांचे मा सुमरो चंदा सुरूज
धरती मा फेंकैय उजियार, पहले....

प्रथम वंदना माँ शारदा जी की फिर गुरू का नमन्। हे ठाकुर देव! पहले मैं आपको स्मरण करता हूँ, दूसरे में खेर-खूट माता को, तीसरे में धरती माता, चौथे में गौरी के गणेश भगवान, पाँचवे में चाँद-सूरज को, जिनका प्रकाश दुनिया में फैलता है।

अपने इष्ट-देव, कुल देव एवं देवी-दुर्गा को स्मरण कर माथ नवाता हूँ, आप थोड़ी देर के लिए सहाय अवश्य हों।

ऐकैय तलैया मा ओदला-गोंदला,
ऐकैय मा कांदो कीच,
हवाल गुथादे छतियन बीच।

एक ही तालाब में ओंदला-गोंदला है और एक ही में कीचड़-कांदो है। तुम हवाल गुंथा लो और उसे गले में पहिन लो।

आमा पकैय इमली पकैय
जाम पकैय अतर के।
नहीं-नहीं कारो मूरख
झैय लैय जा पकर के।।

आम पका, इमली पकी और जामुन अन्तर में पक गई है। मूर्ख! तुझे बार-बार मना किया कि मुझे पकड़कर मत ले जाओ।

मोट ताज तोर हाथ गोड़ है
कम्मर पतरैली है।
गोला-गोला तोर गाल बने है
आंखी कजरैली है।

तुम्हारी हाथ पैर मोटे-ताजे हैं, लेकिन कमर पतली है। चेहरा खूबसूरत है और आँखें कजरारी हैं।

घरेला तो अरी री डांग
मारेला गिधली है।
बेरी-बेरी बरजो मूरख
झैय कर तैय चुगली है।।

पतले नोंकदार डांग से गिदली मारना है। ये मूर्ख, तुझे बार-बार मना किया कि तुम मुझ से चुगली मत करो।

एक फिकर तो दाई दादन के
एक फिकर तन के है।
सोय पलंग मा आंसू गिरथैय
कौन भरोसा तन के है।।

एक चिंता माता-पिता की है। एक चिंता इस शरीर की है। तुम पलंग में सोकर आँसू मत बहाओ, क्योंकि इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है।

दाई बिना मोर भोजन छुट गय
दादा बिना मोर राज रे।
भाई बिना मोर बइठुक छुट गय
सोचौंव सारी रात रे।।

माता जी के न होने से भोजन छूट गया। पिता के न होने पर राज-काज छूट गया। भाई के बिना मेरी बैठक छूट गई, क्योंकि उसी के साथ बैठते थे। मैं बैठे-बैठे पूरी रात यही सोचता रहता हूँ।

कउड़ी-कउड़ी माया जोरैय
जोरैय लाख करोड़ी है
अन्त समो मा काम न आही
रह गय हाथ सकोड़ी है।।

एक-एक करके इस सम्पत्ति को बनाया, जिससे लाखों की कोठी भर गई। ये सब माया अन्तिम समय में काम नहीं आयेगी। आखिर में मुट्ठी खोलकर ही जाना होगा।

लैय ले दैय ले खायले पीयले
करले मन के आसा है।
काल परों तैय मर हर जाबे
छतिया मा जम ही घासा है।

जीवन रहते जिसको जो कुछ देना-लेना हो, कर लें साथ ही खा-पीकर मौज कर लो। अपने मन की आशा को पूर्ण कर लो। जब मृत्यु हो जायेगी तब शरीर में घास जम जायेगी।

विज्ञापन

विज्ञापन